राजस्थानी

रुकमणी-मंगळ

[हरजी रो व्यांवलो]

(हिन्दी अनुवाद सहित)

मूल रचयिता

पदम भगत

हिन्दी-भाषान्तरकार

डॉ० सत्यनारायण स्वामी

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

वर्तमान पता:— मौसम बाग़ (सीतापुर रोड), लखनऊ-२२६०२०

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ॥'

प्रथम संस्करण— १९७७ ई०

पृष्ठसंख्या— १८×२२÷८=२५२

मूल्य— २०·०० रुपया

मुद्रक

वाणी प्रेस

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३

राजस्थानी मंगळकाव्यों में

मुकुटमणि, १६ वीं शती ईस्वी का

ललित लोकगीत काव्य, प्रस्तुत

'रुकमणी-मंगळ', उसके भावुक और भक्त

रचनाकार 'पदम भगत' की

पुण्य स्मृति में,

भगवान् रुक्मिणी-वल्लभ के चरणों में

सभक्ति समर्पित।

मुख्यन्यासी सभापति

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

विषय-सूची

भूमिका

इसी शती के आरंभ तक पद्यात्मक लोक-कथाओं को गाने की प्रथा जीवित थी। मेरे बचपन में (इटावे में) ऐसे गायक बहुधा नगरों और गाँवों में घूमा करते थे। मुझे अच्छी याद है कि एक ऐसा गायक (जिसे हम लोग 'जोगी' कहते थे) हमारे मोहल्ले में बहुधा आया करता था और वह 'भरथरी (भर्तृहरि) की कहानी' सारंगी पर गा कर सुनाया करता था। उसका कण्ठ बड़ा मधुर था और कहानी भी बड़ी रोचक थी। वह बड़ी करुणोत्पादक थी। उस कथा की कविता भी सरल और प्रभावोत्पादक थी। मैने बचपन में ऐसी कई काव्यमय कथाएँ इन घुमक्कड़ गायकों से सुनी थी। एक और कथा नल-दमयन्ती की भी बड़ी रोचक थी। अब रुचि और सामयिक परिवर्तनों के कारण वे लोकगायक लुप्त हो गये है, केवल आल्हा अब भी गाँवो में लोकप्रिय है, खेद है कि काव्यमय कथाएँ केवल कंठों में थी और उन कण्ठों के साथ वे भी लुप्त और विस्मृत हो गयीं।
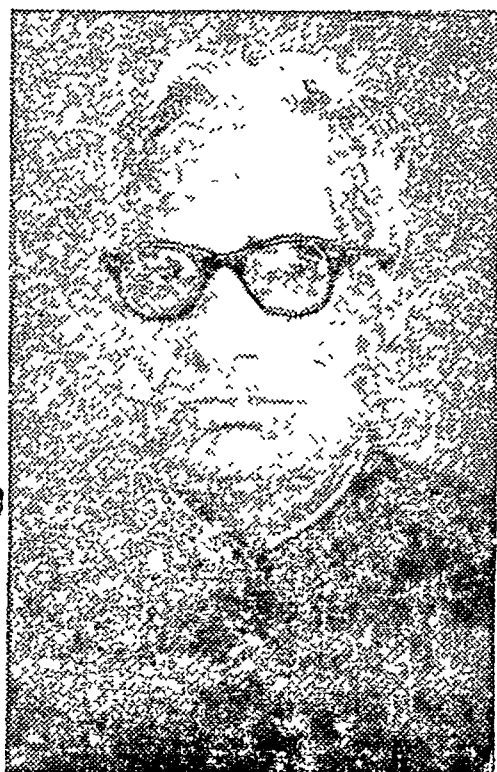
प्रस्तुत पुस्तक एक ऐसा ही लोककाव्य है। वह भी जनता में गाया जाता था। पता नही कि राजस्थान में अब उन लोकगायकों की परम्परा कितनी बच रही है। किंतु वास्तव मे यह कथा केवल गेय ही नही है। यह एक काव्य है जिसने अपने काव्य की उत्कृष्टता तथा

कथा-वर्णन-शैली के कारण सामान्य जनता ही में नहीं, प्रत्युत विदग्ध साहित्यकारों का ध्यान भी आकृष्ट किया।

इस काव्य की कथा पुराण-प्रसिद्ध रुक्मिणीहरण की कथा पर आधारित है। यह कथा इतनी चित्ताकर्षक है कि कितने ही कवियों ने इस पर काव्यरचना की। हिन्दी (व्रजभाषा) के कवियों के अतिरिक्त राजस्थानी मे प्रथ्वीराज राठोड़ ऐसे प्रतिष्ठित कवि ने 'वेलि किसन रुकमणी री' नामक बहुचर्चित काव्य लिखा। यह इतना महत्वपूर्ण था कि आज से प्रायः तीस-चालीस वर्ष पूर्व उसे एक प्रतिष्ठित हिन्दी संस्था ने उसे अच्छी तरह सम्पादित करा कर प्रकाशित किया था। काव्य की दृष्टि से वह अत्यन्त उत्कृष्ट कृति है और राजस्थान के साहित्य में उसका बड़ा ऊँचा स्थान है।

पदम भगत कृत यह 'रुकमणी-मंगळ (हरजी रो व्यांवलो)' उसी कथा पर आधारित काव्य है जो लोकरंजन के लिए एक भक्त ने बड़ी आस्था और श्रद्धा से लिखा है। यह गेय भी है और इतनी सरल भाषा और शैली में लिखा गया है कि वह सामान्य जनता मे बड़ा लोकप्रिय हुआ, और प्रायः दो-ढाई शतियो तक वह राजस्थान की जनता का मनोरंजन करता रहा। लोकप्रिय होने के कारण यह न समझा जाय कि काव्य की दृष्टि से वह निम्न स्तर का है। उसकी वर्णन शैली, छंदों और अलंकारों का कुशल प्रयोग उसे अच्छे काव्य की श्रेणी में सरलता से ला देते है। रामायण की तरह यह जनता और विद्वानों, दोनो ही का मनोरजन करता है।

इसके इस रूप में प्रकाशन से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'राजस्थानी' हिन्दी का ही एक रूप है। क्षेत्र-भेद के कारण उसके उच्चारण (जैसे हिन्दी के अनेक शब्दों मे 'न' की जगह राजस्थानी मे 'ण' का प्रयोग) तथा कुछ देशज या अपभ्रंश शब्दों के प्रयोग के भेद प्रायः वेसे ही है जेसे व्रजभाषा और भोजपुरी मे। सामान्य हिन्दी पाठक भी उसे पढ़ कर अधिकांश समझ सकता है, चाहे उसे किसी राजस्थानी से उसे सुनने पर, उच्चारण भेद के कारण, समझने में उसे कठिनाई हो। जैसे—

काजल घालो महँदी लावो कंकण हाथ बँधाई
तेल फुलेल उबटणो लावो यूँ समझावे माई
यूँ समझावे मात रुकमणी कह्यौ हमारो कीजै
जिण री कन्या कुळ तें ढीठी तिण चूं कौण पतीजै ?

घालो (लगाया), री (की), पतीजै (पतियावे) राजस्थानी के विशेष प्रयोग हैं। "न" की जगह "ण" राजस्थानी में चलता है। इतना

ध्यान में रखकर किसी हिन्दीभाषी को इसे समझने में कठिनाई न होगी। वैसे भी न होनी चाहिये। फिर भी इस संस्करण में हिन्दी गद्य में इसका अनुवाद दे दिया गया है। कुछ स्थानों पर (जो बहुत कम हैं) ठेठ राजस्थानी शब्दों का अनुवाद छूट गया है, किंतु उससे काव्य या कथा के समझने में कोई कठिनाई नही होती।

भुवन वाणी ट्रस्ट ने इसे इस रूप में प्रकाशित कर हिन्दी और राजस्थानी—दोनों की बड़ी सेवा की है। हिन्दी क्षेत्र में आधुनिक शिक्षा और साहित्यिक विकास एवं रुचि-परिवर्तन के बावजूद अभी भी ऐसे लोगों की बहुत बड़ी संख्या है जो ऐसी रचनाओं और कथाओं में रुचि लेते हैं। आज भी 'सुख सागर', 'प्रेम सागर' 'विश्राम सागर' की प्रति वर्ष हजारों प्रतियाँ बिकती है और उनसे कई गुना अधिक पाठक और पाठिकाएँ उनसे सात्विक आनन्द प्राप्त करते हैं, अतएव मुझे विश्वास है कि पश्चिमी क्षेत्र में यह काव्य विशेष रूप से लोकप्रिय होगा।

देवनागरी लिपि में भारतीय भाषाओं के महत्वपूर्ण ग्रंथों का इनके सुसंपादित हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशन करने की अपनी योजना से भुवन वाणी ट्रस्ट देश में नागरी लिपि के प्रचार में जो महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है, उसके लिए वह नागरी लिपि के विस्तार चाहनेवालों और हिन्दी साहित्य की समृद्धि के आकांक्षियों के हार्दिक धन्यवाद का पात्र है। इस लोकरंजन करनेवाले सुंदर राजस्थानी काव्य को इस रूप में प्रकाशित करने के लिए मै उसे बधाई देता हूँ।

श्रीनारायण चतुर्वेदी

दिनाङ्क २३ मार्च, १९७७

बंगाल के मंगल काव्य : एक अध्ययन

(शशिभूषण पाण्डेय एम० ए०, 'साहित्यरत्न')

[साप्ताहिक 'लोकमान्य', कलकत्ता के सौजन्य से]

बंगाल में वैष्णव धर्म के प्रचार और वैष्णव काव्यधारा के प्रवाह के पूर्व और फिर बाद मे भी मगलकाव्यों का व्यापक प्रचलन था। इन मंगलकाव्यों की रचना मूलतः देवी-देवताओं की प्रशस्ति गान के रूप में हुई और यही उनका उद्देश्य भी था। श्रद्धा, भक्ति और चमत्कारों से भरपूर ये मंगलकाव्य प्राचीन बंगाल के लोकजीवन और लोकविश्वास के विश्वस्त प्रवक्ता है और इसलिए इनको प्राचीन बंगाल के इतिहास के रूप में भी माना जाता है। स्पष्ट है कि इन मंगलकाव्यों में आजकल के ढंग का राजनीतिक इतिहास ढूँढ़नेवाले को निराशा ही मिलेगी। इनमें तो समाज और लोकजीवन के विभिन्न पहलुओं का इतिहास यत्नपूर्वक संजोया हुआ है। इस प्रकार ये मंगलकाव्य अध्ययन और चिन्तन की महत्वपूर्ण सामग्री है। यद्यपि ये बंगाल की अपनी विशेष सम्पदा है, पर जिस विचारधारा ने इनको उत्पन्न किया है, लोकजीवन के जिस पहलू और जिस विधा को ये उजागर करते है—वह सारे भारत की है और उसको क्षेत्रीय आधार पर विभाजित नही किया जा सकता।

धर्म-मंगल

'धर्ममंगल' या 'शून्यपुराण' को मंगलकाव्यों का आदिस्रोत कहा जा सकता है। इसमें धर्मठाकुर और शिव के संयुक्त स्वरूप की उपासना का प्रतिपादन किया गया है। इसे आगमपुराण कहा जाता है। शून्य-वाद का प्रतिपादन करने के कारण इसे शून्यपुराण की भी संज्ञा दी गयी है। इसमें बौद्ध और हिंदू देवी-देवताओं की कथाएँ भी मिलती हैं। इस प्रकार यह आदि मंगलकाव्यों की प्रकृति का एक मननीय परिचय प्रस्तुत करता है। 'मनसा-मंगल', जो कि दूसरा महत्वपूर्ण मंगलकाव्य है, में भी बौद्ध प्रभाव परिलक्षित होता है। इसी तरह के अनेक मंगलकाव्य हैं जिनमें मानिक दत्त के 'चण्डी मंगल' को सबसे प्राचीन माना जाता है।

मंगल काव्यों की रचना, जैसा कि उनके रचयिता कहते हैं, स्वप्न में उपास्य देवता या देवी द्वारा आदेश दिए जाने पर की गयी है। लगभग सभी मंगलकाव्यों में इस तरह की बात का उल्लेख मिलता है। इसके पीछे जो भी भावना हो, पर रीति यही रही है। हर मंगल काव्य के आरम्भ में विभिन्न देवी-देवताओं की स्तुति मिलती है, किसी-किसी में तो श्रीचैतन्यदेव को भी इस तालिका में सम्मिलित कर लिया गया है। इसके अलावा मंगल-काव्य मे मूल कथानक के साथ-साथ बारह मास वर्णन, भोज्य पदार्थ तालिका, नारियो की पतिनिन्दा, स्वप्नादेश, नायिका

का रूप और उसकी वेश-भूषा का वर्णन, दुःस्वप्न व यात्रा असगुन वर्णन, नौका सज्जा, जलपथ से यात्रा में कठिनाइयाँ, प्राणदण्ड, शाप-प्राप्ति, शापावसान, विश्वकर्मा का कृतित्व, हनुमान की सहायता और सतीत्व-परीक्षा आदि के मनोरम तथा रोमांचकारी वर्णन मिलते है।

मंगल-काव्य और शिव

शिव का सम्बन्ध सभी मंगलकाव्यों से है। यह बात दूसरी है कि शिव के स्तर और स्वरूप में बहुत परिवर्तन हुआ है। मंगलकाव्यों के अनुसार धर्म के स्वेद-बिंदु से आद्याशक्ति का जन्म हुआ है। आद्याशक्ति के विषपान से शिव का जन्म हुआ। ब्रह्मा और विष्णु भी आद्याशक्ति की ही सन्तान है। इस प्रकार आद्याशक्ति है तो शिव की जननी पर कई जन्मों के बाद दक्ष प्रजापति की कन्या के रूप में आद्याशक्ति ने अवतार लिया और वे शिव की पत्नी बनी। यह तो शिव का पौराणिक स्वरूप है। पर मंगलकाव्यों में शिव कई रूपों में मिलते है।

बंगला के लोकसाहित्य में शिव 'बूढ़ोराज' कहलाते है। मंगल-काव्य ने तो धर्म-ठाकुर के साथ इनको संयुक्त कर दिया है। दरिद्र, पर कुलीन के रूप में ये उपहास के पात्र बनते है। किन्तु पुराण के शिव ब्रह्मस्वरूप है और ज्ञानियो के आराध्य है। मनसामंगल का 'चाँद सौदागर' तो शिव का महान आराधक है। शिव के उपासकों और शाक्त लोगों के पारस्परिक सघर्ष के कारण ही मनसामंगल की रचना की गयी, ऐसा मत भी कतिपय साहित्य-मर्मज्ञों का है। बौद्ध-प्रभाव में शिव को कृषि का देवता माना गया है।

मंगल-काव्य का उद्देश्य

जैसा कि पहले कहा जा चुका है मंगल-काव्य का उद्देश्य किसी देवी-देवता के माहात्म्य का वर्णन करना है। साथ ही लोक-शिक्षा भी मंगलकाव्य का ध्येय है। इसलिए मंगलकाव्य का देवता किसी विशेष मानसिक प्रवृत्ति को पूर्ण करने के लिए धरती पर आता है। उसका यह आगमन मानवीय रूप में होता है। मंगल-काव्य का देवता यहाँ पूर्ण मानवीय स्वभाव का परिचय देता है। इसलिए मंगल-काव्य के दो भाग हो जाते है। इनमें से कुछ घटनाएँ तो देवलोक में होती हैं और कुछ मृत्युलोक में—देवता दोनों जगह जो रहता है। परन्तु कुछ मंगल-काव्यों में प्रथम भाग नहीं पाया जाता, सारी की सारी कहानी यहीं धरती पर ही घटती है।

जो काम मंगलकाव्यों का है, वही पुराणों का भी रहा है। पुराणों में भी देवगण मनुष्यों की तरह काम करते है और पुराण हमको यह स्मरण दिलाते रहते है कि ये देवता है और इस तरह के कार्य करने मे इनका उद्देश्य मानव को उचित-अनुचित की शिक्षा देना है। पुराणों का यह कथन हमारे मगल-काव्यों की भूमिका है।

मंगलकाव्यों की विशेषताएँ

मंगल-काव्यों में पौराणिक आख्यानों का जो अंश है वह संस्कृत से लिया गया है और जो लौकिक वर्णन है वह बगाल का है। कवियों की प्रतिभा भी लौकिक वर्णनो मे ही पूर्ण रूप से प्रस्फुटित हुई है। इस प्रकार इन काव्यों को संस्कृत और बगला साहित्य के समन्वय का काव्य भी कहा जाता है।

मंगलकाव्यों के नायक-नायिका के जीवन में अनेक विघ्न-वाधाएँ आती हैं। ये वाधाएं प्राय: आधिदैविक होती है। अन्त में ईश्वर-प्रदत्तशक्ति से नायक-नायिका विजयी होते है, उनकी वाधाएँ मिट जाती है। यह विशेषता केवल मगलकाव्यों की ही नही वल्कि समूचे भारतीय साहित्य की है। उसी तरह मगलकाव्यों में सती की महिमा का भी उदात्त चित्रण मिलता है। कष्ट और दारुण विपत्तियों की परीक्षा के वाद जो परिणाम सामने आता है, उससे सती का जाज्वल्यमान स्वरूप उद्भासित हो उठता है।

'प्रत्येक मंगलकाव्य' में एक या अधिक विवाहों के दृश्य होते हैं। किसी-किसी विवाह में तो शिव के किसी न किसी रूप को लेकर कौतुक व विनोद की सृष्टि की गई है। इससे यहाँ के लोगों की उत्सव-प्रियता पर भी प्रकाश पड़ता है।

मंगलकाव्य और वैष्णव-साहित्य

वंगाल में वैष्णव धर्म और वैष्णव काव्य के प्रसार से मंगलकाव्यों की परम्परा पर एक विराम-सा लगा, यद्यपि यह केवल अल्प विराम सिद्ध हुआ। वैष्णव धर्म की प्रेमधारा में लौकिक देवताओं के घट-घट सब वह गये। यद्यपि मंगल-काव्य भी भक्तिप्रसूत थे और वैष्णवधर्म भी भक्तिप्रधान था, पर इन दोनों की भक्ति में वहुत अन्तर था। वैष्णवधर्म की भक्ति निष्काम भक्ति थी जिसमें भक्त चाहता है—

धरम न अरथ न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान।
जनम-जनम रति रामपद, यह वरदान न आन॥

इसके विपरीत मंगलकाव्य की भक्ति सकाम भक्ति थी। लौकिक

भक्त अपने देवी-देवताओं से धन, स्वरूप और सुख चाहता है। भारतीयों की स्वाभाविक धर्मभीरुता भी उन्हे देवी-देवताओं की सकाम उपासना के लिए प्रेरित करती है। यही कारण है कि वैष्णवधर्म की ओर उन्मुख होने पर भी जनता ने बाद में मंगल-काव्यों की ओर फिर से ध्यान दिया और एक बार पुनः मंगलकाव्यों का प्रभाव जमा। निराकार और साकार के बीच जन-मन में चलता हुआ द्वन्द्व भी मगलकाव्यों के पुनरुत्थान का कारण बना। इस विषय मे महाकवि सूरदास ने निराकार को विचार के लिए अगम बताते हुए अत्यन्त सुष्ठ ढंग से साकार भगवान की उपासना का प्रतिपादन किया है। इसी भावना से अभिभूत लोगों ने विभिन्न देवी-देवताओं की उपासना आरम्भ की; प्रार्थना ईश्वर का जो भी रूप मानकर की जाय, उस तक अवश्य पहुँचेगी।

समसामयिक इतिहास का भी प्रभाव उपासना-पद्धतियों पर पड़ता है। यदि उस समय की ऐतिहासिक परिस्थिति का मनन करे तो हम पायेंगे कि लोग भाँति-भाँति की ईति-भीतियों से ग्रस्त थे और अपनी विपत्तियों के निवारण के लिए राजा से भी कोई आशा नही कर सकते थे। इसलिए देवी-देवताओं को छोड़कर दूसरा आसरा ही क्या था? आततायियों ने, जिनमें काला पहाड़ उल्लेखनीय है, मूर्तियाँ और मन्दिर तोड़ डाले थे। इससे भगवान और देवताओं मे जनता की आस्था को धक्का लगा था। पर इससे समाज के अगुवा लोग निराश नही थे, समाज को जीवित रखने के लिए इन आशाओं, आकाक्षाओं और इस आस्था को जीवित रखना ही था। इसलिए नयी-नयी आशाएँ दिलाकर, नये प्रकार के भय और भीति की कल्पना करके ऐसा करने की चेष्टा की गई।

मंगल-काव्य की शैली वाद में एक लोकप्रिय शैली बन गयी। विभिन्न विचार के लोगों ने मंगलकाव्यों की शैली में काव्य लिखे। धर्म या मत का कोई वन्धन इसमें नहीं रहा। वैष्णवों ने भी चण्डीमंगल लिखे, हिन्दुओं ने धर्ममंगल की रचना की। जिनमें काव्य का गुण रहा, वे रह गये और बाकी समय के अन्तराल में विलुप्त हो गये। जो भी मंगलकाव्य हैं उनके अध्ययन और अनुशीलन से तत्कालीन लोक-जीवन और लोक-संस्कृति का प्रामाणिक परिचय मिलता है और ये बंगला साहित्य और संस्कृति की अमूल्य निधियाँ है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

प्रकाशकीय परिशिष्ट

उद्देश्य—

भुवन वाणी ट्रस्ट के माध्यम से नागरी लिपि का मञ्च, विना किसी भेदभाव के प्रत्येक लिपि, भाषा और मान्यता के लिए खुला है। भुवन की भाषाओं का सत्साहित्य नागरी लिपि में उद्भूत होकर अखिल भूतल की सामग्री बने, ज्ञानमात्र अविभाज्य रूप से सबको सुलभ होकर सबकी समान सम्पत्ति हो; प्रत्येक भाषा का साहित्य अपनी निजी लिपि में निजी क्षेत्र मे फूलते-फलते रहकर, नागरी लिपि के कलेवर में अन्य क्षेत्रो में भी व्याप्त हो जाय; यह ट्रस्ट का सर्वोपरि उद्देश्य है।

विषयवस्तु—

राजस्थानी भाषा की लिपि नागरी है। इसी प्रकार नेपाली, मराठी, संस्कृत की भी लिपि नागरी है। जिन भाषाओं की लिपि नागरी है, उनमें लिप्यन्तरण की आवश्यकता नही; साथ में हिन्दी अनुवाद मात्र दे देने पर वह साहित्य भारत के कोने-कोने में न्यूनाधिक पढ़ा और समझा जा सकता है। क्योंकि अन्य लिपियों और भाषाओं की अपेक्षा, नागरी लिपि और हिन्दी भाषा का विस्तार सर्वाञ्चलीय है। भारतीय वाङ्मय, फिर वह किसी भी लिपि और भाषा में हो, सारे राष्ट्र की सम्पत्ति है। उसको पृथक्-पृथक् लिपि-पेटिकाओ में बन्द कर-रखना अपनी राष्ट्रीयता को छिन्न-भिन्न करना है। हर भारतीय भाषा में अनन्त मूल्यवान् साहित्य उमड़ रहा है। सर्वाधिक व्याप्त लिपि में उस समस्त को लिप्यन्तरित कर सारे राष्ट्र के लिए सुलभ करना हमें अभीष्ट है।

इस उद्देश्य की पूर्ति-हेतु लगभग बीस भाषाओं पर भुवन वाणी ट्रस्ट कार्य कर रहा है। हमारी विद्वत् परिषद् के वरिष्ठ सदस्य डॉ० गजानन नरसिंह साठे, ट्रस्ट के अवर न्यासी पद को भी सुशोभित करते है। उनके माध्यम से बीकानेर (राजस्थान) के विद्वान् डॉ० सत्यनारायण स्वामी से परिचय हुआ। डॉ० स्वामी के योगदान के फलस्वरूप ही पदम भगत कृत ४०० वर्ष पूर्व की रचना राजस्थानी 'रुकमणी मंगळ' हिन्दी अनुवाद-सहित पाठकों के सामने प्रस्तुत है। राजस्थानी भाषा में, व्रज, हरियाणा, मुल्तान, गुजरात आदि की बोलिओं का पुट है; राजस्थानी लोकगीतों और चारणों की भाषा डिंगल की झलक होना तो स्वाभाविक ही है। किन्तु इन वारीकियों मे न जाकर, यह निरापद रूप से कहा जा सकता है कि

'राजस्थानी', हिन्दी का ही एक रूप है। हिन्दीभाषी, उसको ध्यान से पढ़ने पर सरलता से समझ सकते हैं।

भूमिका और प्राक्कथन—

सोलहवी शती के पूर्वार्द्ध में पदम भगत-विरचित 'रुकमणी मंगळ' और अन्य मंगलकाव्यों के सम्बन्ध में अच्छी ख़ासी जानकारी अनुवादक महोदय ने पृष्ठ १९-२१ पर दी है। पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी जी ने पुस्तक पर भूमिका लिखने की कृपा की है। उससे भी विषय-वस्तु पर काफ़ी प्रकाश पड़ता है। इसी बीच कलकत्ता के साप्ताहिक पत्र 'लोकमान्य' में प्रकाशित श्री शशिभूषण पाण्डेय एम०-ए०, 'साहित्यरत्न' के 'बंगाल के मंगलकाव्य : एक अध्ययन' शीर्षक लेख पर दृष्टि गई। प्रकाशित पुस्तक से सीधा सम्बन्ध न होने पर भी, पाठकों के लिए उपयोगी समझकर वह लेख पृष्ठ ८-११ पर जैसा का तैसा दे रहे हैं। उपर्युक्त सामग्री मंगलकाव्यों के इतिहास और प्रस्तुत पुस्तक पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। आजकल चलन कम ज़रूर हो गया है, अन्यथा ब्रजभाषा में रचित कई रुक्मिणीमंगल कथावाचकों द्वारा गाये जाते थे; कथा बैठती थी, भक्ति के साथ-साथ लौकिक आनन्द के रस में श्रोता विमुग्ध हो जाते थे। स्त्रियाँ विशेष रुचि लेती थीं। आज वही विषय राजस्थानी भाषा के माध्यम से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है।

रचना, अनुवाद—

'राजस्थानी रुकमणी मंगळ' के रचनाकार पदम भगत का अनुवादक महोदय ने यथा-उपलब्ध परिचय 'अवतरणिका' शीर्षक अपने लेख में दिया है। अनुवादक डॉ० सत्यनारायण स्वामी का जन्म २ मई, १९३८ ई० है। 'स्वामी' शब्द से किसी साधु-सन्त समुदाय का भ्रम न होना चाहिये। राजस्थान के प्रसिद्ध राँकावत ब्राह्मणों में 'स्वामी' एक विशिष्ट उपाधि है। डॉ० सत्यनारायण स्वामी, एम० ए० (हिन्दी), पी-एच्० डी०, बी० लिब्० एस-सी०, राजस्थानी 'साहित्य-शिरोमणि' आदि उपाधियों से विभूषित, इस समय राजस्थान अभिलेखागार, बीकानेर के पुस्तकालयाध्यक्ष पद पर आसीन है। ३९ वर्ष की कम अवस्था में ही डा० स्वामी ने, राजस्थानी, हिन्दी, संस्कृत, गुजराती और अंग्रेज़ी में पर्याप्त अधिकार प्राप्त करके, 'अलंकार पारिजात', 'जयपुरी बोलियों का व्याकरण' आदि अनेक विशिष्ट पुस्तकों का लेखन, सम्पादन और अनुवाद, तथा शोधनिबन्ध आदि को प्रस्तुत कर, राजस्थानी एवं हिन्दी की उल्लेखनीय सेवा की है। 'विद्या ददाति विनयम्', इनमें पूरी तौर पर चरितार्थ है। अति विनम्र, और विशेषकर अपने गुरुवर्य ख्यातिवान्

प्रो० नरोत्तमदासजी स्वामी के तो अनन्य भक्त है। प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुरूप आज भी विना गुरु की स्वीकृति, और अपना सारा श्रम विना गुरुवर को दिखाये, वे काम में अग्रसर नही होते; प्रस्तुत 'रुकमणी मंगळ' के मूल पाठ का सम्पादन और अनुवाद भी डा० स्वामी ने आद्योपात अपने गुरुवर्य महोदय को दिखाकर और उनकी अनुमति से ही पूर्ण किया है।

प्रो० नरोत्तमदासजी स्वामी—

ये राजस्थान के गिने-चुने प्रकाण्ड विद्वानों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। जन्मतिथि २ जनवरी १९०५ के अनुसार वे इस समय ७२ वर्ष के है। बाल्यावस्था से ही विचक्षण-बुद्धि श्री नरोत्तमदासजी, परम्परा के सस्कार से, रामचरितमानस और रामायण-भागवत आदि धर्मग्रन्थो मे अनन्य आस्था और पैठ रखते थे। हिन्दू विश्व विद्यालय से आपने संस्कृत और हिन्दी में एम० ए० परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। राजस्थान के अनेक मूर्धन्य कालेजों मे संस्कृत और हिन्दी के प्राध्यापक, एवं विभागाध्यक्ष का पद आपने सुशोभित किया। वनस्थली विद्यापीठ के ज्ञान-विज्ञान महाविद्यालय में भी हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे। अनेक वरिष्ठ सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के मानद सदस्य, मान-सम्मान एवं पदको के प्राप्तकर्ता श्री स्वामी, काशी में श्री आनन्दशंकर बापू भाई ध्रुव, श्री बटुकनाथ शर्मा, श्री बलदेव उपाध्याय, बाबू श्यामसुन्दरदास, पं० रामचन्द्र शुक्ल, लाला भगवानदीन, पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय, डा० सम्पूर्णानन्द आदि संस्कृत और हिन्दी के धुरन्धर विद्वानों के सम्पर्क में रहे। महामना पं० मदनमोहन मालवीय जी का भी स्नेह उनको प्राप्त था।

आप राजस्थानी के साथ-साथ, हिन्दी, संस्कृत, अपभ्रंश, गुजराती तथा अंग्रेजी के अच्छे ज्ञाता होते हुए, बंगला, मराठी, रूसी, जर्मन भाषाओं में भी पैठ रखते है। अनेक संस्थाओं के संस्थापक सदस्य, आजीवन सदस्य, पदाधिकारी, परीक्षक, शोधनिर्देशक तथा अनेक श्रेष्ठ ग्रन्थो और पुस्तकों के लेखक, सम्पादक होने का श्रेय आपको प्राप्त है। वे ग्रन्थ शिक्षा और शोध सम्बन्धी अपना मौलिक महत्व रखते है। हिन्दी और राजस्थानी के मर्मज्ञ विद्वान् और आलोचक श्री अक्षयचन्द्र शर्मा के लेखानुसार श्री नरोत्तमदास स्वामी राजस्थान के एक समर्थ साहित्य-साधक एवं लोक-संस्कृति के सजग दिग्पाल है।

ऐसी विभूति श्री नरोत्तमदास स्वामी का, स्थानाभाव के कारण विशद परिचय न दे सकने पर भी, पाठकों, और आनेवाली पीढ़ी की

जानकारी के लिए कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत करते हुए हम प्रस्तुत पुस्तक के अनुवादक एवं सम्पादक डॉ० सत्यनारायण स्वामी और उनके गुरुवर्य के प्रति आभार प्रदर्शन करते हैं, जिनके अनुग्रह से यह राजस्थानी कृति हिन्दी-जगत् के सम्मुख सुलभ हुई है। आपके चित्र पृष्ठ १६ पर दिये जा रहे हैं।

आभार-प्रदर्शन—

ट्रस्ट के भाषाई सेतुकरण की योजना को, उदार सदाशयों, विद्वानों, एवं उत्तरप्रदेश शासन से प्राप्त सहायता से सहारा मिलता रहा है। अन्य भाषाई ग्रन्थों के साथ, राजस्थानी 'रुकमणी मंगळ' भी अपनी सहज गति से प्रकाशित होता रहता। सौभाग्य से केन्द्रीय उपशिक्षा मंत्री माननीय श्री डी० पी० यादव, भारत सरकार के राष्ट्रभाषा सलाहकार बहुभाषा-मर्मज्ञ श्री रमाप्रसन्न नायक और शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय के शिक्षानिदेशक श्री सनत्कुमार चतुर्वेदी जी की अनुकम्पा हुई जिसके फल स्वरूप पुस्तक परिपूर्णता की ओर विशेष गति से अग्रसर हुई। हम उनके अतिशय अनुग्रहीत हैं।

रघुमल ट्रस्ट कलकत्ता—

प्रशंसित ट्रस्ट से गत वर्ष प्राप्त सहायता का सदुपयोग नेपाली की सुप्रसिद्ध भानुभक्त रामायण के प्रकाशन में हुआ था। इस वर्ष पाँच हज़ार की राशि, श्री रघुमल ट्रस्ट ने पुनः प्रदान की है। इसका बल पाकर 'राजस्थानी रुकमणी मंगळ' का प्रकाशन तत्काल भारत की जनता के सम्मुख प्रस्तुत है। हम रघुमल ट्रस्ट, कलकत्ता के सर्वश्री समस्त न्यासीगण को भुवन वाणी ट्रस्ट की ओर से आभार प्रकट करते है। आशा है भाषाई सेतुकरण के पुनीत वाणीयज्ञ में उनका अनुग्रह हमको सदैव प्राप्त होता रहेगा।

हम विश्वास के साथ निवेदन करते हैं कि भुवन वाणी ट्रस्ट की भाषाई सेतुकरण की विशाल और अद्वितीय योजना उत्तरोत्तर फलवती होकर राष्ट्रीय एकीकरण की भावना को पुष्ट करती रहेगी।

लखनऊ

२५ मार्च, १९७७

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति, भुवनवाणी ट्रस्ट, लखनऊ–३
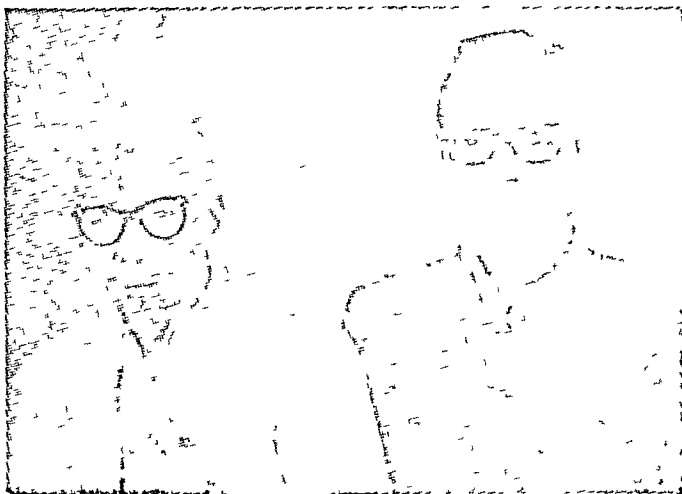
लगभग ४०० वर्ष पूर्व, पदम भगत विरचित राजस्थानी 'रुकमणी मंगळ' के विद्वान् सम्पादक एवं अनुवादक डॉ० सत्यनारायण स्वामी, एम०ए०, पीएच०डी०, एवं उनके गुरुवर्य प्रकाण्ड विद्वान् पं० नरोत्तम दास स्वामी।

पदम भगत कृत

रुकमणी-मंगळ

(हरजी रो व्यांवलो)

राजस्थानी (हिन्दी अनुवाद सहित)

हिन्दी-भाषान्तर-कार

डा० सत्यनारायण स्वामी, एम० ए०, पीएच्० डी०

राजस्थानी (देवनागरी) वर्णमाला

अ	आ	इ	ई	उ
ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ
	औ	अं	अः	
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	व़
श	ष	स	ह	ळ
क्ष	त्र	ज्ञ	ड़	ढ़
	े	ॆ	ो	ॊ

अवतरणिका

प्रस्तुत कृति 'रुकमणी-मगळ' राजस्थानी भाषा का एक मगल-काव्य है। मगल-काव्य विवाह-विषयक काव्यों की सज्ञा है। भारतीय सस्कृति मे विवाह न केवल 'काम' के अंतर्गत आता है अपितु उसका 'धर्म' मे भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इसी कारण कवियों ने भी इस आह्लादक और मागलिक विषय को लेकर अनेकानेक रचनाएँ की है। विवाह-विषयक रचनाएँ अनेक नामो से प्रचलित रही है जिनमे से मुख्य नाम ये है—मंगल; विवाहलउ (विवाहलो), विवाह; वेलि; हरण; और परिणय।

भारतीय भाषाओ मे मगलकाव्यो की लंबी परंपरा बंगला मे मिलती है। ईसा की पंद्रहवी शताब्दी के उत्तरार्ध से मालाधर वसु का 'कृष्णविजय', जो 'कृष्णमंगल' या 'गोविंदमंगल' नाम से भी प्रसिद्ध है, बंगला भाषा का प्रथम मंगलकाव्य माना जाता है। पर बगला के अधिकांश मंगलकाव्य व्रतकथाओं और चरितकाव्यो के रूप मे आये हैं जबकि हिन्दी और राजस्थानी के मंगलकाव्यो मे विवाह-वर्णन को ही प्रमुखता मिली है।

हिन्दी और राजस्थानी मे मगलकाव्यो का सर्जन १७ वी शती से आरम्भ होता है। हिन्दी मे नरहरि और नन्ददास के 'रुक्मिणी-मंगल' प्रथम मंगलकाव्य है। उसके बाद तुलसीदास की जानकी-मंगल और पार्वती-मगल रचनाएँ आती है। राजस्थानी मे भी अनेक मंगलकाव्यों की रचनाएँ हुईं। राजस्थानी मे प्रमुखतः दो प्रकार के मंगलकाव्य देखे गये है—जैन और जैनेतर। जैनेतर लोकप्रिय मंगलकाव्यों में एक नाम प्रस्तुत पदम भगत रचित 'रुकमणी-मंगळ' का भी आता है। इसे 'किसनजी रो व्यावलो' या 'हरजी रो व्यांवलो' भी कहते हैं।

कृष्ण और रुक्मिणी के विवाह से संबधित राजस्थानी काव्यो की सख्या बहुत बड़ी है, पर महाकवि पृथ्वीराज राठोड़, जिन्होंने अपनी कलम के जादू से महाराणा प्रताप को मुगल सम्राट् अकबर की अधीनता स्वीकार करने से विरत किया था, ऐसी रचनाओ के आदि-प्रवर्तक माने जा सकते हैं। उनका 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' वेलिओ छन्द मे रचा होने से प्रसिद्ध तो वेलि-सज्ञक काव्यों मे ही हुआ, पर विषय-वस्तु की दृष्टि से उसे कृष्ण-रुक्मिणी-विवाह संबंधी काव्यों का मुकुटमणि कहा जा सकता है। भाव और भाषा दोनों ही दृष्टियो से उक्त काव्य बेजोड़ ठहरता है। यहाँ पदम भगत का 'रुकमणी-मगळ' हमारा प्रतिपाद्य है।

राजस्थान में इस काव्य ने लोककठ पर बहुत बड़ा अधिकार कर रखा है। खेद है इसके रचयिता के बारे मे, इसकी इतनी ख्याति होते हुए भी, कुछ भी ज्ञात नही

है। काव्य मे एकाध स्थानो पर 'वैस पदम' अथवा 'पदमइयो तेली' शब्द आते है। अनुमान किया गया है कि पदम या तो जाति के तेली थे या तेल का व्यापार करनेवाले वैश्य।

राजस्थानी जनता इस काव्य को बड़ी रुचि से गाती और सुनती आयी है। आज भी इस व्यस्त जीवन मे कभी-कभी, कही-कही लोग इसकी रसमाधुरी का आनन्द लेते दिखायी पड़ते है। जिस प्रकार श्रीमद्‌भागवत महापुराण के विधिपूर्वक वाचन-श्रवण का एक सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है उसी प्रकार 'व्यांवळे' का भी आयोजन होता है। इसके लिए पूरी मंडली होती है जिसमे एक प्रधान गायक होता है। मंडली के इतर लोगो में कोई ढोलक बजाता है कोई मंजीरे, कोई सारंगी बजाता है तो कोई करताल; ये लोग प्रमुख गायक के गाने मे भी सहयोग देते हैं। कथा की समाप्ति पर, नित्य ही और विशेषत: अंतिम दिन, जनता अपनी श्रद्धा के अनुसार अन्न, वस्त्र और धन आदि का चढ़ावा चढाती है तथा दूसरे दिन गायकों को भोजन कराया जाता है।

पदम भगत के 'रुकमणी-मगळ' का रचनाकाल विक्रम की सत्रहवी शताब्दी के पूर्व का होना चाहिए। राजस्थानी के ख्यातिप्राप्त शोधविद्वान् श्री अगरचन्द नाहटा के सग्रह मे इसकी सवत् १६६९ की लिखी हस्तलिखित प्रति उपलब्ध है जो इस ग्रथ की उपलब्ध प्राचीनतम प्रति है। काव्य की और भी प्रतियाँ स्थान-स्थान पर हस्त-लिखित सग्रहो मे मिलती है पर उनमे परस्पर बहुत विभेद है। परिमाण में भी बहुत अंतर है। बोलचाल की भाषा मे होने के कारण इस काव्य की जनता मे बहुत प्रसिद्धि हुई। उसने लोककाव्य का रूप धारण किया। वह मंडलियों द्वारा गाया जाने लगा। उसके लोक-प्रचलित रूप मे परिवर्तन होने लगा। धीरे-धीरे वह बिखर गया। तब उत्साही सग्राहकों ने बिखरे हुअे काव्य का सग्रह करने का प्रयत्न किया। जिसको जितना अश प्राप्त हुआ उसने उतना अंश सग्रह किया। इस प्रकार काव्य के छोटे-बडे अनेक रूप हस्तलिखित प्रतियो मे मिलते है। उत्साही सग्राहक श्री शिवकरण दरक और उनके पुत्र रामरतन दरक ने इसका सग्रह करके और त्रुटित अश की पूर्ति करके इसको बहुत वर्ष पूर्व मुद्रित करवा दिया। इस मुद्रित रूप की साधारण जनता मे बहुत प्रसिद्धि हुई।

प्रस्तुत काव्य एक लोककाव्य है। इसकी कथा तो शानदार है ही किन्तु इसकी मुख्य विशेषता है इसमे चित्रित राजस्थानी जीवन। इसमें राजस्थानी सामान्य जनता के जिस सरस और सरल जीवन का चित्रण हुआ है वह अनुपम है। मार्मिक स्थलों को तो इसमे सरल अभिव्यक्ति मिली ही है साथ ही राजस्थान की सास्कृतिक परम्पराओ का चित्राकन भी इसमे मिलता है। विवाह-सम्बन्धी सभी रीति-नीतियो का, विधिविधानो का, इसमे निदर्शन मिलता है।

राजस्थानी के इस सुप्रसिद्ध लोक-काव्य को हिन्दी-ससार के सम्मुख रखते हुए मुझे वड़ी प्रसन्नता है। काव्य का मूलपाठ मेरे विद्यागुरु श्रद्धेय प० नरोत्तमदासजी स्वामी द्वारा सपादित प्रति से लिया गया है जिसका उन्होने एक हस्तलिखित प्रति के आधार पर सपादन किया था। उनके पिता प्रसिद्ध कथावाचक पं० जयश्रीरामजी स्वामी अपनी मंडली के साथ इस 'रुकमणी-मगळ' की कथा किया करते थे जिसमें अपने बाल्यकाल मे वे भी संमिलित हुआ करते थे। 'वाणी सरोवर' के विद्वान् संपादक श्रीयुत नन्दकुमारजी अवस्थी के राजस्थानी-अनुराग ने प्रेरित किया कि 'वाणी-सरोवर' की नीति के अनुसार इस कृति को संपादित कर प्रकाशित किया जाय। पूज्य स्वामीजी ने अपनी सपादित प्रेसकापी सहर्ष मुझे इस काम के लिए प्रदान कर दी। उसी प्रति के मूलपाठ को अर्थसहित पाठको की सेवा मे प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठ के अर्थ लिखने मे जहाँ भी असुविधा अथवा संदिग्धता रही है वहाँ पूज्य स्वामीजी से यथेष्ट सहायता मिली है। ऐसे में, उनकी ही कृति के लिए उनके प्रति कितना आभार व्यक्त करूँ? सूत्रधार के बिना सूत्र का क्या प्रयोजन? ऐसे ही अनौपचारिक आभार-प्रदर्शन के दो पात्र और है—श्रद्धेय प्रोफेसर गजानन नरसिह साठे और श्री नन्दकुमार अवस्थी, जिन्होने अपनी प्रेरणा से मुझे यह अनुवाद प्रस्तुत करने को वाध्य ही कर दिया। मै हृदय की सपूर्ण श्रद्धा से इस त्रिमूर्ति को प्रणाम करता हुआ विज्ञ पाठको के समुख सहर्ष यह कृति प्रस्तुत कर रहा हूँ।

भ्रातृ-द्वितीया, २०३१ वि०, १९ नवंबर, १९७४
जस्सूसर दरवाज़े के भीतर, बीकानेर (राजस्थान) —सत्यनारायण स्वामी

* श्रीगणेशाय नम *

रुकमणी-मंगळ

१—वंदना

गणेश-वंदना

दोहा— गव़रीनंदन वीनवां सुरपत सुरत सुजाण
किसन तणो रे विव़ाहलो रिद्ध सिद्ध परमाण

मारू— रिद्ध सिद्ध परवाण भणीजै किसन तणो रे विवाहो
सूंडाडंवर कर धर फरसी लाला लोचन वारो

थूहळ गात ठमक्कै चालै सिर सोहदो भारो
गवरीनंदन विघन-विहंडन दुख-खंडन सुख-सारो

दांतूसळ मुख दिनकर झिलकै उर पर वासग-हारो
पहली वेद-पुराण-अगोचर वरणीजै जस थारो

मूसां-वाहण कर-धर-फरसी पहली पूज़ा तेरी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं आसा पुरवो मेरी

सरस्वती-वंदना

दोहा— ब्रह्मसुता दे वीनवां सुरसुति हंसारूढ
वाणी माता वेग दयो मो मति माया-मूढ

मारू— वाणी माता वेग करौ नै मुख मंडण व्याकरणी
अेकै कर धर वीणा सोहै दूजै पुस्तक धरणी

तीजै अमी-कमंडळ झिलकै चौथै सोहै थाळो
आदि मध्य अवसान भवानी सेवक नै प्रतिपाळो

छंद पिगळा भेव न जाणू ना जाणू व्याकरणी
केवळ भगति करूं केसव की कळि-मल मिथ्या हरणी

कासमीर मुख मंडण देवी दुख-हरणी सुख-दाता
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वर दयो जळदी माता

* श्रीगणेशाय नमः *

रुक्मिणी-मंगल

१—वंदना

गणेश-वंदना

हम गौरी के पुत्र की विनती करते है जो देवों के पति और स्मृति और ज्ञान के निधान है। हम श्रीकृष्ण के विवाह की कथा का गान करने जा रहे है। ऋद्धि और सिद्धि इसमे प्रमाण है।

ऋद्धि और सिद्धि इसमें प्रमाण है। यह श्रीकृष्ण के विवाह की कथा कही जा रही है। गणेश आडंबर (विशाल और सुन्दर) सूंडवाले हैं, उन्होंने हाथ में परशु धारण कर रखा है; उनकी आँखें रतनारी है। उनका शरीर स्थूल है। वे ठुमककर चलते है। उनका सिर विशाल और शोभायमान है। वे गिरिजा के पुत्र विघ्नों का नाश करते है, संकटों का नाश करते हैं और सुखों के सार है। उनके मुख में शल्य के समान दत सूरज की तरह जगमगाता है, हृदय पर वासुकी नाग का हार है। हे गणेशजी ! सर्वप्रथम आपका वेद और पुराणो के लिए भी अगम्य यश गाया जाता है। हे मूषकवाहन ! हाथ में परशु धारण करनेवाले गणेशजी ! सबसे पहले आपकी पूजा होती है। पदम भगत कहता है कि मै झुककर आपके पैरो लगता हूँ। आप मेरी आशा पूरी कीजिये।

सरस्वती-वंदना

ब्रह्मा की पुत्री देवी हसासिनी सरस्वती की विनती करते है। हे माता ! मुझे शीघ्रता से वाणी (बोलने की = काव्य करने की शक्ति) दीजिये, मेरी बुद्धि माया से मूढ़ हो रही है।

हे माता ! शीघ्र वाणी दो और मुख को शोभित करनेवाला व्याकरण का ज्ञान दो। आपके एक हाथ मे वीणा सुशोभित हो रही है और दूसरे में (आप) पुस्तक धारण करती है। तीसरे हाथ मे अमृत का कमंडलु जगमगा रहा है और चौथे में मांगलिक थाल शोभायमान है। हे इस जगत् का आदि, मध्य और अन्त करनेवाली भवानी ! अपने इस सेवक की पालना करो। मै न तो छंद-पिंगल का रहस्य जानता हूँ और न व्याकरण ही जानता हूँ। मै तो केवल कलियुग के मलो और मिथ्या का नाश करनेवाली केशव की भक्ति करता हूँ। हे कश्मीर की निवासिनी मुख को शोभित करनेवाली देवी ! हे दुख का नाश करनेवाली और सुख को देनेवाली ! पदम भगत कहता है कि मै झुककर (तुम्हारे) पैरों पड़ता हूँ। मुझे वर दो।

देवी-वंदना

दोहा— जै माता ज्वाळामुखी जै-जै जगत करी
सुभ दे अपणे वचन सें तुम सें काज सरी

पहलै ध्यायी पंडवां अरजन छोटै भींव
नगरकोट नागर रच्या उंडी दिवायी नींव

तुम गुण विद्या सरसुती जाचण नै सब कोइ
यो वर दीजै पदम नै आणंद मंगळ होइ

देव-वंदना

दोहा— सुर तेतीसूं वीनवां ब्रह्मा विष्णु महेस
जटाजूट गंगा वहै कंठ विराजै सेस

मारू— ब्रह्मा च्यार वेद रो नायक भूलां नै समझावै
चित दै सुणै कृष्ण रो मंगळ भुगत मुगत फळ पावै

मंगळ सुण्यां महासुख उपजै मन इंछाफळ पावै
काया कस्ट कदे नहिं व्यापै जन पदमइयो गावै

ब्रह्मा-वंदना

दोहा— ब्रह्माजी कूं सिंवरियै जळ थळ कियो विचार
च्यार वेद चवदा भुवन सब मिल सिरजणहार

मारू— च्यार वेद अर चवदा भुवन में सब मिल सिरजणहारो
नारद इदर सनक सनंदन संकर सेस पियारो

चवदा इंद्र राज सब करिहै दिन ब्रह्मा को सारो
व्रध्ध उमर ब्रह्मा वण बैठो पहर संकर को न्यारो

ब्रह्मा भवन तीन रो नायक अग्या सब वरतावै
हिरदै धर कै सुणै जों मंगळ भगति-मुगति फळ पावै

मंगळ सुण्या भगति हिय आवै प्रभु को दास कहावै
काया न्रिमळ सहज होय जावै पदमइयो जस गावै

देवी-वंदना

हे माता ज्वालामुखी ! आपकी जय हो। समस्त संसार ने आपका जयजयकार किया है। अपने वचन द्वारा मुझे वर दो, तुमसे ही काम सिद्ध होता है। पहले पांडवों ने तुम्हारा ध्यान किया था—छोटे अर्जुन ने और भीम ने। उन चतुर पांडवों ने नगरकोट के नगर की रचना की और उसकी गहरी नींव डलवायी। हे माता ! आप विद्या और गुण की दात्री सरस्वती हो, सब लोग आप से याचना करते है। पदम भगत को यह वरदान दीजिये कि जिससे सदा आनंद और मंगल हो (पाठान्तर—रुक्मिणी-मंगल पूर्ण हो जाय)।

देव-वंदना

हम तेतीसो (कोटि) देवताओं की विनती करते हैं। हम ब्रह्मा, विष्णु और महेश की वंदना करते है—महेश, जिनकी जटा मे गंगा बहती है और जिनके कंठ में शेषनाग विराजता है।

ब्रह्माजी चारों वेदों के अधिपति हैं। वे भूले हुओं को मार्ग समझाते है। जो कोई चित्त देकर कृष्णजी के इस मगल (विवाह की कथा) को सुनता है, वह भुक्ति (= भोग) और मुक्ति दोनों फल पाता है। इस 'मंगल' को सुनने से महान् सुख की प्राप्ति होती है, मनवांछित फल मिलता है और कायिक कष्ट कभी नही होते। ऐसा पदम भगत कहता है।

ब्रह्मा-वंदना

ब्रह्माजी का स्मरण करना चाहिये जिन्होंने जल और थल का विभाग किया और जो चार वेद और चौदह लोक—सब का सर्जन करनेवाले है।

ब्रह्मा, चार वेद और चौदह लोको मे जो कुछ है उसका सर्जनहार है। वे नारद, इन्द्र, सनक, सनंदन, शकर और शेषनाग के प्रिय है। सब मिलाकर चौदह इन्द्र (= मनु) राज्य करेगे तब ब्रह्मा का दिन संपूर्ण होगा। ब्रह्मा वृद्ध बन कर बैठ गये है, अब शंकर का प्रहर है। ब्रह्मा तीनों लोकों के नायक हैं। सब उनकी आज्ञा का पालन करते हैं। जो इस 'मंगल' को हृदय मे धर कर सुनते हैं वे भक्ति और मुक्ति-रूप फल को पाते है। इस 'मंगल' का श्रवण करने से हृदय मे भक्ति उत्पन्न होती है। इसका सुननेवाला प्रभु का दास कहलाता है, उसका शरीर सहज ही निर्मल हो जाता है। पदम भगत इस प्रकार यशगान करता है।

विष्णु-वंदना

दोहा— परमेस्वर कूं वीनवां श्रीपत अलख अभेव
तीनूं लोक उपाइया भवन चतुरदस देव

मारू— भवन चतुरदस देव दामोदर जळ-थळ जीव उपाया
दस अवतार धरया अविनासी आप गरभ नहिं आया
जोंइ जोंइ रूप धरया नारायण सोंइ सोंइ परगट जाण्यो
कृष्ण कोप सिसपाळ संघारयो रुकमण व्यांव वखाण्यो
व्यांव तणी म्रदु वाणी बोलां राग-रंग सुर गावां
चंदण चरच चतरभुज पूजां पद परमेसर ध्यावां
पदम भणै प्रणवै पाय लागू रुकमण-मंगळ गावां

शिव-वंदना

दोहा— गवरीपत नू वीनवां नांदेसर असवार
जटाजूट गंगा वहै कठ भुजंगां हार

मारू— गवरि-गंग को कंथ भणीजै हंसि हंसि वचन उचारै
जटा मुगट सिर गंग खळहळै खग असुरां सिर डारै
माथै सेली गळै रुंडमाळा कर में डमरू राजै
भांग धतूरो विखम अहारी कंथ-गवरि नै छाजै
उडगण-पत जा कै सीस विराजै सुरत विचारै जोई
पूरण ब्रह्म पदम का स्वामी पारबती-पत सोई

गुरु-वंदना

दोहा— परम पुरस गुरदेव जी रहो कृपाळ सहाय
जा दिन कर मस्तक धरयो भाग ज प्रगटयो आय

मारू— कंठी तिलक ज वण्यो ह्रिदा में मन आयो विसवासा
जद थां कृपा करी स्वामीजी! कट गयी जम की पासा
जम री पास सही जू काटी सरण आप रै आयो
जद थां कृपा करी स्वामीजी तब गुरु नाम सुणायो
दुख-खंडण सुखदायक स्वामी तुम गुरु दीनदयाळा
दास पदम पर किरपा कीज्यो अंतर हुवै उजाळा

विष्णु-वंदना

हम परमेश्वर की विनती करते है जो लक्ष्मी के पति है, जिनको देखा नही जा सकता और जिनके रहस्य को जाना नही जा सकता। उन देव ने तीनों लोकों और चौदह भुवनों की उत्पत्ति की।

उन दामोदर देव ने चौदह भुवनों की, और जल और स्थल के जीवों की रचना की। अविनाशी उन्होंने दस अवतार लिये किन्तु स्वय माँ के गर्भ में एक बार भी नही आये। नारायण ने जो-जो रूप धारण किये उन सब का प्रभाव प्रकट है। कृष्ण-रूप में कुपित होकर शिशुपाल का संहार किया और रुक्मिणी से विवाह किया। मैं विवाह की इस मगल-कथा को मृदुवाणी में कहता हूँ और विभिन्न राग-रागिनियों में गाता हूँ। चन्दन चढ़ा कर चतुर्भुजा वाले भगवान् की पूजा करते है और परमेश्वर के चरणों का ध्यान करते है। पदम भगत कहता है कि मैं नमन करके पैरों लगता हूँ। मै रुक्मिणी-मंगल का गान करता हूँ।

शिव-वंदना

हम गौरी के पति की विनती करते है जो नंदी के असवार है, जिनकी जटाओं के समूह से गंगाजी बहती है और गले में सर्पो का हार है।

वे गौरी और गंगा के पति कहे जाते हैं। वे हँस-हँस कर वचन बोलते है। उनके सिर पर जटाओं का मुकुट है जिनमें गंगा कलकल करती बहती है। आपके सिर पर सेली (योगियों के सिर पर बँधनेवाली बद्धी) है, गले में मुडमाला है और हाथ में डमरू बजता है। उन गौरी-पति को भांग, धतूरा और विष जैसी विषम वस्तुओं का आहार शोभा देता है। तारों का पति चंद्रमा उनके मस्तक पर विराजता है। वे पूर्ण ब्रह्म पार्वती के पति ही पदम के स्वामी है।

गुरु-वंदना

हे परम पुरुष गुरुदेव! आप मुझ पर कृपालु और सहायक रहिये। जिस दिन आपने मेरे सिर हाथ रखा उसी दिन मेरा सौभाग्य प्रगट हो गया।

मैने हृदय पर कंठी और तिलक धारण किया। मेरे मन में विश्वास उत्पन्न हुआ। हे स्वामी! जब आपने कृपा की तो यम का पाश कट गया। जब मैं आपकी शरण मे आया तो आपने यम का पाश निश्चय ही काट दिया। हे स्वामी! जब आपने कृपा की तब मुझे 'गुरुनाम' सुनाया। हे स्वामी! आप दु:खों का नाश करनेवाले और सुखों के दाता हैं, आप दीनों पर दया करनेवाले गुरु है। आप अपने इस दास पदम भगत पर कृपा कीजिये जिससे उसके हृदय में ज्ञान का उजाला हो जाय।

पदम भगत को कृष्ण की आज्ञा

मारू— गवरीनद गणेस मनाऊं सब कूं सीस निवाऊं
सुर तेतीसू अग्या दीज्यो रुकमण - मंगळ गाऊं
कृष्ण-रुकमणी अग्या दीनी निकट हजूर बुलायो
नंदकंवर राधावरजू को पदमइयै जस गायो

दोहा— मारू देस उपन्निया नड ज्यू नीसरियाह
कड़वा कदे न बोलही मीठा बोलणियाह
याद कियो हर पदम नै लियो हजूर बुलाय
अग्या दीनी पदम नै पीतांबर पहराय
रुकमण-मंगळ गांवतां हुवै पवित्तर ग्राम
काया रा तो क्रम कटै होय पवित्तर धाम
नर नारी मंगळ सुणै हर-चरणां चित लाय
नारी अमरापुर वसै नर वैकुंठां जाय
विवाहलो भागीरथी श्री भागवत पुराण
बोलै राणी रुकमणी सुणिहो भगत सुजाण
कूड़ मती नां भाखियौ कथियौ जो परवाण
या कीरत श्रीकृष्ण री समझ'र करो वखाण
मैं म्हारी बुध सू करूं लीज्यो स्याम सुधार
पदम भणै प्रणमूं सदा भगतां रा आधार

२—प्रस्तावना

राजा भीष्मक

दोहा— विद्रम देस सुहावणो राजा भीव नरेस
गढ चौरासी गंजणा सहस पच्याणव देस

मारू— सहस पच्याणव देस भणीजै पांच पुत्र अेक राजा
जिण मे छठी रुकमणी कन्या लछमी आप विराजा
गळी-गळी में नारेळ-केळा बाग रह्या चहुं छायी
कुन्नणपुर की सुंदर सोभा जलमी रुकमण - बाई
हगमग रहै इधक चतुराई पुरखन बाळ - गोपाळा
लछमी मंदिर वसै सबही कै ब्रामण किया निहाला

पदम भगत को कृष्ण की आज्ञा

अब मैं गौरीनंदन गणेशजी को मनाता हूँ और सबको शीश नवाता हूँ। हे तेतीसों (कोटि) देवताओ! आप अनुमति दीजिये, मै 'रुक्मिणी-मंगल' गा रहा हूँ। श्रीकृष्ण और रुक्मिणी ने आज्ञा दी और अपने पास सेवा में बुलाया। पदम भगत ने नंद के कुमार और राधा के वर श्रीकृष्ण के यश का गान किया।

मारवाड़ देश मे जनमे लोग नरकुल की भाँति निकलते है (बढ़ते है)—वे लंबे और पतले होते है। वे कभी कड़वे नहीं बोलते, वे मीठे बोलनेवाले होते है। भगवान् श्रीकृष्ण ने पदम भगत को याद किया और अपनी सेवा में बुला लिया। फिर पीतांबर पहनाकर उसे आज्ञा दी। 'रुक्मिणी-मंगल' को गाने से गाँव पवित्र हो जाता है, देह के सारे कर्म कट जाते है और घर पवित्र हो जाता है। हरि के चरणों में चित्त लगाकर यदि नर और नारी इस 'मंगल' को सुनते है तो नारी स्वर्ग मे वास करती है और नर वैकुंठ को जाता है। यह विवाह-गाथा गंगा और भागवतपुराण के समान है। रानी रुक्मिणी कहती है—हे चतुर भक्त! सुनो, झूठ मत कहना, जो बातें प्रामाणिक है उन्हें ही कहना। श्रीकृष्ण की इस कीर्ति को समझ कर वर्णन करो। मैं अपनी बुद्धि के अनुसार इस काव्य की रचना कर रहा हूँ। हे श्याम! आप इसे सुधार लें। पदम भगत कहता है कि हे भक्तों के आधार! मै सदैव आपको नमन करता हूँ।

२—प्रस्तावना

राजा भीष्मक

विदर्भ नाम का सुहावना देश था। वहाँ राजा भीव (भीष्मक) राजा थे (राज्य करते थे)। वे चौरासी दुर्गों के विजेता थे। वह देश पचानबे सहस्र की आमदनीवाला था (अथवा, उसके अधिकार में ९५ हजार ग्राम थे)।

वह देश पचानबे सहस्र गाँवोंवाला कहा जाता था। उस राजा के पाँच पुत्र थे, उनमे छठी संतान रुक्मिणी थी जो मानो स्वयं लक्ष्मी विराजती थी। कुंदनपुर की शोभा रमणीय थी। गली-गली में नारियलों और केलों के वृक्ष थे। चारों ओर बाग-बगीचे छाये हुए थे। वहाँ रुक्मिणी का जन्म हुआ। वहाँ सदा आनंदोत्सव रहते थे। वहाँ के पुरुष और बालगोपाल अत्यधिक चतुराई से संपन्न थे। सबके भवन में लक्ष्मी बसती थी। ब्राह्मणों को निहाल किया जाता था।

इधक-इधक सुंदर चतराई घोड़ा गिणत न लेखा
कुंदणपुर - सिणगार - ओपमा गावै पदमं विसेखा

नारद-आगमन

छंद— अेक समै नारद गुसांई भवन भीसम के गये
कर जोड़ राजा भीव ठाढो— मुनी, क्यूं आवत किये ?
आरती बहु भांत कीनी जोड़ कर पूजा करी
ताहि दिन राजा स भीसम आसिका मांगी खरी
रुकमणी की माय बोलै— पुत्रि ! चरणां लाग री
मन-भावता वर देय नारद पूर्ण प्रगटे भाग रीं
सोच कर कछु हरख मन में जोड़ कर ठाढी भयी
किसन वर तो कू वरै या आसिका नारद दयी
रुकमणी वर देय नारद आप मुनि वन कू गये
ताहि दिन तें हरि मिलण के रुकमणी बहु व्रत किये
रुकमणी मन में ठयी श्री किसन वर मोकूं वरै
दास पदम की वीनती जू अंबिका हरि वर मिलै

दोहा— राव रणवास पधारिया मिली सहेली द्वार
किण री बाई डीकरी किण री राजकंवार
सखी भणै, सुण राजवी राजा भींव भुवाळ
या छै बाई रुकमणी भीव-घरां अवतार
जद राजा सांसो कियो चिंता बोत कराय
धिरक हमारो जीवणो जलम अकारथ जाय
बाई रुकमण कारणै राजा जोवै वींद
पळ-पळ देखत तन घटै नैणां नावै नींद

मारू— नैणां नींद पलक नहि झंपै चितवत रैण विहाव
चंद्रवदन चूड़ामण कारण सुरत सांवरो आवै
असुरां में नातो मत कीज्यो बै तो है सब झूठा
मथरा मल्ल अखाड़ै जीत्या देव दुवारका दीठा
वसदेव-नंदन असुर-निकंदन तीन लोक को सांई
राजा वींद विसंभर हेरचो चूड़ामण कै तांई
द्वारामति सू किसन पधारै तीन लोक को राजा
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं सरै हमारा कांजा

सब लोग अधिकाधिक सुंदर और चतुरतावाले थे। वहाँ घोड़ों की गिनती का कोई हिसाब नहीं था। पदम भगत कुदनपुर के श्रृंगार की विशिष्ट शोभा का गान करता है।

नारद-आगमन

एक बार गोस्वामी नारद भीष्मक के भवन पर पहुँचे। राजा भीष्मक हाथ जोड़कर खड़े हुए और पूछा—मुनिवर! आपका शुभागमन कैसे हुआ? उस दिन राजा भीष्मक ने हाथ जोड़कर उनकी पूजा की, तथा अनेक प्रकार आरती की और तब उनसे आशीर्वाद मांगा। रुक्मिणी की माँ ने कहा—वेटी! चरणस्पर्श करो। हमारे पूर्ण सौभाग्य का उदय हुआ है। ये नारद मुनि अनचाहा वर देते है। रुक्मिणी मन में कुछ सोचकर और हर्षित हो हाथ जोड़कर नारदजी के सामने खड़ी हुई। तब नारद ने आशीर्वाद दिया—श्रीकृष्ण वर तुम्हारा वरण करे। रुक्मिणी को वर देकर नारदजी स्वयं वन को चले गये। रुक्मिणी ने उसी दिन से कृष्ण से मिलने के लिए अनेक व्रत करने प्रारम्भ कर दिये। रुक्मिणी ने मन में निश्चय किया कि श्रीकृष्ण वर मुझे ब्याहे। पदम भगत विनती करता है कि अंबिका के मंदिर में रुक्मिणी को भगवान् वर के रूप में मिले।

(एक वार) राजा रनिवास में पधारे तो द्वार पर सहेली मिली। राजा ने पूछा—यह कुमारी किसकी पुत्री है, किसकी राजकुमारी है? सखी ने उत्तर दिया—हे राजा! सुनिये। यह कन्या कुमारी रुक्मिणी है। इसने राजा भीष्मक के घर जन्म लिया है। तब राजा ने चिंता की। उन्हे वड़ी चिता हुई—हमारे जीवन को धिक्कार है, हमारा जन्म ही व्यर्थ जा रहा है। पुत्री रुक्मिणी के लिए राजा वर देखने लगे। उसे देखकर पल-पल शरीर छीजने लगता है और आँखो में नीद नही आती।

राजा की आँखे नीद से पल भर भी नही झपकती थी। देखते-देखते ही उनकी रात बीतती थी। चन्द्रवदनी और चूड़ामणि पुत्री के लिए वर रूप मे श्यामसुन्दर कृष्ण उनकी स्मृति में आये। उन्होंने निश्चय कर लिया कि असुरो के साथ सबध नही करना। वे सब झूठे है। मथुरा के असुर पहलवानों को कृष्ण ने अखाड़े मे जीता; वे कृष्ण अब द्वारका मे विराजमान है। राजा ने चूड़ामणि जैसी रुक्मिणी के लिए वर-रूप मे वसुदेवनदन, असुरों का नाश करनेवाले, तीनो लोको के स्वामी विश्वभर को देखा। तीनो लोको के राजा वे कृष्ण द्वारका से पधारे तो, पदम भगत नमनपूर्वक पैरो में पड़ता है, हमारे काम सिद्ध हो।

दोहा— भीसम-सुता जनम्मिया कृष्ण समर्पणियां
कहत-सुणत पातक कटै मंगळ रुकमणियां
चद्रवदन चूड़ामणी भींव घरे अवतार
बंधू रुकमइयो भलो मंत्रि-सिरोमणि सार

विवाह का परामर्श

मारू— राजा भींव कंवर रुकमइयो मंत्र करेवा बैठा
इण कन्या नै जो वर जुगता सो वर किण नहिं दीठा
रुकमइयो भणै सुणो राजाजी थे तो सगळी जाणो
म्हां नै तो बाळक-बुध आवै पिछली तुमहि पिछाणो
राजा भणै, सुणो रुकमइया वर वनमाळी जाणो
छपन कोट जदुवन को राजा वंस विसुध्ध वखाणो
त्रिभुवन में, सुण लेव़, सांवरै सरवर कोइ न दीठा
राजा भीव कंवर रुकमइयो मंत्र करेव़ा बैठा

दोहा— कंवर कनोधर यूं भणै टीकम अहड़ो जाण
गोकळ गऊ चरांवतो भलो सरायो कान्ह

मारू— व्रद्रावन में गऊ चराव़ै भिड़व़ाळयां रै साथै
वसी वजावै कामण मोवै जीमै उण रै हाथै
परनारी रै पल्लै झूमै मांगै दान मही को
तुम जो कहौ त्रिभुवन को राजा चोथो खंड अही को
छत्री कुळ की करो वरावर वो भिड़वाळयो जाणो
जिण का कुळ की लज्या आवै तिण कूं किसो वखाणो ?
दरसण काळो, वोलै कूड़ो तन मधरो, अभिमानो
पदम भणै प्रणवै पाय लागू भलो सरायो कानो

दोहा— भीव भणै, सुत माहरा थे छो मूढ-गिंवार
बीजां रै भुज दोय छै हरजी रै भुज च्यार

मारू— चत्रभुज नै च्यारूं भुज सोहै गरुड़ासण गोविंदो
ब्रह्मादिक सनकादिक थरप्या अह-निस सूरज चंदो
वासक कै सिर धरणी थरपी जळ पाताळ चलायो
नीचै जळ कू ऊपर ल्याया विच में मुलक वसायो

रुक्मिणी भीष्मक की पुत्री के रूप में जनमी और श्रीकृष्ण को ब्याही गई। 'रुक्मिणी-मंगल' की इस कथा को कहने और सुनने से पाप कट जाते है। चन्द्रमुखी चूड़ामणि रुक्मिणी ने भीष्मक के घर में जनम लिया। उसके रुकमइया नाम का श्रेष्ठ भाई था जो मंत्रियों में शिरोमणि था।

विवाह का परामर्श

राजा भीष्मक और राजकुमार रुकमइया दोनों मंत्रणा करने बैठे—जो वर इस कन्या के योग्य है वह वर किसी ने नहीं देखा। रुकमइये ने कहा—सुनिये राजन्! आप तो सब जानते है। मैं तो बालक-बुद्धि हूँ, पीछे की बाते आप ही जानते हैं। राजा ने कहा—हे रुकमइये, सुनो। वनमाली कृष्ण को रुक्मिणी का वर समझो। वे छप्पन करोड़ यादवों के राजा है। उनका वंश विशुद्ध है। सुन लो, तीनों लोकों में कृष्ण के सदृश वर कोई नहीं देखा। राजा भीष्मक और राजकुमार रुकमइया दोनों मंत्रणा करने बैठे।

राजकुमार ने प्रत्युत्तर में उत्तर दिया—कृष्ण को ऐसा (ऐसा-वैसा ही) समझो। गोकुल में गायें चरानेवाले कृष्ण की आपने भली सराहना की!

कृष्ण वृंदावन में ग्वालों के साथ गाये चराता है, बंशी बजाता है, कामिनियों को मोहता है और उनके साथ भोजन करता है। आप जिसे त्रिभुवन का राजा कहते हैं वह परस्त्रियों के पीछे डोलता रहता है और दही का दान मागा करता है। आप उसकी बराबरी क्षत्रिय-कुल से करते हैं! वह तो ग्वाला है। जिसके कुल का नाम लेते ही लज्जा आती है उसका आप क्या बखान करते है? वह कृष्ण देखने में काला है, झूठ बोलता है। वह नाटे कद का है, और अभिमानी है। पदम भगत कहता है—मै प्रणाम करके चरणों में गिरता हूँ—आपने उस कृष्ण को भला सराहा!

भीष्मक कहता है—हे मेरे बेटे! तुम मूर्ख हो। औरों के दो भुजाएँ है, पर श्रीकृष्ण के चार भुजाएँ है।

उन चतुर्भुज के चार भुजाएँ शोभा देती है। उन गोविंद के गरुड़ की सवारी है। उन्होंने ब्रह्मादिक देवताओं का और सनक आदि ऋषियों का तथा रात और दिन का और सूरज तथा चंद्रमा का निर्माण किया है। उन्होंने वासुकि नाग के सिर पर पृथ्वी को स्थापित किया, जल को पाताल में भेज दिया। वे नीचे के जल को ऊपर लाये और बीच में बस्ती को बसाया। इस मर्यादा को स्वयं कृष्ण ने बांधा। उनकी आज्ञा से सब

या मरजाद आप हरि बांधी हुकमां काम चलायो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं विण थंभां नभ छायो

दोहा— कंवर भणै, सुण राजवी सांभळ भींव भुवाळ
पूरब देस रौ नरपती वर वरसां सिसपाळ

मारू— दम्मघोस राजा रो नंदन धन रो वार न पारो
सिव-किरपा सूं लिछमी पायी सोहै राज - दवारो
भंडारी - कोठारी सोहै हसती - तुरग अपारो
आप थकां इधको वर लीजै अड़वड़ियां आधारो
सबळां सेती सगपण कीजै पाणी पहली पाजौ
कंवर भणै, थे सुणो राजवी ग्वाळचां सूं नहि लाजौ
दम्मघोस रो पुत्र भणीजै इसो बळी अक दानो
जिण संग चढै पिच्याणव खोहण रूड़ी बांरी जानो
जिण संग चढै निन्याणव राजा पूरब तणो नरेसा
पहली तो सब जादू जीत्या खोस लिया सब देसा
समद तणै जाय सरणै बैठो नगर वसायो मांही
भय करतो बाहर नहिं आवै मानूं मिल गयी छांही
काळजमन रै आगै भागो थां सूं किसोक छानो
पदम भणै, रुकमइयो भाखै भलो सरायो कान्हो

दोहा— भीव भणै, सुत माहरा तैं कहि निपट अयान
नख पर गिरवर धारियो कुबज्या राख्यो मान
सीता री बाहर चढ्यो सायर बांधी पाज
धनस-बाण कर धार कै देव सुधारण काज

मारू— सायर पाज सही कर बांधी वानर - रींछ मिलाया
कुंभकरण-महारावण मारचा आगे असुर संताया
रावण रूप देख सीता को असुर कुबुध - बुध आयी
रावण रा दस मसतक छेदचा बंद तेंतीस छुडायी
भभीखण नै राजतिलक दियौ कनकमाळ पहरायी
जानकी लेय अजोध्या आया घर - घर वंटी वधाई
रघुवर हुवा अवतार निरमळा साख वेद में गायी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं सोंइ अब जादूराई

कामों का संचालन होता है। पदम भगत प्रणाम करके पैरों पड़ता है और कहता है कि बिना खंभों के आकाश को खड़ा कर दिया।

राजकुमार ने कहा—हे राजा भीष्मक ! सुनिये। पूर्व देश के राजा शिशुपाल को वर रूप में वरेंगे।

(वह शिशुपाल) दमघोष राजा का पुत्र है। उसके धन का आर-पार नहीं है। शिवजी की कृपा से उसने लक्ष्मी को प्राप्त किया है। उसका राजद्वार शोभायमान है। उसके अनेक भडारी और कोठारी (कोठारपति) है, असंख्य हाथी और घोड़े हैं। अपने से विशिष्ट वर को अपनाना चाहिए, ताकि संकट-ग्रस्तों का आधार हो। बलवानों के साथ संबंध स्थापित करना चाहिए। पानी (की बाढ़) आने से पूर्व ही उसके पार बांधनी चाहिये। राजकुमार कहता है—हे राजन् ! सुनिये। ग्वालों से संबंध करके लज्जा का काम मत कीजिये। दमघोष के पुत्र-रूप में प्रसिद्ध वह ऐसा बली है जैसे दानव हो। जिसके साथ पचानबे अक्षौहिणी सेना चढ़ती है। जिससे बरात भली दिखायी देगी। वह पूर्व देश का राजा है। उसके साथ निनानबे राजा चढ़ते है। उसने पहले तो सब यादवों को जीता और उनका सारा देश छीन लिया। (उसके भय से भयभीत होकर) कृष्ण समुद्र की शरण में जा बैठा है। वहाँ समुद्र के भीतर नगर बसाया है। भय के मारे बाहर नही निकलता है, मानो छाया में मिल गया है। आपसे कौन-सा छिपा है ? वह कालयवन के सामने भागा था। पदम भगत कहता है कि रुकमइये ने कहा कि आपने कृष्ण को खूब सराहा !

भीष्मक ने कहा—हे पुत्र ! तूने बिल्कुल अज्ञानी की-सी बात कही है। उन्होंने गिरिवर गोवर्धन को नख पर धारण किया, और कुब्जा का मान रखा। वे सीता के संकट के समय उसकी सहायता के लिए चढ़े और समुद्र पर पुल बांधा। उन्होंने ही धनुष-बाण हाथ में धारण करके देवताओं के कार्य सुधारे।

उन्होंने सागर की मर्यादा बांधी और बंदर तथा रीछों से मेल किया। कुंभकर्ण तथा महिरावण को मारा और अनेक असुरों का वध किया। सीता का रूप देखकर असुर रावण को दुर्बुद्धि उत्पन्न हुई। उन्होंने रावण के दस मस्तकों को काटा और तेतीसों (कोटि) देवताओं का बंधन छुड़ाया। विभीषण को कनकमाला पहनायी और उसे राजतिलक दिया। फिर सीता को लेकर अयोध्या पहुँचे। घर-घर में बधाई बाँटी गई। राम का निर्मल अवतार हुआ जिसकी साक्षी वेदों ने भी गायी है। पदम भगत कहता है—वे ही राम अब यादववंश के राजा कृष्ण है। मैं प्रणाम करके चरणों में शीश नवाता हूँ।

दोहा— भीव भणै, सुत माहरा रुकमण नै वर सार
जेण अघासुर मारियो विरछ अमोड़्या तार

मारू— ताड़क विरछ अमोड़्या कान्हड़ सकटासुर सिघारयो
नळ - कूबर दोऊं बळवता तिण को मूळ उपाड़्यो
जमनाजळ में काळी नाथ्यो बळ अजगर को मारयो
कंस जाय धरणी सूं चूरयो जादव कियो उबारो
कुवळियापीड़ कुंजर कू मारयो मुस्टिक मल्ल अखाड़ै
असुर कंस चाणूर पछाड़्या असुरां तणै पवाड़ै
अै अवतार पवाड़ा भाखा तूं मत अहड़ो जाणै
छपन कोट जदवा रो राजा जिण रो वंस वखाणै
तीन लोक अर चवदा भवन में नही किणीं सू छानो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वर वनमाळी जाणो

दोहा— कंस ज तेड़ी पूतना जहर लगायो गात
सिसु मारण आवत भयी सुण अचरज की वात

आसावरी—लाल को मुख देखणकूं आयी
रात वसी असुरां की नगरी बोत महा दुख पायी
पुरसां का मूढा नहिं देख्या अड़सठ तीरथ न्हायी
जद मै ध्यान धरयो वैकुठ नै वैकुंठ खाली पायी
सुर-नर-मुनि-जन क्रोड़ देवता ले व्रज में सव आयी
अेता बाळक देख्या व्रज में इण में जोत सवायी
जो मै तेरा बुरा चींतऊं अंखियां की सोगन खायी
चित सुध जाण जसोदा राणी पलणा दिया वतायी
विखला थण भर मुख में दीना सूत खैंच जदुराई
पड़ी जाय जद डोढ जौंजन में असुरां संक्या खायी
पदम भणै प्रणवै पाय लागू माता की गत पायी

छंद— व्यांव वैर अर प्रीत लायक सूं कीजिये
राज - तखत पै बैठ ग्वाळ क्यों जोइये
जात हीण कुळ हीण सभा में लजानियै
जिण सूं किसा विहाव वचन अेक मानियै

भीष्मक ने कहा—हे मेरे पुत्र! रुक्मिणी के लिए (वह) वर लाओ जिसने अघासुर को मारा और ताड़ के वृक्षों को तोड़ा।

उस कृष्ण ने ताड़ के वृक्ष को तोड़ा। शकटासुर का संहार किया। नल-कूवर दोनों बड़े बली थे, उनको समूल उखाड़ डाला। यमुना के जल में कालिय नाग को नाथा। अजगर के वल को नष्ट किया। मथुरा में कृष्ण को भूमिसात् किया और यादवों को उबारा। कुवलयापीड़ हाथी को और अखाड़े मे मुष्टिक नामक पहलवान को मारा। कंस और चाणूर जैसे असुरों में पराक्रमी असुरों को पछाड़ा।

ये अवतारी पराक्रम कहता हूँ। तुम उनको ऐसा-वैसा मत जानना। वह छप्पन करोड़ यादवो का राजा है जिसके वंश का बखान सब लोग करते हैं। वह तीन लोकों और चौदह भुवनों मे किसी से छिपा नहीं है। पदम भगत कहता है कि मै नमन करके पैरों लगता हूँ, उस वनमाली कृष्ण को ही रुक्मिणी का वर समझो।

कंस ने पूतना को बुलाया। उसने स्तनों पर जहर लगाया। वह शिशु कृष्ण को मारने के लिए आयी। अव अचरज की बात सुनो।

पूतना ने आकर कहा—मैं लाल का मुख देखने आयी हूँ। कल रात असुरों की नगरी में रही थी, वहाँ बड़ा भारी कष्ट पाया। मैंने पुरुषों का मुँह देखा तक नही। अड़सठ तीर्थो में स्नान कर चुकी हूँ। जब मैंने वैकुंठ का ध्यान किया तो उसे खाली पाया। सुर, नर, मुनिजन और करोड़ों देवता, इन सब को लेकर व्रज में आयी हूँ। व्रज में इतने वालक देखे, पर इसमें सवाया तेज है। यदि मैं तुम्हारा बुरा सोचूँ तो मुझे आँखों की सौगंद है। जव उसने इस प्रकार सौगंद खायी तो रानी यशोदा ने शुद्ध चित्त जानकर पलना बतला दिया। जब उसने विषभरे स्तन मुख में दिये तो यदुराज कृष्ण ने दूध के साथ उसके प्राणों को भी खींच लिया। तब पूतना डेढ़ योजन में जाकर गिरी। यह देखकर असुर लोग शंकित हो उठे। पदम भगत कहता है कि मैं नमन करके पैरों लगता हूँ, पूतना ने माता की गति प्राप्त की (क्योंकि कृष्ण ने उसका स्तनपान किया था)।

तब रुक्मकुमार ने कहा—विवाह, वैर और प्रेम लायक के साथ ही करना चाहिए। राजसिंहासन पर बैठकर ग्वाले को क्यों देखा जाय? वह जाति और कुल से हीन है अतः (उसके कारण) सभा में लज्जित होना पड़ेगा। उसके साथ कैसा विवाह? मेरी एक वात मानिये।

छंद— मान वचन भुवाल भीखम फेर या मत कीजियै
दमघोस को सिसपाळ राजा ताहि कन्या दीजियै
जात सूर सुजात सुंदर आदि - राजा जाणियै
ताहि कन्या देत सोभा वचन अैसा मानियै

मारू— भरी सभा में इंद्र ज कोप्यो व्रज सूं भेट न आयी
या व्रज ऊपर जळ वरसावो सब कूं देवो बहायी
आवरतक कूं आदी लेकै च्यारूं पुत्र बुलाया
वरख्यो घन गज-सूंड-धार गोवर्धन धार वचाया
राजा भीव कहै, रुकमइया किण राजा कूं दीजै
ओछै सगै सगारथ करतां मान - वडाई छीजै
पूरै सगै सगारथ कीजै वा-की सरण रहीजै
नंद महर का कुंवर कन्हइया वाकूं कन्या दीजै
विलम न करो, वेग उर मांही यही वचन धर लीजै
पदमइयो तेरो जस गावै काम भलेरा कीजै

दोहा— चमक कनोधर उठ चल्यो घर जाय पूछी माय
तखत चंदेरी छांड कै नातो और कराय

मारू— नातो और करावै माता थांरै मन कांइ भावै
माखण चोर परायो खावै जिण नूं राव सरावै
गज-दळ-ठाट दळां रो पूरो तखत चंदेरी सोहै
च्यार खूंट नव खंड विचाळै अहड़ो और न को है
नेम-धरम की सब विध जाणै नगर-धरम की पाजा
सुंदर वर सिसपाळ भणीजै ताहि न झंपै राजा
रुकमइया का वचन सुणे-सुण हिवड़ा मांही साळ्यो
देखो मत राजा भीखम की कहड़ां नै उठ चाल्यो
माता-सुत मिल मंत्र विचार्‌यो दोस न लावो कोई
करो सगाई भजन कीजिये जा विध राखै सांई
रुकमइयै का वचन सुणे-सुण माता मंत्र उपायो
विप्र बुलावो लगन लिखावो चंदेरी पहुंचावो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वेगो विप्र बुलावो

दोहा— पड़दै राणी वीनवै सुणो नरेसुर राव
अब थांरो बळ हट गयो करता कोट उपाव

हे राजन् भीष्मक ! मेरी बात मानिये और फिर ऐसा विचार कीजिये। दमघोष का पुत्र राजा शिशुपाल है। उसे कन्यादान करें। जान लीजिये कि वह जन्म से ही शूरवीर है, उच्च कुल का है, सुंदर है और आदि-राजा है (उसके वंश के लोग आदिकाल से ही राजा होते आये हैं)। उसे कन्या देने में शोभा है। मेरा ऐसा वचन मानिये।

तब राजा भीष्मक ने कहा—भरी सभा में इंद्र ने कोप किया कि व्रज से भेंट नही आयी, इस व्रज पर ऐसा जल बरसाओ कि सबको बहा डालो। आवर्तक आदि चारों पुत्रों को बुलाया। बादल हाथी की सूँड के समान जल-धारा के साथ बरसा, तब कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत धारण करके व्रजवासियों की रक्षा की। राजा भीव कहता है—हे रुकमइये ! किस राजा को दें। ओछे सगे के साथ संबंध करने पर मान-बड़ाई छीजती है। पूरे सगे के साथ संबंध करना चाहिए और उसकी शरण में रहना चाहिए। नंद महर के पुत्र कन्हैया-कुँवर है, उसे कन्या देनी चाहिए। देर मत करो, शीघ्रता से इस बात को हृदय में धारण करो। (हे कृष्ण !) पदम भगत तुम्हारा यश-गान करता है। भले काम करने चाहिए।

वंशधर पुत्र रुक्मकुमार तमक करके उठ चला और घर के भीतर जाकर माता से पूछा—चंदेरी के राजसिंहासन को छोड़कर राजा अन्यत्र संबंध कर रहे है।

हे माता ! राजाजी दूसरी जगह संबंध कर रहे हैं, आपके मन को क्या ठीक लगता है ? जो पराया माखन चुराकर खाता है, राजा उसकी सराहना कर रहे हैं। जिसके हाथियों के दल का ठाट है, जिसके बहुत बड़ी सेना है, ऐसा जो चंदेरी के राजसिंहासन पर शोभायमान है, चारों दिशाओं और नवों खंडों के बीच ऐसा और कोई नही है। वह धर्म की सब विधियों को जाननेवाला है तथा नगर-धर्म की मर्यादा-रूप है। वह शिशुपाल ऐसा सुंदर वर कहा जाता है तो भी राजा उसकी ओर आँख झपकाकर भी नही देखते। रुकमइये के वचन सुन-सुनकर माता के हृदय में दुख हुआ। उसने खेद के साथ कहा—राजा भीष्मक की बुद्धि को देखो कि उठकर किधर जा रहे हैं। माता-पुत्र ने मिलकर सलाह की। दोष मत दो। सगाई कर दो। फिर भगवान का भजन करो और भगवान जैसे रखें वैसे ही रहो। रुकमइये के वचन सुनकर माता ने सलाह दी—ब्राह्मण को बुलाकर लग्न लिखवाओ और चंदेरी पहुंचाओ। पदम भगत कहता है कि मै नमन करके पैरों लगता हूँ, ब्राह्मण को शीघ्र बुलाओ।

अंतःपुर में रानी विनती करती है—हे राजन्, सुनिये। अब आपका बल क्षीण हो गया है, आप जो करोड़ों प्रकार के उपाय किया करते थे।

मारू— करता कोट उपाव नरेसुर ! विधना ओछी वाणी
राणी भणै, सुणो राजाजी म्हे थांरी मत जाणी
राणी भणै, सुणो राजाजी यही वात मन पेखो
रुकमइयो थांरी पत राखै बैठा - बैठा देखो
राणी भणै, सुणो राजाजी थांरी वात न भायी
थांनै राजा वडपण दीनो बैठा हरि - गुण गायी
अेक ज घर में दोय मता है भगति कहां तें होई
पुरख ज पूतै देवता भूत - पूजणी जोई
वांस-विड़ो अपणो कुळ जारै अैसो पुत्र तुम्हारो
पिता कहै वाकी नहिं मानै कंवर फिरै अपकारो
राजा भणै, सुणो तुम राणी यहै वात ना सोही
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं कर देखो हर कोई

आसावरी—कह्या थांरै नंदनंदन मन मान्यो ?
राणी अरज करै राजा सूं विरध भया, हम जाण्यो
जात-पांत कुळ वाकै नांही सो रुकमण, वर ठाण्यो
व्रद्रावन में गऊ चरावै कांध कामर नांव कान्यो
पदम भणै प्रणवै पाय लागू मोर मुगट वाकों वान्यो

सोरठ—भोळी राणी वावरी हे गिरवरधारी नै परणास्यां
सठ रुकमइयो अेक न मानै कह सिसपाळ बुलास्यां
बो सिसपाळ चदेरी रो राजा म्हे त्रिभुवन-पत ध्यास्यां
जो हरि म्हांरै भवन पधारै (घर) बैठा मुगती पास्यां
प्राण तजू पिण पण नहिं छांडूं रुकमण रथ बैठास्यां
पदम स्याम जो हरि नहिं आवै तो मरस्यां विस खास्यां

दोहा— राणी सू राजा कहै सुणो प्राण-आधार
तीन-लोक-पति कृष्ण जू वाकी है वर नार

मारू— तीन लोक रो नायक केसौ केता किया पंवाड़ा
मारचा दुस्ट दैत अर दाना अनगिन असुर पछाड़चा
बाळ-रूप हुय हसी पूतना पहल पवाड़ा कीया
पायी सजा सिरीधर जोसी विप्र जाण जिव्र दीया
मल्ल अखाड़ै हसती मारचा करसूं दसन उपाड़चो
काळी-नाग नाथ कर लाया नख पर गिरव्र धारचो

हे राजन् ! आप कोटि उपाय कर रहे थे। रानी कहती है— हे राजन् ! सुनिये। हमने आपकी बुद्धि को जान लिया है। रानी कहती है कि हे राजन् ! सुनिये, इसी बात को मन में देखिये। रुक्मकुमार आपकी प्रतिष्ठा को रखता है, आप बैठे-बैठे देखते रहिये। रानी कहती है—हे राजन्, सुनिये। आपकी बात हमें अच्छी नहीं लगी। आपको भगवान ने राजा का बड़प्पन दिया है, आप बैठकर हरि का गुणगान कीजिये। राजा ने कहा—एक ही घर में दो विचार हैं तो फिर भक्ति कैसे होगी—पुरुष देवता को पूजता है, स्त्री भूतों को पूजनेवाली है। बाँस का पौधा अपने ही कुल को जला डालता है, तुम्हारा पुत्र ऐसा ही है। पिता जो कहता है उसकी बात पुत्र नही मानता है और अपनी ही मन की करता फिरता है। राजा कहते है कि हे रानी ! तुम सुनो—यही बात शोभा नहीं देती। पदम भगत कहता है कि मै नमन करके पैरों लगता हूँ, कोई भी करके देख लो।

नंदनंदन कृष्ण आपको कैसे मन में भाया ? रानी राजा से विनती करती है कि मैं जान गई हूँ कि आप अब वृद्ध हो गये है। जिसके जाति-पाँति और कुल नही है उसे रुक्मिणी का वर निश्चित किया है। वह वृंदावन में गायें चराता है, कंधे पर कमली रखता है, उसका नाम कन्हैया है। पदम भगत कहता है कि मैं नमन करके पैरों लगता हूँ। मोर-मुकुट उसका वेश है।

हे भोली रानी ! हे बावली ! हम गोवर्धनधारी कृष्ण के साथ रुक्मिणी का विवाह करेंगे। दुष्ट रुकमइया एक भी बात नहीं मानता; कहता है कि शिशुपाल को बुलावेगे। वह शिशुपाल चंदेरी का राजा है, पर हम त्रिभुवन के स्वामी को ध्यान करेगे। यदि कृष्ण हमारे घर पधारे तो हम बैठे हुए ही (बिना प्रयास के) मुक्ति प्राप्त कर लेगे। मैं प्राणों का त्याग कर दूँगा पर प्रतिज्ञा को नही छोड़ूँगा। रुक्मिणी को रथ पर बिठावेगे। पदम भगत कहता है—यदि हरि नहीं आवेगे तो विष खाकर मर जावेगे।

राजा ने रानी से कहा—हे प्राणों की आधार ! सुनो। तीनों लोकों के पति कृष्ण है, रुक्मिणी उनकी श्रेष्ठ नारी है।

केशव तीनों लोकों के नायक है। उन्होंने कितने ही पराक्रम किये है। दुष्ट दैत्यों और दानवों को मारा है, और अगणित योद्धाओं को पछाड़ा है। बालक-रूप होकर पूतना को पछाड़ा। यह प्रथम पराक्रम किया। श्रीधर जोशी ने सजा पायी। उसे ब्राह्मण जानकर जीवन-दान दिया। पहलवानो के अखाड़े में कुवलयापीड हाथी को मारा, हाथ से दाँत उखाड़ डाले। कालिय नाग को नाथकर लाये और नख पर

मारचा कंस केस गहि केसौ जन प्रह्ळाद वचायो
उग्रसेन पर किरपा कीनी राजा कर बैठायो

दोहा— भगत जाण हरि अवतरचा राजा दसरथ - धाम
परणी सीता पैज सूं धनस चढायो राम

मारू— धनस चढाय किया दोय टूका राजा सब मुख जोवै
सुर-नर-मुनि-जन रह्या अचंभै ब्रह्मा का मन मोवै
रावण का दस मसतक छेदया दियो भभीखण राजा
परसराम छत्री वस कीया सस्त्र अवधपुर साजा
वरा-रूप हुय प्रथमी लाया जाणै सकल जिहाणा
मच्छ-रूप हुय वेद निकास्या ब्रह्मा करै बखाणा
बावन हुय प्रभु प्रथमी नापी बळि पाताळ पठायो
नरसिंघ-रूप हत्यो हिरणाकुस जन प्रह्ळाद बचायो
जहां-जहां भीड़ पड़ी संतन में तहां आप चल आया
पदम भणै बुध्धा अवतारी बहुता काम वणाया

ठूमरी—राजा वर हेरचो कारो कान्हो
जाणी तुमारी बुध्धि राव व्रध, रस में विस क्यों छाणो
व्रंद्रावन में धेन चरावै मांगै मही को दानो
भटकत फिरै गोकुळ गळियन में कैसें राव वखाणो
अव ही तजो राव! हठ अैसो लोग हंसै घर हाणो
अरि-भय मान वस्यो सिंधू में बो म्हां सूं नहिं छानो
बो सिसपाळ चंदेरी रो राजा लाख गढां रो राणो
उण नै तजो ग्वाळ धी देतां लाज नेक उर आणो
व्यांवण आवै चंदेरि-धरा-पत यो तुम निहचै जाणो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं चाहे मानो मत मानो

दोहा— राजा सूं राणी कंवर मंत्री जोड़ै हाथ
कर जोड़्यां विनती करां सुणो नरेसर नाथ!

मारू— सुणो नरेसर वात हमारी व्यांह तणी बुध राखो
बुरी-भली सूं रहो निराळा बोझ कंवर सिर नाखो
रुकमइयो अति मूरख राजा कही सुणी नहिं मानै
कुळ अभमान वड़ाई राखै वेद - भेद नहिं जाणै

गोवर्धन को धारण किया। केशव ने केश पकड़कर कस को मारा। भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। उग्रसेन पर कृपा की और उसे राजसिहासन पर बिठाया।

राम ने राजा दशरथ को भक्त जानकर उनके घर मे अवतार लिया और धनुष चढ़ाकर प्रतिज्ञा पूरी करके सीता के साथ विवाह किया।

धनुष चढ़ाकर उसके दो टुकड़े कर दिये। सब राजा मुँह देखने लगे। देवता, मनुष्य और मुनिजन आश्चर्य से चकित हो गये। ब्रह्मा का मन भी मोह लिया। रावण के दस मस्तकों को काट डाला। विभीषण को राज्य दिया। परशुराम के अवतार मे उन्होंने क्षत्रियो को वश में किया। उनके शस्त्र लेकर अयोध्या लौट आये। वराह-रूप धारण कर वे पृथ्वी को लाये। सारा संसार इसे जानता है। मत्स्य-रूप धारण करके उन्होने वेदों को समुद्र में से निकाला, जिनका ब्रह्मा गान करते हैं। बावन-अवतार में प्रभु ने पृथ्वी को मापा और बलि को पाताल मे भेज दिया। नृसिह-रूप में हिरण्यकशिपु का वध किया और भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। जहाँ-जहाँ संतों पर संकट आया वहाँ-वहाँ वे स्वयं चलकर आये। पदम भगत कहता है—बुद्ध का अवतार लेकर बहुत से काम पूरे किये।

रानी कहने लगी—राजा ने काले कान्ह को वर-रूप में खोजा है। हे राजन्! हमने जान लिया कि तुम्हारी बुद्धि भी वृद्ध हो गयी है। क्यों रस में विष घोल रहे हो। वह कान्ह वृंदावन मे गाये चराता है, दही का दान माँगता है और गोकुल की गलियो में भटकता फिरता है। हे राजन्! तुम कैसे उसकी प्रशसा कर रहे हो। अब भी हे राजन्! ऐसा हठ छोड़ दीजिए, यह तो 'घर हानि और लोक-हँसाई' है। शत्रु के भय से भयभीत होकर वह समुद्र में जा बसा है, वह हमसे छिपा नही है। वह शिशुपाल चंदेरी का राजा है और लाख गढों का मालिक है। उसे छोड़ रहे हो। ग्वाले को बेटी देते थोड़ी तो मन में शरम करो। यह निश्चय ही जानो कि व्याहने के लिए चंदेरी का राजा ही आयेगा। पदम भगत कहता है कि मैं नमन करके पैरों लगता हूँ। चाहे आप मानें या न माने।

रानी, कँवर और मंत्री राजा से हाथ जोड़ रहे है—हे राजन्! हे स्वामिन्! सुनिये, हम हाथ जोड़कर विनती करते है।

हे राजन्! हमारी बात सुनिये। विवाह के संबंध में विवेक रखिये। बुराई और भलाई से आप अलग रहें। सारा भार कुँवर पर डाल दीजिये। (राजा ने उत्तर में कहा—) रुकमइया अत्यंत मूर्ख राजा है, वह कहना-सुनना नहीं मानता है। कुल का अभिमान और

असुर तणां दळ ऊपर हरख्यो छाड़्यो त्रिभुवन राई
पूरण व्रह्म पदम का स्वामी जिण या सिस्टि उपायी

दोहा— कहूं वडाई कृष्ण की सुणियो राजकंवार
निबळां रो बळ राम छै निरधारां आधार

मारू— निरधारां आधारो केसव पार न पावै सेसा
तीन लोक जिण रै मुख मांही वै हरि कृष्ण नरेसा
वै हरि कृष्ण नरेस भणीजै निराकार आकारो
पदम भणै प्रणवै पाय लागू सिस्टि उपावणहारो

मारू— माता पुत्र मिल मतो उपायो रुकमण नै समझायी
बाई मानो माहरी राजा समझै नांयी
रीस भरी बाई यू बोलै, कुळ नै काट लगायी
म्हारो वर छै कृष्ण सांवरो परणू जादव - राई
नंद महर को कंवर कन्हइयो वो भिड़वाळयो जाणो
सिसपाळा की नही बराबर लाख गढां को राणो
राम अवतार में आगे परणी सोइ कृष्ण अवतारो
कहै रुकमणी सुणो रुकमइया अबहि घणी मत ताणो
माता कहै सुणो री बाई कह्यो हमारो कीजै
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं पाछो उतर न दीजै

रुकमणी-कृष्ण-मिलन

दोहा— बाई मतो उपाइयो मन में अति दुख पाय
सावण तीज सहेलियां न्हावण के मिस जाय

मारू— सावण री वड तीज सहेल्यां सब मिल न्हावण चाली
रुमक झुमक पग नेव्रर वाजै सुघड़ सख्यां संग हाली
और सहेल्यां ईरां तीरां रुकमण वीच पधारी
जद ही जळ में डूबण लागी याद किया गिरधारी
पकड़ भुजा हरि बाहर कीनी आ कांइ वात विचारी
कौण देस में जलम ज थांरो कौण घरां अवतारी
कुनणापुर में जलम हमारो राजा भींव्र - कंवारी
दादी खीचण माय सोलंखणी हूं छूं असल पंवारी

बड़ाई रखता है पर शास्त्रों का भेद नही जानता है। वह असुरों के दल से हर्षित हो रहा है तथा उसने त्रिभुवन-पति को छोड़ दिया है। पदम भगत कहता है कि वे पूर्णब्रह्म उसके स्वामी है जिन्होंने इस सृष्टि को उत्पन्न किया है।

हे राजकुमार! सुनो, कृष्ण की बड़ाई कह रहा हूँ। वे राम निर्बलो के बल और निराधारों के आधार है।

केशव निराधारो के आधार है। शेष भगवान् भी उनका पार नही पा सकते। जिनके मुख में तीनों लोक समाविष्ट है वे हरि ही राजा कृष्ण है। वे हरि राजा कृष्ण कहे जाते है, उनका आकार निराकार है। पदम भगत कहता है कि नमनपूर्वक पैरो लगता हूँ। वे सृष्टि के उत्पन्न करनेवाले है।

माँ और बेटे ने मिलकर युक्ति निकाली। रुक्मिणी को समझाने लगे—बेटी! हमारी बात मानो। राजा समझते नहीं है। क्रोध में भरकर रुक्मिणी यों बोली—तुमने कुल को कलकित कर दिया। मेरा वर साँवरा कृष्ण है। मैं यादवराज कृष्ण को ही वरूँगी। माता ने कहा—नंदमहर का कुमार कन्हैया तो ग्वाला है। वह शिशुपाल के बराबर नहीं, जो लाख गढ़ों का अधिपति है। रुक्मिणी ने कहा—पहले राम-अवतार में मेरा उनके साथ विवाह हुआ था। उन्होने अब कृष्ण का अवतार लिया है। हे रुकमइये! अब बात को अधिक मत खीचो। तब माता ने कहा—बेटी! सुनो। हमारा कहना करो। पदम भगत कहता है कि नमनपूर्वक पैरों लगता हूँ, अब वापिस उत्तर मत दो।

रुक्मिणी-कृष्ण-मिलन

रुक्मिणी ने मन में अत्यंत दुखी होकर निश्चय किया। सावन की तीज के दिन सहेलियों के साथ वह स्नान करने के बहाने चली।

सावन की बड़ी तीज के दिन सब सहेलियाँ मिलकर नहाने के लिए चली। रुक्मिणी भी उन सुघड़ सहेलियों के साथ चली। उनके पाँवों में नूपुर रुनुक-झुनुक कर बज रहे थे। अन्य सहेलियाँ सरोवर में किनारे के आसपास ही नहायीं पर रुक्मिणी धारा के बीच में गयी। ज्यों ही वह जल में डूबने लगी उसने गिरधारी को याद किया। हरि ने बाँह पकड़ कर उसे बाहर निकाला और कहा—यह क्या बात विचारी? किस देश में तुम्हारा जनम हुआ है और किसके घर में अवतार लिया है? 'कुंदनपुर में हमारा जनम हुआ है। राजा भीष्मक की कुमारी हूँ। मेरी दादी खीची वंश की है और माँ सोलंकी वंश की। मै असली

वाचा द्यो भीसमजी री कंव्वरी पीछे घरां पधारो
वाचा तो म्हे जद ही देसां रूप चतरभुज धारो
रूप चतरभुज हरजी धारचो रूप वण्यो चौधारो
औरां नै तो घुड़ला सोहै कृष्ण गरुड़ असवारो
सिव वाचा अर ब्रह्मा वाचा वाचा कृष्ण मुरारी
जलम जलम का साहब म्हारा हूं अरधंग्या थांरी
कहै कृष्णजी सुणो रुकमणी थे तो कुसी रहीज्यो
मा - बेटो कोइ मतो उपावै कागद वेगो दीज्यो
कहै रुकमणी सुणो कृष्णजी थे साची फुरमायी
लगन सांकड़ै सावो देवै कागद पूगै नांही
कागद लिख मीसर नै दीजै अेक मजल आय अैसी
अेक रात अेक घड़ी मांयनै कागद आयर देसी
वाचा देय भीसम री कंवरी रंगमहल में आयी
आगे माता खिजती बोली तैं कठै वार लगायी
जळ में माता स्नान करंती आय गये कृष्ण मुरारी
वां देखत बाहर नहि निकसी लाज करी अत भारी
फिट फिट हे म्हांरी बाई रुकमणी कुळ नै काट लगायो
बडा घरां की बेटी 'हुय कर जाय ग्वाळ वतळायो
फिट फिट हे म्हारी माय सुलखणी उठ क्यों ना जाय परारी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं म्हारो वर गिरधारी

३—शिशुपाल का कुंडिनपुर पहुंचना

दोहा— पिंडत वेग बुलाइया लीना निकट बुलाय
लगन लिखावो राज रा पठवो धावन धाय

मारू— सगळा दोस नवेड़ो जोसी निरमळ सावो काढो
पतड़ो देख र पाटो मांडो घड़ी महूरत साधो
जोसी भणै सुणो राणीजी निरमळ साव्वो काढचो
नहीं चूक सावा में कोई सुगन स्याम ही आडो

दोहा— भलो महूरत राज रो नीकां लिख्यो वणाय
जोसी रुकम-कंवार नै अैसें कह वतळाय

पँवार वंश की हूँ।' 'हे भीष्मकजी की कुमारी! वचन दो, पीछे घर जाओ।' 'वचन तो हम तब ही दे जब आप चतुर्भुज-रूप धारण करें।' तब कृष्ण ने चतुर्भुज-रूप धारण किया। रूप बड़ा ही अद्भुत बना। दूसरों के घोड़े सुशोभित होते थे, पर कृष्ण गरुड़ पर सवार थे। 'शिवजी का वचन, ब्रह्मा का वचन और मुरारी कृष्ण का वचन, आप मेरे जनम-जनम के स्वामी हैं और मैं आपकी अर्धांगिनी।' कृष्ण ने कहा—रुक्मिणी! सुनो, तुम प्रसन्न रहना। माँ और बेटा कोई सलाह करें तो पत्र द्वारा शीघ्र सूचना देना। रुक्मिणी ने कहा—कृष्णजी! सुनिये। आपने ठीक कहा। नज़दीक के लग्न का मुहूर्त देंगे, पत्र पहुँचेगा नहीं। 'पत्र लिखकर मिश्र (ब्राह्मण) को दे देना। वह एक रात और एक घड़ी के भीतर आकर पत्र दे देगा।' वचन देकर भीष्मक की कुमारी रंगमहल में लौट आयी। वहाँ माता खीजकर बोली—तूने देर कहाँ लगा दी? 'हे माता! जल में स्नान कर रही थी, कृष्ण-मुरारी आ गये। उनके देखते मुझे अत्यंत लज्जा हुई, जिस कारण मैं बाहर नही निकली।' 'हे हमारी बेटी रुक्मिणी! तुम्हें बार-बार फिटकार है। तुमने कुल को कलंक लगाया, बड़े घर की बेटी होकर भी तुमने जाकर ग्वाले के साथ बातचीत की।' 'हे मेरी सुलक्षणी माँ! तुम्हें बार-बार फिटकार है। तुम उठकर दूर क्यों नहीं चली जाती!' पदम भगत कहता है कि नमन करके पैरों लगता हूँ, रुक्मिणी कहती है कि मेरा वर गिरधारी है।

३—शिशुपाल का कुंडिनपुर पहुँचना

पंडित को जल्दी से बुलाया और उसे निकट बुलाकर कहा—राजा के लिए लग्न लिखाओ और सदेशवाहक को दौड़ाते हुए भेजो।

'हे जोशी! सारे दोष मिटाकर निर्मल सावा (मुहूर्त्त) निकालो। पंचांग देखकर चौकी स्थापित करो, घड़ी और मुहूर्त्त को साधो।' जोशी ने कहा—रानीजी! सुनिये। निर्मल सावा निकाला है। सावे में कोई चूक तो नही है पर स्वयं शकुनों का स्वामी ही बाधक हो रहा है।

राजा का श्रेष्ठ मुहूर्त्त भली प्रकार से बनाकर लिखा। जोशी ने रुक्मकुमार को इस तरह कहकर बात की।

कुमार ने कहा—जोशीजी ! सुनिये, आपने अच्छा मुहूर्त्त निकाला है। पदम भगत कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— इस प्रकार टीका सजाया गया।

कुमार टीका सजा रहा है। मन में बड़ी उमंग है। सब मंत्री एकत्र हुए। वे फूले अग नही समा रहे थे।

राजकुमार फूले अंग नही समा रहा था। वह तख्त बिछाकर बैठा। पचोलियों को (कामदारों को) याद किया और कहा कि पत्र जल्दी लिख दो। पाँच सहस्र हाथी और सात सहस्र घोड़े सजाये। सोने की सजावट बड़ी शानदार थी। पलाण (जीन) हीरों से जड़ें हुए थे। साठ नालकियाँ और अस्सी पालकियाँ थीं जिनमें मोतियों की लड़े लटकायी गई। प्रथम कोटि के जरी के सिरोपाव और दुपट्टों की शोभा तो वर्णन ही नहीं की जा सकती। सोने का नारियल और सुपारी थी। रत्नों से जड़ी हुई पहुँची थी। पाँच लाख स्वर्ण-मुद्राएँ थी और मानिकों का पार ही नही था। कड़े, कलँगी, तुर्रे-जँवारे और म्यानें शीघ्र मँगायी गयीं। इस प्रकार का टीका सजाया गया। मोतियों से थाल भराये गये। बहुत सारे मेवे, पकवान और मिठाइयाँ थी जो वाणी से कहने में नहीं आतीं। पदम भगत कहता है कि मैं नमन करके पैरों लगता हूँ। इस प्रकार टीके की शोभा का बखान किया है।

सारस्वत भाट को बुलाया। बेशकीमती घोड़ा लाया गया जिसका वेग पवन के वेग के समान था। आज्ञा हुई कि उस पर जल्दी से जल्दी जीन कसा जाय।

घोड़े पर जीन जल्दी से कसो। मार्ग में देर मत करना। बीचवालों से[1] बात मत करना। हाथ से पत्र देना। भाट शकुन के अनुसार घोड़े पर उत्साहपूर्वक चढ़ा। सबसे पहले उस घोड़े ने छींक दिया, जिससे भाट खिसिया उठा। सारस्वत भाट चंदेरी को चला। वह फूले अंग नही समा रहा था। उसके सामने विधवा स्त्री और सुबकती हुई कन्या आयी। बिना तिलक के पडित मिले और उल्टे घड़ेवाली पनिहारिन मिली। माल मुक़द्दम चौधरी मिले। उल्टे केश किये स्त्री मिली। माथाचीर और मूंडचीर (साधु) मिले। बिना मुद्रिकावाले योगी मिले। छुरीमार और हिजड़े मिले। सामने शोकवाले मिले। बाएँ हाथ की ओर भैरवी बोल रही है। सामने सर्प आ रहा है। बासी दाढ़ोंवाले गीदड़[2] मिले; अवश्य ही भाट को खावेगे। भेड़िये और जरख[3] सामने मिले। विनाशकारी खोटे शकुन हुए। सारस्वत भाट मार्ग में

१ मंत्रियों आदि से २ पिछले दिन के भूखे ३ लक्कड़बग्घा।

सुरसत भाट वाट में ऊभो लीना सुगन विचारी
इतना तो उण आंख्यां देख्या और ज सुणिया कानां
म्हारै घरां तो कुसळ रहीज्यो पड़ो वींद की जानां
अै तो सुगन पहल सब हूवा जायर करस्यूं कांई
सुरसत सुगन सोचै मन मांही मुतलब आगलो नांई
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं होणी होय सो होई

दोहा— सुरसत सुगन बुरा हुवा चंदेरी की ओर
बांवै बोलत कोचरी फूही कूकै जोर

मारू— तखत चंदेरी जायर पूता भीतर भेद जणायो
कागद ले डाहल कर दीनो भाट कठ्यां सूं आयो
दस हजार हैवर लिख भेज्या कागद रुकम पठायो
कुंदणपुर में कंवर सूरमो सब ही सीस निवायो
कर टीको सिसपाळ राव कै साजां सबहि दिरायी
राणा भींव कंवर रुकमइयै घणी लिणी है बडाई
कुंदणपुर का टेवा सुणकर फूल्यो अंग न मायो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं टीको कंवर पठायो

दोहा— कागद डाहल वांचिया मन में कियो विचार
अै कागद नहिं भींवरा कागद लिख्या कंवार

मारू— राजा भींव गवाळ सरावै कंवर सरावै थांनै
साची वात कवां म्हे राजा कागद लिखिया छानै
कुंदणपुर सूं टेवो आयो म्हांनै वांच सुणावो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं जोसी वेग बुलावो

दोहा— डाहल जोसी तेड़िया लीना तुरत बुलाय
कुनणापुर की पत्रिका म्हांनै वांच सुणाय

मारू— सत का वचन कहूं सुण राजा निगम होय नहिं झूठा
इसै महूरत लिखी पत्रिका आवो भाग अपूठा

खड़ा हो गया। उसने शकुनों पर विचार किया। इतने तो उसने आँखों से देखे। कानों से और भी सुने। (उसने मन-ही-मन कहा—) मेरे घर में तो कुशल-मंगल रहे। (ये अपशकुन) वर की बारात पर जाकर पड़ें। पहले ही ये सब (अप-) शकुन हुए है। अव जाकर क्या करूँगा? सारस्वत भाट शकुनों पर मन-ही-मन विचार कर रहा है। कहता है कि आगे का मतलब सिद्ध नही होगा। पदम भगत कहता है कि में प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— जो होना होता है वही होता है।

चँदेरी की ओर जाते हुए सारस्वत भाट को बुरे शकुन हुए। बायीं ओर कोचरी§ बोल रही थी और फूही‡ जोर-जोर से रुदन कर रही थी।

सारस्वत भाट चलकर राजधानी चँदेरी पहुँचा। राजमहल के भीतर समाचार पहुँचाया। पत्र को लेकर डाहल-राज शिशुपाल के हाथ में दिया। राजा ने पूछा—भाट कहाँ से आया है? भाट ने कहा— कुदनपुर में शूरवीर कुमार रुक्मकुमार है जिसे सभी ने शीश नवाया है। उस रुक्मकुमार ने यह पत्र भेजा है। पत्र मे दस हजार घोड़े भेजने की बात भी लिखी है। भाट ने राजा शिशुपाल के तिलक करके टीके का सब साज-सामान दिया। राजा भीष्मक के राजकुमार रुक्मकुँवर ने बहुत प्रशंसा लिखी है। कुदनपुर की लग्नपत्रिका है यह सुनकर वह शरीर में फूला नहीं समाया। पदम भक्त प्रणाम करके पैरो पड़ता है और कहता है—भाट ने कहा कि कुँवर ने टीका भेजा है।

शिशुपाल ने पत्र को पढ़ा और तब मन में विचार किया—यह पत्र भीष्मक का लिखा नही है, इसे रुक्मकुमार ने लिखा है।

(भाट ने कहा—) राजा भीष्मक ग्वाले कृष्ण को सराहते है और कुँवर आपको सराहता है। हे राजा! आपसे सच्ची बात कहता हूँ, यह पत्र राजा से छिपाकर (राजा को बिना बताये) लिखा गया है। (शिशुपाल बोला—) कुंदनपुर से लग्नपत्रिका आयी है, हमे पढ़कर सुनाओ। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—शिशुपाल ने कहा कि जोशी (ज्योतिषी) को शीघ्र बुलाओ।

शिशुपाल ने जोशी को बुलावा भेजा। उसे तुरन्त बुला लिया। (उससे कहा—) कुंदनपुर की पत्रिका हमें पढ़कर सुनाओ।

जोशी बोला—हे राजा! सत्य की बात कहता हूँ, शास्त्र झूठे नही होते। यह पत्रिका ऐसे मुहूर्त मे लिखी गयी है कि आप वहाँ से उल्टे

---

§ कोचरी—उल्लू की तरह का एक पक्षी। ‡ फूही—एक जानवर जिसके वोलते समय ऐसा जान पड़ता है मानो मुँह से आग की लपटें निकल रही हो।

जोसी कहै सुणो राजाजी कह्यो हमारो कीजै
म्रत्यु जोग में सावो लिखियो आगे पांव न दीजै
डाहल राजा बळकर बोलै जोसी थे घर जावो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं जोसी और बुलावो

दोहा— पीपा जोसी तेड़िया राजतखत बैठाय
कुनणापुर की पत्रका म्हांनै वांच सुणाय

मारू— पींपा जोसी टेवो वांचै सुण रे डाहल राई
बा तो आप कृष्ण री नारी थारै लायक नांई
क्यांनै राजा करो साकती क्यांनै जान वणावो
रिख पंचक में लिखी पत्रका फेरा लेण न पावो
डाहल राजा बळ कर बोल्यो जोसी थे घर जावो
पदम भणै प्रणवै पाय लागू जोसी और बुलावो

दोहा— सम्मन जोसी तेड़िया रंग तखत बैठाय
कुनणापुर की पत्रका म्हांनै वांच सुणाय

मारू— पोथी खोलर पाटो मांड्यो घड़ी महूरत काढो
इण सावा में चूक नहीं है सुगन स्याम ही आडो
सम्मन जोसी मन मे डरपै सिसपाळो बळ खावै
जो मै सावो खोटो कहसू नगरी बार कढावै
दसूं दोस सावा का छांडू रासां वरग मिलायी
कंवर राव का करूं जोड़वा नव ग्रह करो सहायी
थाळोड़ी पर भद्रा अटकी पत राखै म्हांरो साईं
पदम भणै प्रणवै पाय लागू फेरा लेण न पायी

दोहा— राव रसोड़ै पधारिया लीनो अपणै साथ
कुनणापुर कै भाट नै भला जिमाया भात

मारू— बहु विजन पकवान मिठाई मिसरी खीर मिलाणी
कुन्नणपुर का सुरसत भाट की बहौत करी मिजमानी
घुड़ला पांच सात पुनि दीना पूर्ण मनोरथ कीना
पूरण ब्रह्म पदम का स्वामी मुख मांग्या सो दीना

भागकर आओगे। जोशी कहता है—हे राजा ! सुनो, हमारा कहना करो। पत्रिका मृत्यु-योग में लिखी गयी है, आगे पैर मत दो (कुंदनपुर मत जाओ)। तब राजा शिशुपाल बल खाकर बोला—जोशी ! तुम अपने घर जाओ। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— शिशुपाल ने कहा कि किसी दूसरे जोशी को बुलाओ।

पींपा नामक जोशी को बुलाया। उसे राजसी सिंहासन पर बिठा कर शिशुपाल ने कहा—कुंदनपुर की पत्रिका आयी है, वह पढ़कर हमें सुनाओ।

पींपा जोशी लग्न-पत्रिका बाँचता है और कहता है—डाहल-राज ! सुनो। वह तो स्वयं कृष्ण की पत्नी है, तुम्हारे योग्य नही है। (इसलिए) हे राजा ! तुम किस लिए तय्यारी करो और किस लिए जान (बरात) बनाओ ? यह पत्रिका पंचक नक्षत्र में लिखी गयी है, फेरे (भाँवर) नही ले पाओगे। राजा शिशुपाल बल खाकर बोला—जोशी ! तुम अपने घर जाओ। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके चरणों में गिरता हूँ— शिशुपाल ने कहा कि किसी दूसरे जोशी को बुलाओ।

सम्मन नाम के जोशी को बुलाया। उसे रंग-सिंहासन पर बिठाकर कहा—कुंदनपुर की पत्रिका आयी है, वह बाँचकर हमें सुनाओ।

जोशी ने पोथी देखकर चौकी स्थापित की। घड़ी और मुहूर्त निकाला और कहा—इस लग्न मे तो कोई चूक नही है पर सब शकुनों का स्वामी (भगवान्) ही बाधक है। सम्मन जोशी मन में भयभीत हो रहा है कि शिशुपाल बल खा रहा है। यदि मैं लग्न को खोटा कहूँगा तो मुझे नगर से बाहर निकलवा देगा। लग्न के दसो दोषों को छोड़कर राशि और वर्ग मिलाता हूँ और कुमार राजा का संबंध जोड़ता हूँ। हे नवग्रहों! तुम सहायता करो। थालोड़ी (?) पर भद्रा अटकी हुई है। मेरा ईश्वर मेरी प्रतिष्ठा रखे। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—जोशी ने मन में सोचा कि शिशुपाल फेरे नहीं ले पायेगा।

राजा रसोई-शाला में पधारे। कुंदनपुर के भाट को अपने साथ लिया और उसे भली प्रकार भोजन करवाया।

नानाविध पकवानों तथा मिठाइयों से और मिश्री मिली खीर से कुंदनपुर के सारस्वत भाट का खूब आदर-स्वागत किया गया। फिर पाँच-सात घोड़े दिये और उसके मनोरथ पूरे किये। पदम भक्त कहता है—पूर्ण ब्रह्म मेरे स्वामी है, भाट ने मुँह से जो माँगा वही उसे दिया गया।

शिशुपाल की भाभी से सलाह

दोहा-- राव़ रणवास पधारिया भाभी. सूं वतळाय
टीको आयो रुकम रो थांरै मन कांइ भाय

मारू--डोढ्यां भीतर गया राव़जी भाभी सूं वतळाव़ै
कुन्नणपुर सू आयी पत्रिका थांरै मन कांइ भावै
कह सिसपाळ सुणो भाभीजी व्यां' की रचना रचावो
ऊबटणो कर पीठी करो जी मंगळचार गवा़वो
भाभी कहै सुणो जी देव़र आ कांई ले ऊठ्या
आं लगनां तो व्यांव़ नहीं छै आव़ो भागर पूठा
राजा भींव रो नांवो नांही लिख्यो कंवर को आयो
भाभी कहै सुणो म्हांरा देवर कागद कंवर पठायो
कह सिसपाळ सुणो भाभी जी थे कांई दरसायी
आयो लगन म्हे पाछो फेरां हुवै घणी हळकाई
भाभी भणै सुणोजी देवर कुन्नणपुर मत जाव़ो
इण अवसर थे रहो जीवता फेरूं राव कहावो
थे पीहर उठ जाव़ो भाभी म्हे कुनणापुर जासां
राजकव़ार परण घर लावां थांरै पगां लगासां
म्हे पीहर तो जद ही चाल्या जद थे जान वणाव़ो
अब ही वात समेटो देवर क्यूं थे लोग हंसाव़ो
आतुर होय सिसपाळो बोल्यो कड़वा कांइ सुणाव़ो
छपन कोट नै बांधर ल्यावां तो म्हांनें रंग चढावो
थांरो रंग म्हे जद ही जाणां जद थे परण पधारो
सोव़न चुड़लो घर घर पड़सी अपजस होसी थांरो
वा लछमी हरि की अरधंग्या थे देव़र मत जाव़ो
म्हांरी कही बुरी मत मानो लाज खोय घर आवो
रंगमहल सिसपाळ पधारया ऊतरता पिसताया
भाभी नुगणी सेती पूछ्यो भूंडा वचन सुणाया
पदम भणै डाहल अभमानी ऊठ तळेटी आया

शिशुपाल की भाभी से सलाह

राजा रनिवास में पधारे और अपनी भाभी से बात की—रुक्मकुमार का टीका आया है, आपके मन को क्या भाता है ?

राजा ड्योढ़ी के भीतर गये और भाभी से बात करते हैं—कुंदनपुर से पत्रिका आयी है, आपके मन को क्या सुहाता है ?

शिशुपाल कहता है—भाभी जी ! सुनिये, विवाह की रचना रचाइये। उबटन कर पीठी करवाइये और मंगलाचार के गीत गवाइये।

भाभी ने कहा—देवर, सुनो। तुम यह क्या ले उठे ? इस लग्न में तो विवाह का योग ही नहीं है, भागकर वापिस आवोगे। पत्र में राजा भीष्मक का तो नाम ही नही है। यह तो कुँवर का लिखा हुआ आया है।

भाभी कहती है—मेरे देवर ! सुनो। पत्र कुँवर ने भेजा है।

शिशुपाल ने कहा—भाभीजी! सुनिये। आपने यह क्या दरसाया ? आये हुए लग्न को हम वापिस लौटा देगे तो हमारा बहुत हलकापन होगा।

भाभी बोली—देवर ! सुनो। कुंदनपुर मत जाओ। इस समय तुम जीवित रहो, फिर दीर्घकाल तक राजा कहलाओ।

(शिशुपाल ने उत्तर दिया—) भाभीजी ! आप अपने पीहर चली जाइये, हम कुंदनपुर जायेंगे। राजकुमारी को विवाह कर घर लायेंगे और आपके पैरों लगायेंगे।

(भाभी बोली—) हम तो पीहर तभी चले जब तुम बरात बनाओगे। देवर ! अब भी बात को समेट लो, क्यों लोगों को हँसवाते हो ?

तब शिशुपाल आतुर होकर बोला—क्यों कड़वी बातें सुना रही है ? छप्पन कोटि यादवों को बाँधकर लाये तो हमे रंग चढ़ाना (हमारी वाह-वाह करना)।

(भाभी ने कहा—) तुम्हारा रंग हम तभी मानेंगी जब विवाह कर लोगे। घर-घर में सुंदर चूड़ियाँ गिरेंगी (टूटेगी) (योद्धाओं के मारे जाने से उनकी पत्नियां विधवा हो जायेंगी), और तुम्हारा अपयश फैलेगा। वह लक्ष्मी हरि की अर्धांगिनी है (अतः) देवर ! मत जाओ। मेरी कही बात को बुरी मत समझो (अन्यथा) लाज गँवाकर घर आवोगे।

राजा शिशुपाल ऊपर रंगमहल में पधारे थे पर उतरते हुए (लौटते हुए) पछताये। निगुनी भाभी से पूछा तो उसने बुरे वचन सुनाये। पदम भक्त कहता है—अभिमानी शिशुपाल उठकर रंगमहल से नीचे आया।

जरासंध से सलाह

दोहा— मन उमग्यो सिसपाळ रो जुरासंध पै जाय
कागद विद्रभ देस रो थानै किसौक सुहाय
पिंडत म्हांनै यूं कहै कागद दयो फिरवाय
घर में भाभी यूं कहै जासो तो पत जाय
को तो कागद झालल्यां को तो दयां फिरवाय
जरासंध राजा बळी तुम ही करो सहाय

मारू— जद रे जुरासंध अैसें बोल्या बोल्या छै गरवाई
उठ कर पांव धरयो धरणी पर जद धरणी थररायी
दसूं दिसां में चीरी भेजो दयो रे निसाणां डंको
भली भांत परणाय र ल्याऊ तो जोरासंध वंको
द्वात कलम कागद मंगवावो मंत्री सबै बुलावो
गादी-रूप तखत कुळ-मंडण जुरासंध पै आवो
जदे जुरासंध अैसें बोल्या बोल्या गहवर दाना
चहुं दिस कागद फेर दिया ज्यू भट चालै जानां
तड़भड़ करो वेग खत फाड़ो कोको राव खुमाणा
अेक लाख सांडया सांचरिया छूटया पवन विमाणा
मोजां घणी परेवां थांनै लिखिया जाय वंचावो
रवि कै नीचे विण भिड़वाळयां नव खंडां फिर जावो
राम राम पीछे लिख दीज्यो वेग लिखो असवारी
यो अवसर अहड़ो ही जाणो थांनै सरम हमारी
कागद लिख्यो वांचतां पहली क्यांनै घणी वखाणो
कांसा उठे चळू चंदेरी इतना ही कर मानो
सायर लग सब ही चढ आवो भली वणावो साजा
पांव चलंता पहुंच्या रहज्यो लिखी जुरासंध राजा
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वेगा जाय वंचावो

दोहा— टीको आयो रुकम रो गढपतियां रंग चाव
हंस हंस मंडै राजवी बंधू नै सिंधराव

जरासंध से सलाह

शिशुपाल मन में उमंग लिये हुए जरासंध के पास गया और उससे पूछा—विदर्भ देश का पत्र आया है, आपको कैसा लगता है ? पंडित लोग (ज्योतिषी) हमें यो कहते हैं कि लग्न-पत्रिका को लौटा दो, और घर में भाभी यों कहती है कि जाओगे तो प्रतिष्ठा नष्ट होगी। कहें तो पत्रिका को स्वीकार कर लें और कहे तो लौटा दे। हे बली राजा जरासंध ! आप ही सहायता करे।

तब जरासध इस प्रकार बोला, वह गर्वित होकर बोला—उसने उठ कर ज्योंही धरती पर पाँव रखा कि धरती थर्रा गयी। उसने कहा—दसों दिशाओं में पत्र भेजो और नगाड़ों पर डंका दो। जो मैं भली प्रकार से विवाह कराकर लाऊँ तभी बांका जरासंध हूँ। दवात, कलम और कागज मँगवाओ। सब मंत्रियों को बुलाओ कि सब लोग राजगद्दी के भूषण और सिंहासन तथा कुल के मंडन जरासंध के पास आओ। जब जरासंध ऐसे बोला मानो प्रचड दानव बोला हो तो चारों दिशाओं में पत्र फिरवा दिये गये कि सुभट लोग बरात में चले (चलने को तय्यार हो जायँ)। शीघ्रता करो, जल्दी से पत्र लिखो। सब आयुष्मान् राजाओं को बुलावा भेजो। एक लाख सांड़नी-सवार चले। वे पवन के विमान की भाँति छूटे (चले)। उनको कहा गया—दूतो ! तुम लोगो को बहुत रीझे मिलेगी, लिखे हुए (समाचार) जाकर बँचवाओ। सूर्यमंडल के नीचे (पृथ्वीमंडल पर) ग्वालों को छोड़कर सब जगह फिर जाओ। राम-राम (अभिवादन की शब्दावली) तो बाद में लिखना पहले शीघ्र सवारी करने की बात लिखो। यह ऐसा ही अवसर समझिये, हमारी लाज आपको है। लिखे हुए पत्र को पढ़ने के पहले ही चल पड़ें, अधिक क्या कहा जाय, भोजन वहाँ करे तो हाथ यहाँ आकर धोवे। समुद्र तक जितने भी राजा हैं सभी चढ़कर आवे। अच्छी सज्जा बनाओ (अच्छी तय्यारी करो)। पैदल चलकर भी पहुँचे रहें (अवश्य पहुँचे)। राजा जरासध ने इस प्रकार लिखा।

पदम भक्त प्रणाम करके पैरों पड़ता है और कहता है—जरासध ने कहा—जल्दी से जाकर पत्र पढ़वाओ।

* रुक्मकुमार का टीका आया जानकर गढ़पतियों को बड़ा हर्ष हुआ। राजा और मंत्री सिंधराव हँस-हँसकर बंधु (भाई दंताधर) को पत्र लिखते है।

---

* यहाँ से आगे बरात के प्रसंग का पाठ बहुत अव्यवस्थित है अतः अर्थ भी अनिश्चित और आनुमानिक है, उसमे अनेक अशुद्धियाँ होने की संभावना है।

मारू— बंधू नै सिंधराव़ लिखावो थे दळथंभण आव़ो
मंत्री नै महाराज कहत है म्हां सिरखा थे जाव़ो
सिंधराव़ मंत्री जद चाल्या भेटचा पवन विमाणा
मानसरोवर पार का राजा राज करै सुलताना
कह सुलतान सही नो राजा सिंध मंत्री ! चढ जावो
सबळ तेज दंताधर राजा सूतो जाय जगावो
मंत्री जाय दिया परवाणा अणंत उछाह वंचायो
कुन्नणपुर रुकमाल कव़र को टीको ले भट आयो
टीका में दुबध्या सी जाणो नांव़ भींव रो नांही
थां सेती सनमंध कियां सूं राजा राजी नांही
सुण मत्री का वचन ज अहड़ा यूं दंताधर बोलै
रवि कै नीचै नवखंड मांही नहिं सिसपाळो तोलै
चापर करो वेग चढबा की सबै संवारो हाथी
नौ खंडां नेजाधर राजा चढचा दंतधर साथी

दोहा— नाद हुवा नव खंड में चढिया देस विदेस
नोबतखाना वाजिया थरहर कंप्या सेस

मारू— कंप्या सेस महेसगिर कंप्या छिप गया जम का द्वारा
कंकण देस नरेस्वर चढिया दळां वार नहिं पारा
गिगन मंडळ में नोबत वाजै वादळ वरणा नेजा
पहर कवच आव़ध कर धारै चढचा दंतधर राजा
बोलत नकीब बहुत गुंजारा कामण सब ही मोहै
तखता ऊपर नचै तायफां रंग वराती सोहै
हिंदळता दरबार पहूंता वंटचा रंग अपारा
छत्रां छत्रपती मिल सोहै अर विड़दां का भारा
घणै चाव सिसपाळो उठियो तड़भड़ ऊठचा सारा
जरासंध सूं बाथां मिलिया जाजम हुवा जुहारा
डेरा आय वाग में दीया दंतधरा कै राजा
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वाजै नौवत वाजा

दोहा— खत पहुंच्या सिसपाळ का वांचै चतर सुजाण
देस बंगालै गढपती हुई पलाण - पलाण

हे मंत्री सिंधराव ! बंधु को लिखो कि हमारे दल के स्तंभ आप आइये। महाराज मंत्री को कहते है कि तुम हमारे प्रतिनिधि होकर उनको बुलाने को जाओ। तब सिधराव मंत्री चले मानो पवन के विमान से भेट की (पवन के समान वेग वाली सवारी पर चढ़कर चले)। मान-सरोवर के पास सुलतान राज्य करते थे वहाँ पहुँचे। सुलतान ने कहा— हे सिंधराव मंत्री ! चढ़कर जाओ जहाँ बलवान एव तेजस्वी राजा दंताधर सोया है, और उसे जाकर जगाओ (दताधर कुभकर्ण का अवतार माना गया है)। मंत्री ने आकर परवाना (पत्र) दिया। उसे अत्यत उत्साह के साथ पढ़वाया। उसमें लिखा था कि कुदनपुर से रुक्मकुमार का टीका लेकर भाट आया है। मंत्री ने कहा—लग्नपत्रिका मे दुविधा-सी समझिये। उसमें भीष्मक का नाम नही है। आपके साथ सबंध स्थापित करने में राजा (भीष्मक) प्रसन्न नहीं हैं। मंत्री के ऐसे वचन सुनकर दंताधर यों कहता है—सूर्य के नीचे नौ खंडों में शिशुपाल के तुल्य कोई नही है। जल्दी चढ़ने की (सवारी की) तय्यारी करो। सारे हाथियो को सजाओ। फिर नौ खंडों के नेजाधारी (झंडाधारी राजा) राजा दताधर के साथ चढ़े (चढ़कर चले)।

नव खंडो में शोर मच गया, देश-विदेश के राजा लोग चढ़े। नौबत-खानों में नौबत बजने लगी। शेषनाग थरथर काँप उठे।

शेषनाग काँप उठे, शिवजी का कैलाश पर्वत डोल गया, जम के द्वार छिप गये। कंकण देश का अधिपति चढ़ा। उसके दलों का वार-पार नही था। गगन-मंडल मे नौबत बजने लगी। मेघवर्णी झडे लेकर, कवच पहन कर और शस्त्रास्त्रो को हाथ में धारण कर दंताधर राजा चढ़ा। नकीब (चोवदार) पुकारते हैं, बहुत गुंजार (शब्द) हो रहा है। सभी कामिनियाँ मुग्ध हो रही है। तख्तों के ऊपर तवायफे (गणिकाएँ) नृत्य कर रही है। रंगभरे बराती सुशोभित हो रहे हैं। हीडते हुए (मस्ती से चलते हुए) राज-दरबार मे पहुँचे। अपार रंग बंटे। छत्रपति छत्रपतियों से मिलकर शोभित हुए। खूब विरुदों के गान होने लगे। शिशुपाल बड़े चाव के साथ उठा। सभी लोग हड़बड़ा कर उठे। जरासंध के साथ भुजा भरकर मिले। जाजम पर जुहार (अभिवादन) हुए। दंताधर राजा ने आकर बाग में डेरा दिया। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों पड़ता हूँ—नौबत के बाजे बज रहे हैं।

शिशुपाल का पत्र बंगाल देश में पहुँचा। चतुर सुजान लोगों ने पढ़ा। बंगाल देश के गढ़पति के यहाँ चढ़ाई की (सवारी की, चलने की) तय्यारी हुई। (पलाण = पर्याण, ऊँट की जीन; पलाण-पलाण = पलाण कसो, पलाण करो = चलने की तय्यारी करो)।

मारू—हुई पलाण पलाण बंगालै करड़ा कागद झालो
दारू धाक अराबा सारो चंदेरी नै चालो
मंत्री भणै बंगालै राजा बुध की वात विचारी
उण राजा भारथ लिख भेज्या जान दूसरी त्यारी
सुणकर मंत्री-वचन ज अहड़ो रोस भरचा रिसियाणा
सिसपाळै पहली जंग झालां तो बंगालै राणा
ग्यारह लाख बाण भरवाया आवध इधका झालो
वडै साथ चंदेरी चालो दळ दिक्खण नै हालो
सतरा कुळी असुर चढ छूटचा हुवा दसूं दिस मेळा
चकवै चढचा चौसरा वाज्या हुवा बंगालै भेळा
डेरा आय वाग में दीया बंगालै का राजा
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वाजै नौबत वाजा

दोहा— घोड़ां घूघर घुमघुमै दावानळ नै सार
कछ भुज को चकवै चढचो कुंभकरण आकार

मारू—कुभकरण आकार खड़क्क्यो राज रीत ठुकरायी
अड़भड़ियां आधार गुमानी दम्मघोस रो भाई
ताजी खचर लाख खंधारी हिरणू हीर हजारी
कछभुज का राजा की सोहै अजब वणी असवारी
हिरणा हिरण हजारी छूटा अबलक खंद अमाना
पड़ती वीज समो दळथंभण चढचा राज कुळ दाना
सब दळ आण मिल्या चंदेरी दानां बंटै बधाई
कछभुज का राजा सू बाथां मिल्यो जुरासंध राई
डेरा आय वाग में दीया कच्छभुजा के राजा
पदम भणै प्रणवै पाय लागू वाजै नौबत वाजा

दोहा— सांचरिया दळ सूरमा कोट गयंदां भार
सावंत सिंघळदीप रा चढचा जान सिणगार

मारू—चढचा जान सिणगार जुगत सू च्यारूं कूंट अवाजा
सांचर चढचा चंदेरी नै दळ सिंघळदीप रा राजा

बगाल देश में चढ़ाई की तय्यारी हुई। बोले— कठोर (संकट अर्थात् युद्ध के सूचक) पत्र को स्वीकार करो। तोपों मे बारूद भरो और चदेरी को चलो। मन्त्री बंगाल के राजा से कहता है—आपने बुद्धि की बात सोची। उस राजा ने युद्ध की बात लिखी है। वहाँ दूसरी बरात तय्यार मिलेगी [दूसरी (कृष्ण की) बारात भी आवेगी]।

मंत्री का ऐसा वचन सुनकर राजा रोष में भरकर क्रुद्ध हो उठा और बोला— शिशुपाल से पहले युद्ध का भार सम्हाले तब हम बंगाल के राजा हैं।

ग्यारह लाख बाण भरवाये, श्रेष्ठ आयुध लिये। बहुत बड़े साथ को लेकर चंदेरी को चलो। सारा दल दक्षिण को (दक्षिण-स्थित विदर्भ देश को) चलने के लिए तय्यार होकर चलो।

सत्रह कुलों के असुर चढ़कर चले। वे दशों दिशाओ में एकत्र हुए (मेला लग गया)। चारों ओर के चक्रवर्ती राजा चढ़े और चौसर बाजे बजे। सब आकर बंगाल के राजा के शामिल हुए।

बंगाल के राजा ने आकर बाग में डेरा दिया। पदम भक्त कहता है कि में प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—नौबत के बाजे बज रहे है।

घोड़ों के घुंघरू बज रहे है। ... ... कच्छ-भुज का चक्रवर्ती राजा चढा जो आकार मे कुंभकर्ण के समान था।

कुंभकर्ण के आकार वाला राजा चला जो राज-रीति से ठकुराई (शासन) करता था, संकट मे पड़े हुओ का आधार था, अभिमानी था और शिशुपाल के पिता दमघोष का भाई था। उसके साथ एक लाख कंधारी घोड़े, हजारों श्रेष्ठ हिरणी घोड़े थे। कच्छभुज के राजा की अद्‌भुत रूप से सजी हुई सवारी सुशोभित हो रही थी। हिरण जैसे वेग-वाले हजारो हिरणी घोड़े चले, अबलक घोड़ों की कोई गिनती नही थी। गिरती हुई बिजली के समान भयकर दल के स्तभ रूप राजकुलों के दानव चढ़े। सब दल आकर चदेरी मे मिले। दानवों में बधाइयाँ बँटने लगी। राजा जरासंध कच्छभुज के राजा से भुजा भर कर मिला। कच्छभुज के राजा ने आकर बाग मे डेरा दिया। पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—नौवत के बाजे बज रहे है।

सिहलद्वीप के सामंत बरात सजाकर चढ़े। शूरवीरों के दल चले। उनके साथ करोड़ों हाथियों के समूह थे।

युक्तिपूर्वक बरात सजाकर चढ़े। चारों दिशाओं में शोर होने लगा। दल को एकत्र कर सिंहलद्वीप के राजा ने चंदेरी की ओर प्रस्थान किया। समुद्रों के वीच में असली दरियाई जाति के घोड़े चल रहे थे। वे घोड़े

समंदां वीच फिरै दरियाई असल जात का घोड़ा
वाजी सीस झपट्टी घालै डाण भरै जळ होडा
माही और मुरातब सोहै कोइ चढिया कोइ पाळा
घोड़ा हीस घुमंता गाजै सात लाख सूंडाळा
ढळकै ढाल फरूकै नेजा दळ दानां का आया
देखो तीन दिवस चंदेरी दानां अंत न पाया
डेरा आय वाग में दीया सिंघळदीप के राजा
पदम भणै प्रणवै पाय लागू वाजै नौवत वाजा

दोहा— मारू देस मडोवरा मुरड़ चल्या दळ पाण
पवन तुरी पाखर धरया जंगी होदा भाण

मारू— जानी जोर भला चढ छूटा वजै नाद घणघोरा
उडता पंछी उडण न पावै राजा चढया मंडोरा
ठिमाठिमा ते हैबर ठिमकै पवन रूप केकाणा
हसत्यां ऊपर अंबावाड़ी चढया राज सुलताणा
गिगनां मांही फरकै नेजा सरसा मल चढ आया
दळभंजण दाना कुळ मंडण चढ चंदेरी आया
डेरा आय वाग में दीया मंडोवर के राजा
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वाजै नौवत वाजा

दोहा— होलर भयी दिवान में चढ आवै रमझूळ
राजा चढचो कनोज को सिघ वदन अवधूळ

मारू— बो अवधूळ दळांपति राजा उमदी जान वणायी
सांचर चढया चंदेरी नै दळ चढतां वार न लायी
बाजिन संग लयी बाईसी अंधकार धुंधकारा
चंदेरी कन्नोज विचाळै बंध गया अैक लंगारा
कांकड़ जाय सभी दळ पहुंता सांडया वेग पठाया
जुरासंध सूं यूं जाय कहियो सिंधराव चढ आया
तड़भड़ भयी वडा दरबारां सब ही साम्हा धाया
रंगमहल सिसपाळ डाहल कै सिध्धराव चढि आया
आदर मान बहुत ही कीन्हा भुज पकड़ बैठाया
आधी गादी छोड जुरासंध तखत उपर बैठाया

सिरों पर झपट्टे मारते थे (सिर पर से कूद जाते थे)। वे जल-घोड़े लम्बी छलांगें भरते थे। माही मुरातिब (मछली के निशानवाले झंडे) सुशोभित हो रहे थे। कई चढ़े हुए (सवार) थे और कई पैदल थे। घोड़े हीस रहे थे, घूमते हुए (मस्त) सात लाख हाथी गरज रहे थे।

ढालें झूल रही थी, झंडे फरहरा रहे थे। इस प्रकार दानवों के दल आये। देखो, तीन दिन तक चंदेरी में दानवों का अंत ही नहीं मिला।

सिंहलद्वीप के राजा ने आकर बाग में डेरा दिया। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—नौबत के बाजे बज रहे है।

मारवाड़ देश के मंडोवर राज्य के दल बल के साथ मरोड़ खाते हुए चले। पवन जैसे तेज घोड़ो पर पाखर रखे और हाथियों पर जंगी (युद्ध के) हौदे।

श्रेष्ठ बराती वेग के साथ चढ़कर चले। घनघोर बाजे बज रहे थे। उड़ते हुए पक्षी उड़ नही पा रहे थे। इस प्रकार मंडोर का राजा चढ़ा।

घोड़ों के पैरों में ठमठम करते नूपुर ठमक रहे थे (बज रहे थे)। वे घोड़े पवन-रूप थे। हाथियों के ऊपर अम्वाड़ी लगी हुई थी। इस भाँति सुलतान राजा चढा।

गगन-मण्डल मे झंडे फहरा रहे थे। सबल मल्ल चढ़कर आये। दलों का भंजन करनेवाले दानव-कुल के भूषण चढ़कर चंदेरी आये।

मंडोवर के राजा ने आकर बाग में डेरा दिया। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—नौबत के बाजे बज रहे है।

दरबार में हलचल हुई। ... ...
सिंह के समान भयकर मुखवाला मस्त वीर कन्नौज का राजा चढ़ा।

दलों के स्वामी उस मस्त वीर राजा ने उमदा बरात बनायी। एकत्र होकर वे दल चंदेरी को चढे, उनने चढ़ने में देर नही लगायी। घोड़ों के साथ सेना को लिया। सेना के चलने से अन्धकार हो गया, धुंध छा गयी। सेना इतनी लम्बी थी कि चंदेरी और कन्नौज के बीच में एक लीक सी बंध गयी।

सभी दल सीमा पर जाकर पहुँचे। साँडनी-सवारों को तुरन्त भेजा— जरासंध से जाकर यों कहो कि सिद्धराज चढ़कर आये हैं।

बड़े दरबार में हड़बड़ी मची। सब लोग दौड़कर सामने आये। डाहलपति शिशुपाल के रंगमहल में सिद्धराज चढ़े हुए पहुँचे। उनका खूब आदर-सम्मान किया गया। उन्हें भुजा पकड़ कर बिठाया। जरासंध ने आधा सिंहासन छोड़कर उन्हें अपने बराबर राजसिंहासन पर

डेरा आन वाग में दीया कनवृजपत के राजा
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वाजै नौबत वाजा

दोहा— मरहट रा मेवाड़िया मांही भंवर भुजंग
चढ्या सिचाणै केहरी हुवा हमाला रंग

मारू— रंग ज हूवा लाल गुलाबी चढ्या जान रा मांझी
तड़भड़ियां आया सब राजा जान भलेरी साजी
पैंड पैंड पै नचै उरबसी चलती करै विहारा
देववधू सब चढी विमाणां गावै मंगळचारा
वाड़ी वाग हवाई छूटै उडती चलै हिमामां
जुरासिंध मेवाड़पती की होदै हुई सिलामां
डेरा आय वाग में दीया मेवाड़पत के राजा
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वाजै नौबत वाजा

दोहा— गिरीवरां गर सागरां तारा तखत तमोळ
खत पोंच्या सिसपाळ का दूत गया रमझोळ

मारू— दूतां जाय दिया परवाना दम्मघोस रा भारी
थां चाल्यां सिर बंधै सेवरो वेग करो असवारी
लिखिया वांच राव डाहल का दिन दोय पहली आज्यो
मांढै जान दूसरी आसी जुध को सामा लाज्यो
मिसलत हुई राव दरबारां दळ रै चढावो वंका
चहुं दिस चढी चाव री फोजां हूवा नगारै डंका
कुळी छतीसूं सोहति राजा दळां वार नहिं पारा
राजा चढ्या हुकम कै तावै फोजां भोत सिंगारा
मंगळ देस मलार - कुलडी मंजल देस मलारा
सात तखत और तीस छोहणी चढ्यो उतर को राजा
कावल और खंधार कामरू दैत्य देस किलंगाणा
रूम सूमरा तासम दाना छांड चल्या कमठाणा
तिरिया देस बुखार बंगाला परवत राज समाना
पीळी भींत बलख का राजा चढ चाल्या असमाना
उजबक चढ्या लाख नव दूणा सोभा रंग सभा का

विठाया। कन्नौज के राजा ने आकर बाग में डेरा दिया। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—नौबत के बाजे बज रहे है।

महाराष्ट्र देशीय मेवाड़ के राजा चढ़े। ... ...

लाल और गुलाबी रंग सर्वत्र छा गया। बरात के मुखिया चढ़े। सब राजा हड़बड़ाये हुए आये। अच्छी बरात सजायी। कदम-कदम पर उर्वशियाँ नृत्य कर रही थीं। वे चलती हुई खेल कर रही थीं। सब देववधुएँ विमानों में चढ़ी हुई मंगल-गीत गा रही थीं।

अनेक प्रकार की आतिशबाजियाँ छूट रही थीं। हिमामें उड़ती चलती हैं। मेवाड़पति और जरासंध की हाथियो के हौदों पर सलामे हुईं।

मेवाड़पति ने आकर बाग में डेरा दिया। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—नौबत के बाजे बज रहे है।

शिशुपाल के दूत पहाड़ों और समुद्रों को पार करते हुए तारातंबोल की राजधानी पहुँचे और वहाँ के राजा को शिशुपाल के पत्र दिये।

दूतों ने जाकर दमघोष के बड़े परवाने दिये—आपके चलने से ही वर के सिर पर सेहरा वंधेगा। जल्दी से सवारी करें। (दमघोष = शिशुपाल के पिता का नाम)।

वे राजा शिशुपाल के लिखे हुए को पढ़ते है—दो दिन पहले आ जाइये। मांढ़े में (विवाह-मंडप मे) दूसरी बरात भी आयेगी। युद्ध का सामान लावें।

राजा के दरबार में सलाह हुई। बांके सैन्य लेकर चढ़ो। चारों दिशाओं में चाह-भरी फौजें चढ़ीं। नगाड़ों पर डके पड़े।

सेना में छत्तीसों कुलों के राजा सुशोभित हो रहे है। दलों का वार-पार नही है। आज्ञा के अधीन होकर राजा लोग चढ़े। फौजों को खूब सजाया।

मंगल देश, मलार-कूलड़ी, मंजल देश, मलार आदि सात सिंहासनाधीश्वर और तीस अक्षौहिणी लेकर उत्तर देश का राजा चढ़ा।

काबुल, कंधार, कामरूप, दैत्यदेश, कलिंग, रूम-सूम—इन सबको न्यौता दिया। वे कमठाणे (तामीर के काम) छोड़कर चल पड़े। तिरिया-देश, बुखारा, वगाल, पर्वत देश—इन सबके राजा तथा पीलीभींत और वलख के राजा आसमान में चढ़कर चले। नौ के दूने अर्थात् अठारह लाख उजवक चढ़े। सभा का रंग बड़ा शोभामय था। वाजे बज रहे थे, झंडे फरहरा रहे थे। दक्षिण की ओर हल्ला (प्रस्थान) हुआ। यों करते हुए चंदेरी पहुँचे। दानवो के दल सर्वत्र छा गये। राजा जरासंध उनके स्वागत के लिए सिंहासन को छोड़कर सात योजन सामने आया।

वाजै त्रिमाळ फरकै नेजा हुवा दिगाण नै हाका
यूं करता चंदेरी आया दळ दानां रा छाया
जोजन सात जुरासंध राजा तगत छोड़कर धाया
डेरा आय बाग में दीया नागानंदोन कै राजा
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वागै नौबत वाजा

दोहा— सिद्ध सिरी सब्वोपमा राज सकल गुणसार
तखत चंदेरी राजवी सैणां लिखै जुहार

मारू— सैणां लिखै जुहार राजवी नव मंत्री मुह आवौ
नृता सात राम लिख भेजी गढ मुलतान सिधावौ
हम सूं भी राजा इधकेरा जंग जीत भिड़दाना
वगतभाण राजा है बंका सुरगहूण का राणा
चंचळ चलै पवन इधकेरा सागर अहरा नाना
मोकळ चाप चल्या चंदेरी जत जाय दिया दिवाणां
नवला खोल दिया दरवाजा सिष्ठ निसै सैनाई
जुरासंध सिसपाळ लिखी है राजा घणी बडाई
अबकै कान्ह कुनणपुर आवै नीसां अवसर आवौ
कंस वैर भिड़वाळया भेजी राजा भीच जगायौ
सवहि साथ मतवाळा लाज्यो जब लग तुमरि दुहाई
पांय चलंता पहुंता रहिज्यो लिखी जुरासंध राई

दोहा— सिध वळी राजा भणै भल सिणगारो जान
गादी हिरणाकुरस की वखतभाण सुलतान

मारू— तखत वखत सुलतान राजवी विरद चढ़ता बहु दाना
ऊगै भाण छिपै रवि तांई फेर दिया परवाना
दसूं दिसां का राजा चढिया गढां गढां उळगाणा
दानां द्वार दिवी चकबंधी फिर गया डाक दिवाणां
मंगळ देस मुलक मळियागिर पांचूं देस पलाणा
राजा चढिया जूनागढ रा सात लाख चीमाणां
जंबुदीप गुजरात तळेटी नव सत नेजा धरिया
मान खान पुहलाभ कुलंभी भील भूप सांचरिया

तारातंबोल के राजा ने आकर बाग में डेरा दिया। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ--नौबत के बाजे बज रहे हैं।

सिद्धि श्री सब उपमाओं के योग्य समस्त गुणों के सार सुहृदो को तख्त चंदेरी के राजा अभिवादन लिखते है।

चंदेरी के राजा सुहृज्जनों को अभिवादन लिख रहे है। सब मंत्री लोग एकत्र होकर आओ। निमंत्रण के साथ लज्जा भी लिख भेजो (कि हमारी लाज अब तुम्ही को है)। और मुलतानगढ़ रवाना करो।

हमसे भी बड़े राजा युद्ध को जीतनेवाले, दानवो से भी भिड़नेवाले राजा बख्तभान है जो सुरपट्टण के राजा है और बड़े बांके है।

घोड़े पवन से भी अधिक वेग से चले। ... ... स्वयं चदेरी से चले और दरबार में जाकर पत्र दिये।

सुन्दर दरवाजे खोल दिये गये। ... ... जरासंध और शिशुपाल ने वहुत बड़ाई लिखी है।

अबकी बार कृष्ण कुंदनपुर आवेगा, बहुत अच्छा अवसर आया है। ग्वाले से कंस का वैर लेना है। राजा भीष्मक ने योग जुटा दिया।

जहाँ तक तुम्हारी दुहाई है, सब मतवाले वीरों को साथ में लाना। पैदल चलकर भी पहुँच कर रहना--राजा जरासध ने ऐसा लिखा।

सिंह के समान बली उस राजा ने कहा--बरात को भली प्रकार सजाओ।

हिरण्यकश्यप के सिंहासन पर सुलतान बख्तभान राजा है। उसके साथ बहुत सारे दानव क्रुद्ध होकर चढ़े। राजा ने जहाँ सूर्य उगता है वहाँ से जहाँ सूर्य अस्त होता है वहाँ तक परवाने घुमा दिये।

दशों दिशाओं के राजा चढ़े। दुर्ग-दुर्ग के सामत भी चढ़े। ... ...

मंगल देश, मलयागिरि का मुल्क, पाँचों देशों ने प्रस्थान किया। जूनागढ़ के राजा सात लाख विमान लेकर चढ़े।

जंबूद्वीप, गुजरात, तलहटी, नौ सौ झंडे लिये हुए मान देश, खान देश, पुहलाम, कुलंभी और भील-राजा चले।

धारा, द्रोणदेश, ध्रुवमंडल, कोंकण, गलारो देश, सेतुवध रामेश्वर के राजा और वराह तथा मलार देश के राजा; आंवानेर, अकलंद, अखडी और पूना परबंधी, दिल्ली द्वीप, सोनपत के राजा--इस प्रकार असुरों की वरात उमड़ी। नागरचाल और नमंदी के राजा, ग्वानदेश,

धारा द्रोण देस धुर मंडळ कोकण देस गलारो
सेतबंध रामेसर राजा अर वाराह मलारो
आभानेर अकलंद अखंडी अर पून्यो परबंधी
दिली दीप सौंनपत का राजा असुरां जान उमंडी
नागरचाळ नमंदी राजा खान देस मुगलाणो
कासी रूपचंदना राजा नवल देस सो जाणो
हथनापुर गिरनेर गुमानी रगतवीज रोताना
मानो साम सेर परबत से चढचा दूसरा दाना
दाना-दळ डाहल कू भावै धरती धरै न पांवे़
जमघंट का जोरावर राजा बखतभाण कै तावै
सांतर हुई सहज नौ कूंटी गाढी जान सिगारी
असी लाख हलका सूडाळा राव तणी अंबारी
सायर झाळ समद ज्यूं ऊठै घटा लूंबती आयी
दिखण देस दाना ओलरिया पड़ी नगारां घाई
चद र सूर छिप्या रज सेती हौंय गयी रात अंधेरी
बेरा दिया राव डाहल नै मोकळ चल्या चंदेरी
चाव करै चंदेरी - राजा जुरासंध मन भाया
नव़ जोजन में जरी बाफता जुरासंध विछवाया
सितर कोट दरबानी चाकर वखतभाण बैठाया
राजा करै जान का मोहला चोपदार गुदराया
जुरासंध सा राजा देखो अेक घाट सौ आया
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं देव़ संजोग मिलाया

दोहा— मदछकिया माता फिरै जाण बाबरा भूत
कळह ज वाज्यां काहला जाण क जम रा दूत
इधक उमाऊ अचपळा सायर जिस्या सपूत
झटकां सूं बटका हुवै थळव़ट का रजपूत

शिशुपाल और भामी

दोहा— चंदण चौकी उबटणा दूल्हो हौंय सिसपाळ
निन्याणव़ राजा जुड़चा झळकै मोती माळ

बुगलाणा, काशी और रूपचन्द के राजा, नवल देश, हस्तिनापुर और गिरिनगर के गुमानी शासक रक्तबीज के रावत चढ़े मानो सामशेर पर्वत से दूसरे दानव चढ़े हों।

यह असुरों का दल डाहलराज-शिशुपाल को अच्छा लगता है। वे असुर पृथ्वी पर पैर नही रखते। यमघट के बली राजा भी बख्तभान के अधीन थे।

नौ हजार करोड़ की जबर्दस्त भीड़ हुई। बरात को खूब सजाया। अस्सी लाख हाथियों के हलके थे। उनके साथ राजा शिशुपाल की अंबाड़ी थी। मानो समुद्र मे बड़वानल की ज्वालाएँ उठ रही हों। मानो घटा उमड़ती हुई आयी हो। वे दानव दक्षिण देश की ओर चले। नगाड़ों पर घाव पड़े। चाँद और सूरज धूल से छिप गये। अँधेरी रात हो गयी। राजा शिशुपाल को सब ब्यौरा दिया गया। ... ...

चंदेरी का राजा चाव कर रहा है यह जरासंध के मन को सुहाया। उसने नौ योजन मे जरी और बाफ्ते के वस्त्र बिछवा दिये। बख्तभान राजा के सत्तर कोटि दरबानी चाकरों को (सैनिको को ?) उन पर बिठा दिया।

राजा शिशुपाल बरात का सर्वेक्षण करता है। उससे चोबदारों ने निवेदन किया— आप देखें, जरासध जैसे एक कम सौ (अर्थात् निनानबे) राजा आ गये हैं।

पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरो लगता हूँ—विधाता ने ही यह संयोग मिला दिया (विधाता ने सबको एक स्थान पर कर दिया जिससे उनका एक साथ नाश करने में और पृथ्वी का बोझ हलका करने में सुभीता हो)।

मद में छके हुए मतवाले सुभट फिर रहे थे। वे ऐसे जान पड़ते थे मानो 'बाबरा' भूत हों। युद्ध के बाजे बजने पर मानो यमराज के दूत ही थे। वे अधिक उत्साहवाले और चंचल थे। वे सपूत योधा सागर जैसे थे। वे मानो थल-प्रदेश के (मरुस्थल के) राजपूत थे जिनके झटकों (प्रहारों) से शत्रु खंड-खंड हो जाते थे।

शिशुपाल और भाभी

शिशुपाल दूल्हा बन रहा है। चंदन की चौकी पर उबटन किया जा रहा है। निनानबे राजा एकत्र हो गये है। मोतियों की माला चमक रही है।

मारू—जद सिसपाळो वानैं बैठो मरदन तेल करायी
सबैं कामणी मंगळ गावैं मोतीड़ां री लूब लगायी
दूल्हो राव भणैं सिसपाळो भाभी नेड़ा आवो
महंदी लावो काजळ सारो अपणो नेग चुकावो
जरकसी पहर सवायो वागो पंचरंग पाग वणायी
सबैं कामणी मंगळ गावैं भाभी निकट बुलायी
व्यांव उछाव मंगळ नहिं गावो मुखड़ो क्यूं मुरझायो
म्हांरै तो सिर बंधैं सेवरो थांनैं क्यूं नहिं भायो
वडा वडा बळवंता राजा मस्तक छत्र विराजैं
कुन्नणपुर सूं भागर आवो कुळ डाहल रो लाजैं
कह सिसपाळ सुणो थे भाभी सुरमो वेगो सारो
कुनणांपुर नैं करां सागती म्हांनैं होय अंवारो
हळधर आवैं क्रोध करकैं हळ मूसळ संभाळैं
हळ सूं तो थारैं कजळो घालैं मूसळ रेख संवारैं
दोरो हुय सिसपाळो बोल्यो ग्वाळ्या री भीड़ां जावो
म्हारै राज में ठौड़ नहीं थे पीहरियैं उठ जावो
म्हे पीहरियैं जद ही चाल्या घुड़लां जान वणायी
श्रीकृष्ण पर तेग संभाळो मती मरो विन आयी
काळै कृष्ण री करो वडाई सो थांरैं कांई लागैं
दळ जद देख्यो राव डाहल को दौड़ पयादो भागैं
ब्रह्मा नैं सावत्री सोहै इंद्र घरां इंद्राणी
संकर नैं पारवती सोहै केसव कमळा राणी
भाभी देवर यूं कह झगड्या देवर वात न भायी
कहै पदम डाहल अभमानी नीकासी करवायी

सोरठ—मत ना कर हो कंवर निकासी आगैं आवैलो व्रजवासी
छपन कोट जादू चढ आसी आसी द्वारका वासी
कोप्यो कृष्ण दानवां ऊपर तीन जीवता आसी
हळधर सिरसा जानी आसी घाल डाहल गळ पासी
तेतिस क्रोड़ देवता आसी संकर तपसी आसी
सठ रुकमइयो मूरख राजा डाड़ी मूंछ मुंडासी
रुकमण राणी कृष्णकंवर की थारैं कदेयन आसी

तब शिशुपाल 'वान' बैठा। तेल-मर्दन और मालिश करवायी। सब कामिनियाँ मंगल गीत गाने लगी। मोतियों की लटकनें लगायी हुई थीं। वर-राजा शिशुपाल कहता है-- भाभी! पास आइये। मेंहदी लगाइये, काजल डालिये और अपना नेग चुकाइये (लीजिये)। वर ने जरी का आलीशान 'वागा' पहनकर पँचरंगी पाग धारण की। सब कामिनियाँ मिलकर मंगल गीत गाने लगीं। उस समय भाभी को निकट बुलाया। आप विवाह के उत्सव में 'मंगल' नहीं गाती है, मुख क्यों मुरझा रहा है? मेरे सिर पर सेहरा बंध रहा है, आपको क्यो अच्छा नही लग रहा है? (भाभी ने कहा--) बड़े-बड़े बलवान राजा है जिनके सिर पर छत्र सुशोभित हैं। तुम कुंदनपुर से भाग कर आओगे और डाहल का वंश लज्जित होगा। शिशुपाल ने कहा--भाभी! सुनिये। जल्दी से सुरमा डालिये। हम कुंदनपुर को प्रस्थान करेंगे। हमें देर हो रही है। (भाभी ने कहा--) बलराम क्रोध करके आ रहा है जो हल और मूसल को सँभालता है। हल से वह तुम्हारे काजल डालेगा और मूसल से रेख सँवारेगा। शिशुपाल दु:ख पाकर बोला-- आप ग्वाले के पक्ष में जा रही है। (अत:) मेरे राज्य में जगह नही है, अपने पीहर चली जाइये। (भाभी बोली--) मै तो पीहर तभी चली जब तुमने घोड़ों की बरात बनायी। श्रीकृष्ण पर तलवार उठा रहे हो, मौत आये बिना ही मत मरो। शिशुपाल--काले कृष्ण की वड़ाई कर रही है, वह आपका क्या लगता है? जब वह डाहल-राज के दल को देखेगा तो पैदल ही भाग जायेगा। भाभी--ब्रह्मा को सावित्री शोभा देती है, इंद्र के घर में इंद्राणी शोभा देती है और शंकर को पार्वती शोभा देती है उसी प्रकार रानी कमला (रुक्मिणी) केशव (श्रीकृष्ण) को शोभा देती है।

भाभी और देवर यों कहकर झगड़ने लगे। देवर को यह बात नहीं सुहायी। पदम भक्त कहता है-- अभिमानी शिशुपाल ने बरात की निकासी करवा दी।

(भाभी ने कहा--) हे कुँवर! निकासी मत करो, आगे (वहाँ पर) व्रजवासी कृष्ण आयेगा। छप्पन कोटि यादव चढ़कर आयेंगे, और आयेंगे द्वारिका के निवासी। कृष्ण दानवों पर कुपित हुए है। युद्ध से जीवित तीन ही लोग लौटेंगे (जरासध, शिशुपाल और नाई)। हलधर (बलराम) सरीखे बराती आयेंगे जो शिशुपाल के गले में फाँसी डालेंगे। तेतीस कोटि देवता आयेंगे और आवेंगे तपस्वी शंकर। दुष्ट रुक्मइया मूर्ख राजा है, अपनी दाढ़ी-मूंछें मुँड़वावेगा। रुक्मिणी कृष्णकुंवर की रानी है, वह तुम्हारे यहाँ नहीं आवेगी (तुम्हे नही मिलेगी)। जिन राजाओं का वल करते हो, वे काम पड़ने पर भाग जायेंगे। तुम 'मौर'-बँधे ही वापिस

जिण राजन को जोर करत है काम पड़्यां भग जासी
बंध्यो मोड़ तूं पाछो फिरसी होय जगत में हांसी
वडा वडा राजा मरवासी कुळ नै काट लगासी
पदम भणै प्रणवै पाय लागू पाछै ही पिछतासी

सोरठ—हट जा भावज हट जा ए घट जायलो मान तेरो
कान्हकंवर की करत वडाई नंदराय को चेरो
सतरै वार तो आगै भागो अवकै डाव ज मेरो
गऊ चरावै वंसी वजावै व्रद्रावन को हेरो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं अवकै करूं निवेरो

सोरठ—रायजादा वींद ! मानो
थांनै भाभी दे छै तानो हो
श्रीकृष्ण वळदेवजी हरि हळधर दोंउं वीर
जाकी सनमुख जुध करै कोण सुभट रण धीर
सायर बांध्यो सिला तिरायी मारचो रावण दानो
केस पकड़ हरि कस पछाड़यो मारचो घर रो मामो
जिण नख पर गोवरधन धारचो डूवत विरज उवारचो
नरसिंघ रूप हरि आगे धारचो भक्त प्रळाद उधारचो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं तीन लोक नहिं छानो

देस— म्हे तो थांनै स्याणा जाण्या राज !
छिप्या रह्या इतरा दिन तांई नीका जाण्या आज
जे कोई सीख तुमारी मानै विगड़ै उणरो काज
घर मांहरो विख्यात जगत में जास्यां सेना साज
जुध करस्यां कुनणापुर मांही ग्वाळचो जासी भाज
पदम भणै भाभी सूं देवर होणी होसी राज

सोरठ—भाभी ऊभी रंगमहल में देवर नै समझावै
भींव-कंवरि के रूप लुभाणो वा तो हाथ न आवै
कहै छै भाभी सुण म्हारा देवर कुनणापुर मत जावो
म्हांसूं छोटी वहन ज म्हांरै परण घरां ले आवो
त्रिभुवनपत सूं वैर घाल कै ना कोई जीतो आवै
चौमासा में उडै आगिया पांख घणी फुरकावै

लौट आओगे और जगत में तुम्हारी हँसी होगी। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— भाभी कहती है— तुम बड़े-बड़े राजाओं को मरवावोगे, कुल में कलंक लगाओगे और बाद में पछताओगे।

(शिशुपाल बोला—) अरी भाभी! हट जाओ, नहीं तो तुम्हारा मान घट जायेगा। कान्हकुँवर की बड़ाई करती हो, वह तो नंदराजा का दास है। सत्रह वार तो वह पहले (जरासंध के आगे) भागा है, अबकी बार मेरा दाँव है।

वह वृंदावन का अहीर है; गायें चराता है और वंशी बजाता है। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—शिशुपाल कहता है— अबकी बार निपटारा कर दूँगा।

हे राजवंशीय दूल्हे! मानो, तुम्हें भाभी ताना दे रही है। श्रीकृष्ण और बलदेव—हरि और हलधर—दोनों भाई है। कौन ऐसा रणधीर सुभट है जो उन भाइयों के सामने जाकर युद्ध करे।

उन्होने सागर को बाँधा, शिलाओं को तैराया और दानव रावण को मारा। कृष्ण ने केश पकड़कर कस को पछाड़ा—अपने मामा को ही मार डाला। उन्होंने नख पर गोवर्धन पर्वत को धारण किया, डूबते हुए ब्रज को उवारा। पहले उन्होंने नरसिंह रूप धारण किया और भक्त प्रह्लाद का उद्धार किया था। पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—भाभी कहती है कि वह तीनों लोकों से छिपा नही है।

हे भाभी! हमने आपको समझदार जाना था। इतने दिनों तक आप छिपी रहीं। आज भली प्रकार पहचान लिया है। जो कोई आपकी सीख मानेगा उसका काम बिगड़ ही जायेगा। हमारा घराना विश्वविख्यात है, सेना सजाकर जायेगे। कुंदनपुर में युद्ध करेंगे। ग्वाला भाग जायेगा। पदम भक्त कहता है—देवर ने भाभी से कहा—जो होनी होगी सो होगी।

रंगमहल में खड़ी हुई भाभी देवर को समझा रही है—भीष्मक की राजकुमारी के रूप पर लुब्ध हुए हो, पर वह तो हाथ नही आवेगी। भाभी कहती है—मेरे देवर! सुनो। कुंदनपुर मत जाओ। हमसे छोटी हमारी एक वहन है, उसे विवाह कर घर ले आओ।

त्रिभुवन-पति से वैर बाँधकर कोई भी जीत नहीं सकता। चौमासे में जुगनू उड़ते हैं और खूब पंख फड़फड़ाते है। मन में चाहते है तो उजाला करते है पर सूरज की बराबरी करते है (सूरज की बराबरी का दावा करते हैं)।

मन चावै तो करै उजाळो सूरज खोड़ खुड़ावै
कुनणापुर सूं भागर आवो मूरख मन पिसतावै
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं मौत वीज घर आवै

होरी— गिरधर कहत न लाजन लाजै
मामो मार र भयो सूरमो घर ही में राजै गाजै
मल्ल होय कर मल्ल पछाड़्यो कहा वीरता साजै
हम सूं जंग जुड़्यां जुध होसी जबै रीठ सो वाजै
हम री ओड़ जुरासंध राजा सब राजन सिरताजै
जब ही लागै प्राण पियारा फटकै फुरकै भाजै
पदम भणै भाभी सूं देवर यूं कह डाहल राजै

दोहा— महल पधारो थांहरै कै पीहर उठ जाय
विन पूछ्यां भाखो मती वेगम जात कवाय

भाभी और दंताधर का संवाद

सोरठ—पिया ! डर लागै जी म्हांरा राज
थे जाय करोला राड़
पाँच सात मिल भामणी लेत सांस पर सांस
सिंघराय नृप की सुता दौड़ गयी पिव पास
चुड़लो हसती दांत रो मुहंगो लाया कंत !
कुन्नणपुर भारथ रच्यो को पहरै विगसंत
हळधर आवै हाक कर को लड़सी बळवान
सिंघ रूप हळधर वण्यो पकड़ करै घमसाण
आस करै छै जोगणी स्याळ गिरध मंड जाय
सिवमाळा ऊरी सुणी सो पूरी करवाय
ओ सिसपाळ कयो नहिं मानै कळंक चंदेरी लाय
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं कियो आप को पाय

सोरठ—मत वरजो नार ! म्हांनै
दोस नहीं छै थांनै
कुंदणपुर सूं कागद आयो भींवराय कै छानै
म्हे जंग-जीत जोरावर राजा तीन भवन में जाणै

तुम कुंदनपुर से भागकर आओगे। हे मूर्ख! मन में पछताओगे। पदम भक्त कहता है कि प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—भाभी कहती है—मौत के बीज बोकर घर लौटोगे।

उस गिरधर का नाम लेते लाज से लज्जित क्यों नही होती? वह कृष्ण मामा को मारकर शूरवीर बन गया और घर में ही गरजता रहता है। मल्ल होकर मल्ल को पछाड़ा इसमें क्या वीरता है?

हमसे युद्ध में भिड़ा तो युद्ध होगा और तब रीठ-सा बजेगा (तलवारों की प्रचंड वर्षा होगी)। हमारे पक्ष में जरासंध राजा है जो सब राजाओं का सिरताज है।

जब प्राण प्यारे लगेंगे तो तुरन्त फुर्ती से भाग खड़ा होगा। पदम भक्त कहता है कि देवर डाहलराज (शिशुपाल) ने भाभी से यों कहा—अपने महल में चली जाओ अथवा पीहर को चल दो। नारी-जाति कहलाती हो, बिना पूछे मत बोलो।

भाभी और दंताधर का संवाद

मेरे राजा! मेरे पति! मुझे भय लग रहा है— आप जाकर कलह करेंगे। पाँच-सात भामिनियाँ मिलकर उसाँसे ले रही है। सिंधुराज नरेश की पुत्री दौड़कर पति के पास गयी और कहने लगी— हे पति! हाथीदाँत का 'चुड़ला' आप बड़ा महँगा लाये हैं। आपने कुंदनपुर में महाभारत रच दिया है, अब उसे उल्लास के साथ कौन पहनेगा? (चुड़ला = चूड़ियों का समूह)। ललकार कर हलधारी बलराम आयेगा। उससे कौन बलवान् लड़ेगा? सिंह का रूप धारण किये हुए वह हलधारी पकड़कर भयंकर संहार करेगा। योगिनियाँ रुधिरपान से तृप्त होने की आशा कर रही हैं, सियार और गीध तय्यार हो रहे है। महादेव की मुंडमाल अधूरी सुनी जाती है, उसे पूरी करवावेगा।

यह शिशुपाल कहा नही मान रहा है। चँदेरी पर कलंक लगायेगा। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— भाभी कहती हैं— अपने किये को पायेगा।

हे रानी! हमें मत रोको। आपको कोई दोष नहीं है। कुंदनपुर से राजा भीष्मक के अनजाने में पत्र आया है। हम युद्ध में जीतनेवाले बलशाली राजा हैं जिन्हें तीनों लोकों में सब जानते हैं।

जरासंध पराक्रमी राजा है, हम देवताओं को भी पकड़कर ला सकते हैं। (कृष्ण ने) नंदराय की गौएं चरायी है, आप उसी की सराहना करती हैं।

जुरासंध जोरावर राजा पकड़ ल्यावां देवां नैं
नदराय की धेन चरायी थे ज सरावो वां नैं
तिरिया कही सो अेक न मानी मौत ज आयी हां नैं
पदम भणै पीछै पिसतावो जाय पड़ो प्रभु पानैं

दोहा— आतुर हुय कर महल पधारी नैण रहे झड़ लाय
होणहार होवै सही कोड़ज करो उपाय

बरात की चढ़ाई

दोहा— साहणि वेग बुलाइया हुकम हुवो दरबार
कुनणापुर नैं करां सागती घुड़ला वेग सिंगार
साहणी सब भेळा हुवा जुड़िया भूप अवल्ल
सिसुपाळ जरासंध बोलिया छाड अणी रा चलन

दंडक— सोवनी साज पिलाण रे पिलाण
राज कहै साहणियां
सोवजी सीहड़ा सुरसी मगसी मोरवा गिरझड़ा
सारसा संजाबरा घोड़ा अपठिया भूतिया भूसला
खानाजादी देसव्या मोतीड़ा मसकीड़ा काबली चमकिया
किलंगडा किलच्चिया लोटणा लखेरिया हजारिया
बजारिया गुमानिया
पिलाण रे पिलाण राज कहै साहणियां
बरबरा नगीना सागरा हळदिया मंदिया ऊंचासरवा
चालै खरा रथ जूता कैंकाण रे
स्याही सपेदिया ठवणा जळहरा घणबदळा
सिणगार रे सिणगार राज कहै साहणियां
ऊंचा अलोळा चंचळा अचपळा साहणी वार न लाय रे

दोहा--- नीकासी सिसपाळ की सोभा कही न जाय
रतन जड़ाऊ सेवरो मोत्यां लूंब लगाय
लूब ज सोहै मोतियां घुड़लां सोवन साज
अणी चमकता यूं फिरै ज्यूं हीडंता गजराज
भाभी वरजै बारबार मत जावै सिसपाळ
कै वदनामी सिर चढै कै आयो थारो काळ

स्त्री ने कही वह एक भी बात नहीं मानी। इनको मौत जो आ पहुँची थी। पदम भक्त कहता है— रानी ने कहा कि पीछे पछताओगे। प्रभु के पल्ले जा पड़ोगे।

रानी दुखी होकर महल में गयी। उसके नेत्र झड़ी लगाये हुए थे। वह कहने लगी— जो होनहार है वह अवश्य होगी, चाहे करोड़ो उपाय कर लो।

बरात की चढ़ाई

राजा की आज्ञा हुई। साहनियों को (अश्वपालों को, घोड़ों के अधिकारियों को) तुरन्त बुलाया गया। कुदनपुर के लिए तय्यारी (प्रस्थान) करेंगे अतः घोड़ों को अविलम्ब सजाओ।

सब अश्वपाल इकट्ठे हुए और श्रेष्ठ भूपति भी मिले।

शिशुपाल और जरासंध बोले—साहनियो! सुनहरे साजों के साथ जीन कसो।

सोवजी, सीहड़ा, सुरसी, मगसी, मोरवा, गिरझड़ा, सारसा, संजावरा, घोड़ा, अपठिया, भूतिया, भूसला, खानाजादी, देसव्या, मोतीड़ा, मसकीड़ा, कावली, चमकिया, किलंगड़ा, किलच्चिया, लोटणा, लखेरिया, हजारिया, बजारिया, गुमानिया आदि घोड़ों पर, राजा कहता है कि, हे साहनियों! जीन कसो, जीन कसो। बरबरा, नगीना, सागरा, हळदिया, मंदिया, ऊंचासरवा, जातियों के खरे घोड़े रथ में जुते हुए चले। स्याही, सपेदिया, ठवणा, जळहरा, घणबदळा जातियों के घोड़ों को, राजा कहता है कि, हे साहणियो! सिंगारो, सिंगारो। ऊंचे, फुर्तीले, चचल और चपल घोड़ों को तैयार करो। देर मत लगाओ।

शिशुपाल की बरात की निकासी हुई। उसकी शोभा का वर्णन नही किया जा सकता। उसके सिर पर रत्नजड़ित सेहरा है जिसमें मोतियों की लड़े लटक रही है।

मोतियों की लटकनें सुशोभित हो रही हैं, घोड़ों को सोने के साज से सजाया गया है। अनी चमकते हुए वे यों फिर रहे है मानो मस्त चाल से चलते हुए हाथी हों।

भाभी बार-बार रोक रही है— शिशुपाल! मत जाओ। या तो बदनामी सिर चढ़ेगी या फिर तुम्हारी मृत्यु ही आ गयी है।

रणशृंग (रणसींगे) और तुरहियाँ बज रही है। सब समाज

रणसींगा अर तुरिया वाजै सवहि समाजा चालै
तखतां ऊपर नचै तायफा आवध इधका झालै

मारू--- देस देस रा राजा चढिया घुड़लां रै ठमकारै
कंप्या सेस समंद खळभळिया धू डोल्या आधारै
पिचाणव खोहण (दळ) चढ चाल्या ... ...
ढलकै ढाल फरूकै नेजा ऊझड़ गिणै न वाटा
छत्तीसूं वाजा घुरै सहनाई रणतूरा
पवन पहेला वहै सुहेला खुर रज छापल सूरा
दीसै भूप सांग भळकंता सिसपाळो वतळावै
दम्मघोस री आण भणीजै निजर कोई नहिं आवै
अेक अेक सूं इधका चालै सहजां सांग उछाळी
यूं करता कुंदणपुर आया लिया रुकमइयै झाली
नगर नवेलै डेरा दीया चीरी चहुं दिस चाली
माऊजी सूं भणै रुकमइयो मन में करो खुस्याली
साठ लाख कुंजर सिणगारचा तुरियां अंत न पायी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं जान कुनणपुर आयी

दोहा--- साम्हेळै सिसपाळ कै चढियो रुकमकंवार
घुड़ला सिलह संवारिया पांच लाख असवार

सोरठ—वना नै डेरा देवै छै जी रुकम कंवार
नवल महल कंचण मणि जड़िया थंभा रतन जुवार
मौतियन झालर डोढी पड़दा दुलहा नै दियो उतार
साईवान चांदणी ताणी रावटि अंत न पार
नव नव खण दळ वादळ तंवू जड़िया छै रतन जुवार
सोळा चोब दु चोब छ चोबा चोब वतीस संवार
सुघड़ फरास विछायत कीनी मध्य सिंघासण ढार
डेरां डेरां धर मिसरूदा तकिया अंत न पार
सोड़ सोड़िया और जींदवा लीना सब संसार
जाण अजाण टळचो नहिं कोई दीना सह मनुहार
कर हंगाम रुकमाल कंवर यूं कियो बहुत सतकार

चल रहे हैं। तख्तों के ऊपर तवायफें नृत्य कर रही हैं। वीर श्रेष्ठ आयुध लिये हुए हैं।

घोड़ों की ठमकार के साथ विभिन्न देशों के राजा चढ़े। शेषनाग कांप उठे, समुद्रों में खलबली मच गई, ध्रुव का आधार भी डोल गया।

पचानवे अक्षौहिणी सेना चढ़कर चली। ढाले आंदोलित हो रही थीं, झंडे फरहरा रहे थे। वे न उजाड़ को गिनते थे, न मार्ग को।

शहनाई और रणतूर आदि छत्तीसों बाजे बज रहे थे। पवन से भी तेज गति से सुख-पूर्वक चल रहे थे। घोड़ो के खुरों की धूल से सूर्य ढक गया।

भाले चमकाते हुए राजा दिखायी पड़ रहे थे। शिशुपाल ने बात की—दमघोष की दुहाई है; आज कोई बराबरी करनेवाला नजर नहीं आता है।

एक-एक से बढ़कर चल रहे थे। वे सहजभाव से बरछे उछाल रहे थे। यों करते हुए कुंदनपुर पहुँचे। रुकमइये ने उनको अपनाया (स्वागत किया)।

नवेले नगर में डेरा दिया। चारों दिशाओं में चिट्ठी चली। रुकमइया माता से कहता है— मन मे खुशी करो।

साठ लाख हाथी सजाये। घोड़ों का कोई अन्त नही पाया। पदम भगत कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—बरात कुंदनपुर आ पहुँची।

रुक्मकुमार शिशुपाल की अगवानी के लिए चला। उसके साथ घोड़े और कवच सजे हुए पाँच लाख सवार थे।

रुक्मकुमार दूल्हे को डेरा दे रहा है। कंचन के मणि-जटित सुन्दर महलों में जहाँ रत्नों और जवाहरातों के खंभे थे, जहाॅ ड्योढ़ियों मे मोतियों की झालरे लटक रही थी, पर्दे लगे हुए थे, वहाँ दूल्हे को ठहरा दिया।

साईवान चाँदनी तानी गयी, छोलदारियों का कोई पार न था। नौ-नौ खंडों-वाले बादल-दलों जैसे तंबू थे जो रत्नों और जवाहरातों से जड़े थे। दो चोब, छह चोब, सोलह चोब और बत्तीस चोब सजाकर चतुर फर्राशों ने बिछायत की और बीच मे सिंहासन लगाया। (चोब = लकड़ी का खंभा)

प्रत्येक डेरे में मिसरू के बिछौने रखे, तकियों की कोई गिनती ही नहीं थी। रजाइयाँ ओर तकिये सब लोगों ने ले लिये।

परिचित अपरिचित कोई नहीं टाला गया, सबकी मान-मनुहार की गयी। रुक्मकुमार ने इस प्रकार हंगाम करके बहुत सत्कार किया।

हरख्या लोग सकळ नगरी का विलखी राजकंवार
पदम भणै प्रणवै पाय लागू इण विध जान उतार

मारू— जितना पांव धरचा धरणी पर सो म्हांरै सिर धरचा
रुकमइयो कह सुणो रावजी थे म्हांरा मान वधारचा
वाजा राग छतीसू वाज्या मंगळ गावै नारी
बोहत भांत जुगत जो कीनी बहुत करी मनुहारी
कंवर बहोत समाधान किया सीधा घिरत अपारो
जान आयी सिसपाळ की कोरवरा की वारो
कंवर ज सेसू मेलिया कोरबरा की लारो
सतरा माख दे कोरबरा में जानू सेख न पारो
भलो महूरत काढज्यो तोरण होय अंवारो
पदम भणै प्रणवै पाय लागू वेगा आप पधारो

मारू— कोरवरो दे कंवर सिधायो करै वडां सूं वातां
थे म्हांरै रावजी भलां ही पधरचा अच्छी आयी म्हांरी साता
ससिवरणो सिसपाळ भणीजै अैसो राव न कोई
चंदवदन सी सोभा जाकी नैण भरे-भर जोयी
हसत्यां नेजा फरहरचा घोड़ां घूघर माळ
सोवन साज भला किया चंवर ढुळै सिसपाळ

४—रुक्मिणी की व्यथा

दोहा— गोख चढे दळ जोइयो राजा भींव री नार
वर देखाऊँ थांहरो आवो राजकंवार
खिजती रुकमण यू भणै मा मत आखो आळ
चवदा भवन रो राजवी वर वरस्यां गोपाळ

मारू— चवदा भवन रो राव भणीजै वर वरस्यां वनमाळी
कै या देह दहूं दावानळ परणू सारंगपाणी
सारंग द्रिस्ट पड़ै ज्यूं सारंग यूं डाहलियो दीखै
नीर विना नळिनी ज्यूं सूखै यूं हरि विना विसूखै
मान सरोवर हंसा देख्या बुगला निजर न आवै

सारे नगर के लोग हर्षित हुए पर राजकुमारी विलख उठी । पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—इस प्रकार बरात उतारी गयी ।

रुक्मकुमार ने कहा—हे राजन् ! सुनिये । आपने धरती पर जितने कदम रखे वे सब हमारे मस्तक पर है । आपने हमारा संमान बढ़ाया है ।

बाजों में छत्तीसों रागे बजने लगी । स्त्रियाँ मगल गीत गा रही थी । नाना प्रकार की युक्तियाँ की और बहुत मनुहारे कीं ।

कुँवर ने अपार घृत और सीधा (खाद्य-सामग्री) देकर खूब समाधान किया । शिशुपाल की बरात आयी । और 'कोरबरा' की वेला हुई । कोरबरे के पीछे कुमार ने सेसू (?) भेजे । सत्रह लाख मुद्राएँ कोरबरे में दीं, शेष भी उनका पार नही जानते ।

अच्छा-सा मुहूर्त्त निकालिये, तोरण के लिए देर हो रही है । पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—रुक्मकुमार ने कहा—आप विवाह के लिए शीघ्र आइये । 'कोरबरा' देकर कुँवर चलने लगा । वह बड़े लोगों से बातें करता है—राजन् ! आप हमारे यहाँ बहुत अच्छे पधारे । हमारे भले दिन आ गये है ।

शिशुपाल चंद्रमा-सा सुंदर है, ऐसा और कोई राजा नही है । उसकी मुख-शोभा चंद्रमा की-सी है । उसे सबने नैन-भर कर देखा । हाथियों पर झंडे फहराये । घोड़ों के घूँघर-मालाएँ बजने लगी । उन पर सुंदर सोने के साज सजाये गये । शिशुपाल पर चँवर ढुलने लगे ।

४—रुक्मिणी की व्यथा

राजा भीष्मक की रानी ने गवाक्ष में चढ़कर सेना को देखा । (फिर रुक्मिणी से कहा—) आओ राजकुमारी ! तुम्हारा वर दिखलाऊँ ।

रुक्मिणी ने खीजकर यो कहा—माँ ! व्यर्थ की बात मत कहो । मैं तो जो चौदह भुवनों का राजा है उस गोपाल को वर रूप में वरूंगी ।

मै वनमाली कृष्ण को वर-रूप में वरण करूँगी जो चौदह भुवनों के राजा कहे जाते है । मैं या तो शार्ङ्गपाणि कृष्ण से विवाह करूँगी या इस देह को अग्नि में भस्म कर दूँगी । जैसे सारंग को सारंग दिखायी पड़ता है[1], उसी प्रकार शिशुपाल दिखायी देता है । जल के बिना जैसे कमलिनी सूख जाती है उस प्रकार रुक्मिणी कृष्ण के बिना सूखती है ।

(मैंने) मानसरोवर में हंस देखे है, बगुले नजर में ही नहीं आते । समुद्र से संबध बनाया है, तलैया में कौन नहाये ?

१ सारंग को सारंग—हरिण को सिंह (या पक्षी को बाण) ।

समदरड़ां सूं सीर पड़्यो है नाडूळै कुण न्हावै
जाकै गळै मोतियन की माळा काठ की कहा सुहावै
हस्ती· ऊपर वैठा चालै तुरंग कहा मन भावै
जा मुखड़ा सूं अम्रत पीयो जहर परत नहिं भावै
जिण तो पहर्या पाट पटम्मर कामळ नांहि सुहावै
चौमासा में उडै जोगन्यो पांख घणी फुरकावै
वित सामान करै उजियाळो सूरज खोड़ खुड़ावै
पीतांवर सूं प्रीत पहल की ता कारण मन मोवै
पदम भणै वा ऊभी न्हाळै गोख चढी दळ जोवै

झिझोटी—क्यों कंवरी क्यों विलखी फिरो मन मौज करो दुख कूं विसरो री
भावज हाथ लिया हरदी पट वैठ अटान पटा मसरो री
अंग को आळस दूर करो मुकताफळ ले सिर मांग भरो री
भूखण भांत अनेक भरे झट चीर को ले सिणगार करो री
व्याहण आयो चंदेरि-धरापति छूट लटा ललकार फिरो री
हे जननी मतिमंद महा दुख भार चढै मुख वंद करो री
मेर डिगो धरती जौं फटो रवि चंद गगन्न सूं आन गिरो री
गंग जमन उलटी जौं वहै सिसपाळ सेती कर नोज जुरो री
मेरो मतो नंदनंदन सूं कोउ जाणो भलो भावै मानो वुरो री
लाज के ऊपर गाज परो व्रजराज मिलै सोई लाज करो री

मारू— वाई ! देखो गयंद झळकता वोलै भींव री नारी
जोड़र दळ सिसपाळो आयो सेना ल्यायो सारी
मो मन घणो उमावो लाग्यो वींद दिखावां प्यारी
रहो रहो माय! कूड़ मत भाखो क्यूं वोलो विख-वाणी
कांइ तूं भूली रुकमणवाई ! सोच करै मन मांही
यो डाहल चंदेरी कौ राजा कान्हो या सम नांही
रुकमण भणै सुणो री माता! सुणियै विनती म्हारी
सिंघ रा घर में स्याळ्यो पैठ्यो इचरज लागो भारी
अव कै साय करो सांवरिया! भीड़ पड़ी अत भारी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं भगतां प्राण अधारी

जिसके गले में मोतियों की माला है उसे काठ की माला क्या सुहाती है ? जो हाथी पर बैठकर चलता है उसके मन को घोड़ा क्या अच्छा लग सकता है ? जिस मुख से अमृत-पान किया है उससे विष पीना प्रत्यक्ष ही नहीं भाता। जिसने रेशमी वस्त्र पहने है उसे कंबल नहीं सुहाता।

चतुर्मास में जुगनू उड़ता है और खूब पंख फड़फड़ाता है, सामर्थ्य के अनुसार उजाला करता है और सूरज की तुलना मे उतरता है (बराबरी करना चाहता है)।

उस पीतांबरधारी से पूर्वजन्म की प्रीति है, इस कारण वह मन को मोहता है। पदम भक्त कहता है—वह खड़ी-खड़ी निहार रही है, गवाक्ष में चढ़ी हुई सेना को देख रही है।

ओ कुँवरी ! उदास बनी क्यों फिर रही हो ? मन मे आनंद करो और दुःख सब भूल जाओ। भाभी हाथ में हलदी का पट लिये है, अटारी में चौकी पर बैठकर मसलो। तन का आलस दूर करो और मोती लेकर सिर की माँग में भरो।

अनेक प्रकार के आभूषण भरे हुए है। झटपट चीर को लेकर शृंगार करो। (चीर = एक बहुमूल्य वस्त्र)। चंदेरी का राजा ब्याहने आया है। लटों को खोलकर ललकारती हुई फिरो।

हे माता ! तू मंदमति है। बड़े दुःख की बात है। कहने से पाप का भार चढ़ता है। तुम अपना मुँह बद कर लो। अब चाहे सुमेरु पर्वत डिग जाय, चाहे धरती फट जाय, चाहे सूर्य और चद्रमा गगन से धरती पर आ पड़े, चाहे गंगा और यमुना का प्रवाह उलटा बहने लगे, पर शिशुपाल से मेरा हाथ न जुड़े (पाणिग्रहण न हो)। मेरी मंशा तो नंदनंदन को पाने की है। चाहे इसे कोई भला जाने चाहे बुरा माने। लाज के ऊपर बिजली गिरे। वही लाज करो जिससे व्रजराज मिलें।

भीष्मक की रानी ने कहा— बेटी ! झूमते हाथियों को देखो। शिशुपाल दल बनाकर आया है, सारी सेना साथ लाया हैं। मेरे मन में बड़ा उत्साह लग रहा है। लाड़िली ! आओ वर दिखलाऊँ। —बस, बस, रहने दो माता ! झूठ मत बोलो। विषभरी वाणी क्यों बोल रही हो ? अरी रुक्मिणी ! तू क्या भ्रम में पड़ी है जो मन में चिन्ताकर रही है। यह डाहल चंदेरी का राजा है। कान्हा इसके बराबर नही है। रुक्मिणी ने कहा— माता ! सुनो। मेरी विनती सुनो। मुझे बड़ा अचंभा लग रहा है, सिंह के घर में गीदड़ घुस आया है। हे सांवरिया ! इस बार सहायता करो। बहुत बड़ा संकट आ पड़ा है। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— आप भक्तों के प्राणों के आधार हैं।

सोरठ—माई! म्हनै भावै ना सिसपाळ
मन मेरो गिरधर जू वसियो डाहलियो जंजाळ
गुपत सनेसो लिखूं स्याम नै दीनानाथ दयाल
सारदूळ को भोजन स्वामी ! लियां जात है स्याळ
जो मन गोपियन को वस कीनो वसरी की टेर सुणाय
पदम कहै प्रभु! तपत बुझावो कुनणापुर में आय

छंद— तव मिल्या मन का भावणा सखि ! हुई पूरण आस री
दिलगीर मत हो रुकमणी ! तुम वान बैठो आय री
अबोलियां सू नांहि परचूं··· ··· ··· ···
कंचन काया मै आग जारूं होम डारूं हाड री
दूसरो अवतार धारूं रहूं केसव संग री
साथी म्हारो सांवरो सखि ! म्हे उणां अरधंग री
कह रुकमणी म्हे स्याम सरणै वचनबंद गोपाळ री
जलम दूजै तीसरै वर वरूं मित्र दयाल री

सोरठ—प्यारी नै लीनी कंठ लगाय
नैणां यू झुरै
राणी कह अत ही सुख पावां मन में बहुता चाव
चिरजीवो बंधू रुकमइयो अहड़ो वर थांनै ल्याव
रुकमण कहै सुणो री माता कहों नै वात विचार
चवदा भवन रो राजवी सो म्हारो भरतार
तूं गोरी बाई ! केसव काळो वो छै नंद कों गिवार
थारो वर अति सुंदर वाई ! बो वर राजकंवार
ओ राजा खदचोत समाना सूर स्याम सू प्रीति
पदम भणै मेरो वर मोहन मत कहो वात अनीति

खट— बाई रुकमण इम भणै रूड़ो वर वनमाळी
अंतर चूहा मोर, सिखर गिरि, अंतर दायण मूसा
हरि सिसपाळै अहड़ो अतर पारजात अरड़ूसा
अंतर सूर नखत्तर अंतर अंतर धरणि अकासा
हरि सिसपाळै अहड़ो अंतर चंदण रूंख जवासा
अंतर रैण दिवस हर अंतर अंतर जोसी गरुड़ै
हरि सिसपाळै अहड़ो अंतर कनक कळस काचै घरड़ै

हे माता ! मुझे शिशुपाल नही सुहाता। मेरा मन गिरधर में बसा है। यह डाहल तो जंजाल है। मै श्याम को गुप्त सदेश लिखूंगी। वे दीनानाथ और दयालु है। हे स्वामी ! शार्दूल के भोजन को सियार लिये जा रहा है। यदि आपने वशी की धुन सुनाकर गोपियों के मन को वश में किया है तो कुंदनपुर में आकर मेरा सताप भी मिटा दीजिये।

सखी कहती है— हे सखी ! तुम्हारे मन को भायी बाते मिल गयीं, आशा पूरी हो गयी। हे रुक्मिणी ! दुखी मत होओ, तुम आकर बान बैठो। ... ... कंचन-सी काया मे आग लगाकर जला दूंगी और हड्डियों को होम दूगी।

मैं दूसरा अवतार धारण करूँगी और केशव के साथ रहूँगी। हे सखी ! सांवरिया मेरा साथी है और मैं उसकी अर्धागिनी हूँ। रुक्मिणी कहती है— मैं श्याम की शरण में हूं, गोपाल के लिए वचनबद्ध हूँ। अब दूसरे और तीसरे जनम मे दयालु मित्र कृष्ण को ही वर रूप में वरूँगी।

माता ने लाड़िली को कंठ से लगा लिया। नयनों से यो ऑसू झर रहे है। रानी कहती है-- हम सब के मन में बहुत चाव है, बहुत सुख पा रही है। भाई रुकमइया चिरंजीवी हो जो तुम्हारे लिए ऐसा (अच्छा) वर लाया है। रुक्मिणी ने कहा— हे माता ! सुनो। विचारकर बात कहो। चौदह भुवनों का जो अधिपति है, वह मेरा पति है।

रानी— हे बेटी ! तू तो गोरे रंग की है और केशव काला है। वह नंद का लड़का तो गंवार है। तुम्हारा वर अत्यंत सुंदर राजकुमार है, वह वर राजकुमार है।

रुक्मिणी— यह राजा तो जुगनू के समान है। मेरी प्रीति तो शूर श्याम से है। पदम भक्त कहता है— रुक्मिणी कहती है-- मेरा वर मोहन है। अनीति की बात मत कहो।

बेटी रुक्मिणी यों कहती है— वनमाली ही श्रेष्ठ वर है। चूहे और मोर में जो अंतर होता है, गिरि और शिखर मे जो अतर होता है, जो अतर दावण (?) और मूसे में होता है, वही अंतर कृष्ण और शिशुपाल में है।

हरि और शिशुपाल में ऐसा अतर है जैसा अंतर कल्पवृक्ष और अड़ूसे के वृक्ष में होता है। सूरज और तारे में, पृथ्वी और आकाश में तथा चंदन और जवासे में जो अंतर होता है वही अंतर हरि और शिशुपाल में है।

हरि और शिशुपाल में वही अंतर है जो रात और दिन में, जोशी और गरुड़ में, तथा स्वर्ण-कलश और कच्चे घड़े के बीच होता है।

पदम तेली कहता है— रुक्मिणी कहती है— हरि और शिशुपाल में

अंतर पाप पुन्न अर अंतर अंतर अमी विख वेली
हरि सिसपाळै अहड़ो अतर भणै पदमइयो तेली

खमायची—वानै न्हावो म्हारी राजकवारि !
रुकमइयै सिसपाळ बुलायो फेरां होय अंवारि
रुकमण भणै कह्यो नहि मानूं घर में होय खुवारि
क्रोध करे रुकमइयो बोल्यो पकड़ विठावो नारि
प्राण घात अब करसू म्हारो मरसूं मार कटारि
पदम स्याम अब रुकमण समझी वीरा ! घात तुमारि

काफी— वीरा ! मो सू भली रे करी
लियो सिसपाळ बुलाय
बुध्ध तिहारी चालणी तुस नै लियो समाय
ओगण तो तै हितकर राख्या गुण कूं दियो वहाय
वटफळ तो नीचो निवै इरंड ऊपरै जाय
कर ओछा सू प्रीतडी फिर पाछै पिसताय
मन मोती अर काय का इन का येहि सुभाय
फाटां पीछै ना मिलै कोट ज करो उपाय
हरदी जरदी ना तजै खटरस तजै न आम
असली तो ओगण तजै गुण कूं तजै गुलाम
कागा किस का धन हरै कोयल किस कू देय
जीभां तणा हिलोळ सूं जग अपणा कर लेय
जीभड़ियां इमरत वसै जे कोइ जाणै बोल
विख वासग का ऊतरै जीभां तणै हिलोळ
बोदी वाड़ फरांस की विन खेरी खिर जाय
नुगरा माणस छेड़तां पत सुगरां की जाय
वट सूं पातळ छाइया ऊब्रती और पान
बो मन तो जद ही गयो जदहि बुलायी जान
डूंगरिया रो वाहळो ओछा तणा सनेह
वहता वहै उतावळा तुरत दिखावै छेह
कड़वा कदे न भाखियै मीठा बोलणियां
पदमइया स्वामी भणै भाखै रुकमणियां

ऐसा अंतर है जैसा अंतर पाप और पुण्य में, तथा अमृत और विष की लता में होता है।

हे मेरी राजकुँअरि! 'वान' का स्नान करो। रुक्मकुमार ने शिशुपाल को बुलाया है। फेरों में देर हो रही है। रुक्मिणी ने कहा— मैं कहना नही मानूंगी। घर में बर्बादी हो जायगी। तब क्रोध करके रुकमइया बोला— उसे पकड़कर (बलपूर्वक) फेरों में बिठा दो। (रुक्मिणी कहती है—) मैं अपने प्राणो का घात करूंगी। कटारी मारकर मर जाऊँगी। पदम भगत कहता है—रुक्मिणी कहती है--भाई! अब समझी, यह सब तुम्हारी ही घात है।

(रुक्मिणी कहती है—) हे भाई! तुमने मेरे साथ खूब की! शिशुपाल को बुला लिया! तुम्हारी बुद्धि चलनी के समान है जो तुषों को अपने भीतर रख लेती है। दुर्गुणों को तूने प्रेम के साथ रख लिया और गुणों को तूने बहा दिया।

वड़ का वृक्ष नीचे झुकता है पर एरंड ऊपर को जाता है (बढ़ता है)। ओछे से प्रीत करके फिर पछताना पड़ता है। मन का, मोती का और काया का— इनका यही स्वभाव है कि ये फटने पर, चाहे कितने ही उपाय किये जाये, फिर नही जुड़ते (मिलते)।

हलदी अपना पीलापन नही छोड़ती, आम का फल अपने खट्टेपन को नही छोड़ता। सच्चे आदमी तो दुर्गुणों को छोड़ते है और गुलाम (दोगले) गुणों को त्याग देते हैं।

कौवे किसका धन हरते है और कोयल किसको (धन) देती है। वह (कोयल) अपनी जिह्वा के हिलाने मात्र से (मधुर बोलकर ही) ससार को अपना बना लेती हैं।

जीभ में अमृत वसता है यदि कोई बोलना जाने। जीभ के हिलाने से साँप का विष तक उतर जाता है।

फरांस (वृक्ष-विशेष) की पुरानी बाड़ बिना बिखेरे ही (अपने आप) विखर जाती है। गुणहीन (अकृतज्ञ) लोगो को छेड़ने में गुणवान व्यक्तियों की प्रतिष्ठा नष्ट होती है। ... ... वह मन तो तब ही चला गया जब तुमने बरात बुलायी। पहाड़ी नाला और ओछे लोगों का स्नेह बहते समय तो खूब तेजी से बहते है किंतु तुरत ही अपना अंत दिखा देते है। सज्जन कड़वे कभी नही बोलते, सदा मीठे बोलनेवाले होते है। पदम भगत कहता है— रुक्मिणी ऐसा कहती है।

भीष्मक का दुखी होना

दोहा— राजा भीव अबोलणो कंवर सू बोलै नांहि
सभा देख सिसपाळ की दुख पावै मन मांहि

मारू— राजा भींव बहुत दुख पावै कान्हकंवर कह आवै
म्हांरै तो मन आनंद उपजै मन रुकमण रै भावै
आडी भूमी दूर द्वारका संदेसो पहुंचावै ?
कुन्नणपुर आयो सिसपाळो हरि नै जाय सुणावै
रुठड़ै वदन कंवर उठ बोल्यो राजा कांई जोवो
अैसो राव और नहिं कोई म्हांनै कांइ विगोवो
राजा भींव उचक नै ऊठ्यो रुकमइया तोंहि मारूं
कद वै कृष्ण द्वारका सूं आवै तुमरो रोस विसारूं
कै मरहूं अपणै अपघातां जो सिसपाळो परणै
पदम भणै प्रणवै पाय लागू रहूं स्याम कै सरणै

दोहा— सुण्या वचन भूपाळ का लीनो तुरंग मंगाय
पांच लाख असवार ले चढ्यो जान में जाय

मारू— चढ्यो जान में जाय कंवरजी पांच लाख असवारो
राजा भींव कृष्ण वर थरप्यो थांरो कांइ विचारो
भला विचार भली म्हे करसां बै नै तो म्हे जाणां
नांव सुण्यां बाहर नहि आवै कांई घणो वखाणां
भींवराज को जोसी तेड़्यो तुरत घड़ी असवारो
भलो महूरत काढो म्हांनै फेरो होय अंवारो
जोसी पुस्तक वांचिया आज महूरत नांही
डेरां जावो कहो कंवरनै थांनै सूझ्यो कांई
कहै जुरासंध कहीं जोसी नै म्हे तो चढकर आया
म्हांरै नांव नहीं ओ सावो क्यां नै कवर बुलाया
जोसी कहै जुरासध राजा कौण वडो तैं बूझ्यो
कह्यां कंवर कै कांकण बांध्यो थांनै कांई सूझ्यो
काळो ग्वाळो करो बराबर वो म्हांरै कद तोलै
म्हे तो सारा सिंघ सरीखा यूं सिसपाळो बोलै
काळो कृष्ण सकल नै सूझै भगतां भूधर गोरो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं दधि माखण को चोरो

भीष्मक का दुखी होना

राजा भीष्मक ने अबोला ले लिया (बोलना-चालना छोड़ दिया)। वह रुक्मकुमार से नही बोलता। शिशुपाल की सभा को देखकर मन में दुखी होता है।

राजा भीष्मक बहुत दुःख पा रहा है— कुंवर कन्हैया कब आयेगे। जब हमारा मन आनंदित होगा, रुक्मिणी के मन को भी अच्छा लगेगा।

द्वारिका बहुत दूर है, बीच में बहुत फासला है। वहाँ संदेश कौन पहुँचावे, हरि को जाकर यह सुनाये कि कुदनपुर मे शिशुपाल आया है।

रूठे हुए चेहरे से रुक्मकुमार बोल उठा— राजन्! क्या देखते है? ऐसा राजा और कोई नहीं है। हमें क्यो बुरा-भला कह रहे है?

राजा भीष्मक उचक कर उठा। उसने कहा— रुकमइया! मै तुझे मार डालूँगा। वे कृष्ण कब द्वारिका से आयेगे जब तुम्हारे ऊपर का यह रोष भुलाऊँगा। यदि शिशुपाल विवाह करेगा तो मै आत्मघात करके मर जाऊँगा। पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— भीष्मक कहते है कि मैं तो श्यामसुंदर की शरण में रहूँगा।

राजा के वचन सुनकर (रुक्मकुमार ने) घोड़ा मंगवा लिया और पाँच लाख सवार लेकर बरात में जा पहुँचा।

कुंवर पाँच लाख सवार लेकर बरात में जा मिला। उसने वहाँ जाकर कहा— भीष्मक ने कृष्ण को वर निर्धारित किया है, आपका क्या विचार है? —अच्छा विचार है, हम अच्छी बात करेगे। उसे तो हम जानते है। अधिक क्या बड़ाई करे, हमारा नाम सुनकर ही वह बाहर नही निकलेगा। भीष्मक राजा के ज्योतिषी को तुरंत उसी घडी सवार भेजकर बुलाया और उसे कहा कि अच्छा मुहूर्त निकालो, हमें फेरों (भाँवरों) के लिए देर हो रही है। ज्योतिषी ने पुस्तक बांची (देखी) और कहा— आज मुहूर्त नही है। डेरे पर जाकर कुंवर से कहो कि तुमको क्या सूझा है? जरासंध कहता है— ज्योतिषी से कहो कि हम तो चढ़कर आ गये है। यदि हमारे नाम का लग्न नही है तो फिर कुंवर ने हमें क्यों बुलाया है?

ज्योतिषी कहता है— हे राजा जरासंध! आपने किस बड़े आदमी से पूछा था? आपको क्या सूझा जो कुंवर के कहने से कंकन-डोरा बाँध लिया (दूल्हा बना लाये)? तब शिशुपाल ने यो कहा— काले ग्वाले को हमारे बराबर कर रहे हो? वह हमारी तुलना में कब ठहरता है? हम सब तो सिंह के समान हैं। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरो लगता हूं— दही और मक्खन का चोर वह कृष्ण सबको काला दिखता है पर वह भक्तों के लिए गोरा है।

दोहा— माता पूछै कंवरि नै बाई ! विलखा कांय ?
देख सभा सिसपाळ की सुख पावो मन मांय

मारू— सुख पावो मन में बाईजी ! ज्यूं म्हे बी सुख पावां
साहण वाहण हसती घोड़ा भली भांत मुकळावां
हरख्यो कंवर बहुत मन मांही जान भली पुर आयी
कांकण बांध सिसपाळो आयो मांय जुरासिंध राई
वै मथरा गढ जलम लिया है घेर परेरो कढायो
बाहर वास करण नहिं पायो समदर मांहि वसायो
सतरा वार बो आगै भागो वार अठारूं आयी
मन को हठ तू छोड दे रुकमण कह्यो मान म्हांरी बाई
नटवर भेख गवाळ के मोही जूठो माखण खायो
मामो मार कै हुवो सूरमो कद को राव कहायो
कन्या बहल कांध नहिं नाखै वेद पुराण युं भाखै
माता बंधू अरज करै है पत भाई की राखै
जद गुणवंती गुण कर बोली कान्ह कंवर वर म्हारो
पदम भणै प्रणवै पाय लागू कह्यो न मानूं थांरो

सोरठ—अैसै भणै रुकमणी बाई
सोई वींद हमारो माई
मच्छ रूप हरि धारयो संखासुर दानो मारयो
जिण वेद ब्रह्मा का दीना सतजुग में साका कीना
कच्छरूप हरि धारे मधुकैटभ दाना मारे
देवन कूं इमरत प्यायो असुरां कू जहर पिवायो
वाराह रूप हरि धारे हिरणाखस दाना मारे
जिण वसुधा दंत धर राखी जाका सुर नर मुनि जन साखी
नरसंघ रूप हरि धारे हिरणाकुस दाना मारे
प्रभु नख से उद्र विडारे जिन भक्त प्रळाद उबारे
बावन्न रूप हरि धारे राजा बलि के द्वार पधारे
जिण दोय पैंड भरवायी तीजी कूं ठौर न पायी
प्रसराम रूप हरि धारे जिण सहस्राबाहु संघारे
जिण प्रथी निछत्री कीनी विप्रां कूं दान ज दीनी
जिण राम रूप हरि धारयो जिण रावण दानो मारयो

माता कुंवरी से पूछती है— बेटी ! उदास क्यों हो ? शिशुपाल की सभा को देखकर मन मे हर्षित होओ ।

—हे बाई ! मन मे सुखी होओ जिससे हम भी सुख पावे । सेना, सवारियाँ, हाथी और घोड़ो के साथ भली प्रकार से तुम्हे विदा करें ।

रुक्मकुमार मन में बहुत हर्षित हुआ है । नगर मे बहुत शानदार बरात आयी है । कांकण-दोरा बाँधकर (वर बनकर) शिशुपाल आया है और बरात के अंदर राजा जरासंध आया है । उस (कृष्ण) ने मथुरा में जन्म लिया है, उसे घेरकर दूर निकाल दिया है । बाहर निवास नही करने पाया इसलिए समुद्र के भीतर जाकर (द्वारिका में) वास किया है ।

वह पहले सत्रह बार भाग चुका है, अबकी अठारहवी बारी आयी है। रुक्मिणी ! तू मन के हठ को छोड दे । बेटी ! मेरा कहना मान ।

तू नटवर-वेषधारी ग्वाले पर मोहित हुई है जिसने जूठा मक्खन खाया । वह मामा कंस को मारकर शूरवीर हुआ है, वह कब का राजा कहलाया ? कन्या और बैल कधे नही डालते— हिम्मत नही हारते । ऐसा वेद और पुराण कहते है । माता और भाई प्रार्थना कर रहे है कि भाई की लाज रख लो ।

तब गुणवती ने विचार करके कहा— मेरा वर कान्हकवर है । पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— रुक्मिणी कहती है— मैं तुम लोगों का कहना नही मानूँगी ।

बाई रुक्मिणी ऐसे कह रही है— मेरा वर वही (श्रीकृष्ण) है । हरि ने मत्स्यरूप धारण किया और शंखासुर दानव को मारा । जिनने ब्रह्मा के वेद उन्हें पुनः दिये और इस प्रकार सत्ययुग में पराक्रम किया ।

हरि ने कच्छप-रूप धारण किया और मधु और कैटभ दानवों को मारा । उनने देवों को अमृतपान कराया और असुरों को जहर पिलाया ।

वाराह का रूप धारण करके हरि ने हिरण्याक्ष दानव को मारा । उनने पृथ्वी को दाँत पर धारण करके रखा जिसके देव, नर और मुनि-जन साक्षी है ।

हरि ने नरसिंह का रूप धरा और हिरण्यकशिपु दानव को मारा । उन प्रभु ने नखों से उसका उदर विदीर्ण किया और भक्त प्रह्लाद को उबारा ।

हरि ने वामन का रूप धरा और राजा बलि के द्वार पर गये । उनने दो डग ही भरे, तीसरे के लिए स्थान ही नही पाया ।

हरि ने परशुराम का रूप धारण किया और सहस्रबाहु का संहार किया । उनने पृथ्वी को क्षत्रियविहीन किया और ब्राह्मणो को दान में दे दी।

सायर पर सिला तिरायी आ लंक वभीखण पायी
जिण कृष्ण रूप हरि धारचो कंसासुर दानो मारचो
देवकी की करी सहाई वसदेव की बंध छुडायी
जिण बुध्ध रूप हरि धारे जीवां पर दया विचारे
थांरो जस पदमइयो गावै कछु भगत वधाई पावै

सोरठ—केसौ ! रुकमण पाप कमायो
जासू वर सिसपाळो आयो
कै मैं भूखा विप्र उठाया अणदोसां दोस लगाया
कै मै चरती गऊ विडारी कै मैं क्वांरी कन्या मारी
कै मै सासू-नणद संतायी कै मैं पुत्र विछोया माई
ठोकर सू गऊ उठायी कै मैं चुगली किसी की खायी
कै मै काटी वरत कुवा तणि यो पाप कमायो पापणि
दिवला सू दिवलो जोयो पगला सू पगलो धोयो
कै मै आलो पीपळ तोड़चो उपळा सू उपळो फोड़चो
पापा री करी कमाई जासू वर सिसपाळो आयी
कै मै वाड़ी को फळ तोड़चो कै मैं झूठी निदा जोड़ी
कै मै पाडोसण भरमायी कै मैं मारचो सगो जंवाई
कै मं चरती गऊ वतायी पीता की काण न खायी
ठोकर सूं कांसों उठायो कै मैं तीरथ अेक न न्हायो
कै मै माता पिता संतायी कन्या को द्रव लै खायी
अैसें पदम भणै जदुराई ! अंतरजामी ! करो सहाई

दोहा— दधसुत उर मोकू दहै खगपत-पत परदेस
हेम-सुता-पत का तिलक! कहियो अेक सनेस
जलमभोम मथरा तजी सोरठ किय परवेस
जाय वसायी द्वारका देख्यो उत्तम देस

केदारो—दधसुत ! जात हो वा देस
द्वारका में स्यामसुंदर सकल भुवन नरेस
कहा पतिया तुम सूं लिखूं सव दाता सकळेस
संकट के फंद दूर कीजो काटो करम कळेस
नंदनंदन जगतवंदन धरचो नटवर भेस
कारज अपणो सार कै छाय रहे परदेस

उन हरि ने राम का रूप धारण किया और दानव रावण का वध किया। उनने सागर में शिलाएं तैरायी और विभीषण ने लका पायी।

उन हरि ने कृष्ण का रूप धारण किया और कंसासुर दानव का वध किया, माता देवकी की सहायता की और पिता वसुदेव का बंधन छुड़ाया।

उन हरि ने बुद्ध का रूप धरा और जीवों पर दया विचारी। पदम भक्त आपका यश गाता है, भक्त को कुछ वधाई मिल जाय।

हे केशव! रुक्मिणी ने पाप कमाया जो शिशुपाल वर बनकर आया।

क्या मैंने भूखे ब्राह्मणों को बीच में उठा दिया? क्या निर्दोषों को दोष लगाया? क्या मैने घास चरती गाय को भगा दिया? क्या मैंने कुमारी कन्या को मारा? क्या मैंने सास-ननद को सताया? क्या मैने मां से पुत्रों का वियोग कराया? क्या मैने ठोकर मारकर बैठी गाय को उठा दिया? क्या मैने किसी की चुगली खायी? क्या मैंने कूवे की वरत (रस्सी) काट दी? और पापिनी मैने यह पाप कमाया? क्या मैंने दीये से दीया संजोया? क्या पैर से पैर को धोया? क्या मैने हरे पीपल के पेड को तोड़ा? उपले से उपला फोड़ा? पापों की कमाई की? जिससे शिशुपाल वर होकर आया। क्या मैने बाड़ी का फल तोड़ा? क्या किसी की झूठी निंदा की? क्या मैने पडोसिन को बहकाया? क्या मैने सगे जामाता को मारा? क्या मैंने चर रही गाय को (बधिक को) बतला दिया? क्या मैने पिता की मर्यादा नही रखी? क्या मैने ठोकर मारकर भोजन की थाली उठा दी? क्या मैंने एक भी तीर्थ मे स्नान नहीं किया? क्या मैने माता-पिता को सताया? क्या कन्या का द्रव्य लेकर खा गयी? पदम भक्त कहता है— हे यदुराज! रुक्मिणी इस प्रकार कहती है— हे अंतर्यामी! मेरी सहायता कीजिये।

उदधि (समुद्र) का पुत्र चद्रमा मुझे हृदय में जलाता है। पक्षियों के पति गरुड़ के स्वामी (विष्णु = कृष्ण) परदेश में है। हे हिमालय की पुत्री पार्वती के पति शिव के भालस्थित तिलक(= चद्रमा)! उन्हें एक संदेश कहना।

(कृष्ण ने) जन्मभूमि मथुरा को छोड़कर सोरठ में प्रवेश किया। वहाँ जाकर और उत्तम देश देखकर द्वारिका नगरी बसायी।

हे चंद्र! तुम उस देश को जा रहे हो। द्वारिका मे सकल भुवनों के राजा श्यामसुंदर है। मैं आपको क्या पत्र लिखू? आप सबके दाता है, सबके स्वामी है। मेरे संकट के बंधन दूर कीजिये और मेरे कठिन कर्मो के (भाग्य के) क्लेश को काट दीजिये।

हे जगद्वद्य नंदनंदन! तुमने नटवर का वेश धारण किया। अपना

सरब सीतळ अम्रितदाता करो यह उपदेस
चीर फाडू कंथा ओढू करूं जोगण भेस
सेली सीगी भसम मुदरा जूड राखू केस
स्याळियो सिसपाळ छाय रह्यो या देस
कंवळ-नैन विओगणी को कहियो पदम सनेस

केदारो–चित दै सुणो स्याम प्रवीण !
हरि! तुमारी नार रुकमणी बहुत देखी दीन
सुबक समारि समारि उठत परत स्वासा खीण
छूटी चिकुरायण चरन उरझी हुई तन बळ हीण
कहो नाहि सदेस सुंदर गवन मोहि नित कीन
पदम प्रभु के दरस कारण रही आसा लीन

५–रुक्मिणी का कृष्ण को संदेश भेजना

दूहा— दुज देख्यो नृप भींव रो रुकमण राजकंवार
यो पतियां ले जावसी निहचै कियो विचार

मारू— सैन दयी जब ही विप्पर कूं आयो दुजवर नेड़ो
सीस निंवाय चरण गह लीना सुणो वचन अेक मेरो
हो नंद! पुरी द्वारका जावो या पतियां ले जावो
त्रिभुवन नाथ वसै ज्या माधव संदेसो पहुंचावो
रही होंस मन मांय रुकमणी! मैं कैसें कर जाऊं
दस घर की चुकटी कर लाऊं घर बैठो ही पाऊं
पदम भणै प्रणवै पाय लागू गोविंद रा गुण गाऊं

दोहा— कहौ बाई! कैसे करूं भूं भारी दिन तीन
कद जाऊं द्वारामती व्रिद्ध विरामण दीन
या संका तू छोड दै बो समरथ करतार
दीनानाथ दयाल है विगड़ी लेय सुधार

मारू— डूबत हो गजराज टेर सुण हरी कहत ही धायो
कहां वैकुंठ कहां वो सरवर अेक पलक में आयो
डूबत ही गजराज उबारयो वैकुंठ धाम पठायो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं दुज सुण कै हरखायो

कार्य बना करके परदेश मे जा रहे। सबको शीतल अमृत का दान देने-वाले कृष्ण को यह सन्देश कहो— मैं मूल्यवान् वस्त्र को फाड़कर कंथा ओढ़ूंगी और योगिन का वेश धारण करूंगी। सेली (साधुओं की गाती अथवा सूत की माला), सींगी (सींग का बाजा), भस्म और मुद्रा (कानों में पहने जानेवाले स्फटिक आदि के कुंडल) धारण करूंगी और केशों का जटाजूट करके रखूंगी। सियार शिशुपाल इस देश में छा गया है। पदम भक्त कहता है— रुक्मिणी कहती है— हे चंद्र ! कमलनयन कृष्ण को वियोगिनी का सन्देश कहना—

'हे चतुर श्याम ! चित्त देकर सुनिये। हे हरि ! आपकी नारी रुक्मिणी को बहुत दीन अवस्था में देखा है। वह आपको स्मरण कर-कर सुवक उठती है और उसकी साँसे क्षीण पड़ रही है। उसके केशपाश खुल गये है जो चरणों में उलझ गये है (?) वह तन में वल-हीन हो गयी है। हे श्यामसुंदर ! आपने सन्देश नहीं कहा ... ...। पदम भक्त कहता है— वह प्रभु के दर्शनों के लिए आस लगाये वैठी है।'

५—रुक्मिणी का कृष्ण को संदेश भेजना

राजकुमारी रुक्मिणी ने राजा भीष्मक के ब्राह्मण को देखा तो उसने विचार किया कि यह निश्चय ही पत्र (सन्देश) ले जायगा।

तभी उसने विप्र को संकेत दिया। वह समीप आया। (रुक्मिणी ने) मस्तक झुकाकर उसके चरण पकड़ लिये (और कहा—) मेरी एक बात सुनो। हे नंद ! तुम यह पत्र लेकर द्वारिकापुरी जाओ। वहाँ त्रिभुवन के नाथ माधव निवास करते है उन्हें यह सन्देश पहुँचा दो। (नंद ने कहा—) हे रुक्मिणी! मेरा उत्साह मन का मन मे ही रह गया है। मै कैसे जाऊँ ? मैं तो दस घरों से चुटकी-चुटकी (आटा) माँगकर लाता हूँ और घर में बैठकर ही खा लेता हूँ। पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— (विप्र कहता है—) मैं तो गोविंद के गुण गाता हूँ।

हे वेटी ! कहो, कैसे करूँ ? दूरी वहुत है और समय तीन ही दिनों का है। मैं दीन और वृद्ध ब्राह्मण द्वारिका तक कव जा पाऊँगा ? रुक्मिणी ने कहा— तुम इस भय को छोड़ दो। वह करतार वड़ा समर्थ है। वह दीनों का नाथ और दयालु है और विगड़ी बात को सुधार लेता है।

गजेद्र डूव रहा था। 'हरि' नाम पुकारते ही वह दौड़ा। कहाँ तो वैकुठ और कहाँ वह सरोवर, पर एक ही पल में आ पहुँचा। गजेद्र को डूवने से वचा लिया और उसे अपने धाम वैकुंठ में पहुंचा दिया। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— रुक्मिणी का यह वचन सुनकर ब्राह्मण हर्षित हुआ।

दूहा-- रुकमण लिखै संदेसड़ा बैठ महल के मांहि
आंगळियां री मूदड़ी ढळकर आयी बांह
कलम जो कर में गह लयी लिखिया जादूराय
धरती रा कागद करां कलम करां वणराय
सात समद स्याही करां हरि गुण लिख्या न जाय
कपिला बाधी सुपच-घर सिंघां घेरी आय
रुकमण बामण तेड़ियो दीना कंचण कोड़
हरजी विन हथलेवड़ो लागै मोटी खोड़
पूरब जलम री वारता सांभळियो भगवान!
वा दिन चरण पलोटती पोढचा वट व्रख पान

मारू-- राम अवतार मै आगे परणी सोवन पिलंग विछाय
तोड़चा धनस किया दुय कुटका वो दिन हम परणाय
अबकै कहा विसार भुलानी सोळ सहस घर राणी
पूरब तणो नेह राखण नै आवो सारंगपाणी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं दुख री करो नी हाणी

सोरठ--पतियां मै कैसे लिखू, लिखी नहिं जाय
कर सू कलम पड़ै भू ऊपर नैण रह्या झड़ लाय
हिय में हरख घणेरो मेरै कागद में न समाय
दिन नहि चैन रैण नहि निंदरा घर अंगणा न सुहाय
म्हारी विपत तुम देख चले हो हरि सू कहियो बुझाय
पूरण ब्रह्म पदम का स्वामी ऊपर करज्यो आय

सोरठ--गरुड़ चढ आवो जी गोविंद !
अजामेल द्रुज कहा तप कीयो काट दिया जम-फंद ?
बळि कू छळ पाताळ पठायो कियो मगन हरिचंद
टेढी तै सूधी कर दीनी कुबज्या मन आणंद
देस मळेछ धरचो तन नरहर कियो प्रळाद अणंद
गो-सुर-भूमि-दुजन-दुख मेटचो कीनो कंस निकंद
भींवराय री भीड़ चढो नै पत राखो नंदनंद
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं डूबत राख्यो गयंद

सोरठ--म्हांरी पत राखो जी त्रिभुवन-धणी !
न्रप सिसपाळ सेन सज आयो परणन रूकमणी

महल के भीतर बैठकर रुक्मिणी सन्देश लिख रही है। उसकी अंगुलियों की मुंदरी ढलकर वांहों मे आ गयी है। हाथ में कलम ले ली और यादव-राज (कृष्ण) का नाम लिखा। यादवराय ! यदि सारी धरती का कागज वनायें, समस्त वनों (के वृक्षों) की कलम वनायें और सातों समुद्रों (के पानी) की स्याही वनाये तव भी आपके गुण नहीं लिखे जा सकते। (आप ही देखिये !) कपिला गाय को कसाई के घर बांध दिया है और सिंहो ने आकर उसे घेर लिया है।

रुक्मिणी ने ब्राह्मण को बुलाया और उसे करोड़ो का स्वर्ण दिया। हरि के विना हथलेवा हो तो कितना वड़ा दोप लगेगा ? हे भगवान ! पूर्व जन्म की वात को सुनिये— जिन दिनो आप वटवृक्ष के पत्ते पर लेटते थे उन दिनों मैं आपके चरण दवाती थी।

पूर्वकाल में राम के अवतार मे आपने मुझे व्याहा। सोने के मंच बिछाये गये। आपने धनुष को तोडकर उसके दो टुकड़े कर दिये थे। ... ... अबकी बार मुझे क्या बिसारकर भुला दिया क्योंकि आपके घर मे सोलह हजार रानियाँ है। हे शार्ङ्गपाणि ! पूर्वजन्म के नेह को निभाने के लिए आइये। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ। (रुक्मिणी कहती है-- हे कृष्ण !) दुःख का नाश कीजिये न !

मैं पत्र कैसे लिखूं, लिखा ही नही जाता। कलम हाथ से छिटक कर धरती पर गिर जाती है, नेत्र आँसुओ की झड़ी लगा रहे है। मेरे हृदय मे अपार हर्ष उमड़ रहा है जो कागज मे समा नही पा रहा है। मुझे न दिन में चैन पड़ता है, न रात को नींद आती है। घर-आँगन नही सुहाता। (हे विप्र !) मेरी विपत्ति को तुम देखकर जा रहे हो। हरि से समझा-बुझाकर कह देना। हे पदम के स्वामी ! हे पूर्ण ब्रह्म ! आकर सहायता करना।

हे गोविंद ! गरुड़ पर चढकर आइये। अजामिल द्विज ने कौन-सा तप किया था जो आपने उसके यम-पाश को काट दिया ? आपने बलि राजा को छलकर पाताल में भेज दिया, हरिश्चद्र राजा को प्रसन्न किया। कुब्जा दासी को टेढ़ी से सीधी कर दी, वह मन मे प्रसन्न हुई। आपने म्लेच्छ (असुर) देश में नरसिंह का रूप धारण किया और प्रह्लाद को आनंदित किया। कंस को मारकर गौओं, देवताओं, भूमि और ब्राह्मणों के दुःखों का निवारण किया। राजा भीष्मक की सहायता के लिए चढ़कर आइये। हे नंद के नंदन ! उनकी लाज बचाइये। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ। (रुक्मिणी कहती है—) आपने डूबते हुए गजेंद्र की रक्षा की।

हे तीनों लोकों के स्वामी ! हमारी प्रतिष्ठा रखिये। राजा शिशुपाल

कुंदणपुर कू घेर लियो है गाढी विपत वणी
पतित-उधारण साख तुमारी वेद-पुराण भणी
याकै संग जीवत नहिं जाऊं निहचै चित्त ठणी
थोड़ी ही थे बहुत कर मानो और क लिखूं घणी ?
जो न पधारो जोहर करस्यां खास्यां हीर कणी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं राखो रूकमणी

सोरठ--राखो राखो जी ब्रजराज !
राज ! रुकमण की लाज राखो
रुकमण को वर कृष्ण सांवरो यूं नारद मुनि भाखो
भाई-माता व्यांव रचायो सारो नहीं पिता को
डाहलियो सिसपाळ संतावै ऊंच-नीच कांइ ताको
दुसट को नास करो ब्रजवासी ! पत भगतां री राखो
रुकमण दासी चरण कंवळ की कारज है अबळा को
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं लेख लिख्यो विधना को

सोरठ--आवो आवो हो सांवरिया ! रुकमण कारणै
न्रप भीसम नै वात चलायी
सठ रुकमइयै कुबद कमायी
चीरी भेज बुलायो डाहल बारणै
देख वरात नगर चल आयो
जद रुकमण अत ही दुख पायो
काढ कटारो लीयो जोहर कारणै
रुकमण चीरी वेग लिखायी
दुज हरिया के हाथ पठायी
देखत ही हर उठिया असुर संघारणै
दास पदम स्वामी अधिकारी
मार असुर मेटो दुख भारी
लोक लाज म्हांरी राखो गिरिवर धारणै

सोरठ—म्हे तो थांनै दीनबंधू जाण
लिख्यो लगन वरात आयी दिया मंडप ताण
साज दळ सिसपाळ आयो वाजता नीसाण
निन्न्याणवै छत्रधारी जुरासिंध समान

रुक्मिणी से विवाह करने के लिए सेना सजाकर आया है। उसने कुदनपुर को घेर लिया है। गहरी विपत्ति आ पड़ी है। आप पतितों का उद्धार करनेवाले है— वेद-पुराणों ने इस बात की साक्षी दी है। मैं जीते-जी इस शिशुपाल के साथ नही जाऊँगी-- यह मन में निश्चय कर लिया है। आप इस थोड़ी-सी बात को ही बहुत करके समझना, और अधिक क्या लिखू ? यदि आप नहीं पधारेगे तो जौहर करके अग्नि मे कूद जाऊंगी अथवा हीरे की कनी खाकर प्राण त्याग दूँगी। पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— रुक्मिणी की रक्षा कीजिये।

हे ब्रजराज! आप रुक्मिणी की लाज रखिये। नारद मुनि ने यों कहा था कि रुक्मिणी का वर साँवरा कृष्ण है। भाई और माता ने विवाह रच डाला है। पिता का वश नहीं है। डाहल का राजा शिशुपाल सता रहा है। अब आप ऊँच-नीच क्या देख रहे हैं ? हे व्रजवासी! दुष्ट का नाश करें और भक्तों की प्रतिष्ठा की रक्षा करें। रुक्मिणी आपके चरण-कमलो की दासी है। यह काम अबला का है।

पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—(रुक्मिणी कहती है—) विधाता का लिखा हुआ लेख है!

हे साँवरे कृष्ण! रुक्मिणी के लिए आओ, आओ।

राजा भीष्मक ने बात चलायी, दुष्ट रुक्मइये ने कुबुद्धि का काम किया। उसने पत्र भेजकर शिशुपाल को द्वार पर बुला लिया।

बरात को आयी देखकर नगर उमड़ पड़ा। तब रुक्मिणी को अपार दु:ख हुआ। उसने जौहर करने के लिए कटारी निकाल ली।

रुक्मिणी ने तुरंत चिट्ठी लिखवायी और ब्राह्मण हरिनंद के साथ भिजवा दी। देखते ही हरि असुर का संहार करने के लिए उठ खड़े हुए।

हे दास पदम के श्रेष्ठ स्वामी! असुरो को मारकर भारी दुःख का निवारण करो। हे गिरिवर के धारण करनेवाले! हमारी लोक-लाज की रक्षा करो।

हमने तो तुमको दीनों का बंधु समझा है।

लग्न लिखकर भेजा तो बरात आ गयी। मंडप तान दिये गये। शिशुपाल सैन्य दल से सज्जित होकर नगाड़ों के बजते आया है। उसके दल में जरासंध सरीखे निन्यानबे छत्रधारी राजा है। वह सिलहटी और सोट जैसे बहुत-सारे हाथी और घोड़े साथ लाया है।

हैव्वर गयंद बहोत लायो सिलट सोट समान
सुणूगी जद कृष्ण आव्रत करूंगी जळ पान
बंधु रुकम ब्यां रचायो छांड कुळ की काण
कोटि तारे महा पापी अजामेल समान
द्रोपदी को चीर वाढ्यो भगत अपणी जाण
मैं तुमारो विड़द सुणकै गह लिया हठ मान
नीस दिन मेरे ध्यानं तेरो अहो सारंगपाण !
आवणो है तो आव ठाकुर ! यही तुमरी वाण
पदम-स्वामी ! गवन कीजै तजूं नातर प्राण

कल्याण–विड़द घटै नहिं लाज न आही
हंस कौ भाग काग ले जाही
तुम तो कहियो परम सनेही हमरे ठाकुर जदूराई
थांरै कारण मैं व्रत कीना माघ मास सीतळ जळ न्हायी
पदम भणै अरधंग्या थारी प्राण गये कहा करिहौ आयी

जैजैवंती–पतियां लिखी है स्याम नै
या पाती ठाकुर कू दीजो मत दीजो सिसपाळ नै
कुंदणपुर में रतन रुकमणी रटै तुमारै नांव नै
तुमरे दरस बिन और न आसा तड़फ रही गोपाळ नै
यो सिसपाळ चंदेरी को राजा परणै छै थारी मांग नै
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं सरण गही किण काम नै

केदारो–हो दुज ! द्वारका लग जाय
द्वारका में स्यामसुंदर संदेसो पहुंचाय
रूकमइयै ब्यां रचायो पिता न बूझी माय
लिख्यो लगन वरात आयी दिया मंडप छाय
कुंदणपुर में होत इचरज स्याळ रोकी गाय
स्याळ है सिसपाळ डाहल सिंघ भख ले जाय
छत्रधारी भूप राजा नगर घेरयो आय
जोड़ दळ सिसपाळ आयो जुरासंध सहाय
मैं निवळ बळ मेरै नांही कहूं वेदन काय ?
हंस कूं अेक भाग दीनो काग लीयां जाय
द्वात नांही कलम नांही लिखूं भेद वणाय

जब मैं कृष्ण के आने की बात सुनूँगी तभी जल ग्रहण करूँगी।

भाई रुक्मइये ने कुल की मर्यादा को छोड़कर विवाह रचाया है।

तुमने अजामिल सरीखे करोड़ो बड़े-बड़े पापियों का उद्धार किया है। द्रौपदी को अपनी भक्त जानकर उसका चीर बढ़ाया।

मैंने तुम्हारी कीर्त्ति सुनकर हठपूर्वक तुम्हें वरण कर लिया है। हे शार्ङ्गपाणि! मेरे रात-दिन तुम्हारा ही ध्यान है।

हे ठाकुर! आना है तो आ जाओ। आपका तो यह स्वभाव ही है। हे पदम भक्त के स्वामी! अब प्रस्थान करो नहीं तो मै प्राणो का त्याग कर दूँगी।

(हे द्विज!) हमारे परम स्नेही ठाकुर यदुराय कृष्ण से यह कह देना कि हंस के भाग को कौवा ले जा रहा है। इससे आपकी अपकीर्त्ति होगी। तब क्या आपको लाज नहीं आयेगी?

आपको पाने के लिए मैंने व्रत किये है, माघ के महीने मे ठडे जल से नहायी हूँ। पदम भक्त कहता है— रुक्मिणी ने कहलवाया कि मैं आपकी अर्धांगिनी हूँ। प्राण छूटने पर आकर क्या करेंगे?

श्याम को पत्रिका लिखी है। (हे द्विज!) यह पत्रिका ठाकुर कृष्ण को देना, शिशुपाल को मत देना। (कहना कि) कुंदनपुर मे रत्न-सरीखी रुक्मिणी तुम्हारे नाम की रट लगा रही है। तुम्हारे दर्शन के अतिरिक्त उसे और कोई आशा नही है। वह गोपाल के लिए तड़फ रही है। चंदेरी का राजा यह शिशुपाल तुम्हारी माँग (वाग्दत्ता) को ब्याह रहा है।

पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरो लगता हूँ— (रुक्मिणी ने कहलवाया—) मैंने किस काम के लिए शरण ग्रहण की थी (जब कि अवसर आने पर भी आप सहायता नहीं कर रहे है)।

हे द्विज! द्वारिकापुरी तक जाओ। वहाँ श्यामसुदर के पास सन्देश पहुँचाओ। रुक्मइये ने विवाह रच डाला है। उसने न पिता को पूछा, न माता को। लग्न लिखा और बरात आ गयी। मडप छाये गये है। कुंदनपुर में आश्चर्य हो रहा है—शृगाल ने गाय को रोक लिया है। शृगाल शिशुपाल राजा है जो सिंह के भक्ष्य को लिये जा रहा है। छत्रधारी राजा-महाराजाओं ने आकर नगर को घेर लिया है। शिशुपाल दल सजाकर आया है। जरासध उसका सहायक है। मै तो अबला हूँ, मुझमें बल नहीं है, अपनी वेदना किससे कहूँ? हंस को जो एक भाग दिया था उसे कौवा लिये जा रहा है। मेरे पास न दवात है न कलम, जो भेद की बात समझाकर लिख दूँ। मेरा तो कुछ नही विगड़ेगा,

माहरो कछु वीगड़ै नहिं विड़द थारो लजाय
गरुड़ चढ गोविंद आवो जन पदम वलि जाय

केदारो—कर दुज ! द्वारका लौ गवन
रुकमणी की ले अंगूठी चल्यो जैसे पवन
कुंदणपुर में न्याव नांही लगी अवगत हवण
आचरज इक सिंघणी सू स्याळ चाहै रमण
जोड़ दळ सिसपाळ आयो पोळ तोरण छवण
पदम स्वामी ! भणै रुकमणी विलंब कारण कवण

जैजैवंती—जा दीजो दुज ! वा मोहन पै प्रेमभरी यह पाती
समै जाण कै वात चलाज्यो कहज्यो सभा सुहाती
कृष्ण-नांव सू प्रीत लगी है कल न पड़त दिनराती
जो नहिं आवो प्राण तजूंगी करकै मरू अपघाती
या मन मह निहचै कर जाणो आन संग नहिं जाती
मै अपणै मन ठाण लियो है और कछू न सुहाती
तुमरे विड़द कूं लोग हसैगा गयी समै नहिं आती
यो सिसपाळ काळ सो लागै जम सा लगै वराती
पदम भणै अब दरसण दीजै सीतळ होवै छाती

ब्राह्मण का प्रस्थान

विहाग—हां रे नंद ! झूठ परोला जाय
कुटंब का लोग हरनंद कूं वरजै द्वारामती कद जाय
कंगण बांध्यां सिसपाळो न्रप जान कुंनणपुर आय
मही ज आडी, दूर द्वारका तूं कैसें कर जाय
लगनां आडा तीन दिहाड़ा मास तीसरै आय
सेस महेस पार नहिं पावै तुमरी कहा वसाय ?
लोभ कै कारण पड़ो मत हरनंद! कंगण लख ललचाय
सुपने में हरि दरसण दीना दुज ! थारो मन राखूं
रुकमण-कंथ कुनणपुर लाऊं पदम सबद यूं भाखूं

दोहा— रुकमण विप्र विदा कियो चल्यो द्वारका जाय
हरि हळधर दौउं द्वारका पाती दयौ पहुंचाय

तुम्हारा ही विरुद लज्जित होगा। हे गोविंद! गरुड़ पर सवार होकर आइये। पदम भक्त आप पर वलिहारी होता है।

हे द्विज! द्वारिका तक जाओ। ब्राह्मण रुक्मिणी की अँगूठी लेकर पवन के समान चल पड़ा। (उसे रुक्मिणी ने यह मौखिक सन्देश भी दिया)— कुदनपुर मे न्याय नही है। वहाँ अन्याय होने लगा है। आश्चर्य है, शृगाल एक सिंघनी से रमण करना चाहता है! पौरी पर तोरण वाँधने को (विवाह करने को) शिशुपाल सैन्य-दल सजाकर आया है। पदम भक्त कहता है— हे स्वामी! रुक्मिणी कह रही है कि किस कारण विलंब हो रहा है।

हे द्विज! उन मोहन को यह प्रेम-भरा पत्र दे देना। समुचित अवसर जानकर बात चलाना। सभा में अच्छी लगे ऐसी वात कहना। मुझे कृष्ण-नाम से प्रेम हो गया है, रात-दिन कभी चैन नही पड़ता। यदि नही आयेंगे तो मैं प्राण त्याग दूंगी, और आत्मघात करके मर जाऊँगी। यह आप निश्चित ही समझिये कि मैं किसी दूसरे के साथ नहीं जाऊँगी। मैंने अपने मन में निश्चय कर लिया है, अव और कुछ भी नहीं सुहाता है। यदि तुम न आये तो तुम्हारे विरुद की लोग हँसी उड़ायेगे। बीता समय नहीं लौटता है। यह शिशुपाल मुझे काल के समान लग रहा है और वरात के लोग यमराज जैसे लग रहे है। पदम भक्त कहता है— रुक्मिणी ने द्विज के साथ कहलाया कि हे कृष्ण!— अब दर्शन दे दीजिये ताकि मेरी छाती शीतल हो जाय (चित्त में चैन आ जाय)।

ब्राह्मण का प्रस्थान

हरिनंद द्विज को उसके कुटुंब के लोगों ने मना किया कि हे नंद! तुम झूठे सिद्ध होओगे। अव द्वारिका नगरी कव पहुँचोगे? कंगन बंधें शिशुपाल राजा की बरात तो कुदनपुर आ गयी है। द्वारिका नगरी बहुत दूर है, वीच में बड़ी भूमि पार करने को पड़ी है। तुम कैसे जावोगे? लग्न के वीच तो तीन दिन रह गये है, और तुम आओगे कही तीसरे माह! शेषनाग और महेश भी पार नही पाते, तुम्हारी क्या बिसात है? हे हरिनंद! कंगन को देखकर ललचाकर लोभ के गर्त मे मत पड़ो। हरि ने उसे सपने में दर्शन दिये— हे द्विज! मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण करूँगा।

पदम भक्त कहता है— विप्र ने ये शब्द कहे— मैं रुक्मिणी के पति को कुंदनपुर में लाऊँगा।

रुक्मिणी ने विप्र को विदा किया। कहा—द्वारिकापुरी चले जाओ। वहाँ हरि और हलधर दोनो हैं। उन तक पत्रिका पहुँचा दो।

हरिनद ब्राह्मण ज्योंही विदा हुआ कि रुक्मकुमार चढ़कर उसके पास आया। रुक्मकुमार ने कहा—हे नंद जोशी! सुनो। तुमको किसने बहकाया है? बीच मार्ग में सागर का अथाह जल पड़ा है। डेढ़ महीने में पहुँचोगे। विवाह को तो तीन दिन बाकी हैं और तुम तीसरे महीने में लौटोगे। नंद जोशी ने कहा— हे कुमार! सुनो। मैं द्वारिकापुरी नहीं जाऊँगा। एक मजिल तक जाकर सो जाऊँगा ताकि तीन दिन वीत जायँ। रुक्मइये ने कहा—हे नद जोशी! सुनो। तुम भले ही द्वारिकापुरी जाओ। यहाँ चारों दिशाओं से राजा आये हुए हैं। अब कृष्ण भले ही छप्पन करोड़ की सेना के साथ चढ़कर आ जाय। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— रुक्मकुमार ने नंद जोशी से कहा—जाकर शीघ्र बुला लाओ।

नंद ब्राह्मण कुंदनपुर से हर्षित होकर चला। मार्ग में उसे बड़े अच्छे-अच्छे शकुन हुए। उसे गोद भरी हुई तथा मंगलगीत गाती नारियाँ मिलीं। भरी हुई छवड़ी सिर पर रखे हुए मालिन मिली और घड़ा भर कर लाती हुई पनिहारिन। बाँई ओर खरगोश और दाहिनी ओर नेवला मिला। और मतवाले (?) हुए हरिन। नंद जोशी का मुखड़ा हर्ष से खिल उठा— कान्ह कुंवर मिल जायेंगे। सिर पर तिलक लगाये हुए दो जोशी मिले। वे भी ठीक ही मिले। पेड़ की हरी डाली हाथ में लिये नाई मिला। और हनुमान मिले। नाज से भरे हुए गाड़े मिले जिनमें सफेद बैल जुड़े हुए थे। कंगन बंधे हुए कुमार भी मिले जो हर्षोल्लासपूर्वक आ रहे थे। विप्र को अनेक शकुन हुए जिनसे उसने अनुमान किया कि समझते हैं कि कृष्ण अवश्य आयेंगे। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—ऐसे शकुनों के साथ विप्र ने प्रयाण किया।

रुक्मिणी ने ब्राह्मण को अपना जानकर संदेश भेज दिया। वह पाँच-सात योजन चलकर सो गया। तब शिवजी को उस पर दया आयी। श्रीकृष्ण के दरवार में जाकर शिवजी ने सलाह की—कुंदनपुर से चला हुआ वह वेचारा ब्राह्मण यहाँ कब तक आ पायेगा! श्रीकृष्ण ने कहा—हे सदाशिव! सुनिये। उसे आप भलीभाँति जानते हैं। पराया माल घर में डालकर वह खूंटी तानकर (निश्चित होकर) सो गया है। सदाशिव ने कहा—हे कृष्णजी! सुनिये। आप तो अंतर्यामी हैं। ब्राह्मण वहुत ही बूढ़ा है, उसमें कोई त्रुटि नहीं है। तब श्रीकृष्ण ने पार्षदों को भेजा—जाओ, नंद ब्राह्मण को ले आओ। ब्राह्मण कच्ची नींद में सो रहा है, उसे जगाना मत। पार्षदों ने जाकर ब्राह्मण की परिक्रमा की और उसे विमान में बिठा लिया। फिर उसे गोमती के ठीक किनारे

ठेट गोमती आण उतारचो चलतां नहीं जगायो
आण उतारचो कृष्ण-घाट पर छिड़क्यो सीतळ पाणी
गया पारखत घरे आपरै अजूं न ब्राह्मण जाणी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं रची विधाता वानी

मारू— ऊठ्यो ब्राह्मण नैन निरखतो देख्या गढ कविळासा
बारह जोजन सब सोना की गढ मढ पोळ प्रगासा
राज द्वार पूछै स्वामीजी वोलै वचन कुमारा
को है देस कौण या नगरी कौ नै कौण विचारा
यो रतनागर पास गोमती जादू जुगत नरेसा
हरख्या-वदन होय नंद जोसी कीना नगर प्रवेसा
छपन कोट की अति ठुकराई वाजा अनहद वाजै
कंचण झळकै कोट कांगरा गढां गढां कै राजै
थे तो मिसर ! जगत का गुर हो लेकर आया सावो
केसौराय कंवर की पोळी सूधा चाल्या जावो
पोळी जाय प्रीत सूं ठाढो भीतर भेद जणायो
कागद ले र कृष्ण कर दीनो विप्र कठा सूं आयो
जद हरि मिस ले पूछण लागा विप्र कहां सूं आयो
विद्रम देस नगर कुन्नणपुर राजा भींव पठायो
भणै कृष्णजी सुणो मिसर ! थे आया कै दिन मांही
इण सावै रा तीन दिहाड़ा म्हां सूं सझता नांही
रुकमणी तणी वीनती सुणियो जादू-राई
दास पदम पर किरपा कीज्यो सांसो मेटो आयी

दोहा— हरि पूछै हरि-दास नै देस-नगर की वात
आनंद में थांरो राजवी कहौ रुकमण कुसळात
विद्रम देस सुहावणो रुकमण तणो निवास
मंगळ गावै कामणी लीला रास विलास

मारू— लीला रास विलास गोविंद गुण धरम तणो विवहारा
जित लग हद राजा भीसम की सरब सुखी संसारा
वाड़ी-वाग महल अर मेड़ी कूवा वाव तळावो
अस्ट सिध्ध नव निध सब सरसै आणंद मंगळ गावो
पूजै विप्र वेद-धुन उचरै जग्य जपै मन हरसै

पर ला उतारा। उसे चलते में नहीं जगाया। उसे लाकर कृष्ण-घाट पर उतारा और उस पर शीतल जल छिड़का। पार्षद अपने घर चले गये। ब्राह्मण तब भी यह बात नही समझ पाया। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— विधाता ने विचित्र रचना की !

ब्राह्मण उठा और आँखों से देखा तो सामने स्वर्ग जैसा गढ़ देखा। वह बारह योजन में फैला हुआ था और सब सोने का बना था। गढ़ में मंदिरों और पौरियों की जगमगाहट हो रही थी। राजद्वार पर जाकर स्वामीजी (ब्राह्मण) ने पूछा कि यह कौनसा देश है और कौनसी नगरी है ? तब कुमारो ने उत्तर दिया— यह रत्नाकर समुद्र है, पास ही गोमती नदी है। यहां के राजा यादवराय है। तब प्रसन्नवदन होकर नंद जोशी ने नगर में प्रवेश किया। वहाँ छप्पन करोड़ यादवों की बड़ी भारी ठकुराई थी। अपार बाजे बज रहे थे। गढ़ों के कंगूरों पर कंचन झिलमिल कर रहा था। ... ... हे मिश्रजी (ब्राह्मण) ! आप तो जगत् के गुरू है और लग्न लेकर आये हैं। आप सीधे केशवराय की पौरी पर चले जाइये। ब्राह्मण पौरी पर जाकर प्रेमपूर्वक खड़ा हुआ और भीतर जाकर भेद की बात जतलायी। पत्र लेकर कृष्ण के हाथ मे दिया। तब उसने पूछा— हे विप्र ! आप कहाँ से आये है ? जब श्रीकृष्ण बहाना बनाकर (अज्ञानी की भाँति) पूछने लगे कि हे विप्र ! आप कहाँ से आये है तो उत्तर दिया— विदर्भ देश का कुंदनपुर नगर है, वहाँ के राजा भीष्मक ने भेजा है। श्रीकृष्ण ने कहा— हे मिश्रजी ! सुनिये। आप कितने दिनों से यहाँ पहुँचे हैं ? इस लग्न के तो तीन ही दिन शेष रह गये हैं, हमसे यह लग्न सझेगा नहीं (साधा नही जायगा)। पदम भक्त कहता है— हे यादवराय ! रुक्मिणी की विनती सुनिये। उस पर कृपा कीजिये और आकर उसके दु:ख को मिटाइये।

हरि हरि-दास से देश और नगर की बात पूछ रहे हैं— आपका राजा प्रसन्न तो है ? रुक्मिणी की कुशल कहो। ब्राह्मण ने उत्तर दिया— विदर्भ देश, जिसमें रुक्मिणी का निवास है, बड़ा सुहाना है। वहाँ कामिनियाँ मंगलगीत गाती हैं और लीलाएं और रास आदि आमोद-प्रमोद होते रहते हैं।

हे गोविंद ! वहाँ नाना भाँति की लीलाएं और रास होते हैं और धर्म के अनुसार आचरण किया जाता है। जहाँ तक राजा भीष्मक की सीमा है, सारा संसार सुखी है। वहाँ पर वाटिकाएं, बाग, महल और मेड़ियाँ हैं तथा कूवे, बावड़ियाँ और तालाब भी है। वहाँ आठों सिद्धियाँ और नवों निधियाँ सब बरसती रहती है और आनंद तथा मंगल का गान होता रहता है। वहाँ विप्र पूजा करते है, वेद-ध्वनि का उच्चार करते हैं,

परसन इंद्र कोट तेतीसूं मुख मांग्या जळ वरसै
कंवर कुलखणै कयो न मान्यो चीरी गयी चंदेरी
डाहल जान जोड़ पुर आयो कंवरि गही पण तेरी
कहै कृष्णजी सुणो जोसीजी आछी वात वणायी
राजा भीव रै अेक रुकमणी दो-दो जान वुलायी
यही अरज अेक करुं वीनती सुण लीजे अव मोरी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं सरण गही प्रभु तोरी

दोहा— हरि पूछै हरि-दास कूं केहड़ी रूप कंवारि
कहो सत्य दुजवर ! सही भाखो वैण विचार
दध-सागर में ऊपनी कंवळा तणो विचार
जाणूं देवी जानकी वहुर लियो अवतार

मारू— दोउ कुळ वंस सभा में राजै जैसें चंद उजारी
ऊगै रवी छिपै सव उडगण सखियन भींव कंवारी
विरछां में ज्यूं पारजात है मानसरोवर सारो
परवत में हेमाचळ परवत परवत घणा अपारो
घोड़ां में ज्यूं उच्चीसरवा अैरापत गज सारो
देवगणां में इंद्र भणीजै रंभा रूप संवारो
ब्रह्मा घर सावत्री सोहै इंद्र घरां इद्राणी
आद विष्णु अरधंग्या सोहै रुद्र घरां रुद्राणी
रुकमण तणै रूप की सोभा कहतां नाऽवै वारो
सिंधु-सुता रा वा में लख्खण वत्तीसूं आभारो
रुकमण तणै रूप री संख्या कहतां नाऽवै वाणी
कित लग कहूं कहां लूं वरणूं वैष्णव पदम वखाणी

दोहा— हरी मिल्या हर-दास नै हरख हुवा मन मांय
दरवारां नौवत घुरी आणंद उर न समाय
द्वारावति री कामणी लीनी सकळ वुलाय
द्वादस सोड़स वरस री फिरी चहूं दिस आय
रुकमण री चीरी सुणी घूंघट में मुसकाय
छपन कोट जादू जुड़्या सव मिल वैठ्या आय
इतणी सुण आणंद भयो मोतियन चोक पुराय
चंदण चौकी लाय कै जादूपत वैठाय

यज्ञ-जाप करते हैं जिससे मन हर्षित होते हैं। वहाँ इंद्र और तेतीसों करोड़ देवता प्रसन्न रहते है और मुँहमाँगा जल बरसाते है। दुर्लक्षण कुमार रुक्मकुमार ने कहना नही माना। चंदेरी को चिट्ठी गयी। शिशुपाल बरात सजाकर नगर में आ गया परंतु राजकुमारी ने आप (को पाने) की प्रतिज्ञा कर ली है। कृष्ण ने कहा— हे जोशीजी! सुनिये। बड़ी अच्छी बात की। राजा भीष्मक के रुक्मिणी तो एक है और बरातें दो-दो बुलायी हैं। ब्राह्मण ने कहा— एक यही प्रार्थना है। विनती करता हूँ, अब मेरी बात सुन लें। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— हे प्रभो! अब आपकी शरण पकड़ ली है।

हरि ने हरि-दास से पूछा— हे द्विजवर! राजकुमारी रूप में कैसी है? आप सच-सच कहो, सोच-विचार कर सही-सही बतलाओ। ब्राह्मण ने बतलाया— (रुक्मिणी ऐसी है) मानो क्षीर-सागर से उत्पन्न कमला (लक्ष्मी) हो अथवा मानो देवी जानकी ने दुबारा अवतार लिया हो।

सूरज के उगने पर जैसे सारे तारे छिप जाते हैं उसी प्रकार सखियों के बीच भीष्मक-कुमारी रुक्मिणी अवस्थित है। जैसे वृक्षों में पारिजात हो, सरोवरों में मानसरोवर हो, पर्वतों में हिमालय पर्वत हो, यद्यपि और भी बहुत से पर्वत हैं।

घोड़ों में जैसे उच्चैःश्रवा, हाथियों में ऐरावत, देवताओं मे इंद्र और रूपसियों में रंभा श्रेष्ठ है उसी प्रकार रुक्मिणी श्रेष्ठ है। ब्रह्मा के घर में सावित्री सुशोभित होती है, इंद्र के घर में इंद्राणी शोभा देती है, विष्णु की अर्धांगिनी आदिलक्ष्मी है, और रुद्र के घर में रुद्राणी सुशोभित होती है।

रुक्मिणी के रूप की शोभा को कहते हुए पार नहीं आता। उसमें लक्ष्मी के बत्तीसों लक्षण विद्यमान हैं। पदम वैष्णव कहता है— ब्राह्मण ने कहा— रुक्मिणी के रूप की गिनती मुख से कहने में नहीं आती। मैं कहाँ तक कहूँ, कहाँ तक वर्णन करूँ?

हरि-दास को हरि मिले। मन में आनंद हुए। दरबारों में नौबत बजने लगी। हर्ष मन में नहीं समा रहा था। द्वारिकापुरी की सभी कामिनियों को बुला लिया। बारह एवं सोलह वर्षों की कामिनियां चारों ओर आ उपस्थित हुई। उन कामिनियों ने घूघट मे मुसकराकर रुक्मिणी की चिट्ठी सुनी। छप्पन कोटि यादव एकत्र हुए और मिलकर बैठ गये। इतना सुनकर सबको आनंद हुआ। मोतियों से चौक पूरे जाने लगे। चंदन की बनी चौकी [illegible] पति को बैठाया गया।

मारू— दुरवासा रिसि अख्खत दीना कळस गणेस पुजाया
हरियै हर-रै तिलक संजोया कामण मंगळ गाया
वे जादूपत अंतरजामी नमस्कार कर लीना
चीरा फेंटा और दुपट्टा हर नंदजी नै दीना
जद हरियै फेंटा सूं खोली रुकमण री सहनाणी
हीरा रतन अधीका जड़िया असी अंगूठी आणी
जद हरियै हर नै पहरायी हर अंतर में जाणी
या अंगूठी जनक सुता री अपणी ओर पिछाणी
अंजणिसुत त्रेता में दीनी सोइ मुद्रिका म्हारी
सहनाणी आ ठेट की ज़ूनी वात चितारी
रुकमणी तणी वीनती सुणियो जादूराई
दास पदम पर किरपा कीज्यो सांसो मेटो आयी

दोहा— हरि हळधर सूं यूं कह्यो डेरा भवन दिराय
कंचण चोकी डार कै सेन्या लेव बुलाय
तातो पाणी उबटणो मरदन अंग कराय
सोड़ गळीचा गींदवा दीना पलंग बिछाय
हरख्यो दुजवर बैठियो मन कर मान्यो चाव
दरसण कीना स्याम का फूल्यो अंग न माव
कृष्ण कहै नंदजी! सुणो पतियां आछी लाय
पदम भणै प्रणवै सदा अैसें कह वतळाय

विहाग— हरि नै पत्रका दुज दयी
रुकमणी की लिखी पाती सीस पर धर लयी
वांच पतियां हरख मन में आणंद उपज सही
जान सिणगार भाई! चिंता चलण भयी
द्वारका में होत मंगळ भूमि रतनां छयी
दास पदम री वीनती चरच इण विध भयी

काफी— जरद भये वांचत ही पतियां
ऊपर लिख्या प्रेम रा आखर धरक धरक धरकै छतियां
हमरी विपत हमरौ तन जाणत वांच न जात प्रेम री बतियां
दास पदम पर महर करो प्रभु! वीती जात है वासर-रतियां

दुर्वासा ऋषि ने अक्षत दिये। गणेश की कलश-पूजा की गयी। हरिनंद ब्राह्मण ने श्रीकृष्ण के तिलक किया। कामिनियों ने मांगलिक गीत गाये। उन अंतर्यामी यादवपति ने नमस्कार के साथ ग्रहण किया। श्रीकृष्ण ने नंद ब्राह्मण को चीर, फेटा और दुपट्टा दिया। तत्पश्चात् ब्राह्मण ने फेंट में से खोलकर रुक्मिणी की निशानी निकाली। वह अंगूठी निकाली जिसमें अनुपम हीरे और रत्न जड़े हुए थे।

फिर ब्राह्मण ने उसे कृष्ण को पहनाया। कृष्ण ने मन में जाना— यह अगूठी तो जनकसुता जानकी की है। उनने अपनी अंगूठी पहचान ली।

यह मेरी वही अंगूठी है जिसे त्रेतायुग में हनुमान् ने निशानी के रूप में (जानकी को) दी थी। उनने उस पुरानी बात का स्मरण किया। हे यादवराय! रुक्मिणी की विनती सुनिये। सेवक पदम पर कृपा कीजिये। आकर संकट मिटाइये।

कृष्ण ने बलराम से यों कहा— इसे भवन में डेरा दो। कंचन की चौकी डलवाओ। सेना को बुलाओ। गरम जल, उबटन और मर्दन का प्रबंध करो।

गलीचे, रजाई, गद्दे मंगवाये गये। पलंग बिछवा दिये गये। ब्राह्मण प्रसन्न होकर बैठ गया। उसके मन में बड़ा हर्ष था। श्याम के दर्शन करके वह शरीर में फूला नहीं समा रहा था। कृष्ण ने कहा— हे नंदजी! सुनिये। आप पत्रिका बहुत अच्छी लाये। पदम भक्त कृष्ण को सदैव प्रणाम करता है और कहता है कि कृष्ण ने ब्राह्मण को इस प्रकार कहकर बात की।

द्विज ने कृष्ण को पत्रिका दी। उनने रुक्मिणी की लिखी हुई पत्रिका को सिर पर रखकर ग्रहण किया। पत्रिका को पढ़कर मन में हर्ष हुआ, निश्चित आनंद उत्पन्न हुआ। हे भाई! बरात सजाओ। चलने की चिंता हुई। द्वारकापुरी में आनंद-मंगल होने लगा। वहां की भूमि रत्नों से छा गयी। पदम भक्त विनती करता है— इस प्रकार चर्चा होने लगी।

पत्रिका पढ़ते ही श्रीकृष्ण पीले पड़ गये। उसके ऊपर प्रेम के अक्षर लिखे हुए थे जिससे उनका हृदय धक-धक करके धड़कने लगा। 'हमारी परेशानी को हमारा तन ही जानता है'। प्रेम की वे बाते पढ़ी ही नहीं जा रही थी। हे प्रभो! पदम भक्त पर कृपा कीजिये। दिन और रात बीते जा रहे हैं।

मारू— हरिया मूंग मंडोवरा ऊजळ भात करावो
चोखा चावळ घिरत घणेरो बूरो मांय मिलावो
छप्पन भोग छतीसूं व्यंजन अेक सूं अेक संवारो
चोखो घिरत मंगाय र घालो बूरो बोत प्रकारो
साबूनी मिसरी रो सीरो घणा घिरत री धायी
घेवरपाक जळेबी खुरमा मालपुवा सरसायी
लाडू पेड़ा बरफी पेठो बहु पकवान मंगावो
मोतीचूर मगद रा लाडू दुज ! रुच-रुच कै पावो
केळा मूळा भांत-भांत रा पापड़ वड़ा मुंगोड़ी
सकळ पाक सुंदर ही वणिया सब सूं इधक अलोड़ी
केंदू पेठा वैंगण तोरूं आंबां रो आचारो
खारक फोग र दाख विदामां रायतो खाटो खारो
रुच रुच जीमो विप्र भींव रा ! थां लायक कुछ नांही
निरमळ झारी गंगाजळ री अचवण दियो करायी
थांरै नहीं कुमी काये - री अनदाता ! मैं धायो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं नीकां विप्र जिमायो

दोहा— बीड़ी पान कपूर री दिखणां दी बळवीर
माळा मुरक्यां मूंदड़ी और पटम्मर चीर

ठूमरी— पांडेजी ! थे म्हांरै भल आया
कांइ जी कमावै थांरा भींवजी री नारी जिस सिसपाळ बुलाया
रुकमण कंवरि राय भीसम री जादू मान वधाया
अेक सखी अैसें उठ बोली पांच-सात रा थे जाया
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं कितरा बाप कहाया

बरवो— साजनिया आया री
सखी री ! मोरे आंगणिया
ल्यावो सखी री ! दचो वैसणिया ऊखळ मूसळिया
ल्यावो सखी री ! खरड़ विछावो देसां कातणिया
ल्यावो सखी री ! भोजन जिमावो खट रस विंजणिया
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं गावत गुण-गणिया

सटनी— सुण समदण चतर सुजाण !
आयो री ! मैं तोरे अंगणा

(श्रीकृष्ण ने द्विज को भोजन कराने के लिए अपने सेवकों को आदेश दिया—) मंडोर के हरे मूंगों के साथ उजले भात बनवाओ। बढ़िया चावलों में भरपूर घी और बूरा मिलाओ। छप्पन प्रकार के भोग, छत्तीसों प्रकार के व्यंजन एक-एक से श्रेष्ठ बनाओ। बढ़िया घी मंगवाकर नाना भांति का बूरा परोसो। साबूनी, मिश्री का हलुवा, खूब घी से तर, घेवर-पाक, जलेबी, खुरमा और सरस मालपुवा, लड्डू, पेड़े, बरफी, पेठा, मोती-चूर और मगद के लड्डू आदि बहुत से पकवान मंगवाओ। हे द्विज ! तुम रुचिपूर्वक प्रसाद पाओ।

नाना भांति के केले और मूली; पापड़, बरी और मुंगौरी सब पाक बड़े सुंदर बने थे। सबसे अधिक अच्छी अलोड़ी (?) बनी थी। कद्दू, पेठा, बैंगन, तोरई और आम का अचार, तथा खारिक, फोग, दाख और बादाम का खट्टा और नमकीन रायता।

हे भीष्मक राजा के विप्र ! आप रुचि के साथ भोजन कीजिये, आपके योग्य यद्यपि कुछ नहीं है। भोजन के बाद गंगाजल की निर्मल झारी से आचमन करवा दिया। (विप्र बोला—) हे अन्नदाता ! आपके यहाँ किसी बात की कमी नहीं। मै तृप्त हो गया हूँ। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ। विप्र को भली प्रकार भोजन करवाया।

भोजन के बाद बलराम ने ब्राह्मण को कपूरयुक्त पान का बीड़ा दिया और माला, कानों की मुरकियाँ, अंगूठी और पाटंबर (रेशमी वस्त्र) दक्षिणा में दिये। (ब्राह्मण को नारियाँ गीतों में गालियाँ गा रही हैं—)

हे पांड़े जी ! आप हमारे यहाँ खूब पधारे। आपके भीष्मक राजा की रानी क्या कमाती है जिसने शिशुपाल को बुलाया है ? राजा भीष्मक की कुमारी रुक्मिणी ने यादवों का मान बढ़ाया है। एक सखी यों कह बैठी—आपके पाँच-सात बाप हैं। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ। सखियां कहती हैं कि आपके कितने बाप कहे गये है।

हे सखी ! मेरे आँगन में साजन आये है। हे सखी ! ऊखल और मूसल लाओ और उन्हें बैठने को दो। हे सखी ! लाओ, जाजम बिछाओ। इन्हें कातने का काम देगे। हे सखी ! लाओ, इन्हें षड्रस व्यंजन का भोजन जिमाओ। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ और कृष्ण के गुण-गणों का गान करता हूँ।

हे चतुर और सुजान समधिन ! सुनो। अरी ! मैं तुम्हारे आँगन में आया हूँ।

मैं ब्राह्मण राजा भीसम रो तूं मेरी जजमान
कुसी होय दे दखणा
राज सुहाग भाग री पूरी कळि में तेरो नांव
यूंही बोलै वमणा
सिरी कृष्ण री करी सगाई मांगण आयो वमणा
सवा क्रोड़ रो दियो मूंदड़ो और दिया कर रा कंगणा
भींवराय नै अैसि ज कहियो वेग आवै अब ही मोहना
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं चिरंजि रहो राणी ललना

६—कृष्ण की बरात

कृष्ण का दूल्हा बनाया जाना

दोहा— हळद हात केसौ तणा सब मिल कहै वखाण
सब कै मन आनंद भयो हरख्या सारंग-पाण

मारू— मोतियन चोक पुराय आंगण में सखियन मंगळ गाया
मळियागिर री चोकी ऊपर सिरी कृष्ण बैठाया
रिखि दुरवासा अखत दीना कळस गणेस पुजाया

... ...

हळद छुडावै लाड लडावै हंस-हंस मंगळ गावै
हरखी नार करै कोतूहळ आनंद उर न समावै
बहन सोदरा साज आरतो राई-लूण उतारै
तन-मन प्राण करै नीछावर वार वार बळिहारै
गावै गीत वजावै वाजा वांटै रहस वधाई
हळद हाथ री सुंदर सोभा जद पदमइयै गायी

सुनटी— जा में फूल सुगंधी वास
मोहन करै उबटणो
देवकीजी संजोयो उबटणो वसदेवजी पूरै तेल
जसुदाजी संजोयो उबटणो नंदजी पूरै तेल
सावत्री संजोयो उबटणो ब्रह्माजी पूरै तेल
पारवती संजोयो उबटणो महादेवजी पूरै तेल

मैं राजा भीष्मक का ब्राह्मण हूँ और तुम मेरी यजमान हो। खुश होकर दक्षिणा दो।

ब्राह्मण ने यों कहा— तुम राज्य, सुहाग और भाग्य से भरपूर हो। कलियुग मे तुम्हारा नाम है।

श्रीकृष्ण की सगाई की गयी और ब्राह्मण माँगने आया तो उसे सवा करोड़ की अंगूठी और हाथ के कंगन दिये।

(और ब्राह्मण से कहा—) भीष्मक राजा से यों कहना कि अब मोहन जल्दी ही आ रहे हैं।

पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ। (ब्राह्मण ने कहा—) रानी और उसका लाल चिरंजीव रहे।

६—कृष्ण की बरात

कृष्ण का दूल्हा बनाया जाना

कृष्ण के हल्दी चढ़ाने की रीति हुई। सब लोग मिलकर उसका बखान करते हैं। सबके मन में आनंद हुआ और शाङ्र्गपाणि कृष्ण हर्षित हुए।

सखियों ने आंगन में मोतियों का चौक पूरकर मंगल गीत गाये। श्रीकृष्ण को मलयागिरि (चदन) की चौकी पर बैठाया गया। दुर्वासा ऋषि ने अक्षत दिये और गणेशजी ने कलश का पूजन करवाया। नारियाँ हल्दी छुड़ाती हैं और लाड़ लडाती हैं तथा हंस-हंसकर मंगल गीत गाती हैं। वे हर्षित होकर कौतूहल करती हैं। उनके हृदय में आनंद समा नहीं रहा है। बहन सुभद्रा आरती सजाकर राई-नोन उतारती है। वह तन-मन और प्राणों को न्यौछावर करती है और बार-बार वलिहारी जाती है। गीत गाये जा रहे है, बाजे वज रहे हैं और आनंद की बधाइयाँ बाँटी जा रही हैं। कृष्ण के हल्दी चढ़ाने की सुंदर शोभा हो रही है। पदम भक्त ने यश का गान किया है।

मोहन उबटन कर रहे हैं। उसमें सुगंधित फूलों की सु-वास आ रही है।

देवकीजी ने उबटन को तय्यार किया है और वसुदेवजी उसमें तेल डाल रहे हैं। यशोदाजी ने उबटन को तय्यार किया है और नंदजी तेल डाल रहे हैं। सावित्री ने उबटन को तय्यार किया है और ब्रह्माजी तेल डाल रहे हैं। पार्वतीजी ने उबटन को तय्यार किया है और महादेवजी

रिधसिधजी संजोयो उबटणो गजाननजी पूरै तेल
इंद्राणी संजोयो उबटणो इंदर पूरै तेल
रैणादेजी संजोयो उबटणो सूरजजी पूरै तेल
रोयणीजी संजोयो उबटणो चंद्रमाजी पूरै तेल
जादूराणी सजोयो उबटणो जादू पूरै तेल
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं अैसो उबटणो गायो

नटी-- हरजी नै तेल चह़ोड़ो जी
वसदेवजी घर देवकी आवो
नंदजी घर जसोदाजी आवो
ब्रह्मा घर सावंतदे आवो
संकर घर पारवती आवो
इंदर घर इंद्राणी आवो
सूरज घर रैणादे आवो
चंदरमा घर रोयण आवो
छपन कोट जादूराणी आवो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं या विध तेल चढायो

बरात की तय्यारी

दोहा-- व्यास भणै श्रीदेव सूं सुणियो समरथ स्याम !
तुम लंकेसर मारियो दियो भभीखण मान

मारू— दियो भभीखण मान राजवी भगतां मान वधावो
दिली दीप पांडू-सुत राजा जिणनै कोक बुलावो
व्यास कही केसव मनमानी व्यास देव ! तुम जावो
इसै महूरत लिखो पत्रका सिद्ध जोग में आवो
कर मनुहार लिखै बळ राजा तुम राजन रा राई
झगड़ो जोरासंध राजा सूं ऊपर करजो आयी
अरजण भीम नकुल सहदेवा धरमपुत्र वडनामी
श्री कृष्ण रै बंधै सेवरो सब मिल आवो जानी
चांपर करो वेग चढवा री हथणापुर दरसाया
खबर भयी पंडव राजा नै व्यासदेवजी आया
नूंतो खोल दियो जादू रो मोय वचन प्रतपाळो

तेल डाल रहे हैं। रिद्धि-सिद्धि ने उबटन को तय्यार किया है और गजाननजी तेल डाल रहे हैं। इंद्राणी ने उबटन को तय्यार किया है और इंद्र तेल डाल रहे है। रैणादेजी ने उबटन को तय्यार किया है और सूरजजी तेल डाल रहे है। रोहिणीजी ने उबटन को तय्यार किया है और चंद्रमाजी तेल डाल रहे हैं। यादव-रानियों ने उबटन को तय्यार किया है और यादव तेल डाल रहे हैं।

पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ। नारियों ने ऐसा उबटन का गीत गाया।

अरे! कृष्णजी के तेल चढ़ाओ।

वसुदेवजी के घर से देवकीजी आयें। नंदजी के घर से यशोदाजी आयें। ब्रह्माजी के घर से सावित्रीजी आयें। शंकरजी के घर से पार्वतीजी आयें। इंद्र के घर से इंद्राणी आयें। सूरजजी के घर से रैणादेजी आये। चंद्रमाजी के घर से रोहिणीजी आयें। छप्पन कोटि यदुरानियाँ आयें।

पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ। इस प्रकार तेल चढ़ाया गया।

बरात की तय्यारी

व्यासदेव ने श्रीकृष्ण से कहा— हे समर्थ श्याम! सुनिये। आपने लंकापति को मारा और विभीषण को सम्मान दिया।

आपने राजा विभीषण को मान दिया, अब भक्तों का सम्मान बढ़ाइये। दिल्ली देश में पांडु के पुत्र राजा है। उन्हें नेवता भेजकर बुलवाइये। व्यासदेव की बात केशव को अच्छी लगी। (उनने कहा—) हे व्यासदेव! आप जाइये। ऐसे मुहूर्त्त में पत्र लिखिये कि सिद्ध योग में आयें।

मनुहारपूर्वक बलराम पत्र लिखते हैं कि आप राजाओं के राजा हैं। जरासंध के साथ युद्ध होगा। आप आकर सहायता कीजिये। अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव और यशस्वी धर्मपुत्र युधिष्ठिर! श्रीकृष्ण के सेहरा बंध रहा है। सब मिलकर बराती बनकर आवे। चढ़ने की जल्दी तय्यारी करो— कहकर (हस्तिनापुर की ओर) चले। चलते-चलते हस्तिनापुर दिखायी पड़ा। पांडव राजा युधिष्ठिर को खबर मिली कि व्यासदेव आये हैं। व्यासजी ने खोलकर यादवों का निमंत्रण पत्र पांडवों के राजा को दिया और कहा— मेरे वचन का पालन करो। जरासंध से

झगड़ो जोरासंध राजा सूं सब मिल जानी चालो
धरमपुत्र राजा यू बोलै कोई मतो विचारो
उदध-पुरी चाल्यो ही चइयै कोइ जीतो कोइ हारो
राय भणै कुंता सुत सेती जननी ! बुद्धि बतावो
पारब्रह्म रा चरण गहो थे हार कदे नहिं आवो
केसो थांरा थे केसो रा यो कारज कर आवो
पीठ देय भारथ में भाजो मत मेरो दूध लजावो
जोड़ै हाथ पुतर माता सूं सुणो आद री माया
यो तन-मन केसो पर वारां तो कुंता रा जाया
खोहण सात जळंधर बगतर गगन खेह जा लागी
मेघाडंबर झिलका सोहै चढ्या जोध वडभागी
जादू चक्रत हुवा देख्यां सूं दळ पांडू रा भारी
वेद व्यास की करो आरती बोलै कृष्ण मुरारी
कंचण थाळ भर्‍या मोतियन का राज पोळ सिणगारी
वेद व्यास री करो आरती पदम भगत बळिहारी

छंद— जाद जुगत नरेस बोलै सिलह खानो आण रे
कै बळभद्र वात मुख सूं घोड़ इता पलाण रे
तेड़ साहण सारथी निज सारथी निज संग रे
पीढ पलंग पलाण पाखर मोहना मकरंद रे
तातला ज तुरंग ताजी घोड़ जात भवग रे
कुमेत काळा काहड़ा नीलड़ा नौरंग रे
छुटा घोड़ा साहणी साहणी दळ सार रे
करड़ा कल्लाड़ा काबरा माकरी मल्लार रे
पदाणिया र परेवरा हंसरा सूचाल रे
मुलतानिया पारब्बती पंचरतन कल्याण रे
दवड घोंस वडा गिडदडा पथर फोड़ चंगोड़ रे
हूंचा अलोळा अचपळा चंचळा चपळोळ रे
नो लाख उडमवेगी कपुरिया कूरग रे
सुवापंखी सोरठा मूगिया सूरंग रे
सव लख घोड़ा केहर काबा बर बराना आन रे
हिरण हिरणा भुजंग मुसकी लील गरुड़ पलाण रे

युद्ध होगा। सब लोग इकट्ठे होकर बराती बनकर चलो। धर्मराज युधिष्ठिर ने यों कहा कि कोई विचार करो। द्वारकापुरी चलना ही है। चाहे कोई जीते चाहे कोई हारे।

कुंतीपुत्र राजा युधिष्ठिर माता से कहते है कि हे माता! बुद्धि (सलाह) बताओ। माता ने कहा—तुम लोग परब्रह्म के चरण पकड़ो (भगवान् के चरणों की शरण लो), फिर कभी हारकर नही आओगे।

कृष्ण तुम्हारे है, तुम कृष्ण के हो। यह काम पूरा करके आओ। युद्ध में पीठ देकर मत भागना। मेरा दूध मत लजाना। पुत्र मां को हाथ जोड़कर कहते हैं— हे आदि-माता! सुनो। यह तन-मन केशव पर न्यौछावर कर देगे; तभी हम कुती के पुत्र हैं।

यादव पांडवों के बड़े भारी दल को देखकर चकित हो गये। तब मुरारि कृष्ण ने कहा—वेदव्यासजी की आरती करो। सोने के थाल मोतियों से भरे, राजकीय पौरी (मुख्य द्वार) का शृंगार किया और फिर वेदव्यास की आरती की। पदम भक्त बलिहारी जाता है।

यादवों के राजा युक्तिपूर्वक बोलते है कि शस्त्रागार (के शस्त्र) लाओ। बलराम अपने मुख से बात कहते हैं कि इतने घोड़ों पर जीन कसो। साहनी (घोड़ों का अधिकारी) और अपने खास सारथी को बुलाकर घोड़ों को तय्यार करने का आदेश दिया।

[आगे घोड़ों की विविध जातियों के नाम हैं। घोड़ों की जातियों के नाम मूलपाठ में पढ़िये।]

मोती वरणा खैरिया सुनारा अर गोट रे
ऊजळ धोळा केसर वरणा पाणि पंथ पलोट रे
दुधळ ताजी तीतरा चीतला अर जंग रे
गिरसणा अर झपट मोरवार समंद रे
अेक पवन री चलै बरावर अेक पवन पैलें आय
अेक पवन सूं चलै सतगुणा खाथा रथ जुड़वाय
अेक मदमाता फिरै भवनी कृष्ण रै मन चाव रे
पदम स्वामी मनां हरखै घोड़ा जात वखाण रे

मारू— हळद हंसिया और अंवलखा रथ जोड़्या कैकाणा
काळु कबुतरा कूकर-खंधा सवलख लीला आणा
वहोर कछिया वळियावंता पंचरतन कल्याणा
सांवकरण सूवा वर स्यामा तीतर वरणा आणा
उजवळ धवळ किसोरा घोड़ा मेघावरणा आण्या
कच्छीला कुरबान रोडिया कृष्ण कचाकिया आण्या
खंधारू मोरु गोट परवती अटकपुरी रा आणो
असव खुरासान रा पीळा घोड़ा इतरा पिलाणो
धोळा पीळा साग गंजला अररोपी वगाली
तुरकी ताजी और चिनाई और किनक ककाळी
महवा हंस्या सजावट सुरखा रंग जामणक आण्या
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं जाण्या जिता वखाण्या

दोहा— बळध मंगावो वहुगुणा रथ सूं जूता जाण
कोठी गडा जुतावज्यो बैलां तणा वखाण

मारू— दिखण देस रा हुंडवी होडा ढूंढाड़ा र सुथाणा
देस माळवै छोटी गोडी पूरब रा पछिमाणा
कच्छ देस रा टकणा ल्यावो अजमेरी इधकाई
मध्य देस रा खैरा सोहणा बळधां घणी अताई
वागड़ देस रा भींडा ल्यावो मेवाड़ी लाखोड़ा
नागोरी सींगीया ल्यावो व्रज भूमी रा गोड़ा
गोड़ देस रा चीतम काळा गुजराती वड काना
देस बंगालै छोटा गैना जूपै वहुता माना
कासमीर रा काळा पीळा सेरा ज्यूं खुरसाणो

कई पवन के बराबर (पवन के जैसे वेग से) चलते हैं, कई पवन के भी पहले जाते हैं (पवन से भी अधिक वेग से चलते है), कई पवन से सातगुने वेग से चलते हैं। कई मदमस्त होकर पृथ्वी पर चलते है। कृष्ण के मन में उमंग है। पदम के स्वामी मन में हर्षित हो रहे हैं। इस प्रकार घोड़ों की जातियों (प्रकारों) का वर्णन किया।

विभिन्न जातियों के घोड़े रथ में जोते। सवा लाख घोड़े लाये। पदम भक्त प्रणाम करके पैरों लगता है और कहता है कि जितने मैंने जाने उतने प्रकारों का वर्णन कर दिया।

फिर विविध प्रकार के बैलों को लाने का आदेश हुआ। बहुत गुणों-वाले बैल रथों में जोते गये।

[आगे विभिन्न स्थानों के विभिन्न जातियों के बैलों का उल्लेख है। इन बैलों के नाम मूलपाठ में पढ़िये।]

पदम भणै प्रणवै पाय लागूं बळधां तणो बखाणो

छंद— आदि सरस्वती मनाय ईसनंदन पूजियै
ब्रह्माजी रो ध्यान धर चत्रभुज पूजियै
ध्यान धरियै विष्णुजी रो चत्रभुज विसाल रा
साध कर सुर सिध्ध गावै उवटणा गोपाळ रा
सोवन थाळ मंगाय कनक कळस मेलियै
जसुमति-सुत रा चरण ताहु में धोइयै
घोल तिलक सुत सरस सजनी मानु अमृत लावही
त्रिविध साज समार भामिनि मंगळ गावै कामणी
सारंग चोकी मंगाय दधि चढाइयै
सोवन झारी हात मोहन न्हवाइयै
न्हाय मोहन तिलक मस्तक मुकट ले सिर पर धरचो
थाळ अंबर कमळ दाऊ आरतो भगिनी करचो
सारंग-सुत चरचि दियो भान दोऊ जोहियै
पीतांबर उरमाळ जाकै पदम पाय ज सोहियै

मारू— सांपड़ स्याम सिंघासण बैठा कपड़ा वेग मंगावो
पचरंग पाग जरी रो जामो मोहन कूं पहरावो
केसर तिलक करो केसव रै अर सिर मोड़ बंधावो
गळ मोतियन री माळा सोहै दुपटा फैट बधावो
जादूपत री करो निकासी घोड़ी वेग मंगावो
पदम स्याम सुखदायक नायक अब मत ढील लगावो

दोहा— ब्रह्मा देव पधारिया हरि सूं पूछै आय
कारज म्हांरा थे करो जान भेळी हो जाय

मारू— जद ब्रह्माजी घड़ी रचायी सपत दिवस किय अेको
काज करो विवहार करो अर निजर भरे भर देखो
धरचो ध्यान मधुसूदन माधो संख पचायण पूरचा
तीन लोक रा सुरनर मुनि जन वादळ ज्यूं रही लूरा
देवां रै दळ नोबत वाजै दानां रा दळ झूरै
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं सब मिल मंगळ पूरै

आरंभ में सरस्वती को मनाकर गणेशजी की पूजा करते हैं। ब्रह्माजी का ध्यान धरकर चतुर्भुज (विष्णु) को पूजते है। चार भुजाओं वाले विशाल विष्णु का ध्यान धरते है। सिद्ध लोग स्वरों को साधकर गीत गाते हैं। कृष्ण का उबटन-संस्कार हो रहा है।

सोने का थाल मंगवाकर स्वर्णकलश रखते है। फिर उसमें यशोदापुत्र कृष्ण के चरण धोते है।

सयानी स्त्रियाँ घोल का तिलक लगाती हैं मानो अमृत लगा रही हों।

तीन प्रकार के साज-शृंगार करके कामिनियाँ मंगल-गीत गाती है।

चंदन की चौकी मंगवाकर दही चढ़ाती है। सोने की झारी हाथ में लेकर मोहन को स्नान कराती हैं। नहाकर मोहन ने मस्तक पर तिलक और सिर पर मुकुट धारण किया। थाल में ... ... बहन ने आरती की। ... ... जिसके पीतांवर धारण किया हुआ है और जिसके गले में बैजयंती माला है पदम भक्त उसी के चरणों में शोभा पाता है।

स्नान करके श्याम सिंहासन पर बैठे। जल्दी से वस्त्र मंगाओ। मोहन को पँचरंगी पाग और जरी का जामा पहनाओ। केशव के केसर का तिलक करो और सिर पर मौर बंधाओ। उनके गले में मोतियों की माला सुशोभित हो रही है। दुपट्टा और कमर में फेंटा बंधवाओ। जल्दी से घोड़ी मंगवाओ और यादवपति की निकासी (प्रस्थान) करो। अब देर मत लगावो। पदम भगत कहता है—श्याम सुखदायक स्वामी हैं।

तब ब्रह्मा देव पधारे। उनने आकर हरि से पूछा। तब हरि ने कहा— आप हमारा काम करो जिससे बरात एकत्र हो जाय।

तव ब्रह्माजी ने घड़ी बनायी और सात दिनों का एक दिन कर दिया। कहा कि अब काम करो, व्यवहार करो और नजर भरकर देखो।

ब्रह्माजी ने मधुसूदन माधव का ध्यान किया और पांचजन्य शंख बजाया। तीनों लोकों के देवता, मानव और मुनि लोग बादल के लोर की तरह उमड़ पड़े।

देवताओं के दल में नौबत बज रही है और दानवों के दल दुखी हो रहे हैं। पदम भगत कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— सब मिलकर मंगल मना रहे हैं।

मारू— ब्रह्माजी री आयी असवारी दस खोहण दळ आया
सुर नर मुनि-जन और रिखेसर देव तणा दळ छाया
नव नाथ र चौरासी सिधलै सिवसंकर चढ आया
वळध नांदियै चढी असवारी रुंडमाळ लटकाया
नव करोड दुरगा चढ आयी धवळागढ री राणी
वावन भैरूं चोसठ जोगण लूंकड़िया अगवाणी
इंद्रपुरी सूं चढचा इंदराजा दळ रा पार न पाया
वाजा वाजै अंवर गाजै इंद्र तणा दळ आया

मारू— इंद्र घरां सूं घोड़ी आयी घोड़ी रो मोल चुकावो
अै कुण घोड़ी रो मोल चुकावै अै कुण तीरै दामो
हळधर घोड़ी रो मोल चुकावै वसदेव तीरै दामो
अै कुण घोड़ी रो आयक पायक अै कुण है असवारो
जादू घोड़ी रा आयक पायक कान्हकवर असवारो
इंद्र घरां सूं घोड़ी आयी घोड़ी रो रूप वखाणो
लाल लगाम वणी कड़ियाळी हीरां जड़ित पलाणो
खुरी खुरताळां कंचण केरी मुरचां नेवर वाजै
रतन पदारथ मोहर पोया केसां मोती सारचा
झिलमिल झिलमिल मोती झिलकै ऊपर जीण वनाती
साज साहणी लायो घोड़ी करै पवन सूं वातां
लावो नागर वेल चरावो और दाळ वहुतेरी
दे रातव हरि करी निकासी करै पवन सूं वातां
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं कान्ह कंवर रंगराता

दोहा— अमर करो अमरावती घर-घर मंगळचार
द्वारामति री कामणी सज सोळै सिणगार

मारू— कर सोळै सिणगार कामणी अेक अेक सूं प्यारी
सिरी कृष्ण रै सुरमो सारचो हळधरजी री नारी
सुरमो सार भयी मुसकानी म्हांरो नेग चुकावो
नवल वना री छिव पर वारी अव कुनणापुर जावो
गोकळ गांव व्रंदावन मथरा व्रज री भोम लिरावो
भावज म्हांरी सुरमो सारचो वध्धाई भर पावो

ब्रह्माजी की सवारी आयी। उनके साथ दस अक्षौहिणी दल आया। सुर, नर, मुनि-जन, ऋषीश्वर और देवताओं के दल सर्वत्र छा गये।

शिवशंकर नौ नाथों और चौरासी सिद्धों को लेकर चढ़कर आये। वे नंदी बैल पर सवार थे और गले मे मुंडमाल लटकाये हुए थे। धवलागढ़ की रानी नौ करोड़ दुर्गाएं चढ़कर आयी। बावन भैरूं, चौसठ योगिनियाँ और लूकड़िया उनके आगे-आगे चल रहे थे। राजा इंद्र इंद्रपुरी से चढ़े। उनके दल का पार नहीं मिलता था। बाजे बज रहे थे और आकाश गरज रहा था (आकाश में बादल गरज रहे थे)। इस प्रकार इंद्र के दल आये।

इंद्र के घर से घोड़ी आयी। घोड़ी का मोल चुकाओ। ये कौन घोड़ी का मोल चुका रहे हैं? ये कौन दाम दे रहे हैं? हलधर बलराम घोड़ी का मोल चुकाते है और वसुदेवजी दाम दे रहे है। ये कौन घोड़ी के साथ चलनेवाले लोग है और ये कौन सवार है? यादव घोड़ी के आजू बाजू हैं और कान्हकुंवर सवार है। इंद्र के घर से घोड़ी आयी। घोड़ी की सुंदरता का वर्णन करते हैं। कड़ियोंवाली लाल लगाम है। हीरों से जड़ा हुआ पलाण (जीन) है। खुरों में सोने की खुरताले हैं। मुर्चों में (पैरों में) नूपुर बज रहे हैं। मोहर में श्रेष्ठ रत्न पिरोये हुए है, केशों में मोती लगे हैं। मोती झिलमिल-झिलमिल करके झलमला रहे हैं। ऊपर बनात की जीन है।

साहनी घोड़ी को सजाकर लाया जो पवन से बाते करती है (जो बहुत तेज दौड़ती है)। नागर बेल लाओ और घोड़ी को चराओ और खूब-सारी दाल चराओ।

रातिब देकर कृष्ण ने निकासी (प्रस्थान) की। तब वह पवन से बाते करने लगी। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—कुंवर कन्हैया रंग में रंगे है।

. . . . . . घर-घर में मंगलाचार हो रहा है। द्वारका की कामिनियाँ सोलह शृंगार सजा रही हैं।

एक-एक से प्यारी कामिनियाँ सोलह शृंगार करके आयी। हलधर बलराम की पत्नी ने श्रीकृष्ण की आंखों में सुरमा डाला। सुरमा डालकर मुसकराने लगी— हमारा नेग चुकाओ। मैं नवल दूल्हे की शोभा पर बलिहारी हूँ। अब कुंदनपुर जाओ। कृष्ण ने कहा— हे हमारी भाभी! आपने सुरमा डाला उसकी भरपूर बधाई लो। गोकुल गांव, मथुरा और वृंदावन— व्रज की सारी भूमि को ले लीजिये। —हम आपकी

कांइ जी करां थांरी मथरा नगरी आ तो आप रखाज्यो
अेकर लाडी परण पधारो पहली पगां लगाज्यो
भेर म्रदग दमामा वाज्या राग छतीसूं साजा
कुनणापुर नै करी सागती चवदा भुवन रै राजा
खड़ी अपछरा निरत करत है चिरंजी रौ आ जोड़ी!
सुर नर मुनिजन और रिखेसुर जान भलेरी जोड़ी
कर सिणगार खड़ो सांवरियो माता लयी वुलायी
हांचळ ले घोड़ी पर चढियो पदम भगत वळि जायी

ठूमरी— वना पर मोती वारूं
मोती वारूं हीरा वारूं लाल हजारी वारूं
सिर सोनै रौ सेवरो विराजै मोहन रूप निहारूं
बहन सोदरा करत आरतो भलभल प्राण जुहारूं
कड़ा किलंगी तुररो सोहै पळपळ नैण निहारूं
पदम भणै प्रणवै पाय लागू आगै जलम सुधारूं

ठूमरी— रंगीली आज री घड़ियां
निरख लियो नव-रंग वना नैं भर भर आंखड़ियां
सुवरण सुरज आज भल ऊगो जदुपत वना वणिया
चितवण में चित छीत लियो है नैणां री अणियां
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं गावत गुण-गणियां

दोहा— नीकासी केसौ तणी जाचक मांगै दान
रतन जुहार जुहार कर ओळगियां नै मान
सब जानी जादू चढ्या उग्रसेन वसदेव
रतनजड़ित हरि सेहरो माणक वूठा मेह
डेरा दीना वाग में भेळा हूवा साथ
रुकमण सावो सांकड़ो वेग चढो परभात
भेर दमामा वाजिया पड़ी निसाणां घाय
चढिया त्रिभुवन राजवी पदम भगत वळि जाय

मारू— ब्रह्मा विष्णु महेस भणीजै छपन कोट कुळ साखा
टाटर टोप जंजीरा वखतर सांड भरी सठ लाखा
असी लाख कुंजर सिणगारया सेत वरण सूंडाळा
ढळकै ढाळ फरूकै नेजा चाली परबत-माळा

मथुरा नगरी का क्या करे ? इसे तो आप ही रखिये। जब विवाह करके बहू को लेकर आवे तब सबसे पहले मेरे पैरों लगाना।

भेरी, मृदंग और दमामे बजने लगे, छत्तीसों रागें निकल रही है। चौदह भुवनों के राजाओं ने कुंदनपुर की तय्यारी की। अप्सराएं खड़ी-खड़ी नृत्य कर रही है— यह जोड़ी चिरंजीवी रहे। देवताओं, मनुष्यों, मुनिजनों और ऋषीश्वरों को लेकर सुदर बरात एकत्र की है। कृष्ण शृंगार करके खड़े हुए। फिर माता को बुलाया। उसका स्तन्यपान करके वे घोड़ी पर चढ़ गये। पदम भक्त उन पर बलिहारी जाता है।

स्त्रियाँ गीत गाती है— वर पर मोती वारती हूँ। मोती वारती हूँ, हीरे वारती हूँ। हजारी (हजार मूल्य की) लाल मणियाँ वारती हूँ। सिर पर सोने का सेहरा सुशोभित है। और मोहन का रूप निहारती हूँ। बहन सुभद्रा आरती करती है। बार-बार प्राणों को न्यौछावर करती हूँ। कड़े, किलंगी और तुर्रा शोभा दे रहे हैं। पल-पल में आँखों से निहारती हूँ। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— अगला जन्म सुधारता हूँ।

आज की घड़ियाँ वड़ी रंगीली है। नये रगवाले दूल्हे को हमने आँखें भर-भरकर निरख लिया। आज सोने का सुदर सूरज उगा है जो यदुपति कृष्ण दूल्हा बने हैं। उनकी नयनों की कोरों ने, चितवन ने, चित्त को चोर लिया है। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— मैं उनके गुणगणों का गान करता हूँ।

केशव की निकासी (बरात का प्रस्थान) हो रही है। याचकगण दान माँग रहे है। रत्नो को वार-वार कर बंदीजनों को समान दिया जा रहा है।

उग्रसेन और वसुदेव आदि सभी यादव बराती चढ़े। हरि के सिर पर रत्नों से जड़ा सेहरा था और मोती-मानिकों की वर्षा हो रही थी। सारे साथी एकत्र हुए और बाग में डेरे दिये (ठहरे)। रुक्मिणी का लग्न बहुत करीब है, प्रातःकाल जल्दी ही चढ़ो। भेरी और दमामे बजने लगे। नगाड़ों पर चोटें पड़ीं। त्रिभुवन के राजा चढ़े (चढ़कर चले)। पदम भक्त उन पर बलिहारी जाता है।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश तथा यादवो के छप्पन करोड़ कुलों और शाखाओ के लोग चढ़े। टाटर, टोप, जजीरे और बख्तरों से साठ लाख सांड़ें भरी गयी (लादी गयी)। अस्सी लाख श्वेतवर्ण के सूड़ोंवाले हाथी सजाये गये। उन पर ढालें ढलक रही थी और झंडे फहरा रहे थे। वे जब चले तो ऐसा जान पड़ा मानो पर्वतों की माला चल रही हो।

नव हजार निसाण धड़कै स्यामकरण बहु छूटा
सहस अठ्यासी रिखि चढ आया नेमनाथ रै पूठां
संखनाद वाजण नै लागा नव हज्जार नगारा
कुनणापुर कूं करी साकती सिस्ट रचावणहारा
अधक भोज सबळ सस्वादिक सेपटिया परवरिया
बारा छोहण ले बळभद्दर हरि पीछे सांचरिया
चवदा लाख भरया चीणी रा घिरत ज लाख पचीसा
चावळ दाळ भरया मैदा रा करहा लाख छतीसा
टट्टर चरू टोकणा लादया सितर लाख पर सीधो
मोतीचूर मगद रा लाडू बोत हि लियो चबीणो
को होदां को अंबावाड़ी को बैठा सुखपाळां
कानां मोती झिलकत सोहै ढलक रही है ढालां
सुवरण रा तैनाळ जड़ाया घाली घूघरमाळा
दळां चहूं दिस हुई हलाहल ताजी छुटा उंताळा
सिध्ध जोग में लियो महूरत हरि बैठा रथ मांही
रतनजड़ित रा रथ जुड़वाया राणी रुकमण तांई
साठ तीन सै छत्र झळक्कै मेघाडंबर भारी
रवि तळ दूजा और न कोई कृष्ण तणी असवारी
त्रिभुवन-नाथ हरख मन मांही व्याहण भींव-कंवारी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं असी जान सिणगारी

७—गणपत-प्रसंग

दोहा— सभी जान जादू जुड़्या सुर नर मुनि जन मांहि
दिस्टि दयी सब देखि कै गणपत देख्या नांहि

मारू— और जान में सब ही आया गणपतजी नहिं आया
गणपतजी नै वेग बुलावो नारद मुनी पठाया
नारद जाय कही गणपत नै वेगा आप पधारो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं संकट विघन निवारो

सोरठ— गणपत आयां राज सरै
नवल-विहारीजी रो व्यांव गणपत आयां ही सरै

नौ हजार नगाड़ें वज रहे थे। बहुत से घोड़े छूटे (चले)। नेमिनाथ के पीछे अठयासी हजार ऋषि चढकर आये। शंखनाद होने लगे। नौ हजार नगाड़े बज रहे थे। सृष्टि के रचानेवाले ने कुंदनपुर की तय्यारी की।

बली अंधक और भोज (यादवों की शाखाएं) शस्त्र आदि लेकर ••• चले। बलराम बारह अक्षौहिणी सेना लेकर कृष्ण के पीछे रवाना हुए। चौदह लाख ऊंटों पर चीनी भरी गयी। पचीस लाख ऊंटों पर घी लादा गया। छत्तीस लाख ऊंटों पर चावल, दाल और मैदा रखा गया।

सत्तर लाख ऊंटों पर 'सीधा' (खाद्य-सामग्री) लादा। और टाटर, टोकने, चरू लादे। मोतीचूर और मगद के लड्डू तथा बहुत-सारा चबीना लिया। बरातियों में कई हौदों पर बैठे, कई अबाबाड़ी में वैठे और कई पालकियों में बैठे। उनके कानों में मोती झिलमिलाते हुए शोभा दे रहे थे। ढाले ढलक रही थी। चारों दिशाओ मे हलचल हुई। वेग के साथ घोड़े छूटे। उनके सोने के तैनाल जड़े थे और घुंघरुओं की मालाएं पहनायी हुई थी। सिद्ध योग में मुहूर्त्त लिया गया। श्रीकृष्ण रथ में बैठे। रानी रुक्मिणी के लिए रत्नजड़ित रथ जुड़वाये। तीन सौ साठ छत्र जगमगा रहे थे। उनमें बड़ा मेघाडबर छत्र था। सूर्य के तले बराबरी करनेवाला दूसरा कोई नहीं। ऐसी कृष्ण की सवारी चली।

त्रिभुवन-नाथ के मन में भीष्मक की कुमारी रुक्मिणी को ब्याहने का बड़ा हर्ष हो रहा है। पर्दम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— ऐसी बरात सजायी।

७—गणपति-प्रसंग

सभी यादव बरात में इकट्ठे हुए जिसमें सुर, नर और मुनिजन भी सम्मिलित थे। फिर दृष्टि दौड़ायी तो सबको देखा पर गणपतजी (गणेशजी) नही दिखायी पड़े।

बरात में और तो सब लोग आ गये पर गणेशजी नहीं आयें। उन्हें शीघ्र बुलाओ, यह कहकर नारद मुनि को भेजा गया। नारद ने जाकर गणेशजी से कहा— आप शीघ्र पधारिये। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— हे गणपति! आप चलकर संकटों और विघ्नों का निवारण कीजिये।

रणत भंवर सूं आवो विनायक खाली कोठार भरै
सूंड सूंडाळो दूंद दूंदाळो सिर पर छत्र धरै
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं रिध सिध तुमहि वरै

दोहा-- गणपत सुण्यो सनेसड़ो आणंद उर न समाय
मूसा लिया सिंगार कै चढ्या जान कूं धाय

मारू--गणपतजी नै देख आंवता नारद कहै, थे भाळो
गणपतजी नै पाछा मेलो गढ पोळचां रखवाळो
सूड सूंडाळो दूद दूंदाळो भोजन घणो अहारी
गणपतजी नै पाछा मेलो लाजै भींव-कंवारी
मोटी पींडचां जांघ थांभ सी मस्तक मोटा काना
गणपतजी नै पाछा मेलो भूंडी दीसै जाना
गणपतजी नै देख जान में नारद मोसो वायो
माथै टोपी कड़चां लंगोटी ओ कांई सांग वणायो
हळधर वचन कहै केसव सूं थे गणपत नै भाखो
सूनी पुरी सला में नांही गणपतजी नै राखो
पाछो जा म्हारा गणपत गरवा गढ पोळां रखवारो
थे म्हांरै बळदेव बरोबर घणो भरोसो थारो
अै सुण वचन क्रस्ण रा गणपत हरख चल्यो मन मांही
आगै पडी लड़ाई दीसै, जायर करता कांई
नारद मुनी जलम रो चुगल्यो जाय गणेस सिलायो
लाजां मरता पाछा मेल्या कुण थांनै कोट भोळायो
कोप कियो गवरी रै नंदण मूसा लिया बुलाई
म्हारी तो पत थे अब राखो हुई घणी हळकाई
मूसां जाय मेदनी खोदी गणपत अग्या पायी
पैदळ पांव धरण नहिं पावै सब रथ दिया थकायी
टूटै धुरी पड़ै पाचरिया पैदळ चलण न पावै
खोद मेदनी पोली करदचो जद म्हांनै जस आवै

... ...

पदम भणै प्रणवै पाय लागूं गणपत गया रुसायी

गणपतजी के आने से ही काम बनेगा। नवल-बिहारी कृष्ण का विवाह है, गणपतजी के आने से ही काम बनेगा। हे विनायक! आप रणस्तभपुर (रणथंभोर) से पधारिये, आपके आने से खाली भंडार भरेंगे। आप लबी सूंड़वाले है, मोटी तोंदवाले है और सिर पर छत्र धारण करते है। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— हे गणपतजी! ऋद्धि और सिद्धि आपको वरण करे।

गणेशजी ने सदेश सुना तो उनके हृदय के आनद का पार न रहा। उनने अपने मूषकों को सजा लिया और दौड़कर (शीघ्रता से) बरात के लिए चढ़कर चले।

गणपतजी को आते हुए देखकर नारद ने कहा— आप लोग देखिये। गणपतजी को गढ़ की पौरों (द्वारों) का रखवाला बनाकर वापिस भेज दीजिये। ये गणपतजी लंबी सूड़वाले है, इनके मोटी तोद है और ये भोजन भी बहुत मात्रा में करते है। गणपतजी को वापिस भेज दीजिये नही तो भीष्मक की कुमारी लज्जित होगी। उनकी पिंडलियाँ मोटी है, जंघाएं थंभों जैसी है। सिर और कान बड़े-बड़े है। गणपतजी को वापिस भेजिये, उनसे बरात भोंड़ी लगेगी। गणपतजी को बरात मे देखकर नारदजी ने ताना मारा— सिर पर टोपी और कमर में लंगोटी! यह कैसा स्वांग बनाया है? हलधर ने कृष्ण से ये वचन कहे— आप गणपतजी से कहे। नगरी सूनी रहे यह उचित नही, उसकी निगरानी के लिए गणपतजी को रखिये। (कृष्ण ने गणेशजी से कहा—) मेरे गौरवशाली गणपति! वापिस जाओ, गढ़ की पौरों की रक्षा करो। तुम हमारे लिए बलदेव के समान हो। तुम्हारा बहुत भरोसा है। कृष्ण के इन वचनों को सुनकर गणपतजी मन में हर्षित होकर चले। उनने सोचा— आगे युद्ध पड़ा दीख रहा है, हम वहाँ जाकर क्या करते।

नारद मुनि जन्म के ही चुगलखोर ठहरे। उनने जाकर गणेशजी को भड़का दिया— उनने तो लाज के मारे आपको वापिस भेजा है, गढ़ की रखवाली आपको किसने सौपी है! नारद का वचन सुनकर गौरी के नदन कुपित हो उठे और मूषकों को बुला लिया। (उनसे कहा—) मेरी प्रतिष्ठा तो अब तुम्ही रखो। मेरी बहुत हलकाई (अपमान) हुई है। जब मूषकों ने गणेशजी की आज्ञा पायी तो उनने जाकर पृथिवी को खोद डाला। पैदल चलनेवाले पांव नहीं रख पाते, और सारे रथ थक गये। धुरियाँ टूटने लगी, पञ्चर टूटकर गिरने लगे, पैदल चलने नही पाते। पृथिवी को खोद कर पोली (थोथी) कर दोगे तभी हमें यश मिलेगा। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— यों गणपतजी रूठ गये।

टूटै धुरी अर पड़ै पाचरा रथां भड़ाभ्रड़ माची
वाहण पंथ गरुड़ नहिं चालै घोड़ा ऊठ' र हाती
टूटै नाड़ा पड़ै जुवाड़ा नाह करै चरड़ाटा
ऊभा घोड़ा हिणहिण हीसै ऊंठ करै अरड़ाटा
जद श्रीकृष्ण कहै हळधर सूं सुणियो समरथ भाई
अै तो करम किया गणपतजी गणपत ल्यावो मनायी
आज रोही वनी मे डेरा ल्यावो घी गुळ आटा
कहै क्रस्णजी सुणो हळधरजी आपा जान जिमासां
गणपतजी नै पहल मनासां पछै कुनणपुर जासां
कहै हळधरजी सुणो क्रस्णजी इंद्र विवाण मंगासां
बै धरती नै सिर पर राखो आपां कुनणपुर जासां
सायर पाज सही कर बांधी वांदर रीछ मिलाया
अठारा पदम दळ किया अेकठा गणपत दळ में आया
कहै क्रस्णजी सुणो हळधरजी सकर वेग बुलावो
दोय जणां नै पाछा मेलो गणपत वेग मनावो
दोय जणा जद पाछा आया गणपत वेग मनावै
चाल चाल म्हांरा गवरी रा नंदण थांनै किसन बुलावै
चाल चाल गवरी रा नंदण था विन जान न चालै
नेमनाथ सा जान पधारचा आवध इधका झालै
म्हे क्यू चालां हळधर वरज्या म्हांरी राखी कांई
म्हांनै हळधर पाछा फेरचा सगळी जान सरायी
दूद दूदाळो सूंड सूडाळो भोजन भोत अहारी
म्हां चाल्यां सब जादू लाजै लाजै भींव-कंवारी
मोटी पींडचां जांघ थांभ सी मस्तक मोटा कानां
म्हे क्यू चालां हळधर वरज्या भूंडी दीसै जानां
मस्तक थांरै चंद्र विराजै गळ वासग रो हारो
चाल चाल गवरी रा नदण थां विन किसन कंवारो
किसन कंवारो म्हारो कांई सारो गढ पोळचां रखवारो
म्हे बारै बळदेव बरोबर घणो भरोसो म्हांरो
बै गणपतजी यू उठ बोल्या मंत्री! पूठा जावो
म्हां चाल्यां सब जादू लाजै म्हांनै मती बुलावो

घुरियाँ टूटने लगीं और पच्चर पड़ने लगे। रथों के टूटने की भड़ा-भड़ आवाज होने लगी। घोड़े, ऊंट और हाथी आदि गरुड़ जैसे वाहन मार्ग पर नहीं चल पाते थे। बंधन (रस्से) टूट रहे थे, जुए पड़ (गिर) रहे थे। नाभियें (पहिये का मध्य भाग) चरड़ाटे (चर्र-चर्र शब्द) कर रही थीं। घोड़े खड़े-खड़े हिन-हिन शब्द करते हुए हीस रहे थे और ऊंट भी अरड़ाटे (मुँह से बलबलाकर जोर की आवाज) कर रहे थे। तब श्रीकृष्णजी ने हलधर से कहा— हे समर्थ भाई! सुनो। ये काम तो गणेश के किये हुए हैं, गणेश को मनाकर लाओ। आज जंगल में डेरा होगा। घी, गुड़ और आटा लाओ। श्रीकृष्ण कहते है— हे हलधर भैया! सुनो। हम वरात को जिमायेंगे। पहले गणपतजी को मनायेंगे और फिर कुंदनपुर जायेंगे। हलधर ने कहा— हे कृष्ण! सुनो। हम इंद्र का विमान मंगायेंगे।

वे धरती को अपने सिर पर रखे, हम आकाश-मार्ग से कुंदनपुर जावेंगे। हमने बंदरों और रीछों को इकट्ठा किया और समुद्र पर निश्चित रूप से सेतु बाँधा। हमने अठारह पद्म सैन्य इकट्ठा किया। गणेशजी भी उस सैन्य में आये थे। श्रीकृष्ण ने कहा— हे हलधर भैया! सुनो। शंकर को शीघ्र बुलाओ। दो जनो को वापिस भेजो जो गणपति को शीघ्र मनाकर लायें। तब दो जने वापिस आये और गणपति को मनाने लगे— हे हमारे गौरीनंदन! शीघ्र चलिये, चलिये। आपके बिना बरात नहीं चलेगी। नेमिनाथ जैसे वीर बरात में पधारे है जो बडे-बड़े शस्त्रो को झेलते है। (गणपतजी ने उत्तर दिया—) हम क्यों चले? हमे तो हलधर ने मना कर दिया। हमारी क्या प्रतिष्ठा रखी? सारी वरात को तो हलधर ने सराहा और हमें वापिस भेज दिया। मैं तो लंबी सूंड़वाला और मोटी तोंदवाला हूँ। भोजन भी वहुत-सारा करता हूँ। हमारे चलने से सब यादव लज्जित होंगे और भीष्मक-कुमारी भी लज्जित होगी।

मेरे मोटी-मोटी पिंडलियाँ हैं, खंभों की-सी जाँघे है, सिर और कान वड़े-बड़े हैं। हम क्यों चलें? हमें तो हलधर ने मना कर दिया है; हमारे चलने से बरात भोंड़ी दीखेगी। (मनानेवाले वोले—) आपके मस्तक पर चंद्रमा विराजता है, गले में वासुकि नाग का हार है। हे गौरी के नंदन! चलिये, चलिये। आपके बिना कृष्ण कुंवारे है (उनका विवाह नहीं होगा)। (प्रत्युत्तर में गणेशजी ने कहा—) कृष्ण कुंवारे रहते है तो हमारा क्या वश है? हम तो गढ़ की पौरों के रखवाले है! हम उनके वलदेव के समान है, हमारा वहुत भरोसा है! वे गणेशजी उठकर यो बोले— हे मंत्रियों! वापिस लौट जाओ। हमारे चलने से सब यादव लज्जित होंगे, हमें मत बुलाओ। मंत्री आकर श्रीकृष्ण से बोले—

मंत्री आय किसन सूं बोल्या गणपत तो नहिं आया
दूद दूंदाळा सूंड़ सूंडाळा म्हांनै यूं वतळाया
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं गणपत तो नहिं आया
मारू— विरमा सेस महेस गण गंधरब हळधर जादूराई
सुर तेतीस करै नौछावर चरणां सीस नवायी
चोवा चंदण अगर कुमकुमा चरचै फूल बहु पानां
चाल चाल गवरी रा नद ! थां विन भूंडी जानां
देवां सिरै देव सिव-सकर जा रा पुत्र कहावो
हळधर किसन मनावण आया अब क्यूं जेज लगावो
सौ मण मूंग सवा सै मण चावळ घिरत निबै मण ल्यावो
इतरो तो म्हे करां कलेवो जीमण फेर बुलावो
हळधर वचन कहै गणपत सूं घणा मती गहरावो
सायर पाज सही कर बांधी म्हांनै कांई डरावो
परण्या परण्या जान पधारो हूं छूं अकनकंवारो
आगे कामण गारी गावै लाजै गोत हमारो
पदम भणै प्रणवै पाय लागू परण र जान पधारो

दोहा— विघन-हरण मंगळ-करण सदा रहै थिर थाय
सुर तेतीसां कियो मनावणो बैठा रथ रै मांय

मारू— जे कोइ व्यांव र विरध रचावै थांनै पहल मनावै
जे कोइ थांनै नही मनावै कियो आपरो पावै
सब ही कळा सपूरण संकर स्याम कारतिक भाई
पहली आद तुम्हारी पूजा पीछै देव वडाई
हळधर वचन कहै गणपत सूं क्यूं नहिं जान पधारो
पीछै व्यांव श्रीपत रो करसां पहली व्यांव तुमारो
विन भोपाळ व्यांव नहि करस्यां गणपत वचन सुणायो
जिण घर कन्या हुवै सुजाण सो भोपाळ वतावो
धारा नगर अेक पोहप राव रै सासर वार तिहारो
रिध सिध कन्या पोंहपराव रै जिण सूं व्यांव विचारो
पांचं मुकाम दिया धारा में चवदा भवन रै राजा
गणपतजी नै टीको दीनो वाजै नौबत वाजा
जै-जैकार मधुर धुन गावै त्रामागळ घुररावै

गणेशजी तो नही आये। लंबी सूड़वाले और मोटी तोंदवाले गणेशजी ने हमसे ये बाते कहीं। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— गणेशजी तो नही आये।

ब्रह्मा, शेष, महेश, गंधर्व-गण, यादवराज हलधर तथा तेतीसों देवता न्यौछावर करने लगे और उनने चरणों में शीश नवाया। चोवा चंदन, अगर, गुलाबजल तथा प्रचुर पत्र-पुष्पों से उनकी पूजा की। हे गौरी के नंदन! चलिये, चलिये। आपके बिना बरात श्रीहीन है। देव शिवशंकर देवशिरोमणि हैं। आप उनके पुत्र कहलाते है। हलधर और कृष्ण मनाने आये हैं। अब क्यों देर लगा रहे है? (तब गणेशजी बोले—) सौ मन मूंग और सवा सौ मन चावल लाओ। नब्बे मन घी लाओ। हम इतने का तो कलेवा करते है। इसके बाद फिर भोजन को बुलाओ।

हलधर ने गणपति से कहा— अधिक मत गहराइये। हमने समुद्र पर भी सेतु बाँधा था, हमे क्या डरा रहे है! गणेशजी ने कहा— जो-जो विवाहित हैं वे बरात में जायें। मैं तो अखड कुमार हूँ। आगे कामिनियाँ हमें गालियाँ गावेंगी तो हमारा गोत्र लज्जित होगा। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— (सबने कहा कि) आप ब्याह करके बरात में पधारें।

विघ्नों को हरनेवाले और मंगलों को करनेवाले गणपति सदा स्थायी होकर रहें। तेतीसों कोटि देवताओं ने मनावन किया तब वे रथ के भीतर जाकर बैठे।

जो कोई विवाह और वृद्धि-कार्य रचाता है वह आपको पहले मनाता है। जो कोई आपको नहीं मनाता है वह अपनी करनी का फल पाता है। सभी कलाओं से पूर्ण शिव आपके पिता हैं, स्वामि कार्तिक आपके भाई है। सर्वप्रथम आपकी पूजा होती है और तत्पश्चात् देवताओं का गौरव। हलधर ने गणपति से कहा— बरात में क्यों नही चलते है? कृष्ण का विवाह पीछे करेंगे, आपका विवाह पहले होगा। गणपति ने कहा— बिना राजा के विवाह नही करेंगे। वह राजा बतलाइये जिसके घर में सयानी कन्या हो।

(हलधर ने कहा—) धारानगर में एक पोहपराव के यहाँ आपका ससुराल है। पोहपराव के ऋद्धि और सिद्धि नाम की कन्याएं है, उनसे विवाह करने का विचार कीजिये। चौदह भुवनों के राजा ने धारा में पाँच मुकाम दिये। गणपतिजी के टीका किया गया। नौबत-बाजे बजने लगे। जय-जयकार की मधुर ध्वनि हो रही थी। नगाड़े बजने लगे। गणपतजी तेल-वान के लिए बैठे। उनकी शोभा वर्णन नहीं की जा

तेल वान गणपतजी बैठा सोभा वरणी न जावै
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं सखियां वनड़ो गावै

सोरठ— गणपतजी बनड़ा आया
मोतिन माल मोतियन रो सेहरो सूरज जोत सवाया
धारा नगर री सबै कामणी निरखत रूप सवाया
कर फरसी मूसै असवारी चंदन खोर वणाया
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं आणंद मंगळ गाया

मारू— मंडप हेम तणो राजा रै चंवरी हेम वणायी
रिध सिध सूं कीयो गंठजोडो सखियां मंगळ गायी
रिध सिध तणा वींद नै देख्यां अैसें कहै नर-नारी
देखो वीद नार रिध सिध रो वडो रूप सूंडारी
और रूप सब वण्यो पुरख को कुंजर को उणियारो
हळधर कहै सुणो थे नारचां ! कहा रूप विसरायो
सब देवन में देव-सिरोमणि गणपत नांव कहावै
श्रीपत सूं है रूप इधकाई सिव को पुत्र कहावै
राजा पोहप कहै हळधर सूं और रूप इधकाई
और रूप की सोभा वरणी कुंजर सूंड वणायी
श्रीपत वचन कहै राजा सूं और रूप वरदायी
रिध सिध नार बहोत सुख पासी इण की कौण वडाई
आय सहेळै तोरण वान्यो कामण मंगळ गावै
कंचण थाल भरचो मोतियन सैं कंचण कळस वणावै
केसर अगर कपूर चोपरे सासू आरत्यो लायी
देख सूंड अर गणपतजी की मधुर मधुर मुसकायी
या को तेज वरण्यो नहिं जावै सोभा सूंड वडाई
अेक सखी मिल चावळ लीना रिध सिध सैं वतळायी
पींडचो सरस सांध चावळ को घूंघट वदन छिपायी
चावळ हळद देय गणपत कै सखियां मंगळ गायी

सोरठ—अैसा जी गजराज वना नै कामण करवा आयी
कामण करवा आयी लालजी नै हरख निरख गुण गायी महाराज
हळधरजी नै परच्यो दीनो वै कामण का परच्या
मूसा तो वै दौड़ दौड़ कर धरती खोद वगायी महाराज

सकती। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— सखियाँ 'वनड़ा' गीत गाती हैं।

गणपतजी वनड़े आये हैं। वे मोतियों की माला और मोतियों का सेहरा धारण किये हुए है। उनका तेज सूरज के तेज से बढ़कर है। उनके हाथ में परशु है, मूषक की सवारी है और चंदन के खोर वनाये हुए हैं। पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूं— इस प्रकार सखियों ने आनंद के साथ 'मंगल' गाये।

राजा के यहाँ सोने का मंडप वनाया गया और सोने की ही चंवरी वनायी गयी। ऋद्धि और सिद्धि के साथ गंठजोड़ा जोड़ा गया। सखियों ने मंगल गीत गायें। ऋद्धि और सिद्धि के वर को देखकर नर-नारी इस प्रकार कहने लगे— ऋद्धि और सिद्धि देवियों के वर को देखो। यह सूंड़वाला रूप बड़ा सुंदर है।

शेष सारा स्वरूप तो पुरुष का बना हुआ है पर उसका चेहरा हाथी का है। हलधर कहते हैं— हे नारियों! तुम सुनो। गणेश के रूप की क्या बिसराहना की? ये सब देवताओं में शिरोमणि देवता हैं। इनका नाम गणपति कहा जाता है। रूप में कृष्ण से भी श्रेष्ठ है। ये शिवजी के पुत्र कहलाते है। राजा पोहप ने हलधर से कहा— और रूप तो श्रेष्ठ है और उसकी शोभा भी वर्णनीय है। हाथी की सूंड बनी हुई है। कृष्ण ने राजा से कहा— इनका यह रूप वरदान देनेवाला है। ऋद्धि और सिद्धि खूब सुख पायेंगी। इनकी बड़ी बड़ाई है। गणेशजी ने 'सहेले' में आकर तोरण को बनाया। कामिनियाँ मंगल-गीत गाने लगी। सोने का थाल मोतियों से भरा और स्वर्णकलश सजाये।

सास केशर, अगर, कपूर आदि के चौपड़े से युक्त आरती लेकर आयी। गणपतिजी की सूंड देखी और वह मंद-मंद मुसकराने लगी। इनके तेज का वर्णन नहीं किया जा सकता। सूंड ने बड़ी शोभा बना रखी है। एक सखी ने चावल लिये और ऋद्धि-सिद्धि से बातें करने लगी।

उसने चावलों का अच्छा-सा पिंड बनाया और मुखड़े को घूंघट में छिपाये हुए आकर गणपति को चावल और हल्दी चढ़ायी। सखियों ने मंगल-गान गाये।

कामिनियाँ ऐसे गजराज गणेश वने को कामण (नारी का वशीकरण) करने आयीं। प्यारे दूल्हे को कामण करने आयी है। वे उनको हर्षित होकर निरखती हैं और गुणों को गाती है। उस 'कामण' से प्रभावित होकर उनने हलधरजी को परचा दिया। मूषकों ने दौड़-दौड़कर धरती को खोद फेंका।

श्रीपतजी नै परच्यो दीनो वै कामण का परच्या
रिध सिध कन्या पोहप राव कै तुरत आय परणायी महाराज
चरखी मोर जुजरबा छूटै और छूटै सूवाई
गजानंद री या छिब ऊपर पदम भगत बळि जायी महाराज

मारू— पांच पदारथ धरचा थाळ में आरतियो करवायो
गजानंदजी चंवरचां आया चंवरचां में चंवर ढुळायो
रिध सिध नार करै सिणगारो मन में आणंद धारचो
सारी सखियां यूं मिल बोली फेरा करण पधारो
गजानंद सूं कियौ गंठजोड़ो ब्रह्मा वेद उचारै
सुर तेतीसूं हरख हुवा छै वरसत पुसप अपारै
रिध सिध सूं कीयो गंठजोड़ो मेघाडंबर छाया
जैजैकार भयो त्रिभुवन में सब ही मंगळ गाया
गजानंद जब रिध सिध परण्या जोड़ि बैठा हथळेवो
वसुदेव कहै पोहप राजा सूं हथळेवो रै छुडावो
पोहप राज घर आणंद प्रगटचो मनवाँछित फळ पायो
रणतभँवर रो दियो पड़गनो हथळेवो ज छुडायो
रतन पदारथ बहौत ही दीना हथळेवा रै मांई
पांच पड़गना दिया कंवरी नै भली भांत मुकळायी
वडी वडार भात ही दीना सब देवन रै तांई
सुर तेतीसूं करी जुहारी छपन कोट पहरायी
जैजैकार भयो नर-नारी सुर दुंदुभी वजायी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं सखियां मंगळ गायी

ललित—सुण गणपतजी रे जंवाई
थारै कुण बाबल कुण माई
थारी माई राजकंवारी
थारो बाबल भयो भीखारी
थारी भील रूप भयी माई
बा बाबल छळवा आयी
थे मोची भये पितु गजा
थारी माय न छळतां लजा
सिव मोची वण कै आया

उनने श्रीकृष्ण को भी परचा दिया। उनने तुरंत आकर पोहपराय की ऋद्धि और सिद्धि कन्याओं को उनके साथ ब्याह दिया। चर्खियाँ, मोर और जुजुरबे छूट रहे हैं और सूवाई छूट रही है (विविध प्रकार की आतिशबाजियाँ)। गजाननजी की इस शोभा पर पदम भक्त बलिहारी जाता है।

थाल में पाँच पदार्थ रखे और आरती करवायी। गजाननजी चंवरी (विवाह-मंडप) में आये। चवरी मे उन पर चवर डुलाया गया।

ऋद्धि और सिद्धि नारियाँ शृंगार करती हैं। वे मन में आनंदित हो रही थी। सब सखियों ने मिलकर यो कहा कि फेरे (भांवरें) लेने के लिए चलो।

गजाननजी के साथ गंठजोड़ा किया गया। ब्रह्मा ने वेदों का उच्चारण किया। तेतीसों देवता हर्षित हुए और उनने अपार पुष्पों की वृष्टि की।

ऋद्धि और सिद्धि के साथ गंठजोड़ा किया गया। मेघाडंबर छत्र की छाया की गयी। तीनो लोकों में जयजयकार होने लगा। सबने मंगल-गीत गाये।

जब गजाननजी ने ऋद्धि-सिद्धि को व्याहा और हथलेवा जोड़े बैठे थे तब वसुदेव ने पोहप राजा से कहा कि हथलेवा छुड़ाये।

पोहप राजा के घर में आनंद का उदय हुआ। उन्हें मनवांछित फल प्राप्त हुआ। उनने रणथंभोर का परगना देकर हथलेवा छुड़वाया। हथलेवे में बहुत-सारे रत्न-पदार्थ दिये। कुंवरियों को पाँच परगने दिये और इस तरह भली प्रकार से उनका मुकलावा (गौना) किया। सब देवताओं को बड़ी 'वडार' (बरात का बड़ा भोजन) और 'भात' दिये। तेतीसों देवताओं ने जुहार की। छप्पन करोड़ यादवों को पहरावनी दी।

नर-नारियों ने जय-जयकार किया। देवताओं ने दुंदुभियाँ बजायीं। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— सखियों ने मंगल-गीत गाये।

हे जंवाई गणपति! तुम्हारे कौन तो पिता है और कौन मां है? तुम्हारी मां तो राजकुमारी है और तुम्हारा पिता भिखारी बना है। तुम्हारी मां ने भिलनी का रूप धारण किया और वह पिता को छलने आयी।

हे गजाननजी! आपके पिता मोची बने। तुम्हारी मां को छलते हुए उन्हें लाज नहीं आयी।

थारी मा कै मोचड़ी ल्याया
अैसें सासू गारी गायी
स्वामी पदम भगत वळि जायी

मारू— परण गजानंद रथ में वैठा हरजी वात चलायी
भली भांत सूं करी समठूणी रिधसिध नैं मुकळायी
जै-जै कार मधुर धुनि गावै तांवागळ घुररावै
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं कृष्ण कुनणपुर आवै

८—कृष्ण का कुंदनपुर पहुंचना

दोहा— हरियल सूवो वोलियो हरै आंव री डार
कुंभ कळस साम्हा हुवा और म्रिगां री डार
सुपनो आयो रुकमणी निरखत सुंदर स्याम
जो तुम द्वारका-नाथ हो कौण तुमारो नाम ?
नाम हमारा अनंत है पुनि अविनासी अेक
(जो) नवै हमारा विड़द कूं (जाकी) नहीं डिगण द्यूं टेक

सोरठ— माई री ! मैं सुपनां में परणी गोपाळ
रैण री वात कहा कहूं सजनी ! सुपना में भयी हूं निहाल
जो थांनैं सपनो आयो वाईजी ! सपनो छै आळ-जंजाळ
मोर मुगट पीतांवर सोहै उर वैजंती माळ
रुच-रुच हरजी कंठ लगायी हाथां छै महंदी लाल
छपन कोट जादू जुड़ आया दूल्हो छै नंदजी रो लाल
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वर पायो नंदलाल

सोरठ— दीना कंचण कोड़, मती पतीजो वामणां
वामण किसड़ो दोस, हर दानां सूं डर रह्यो

छंद— दानवां सें रह्यो डर कै, हरि न सक्क्यो आय री
कै वैसंदर अव चढूं हूं, ना मरूं विस खाय री
कंचण सी काया संकळपूं, करूं चित अंग भंग री
रुद्र आगै सीस मेलूं, मिलूं केसव संग री

सोरठा—थारै तो कारण सांवरा ! काया कसट सह्या घणा
पदम भणै वीठळ दळ आवै नैण ज फरक्या हम तणा

शिवजी मोची बनकर आये और तुम्हारी मां के लिए जूती लाये। सास ने ऐसे गाली गायी। पदम भक्त कहता है— हे स्वामी! मैं बलिहारी जाता हूँ। गजाननजी विवाह करके रथ में बैठे तब श्रीकृष्ण ने प्रस्थान की बात चलायी। भली प्रकार से पहरावनी करके ऋद्धि-सिद्धि को विदा किया। जय-जयकार करते हुए मधुर ध्वनि से गाते हैं, नगाड़े घहरा रहे हैं। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— कृष्ण कुंदनपुर को आ रहे है (कुदनपुर की ओर चले)।

८—कृष्ण का कुंदनपुर पहुँचना

हरे आम के पेड़ की डाल पर हरे रंग का सुग्गा बोला, कुंभ और कलश सामने आये और मृगों का झुंड भी मिला।

रुक्मिणी को सपना आया। उसने श्यामसुंदर को देखा। (उनसे पूछा—) यदि आप द्वारकाधीश है तो आपका क्या नाम है? (उत्तर मिला—) हमारे नाम अनंत है जिनमें एक अविनाशी भी है। जो कोई हमारे विरुद को मानता है मै उसकी टेक को डिगने नही देता।

अरी मां! मैंने सपने में गोपाल से विवाह किया। हे सजनी! रात की बात को क्या बताऊँ? मै तो सपने में निहाल हो गयी।

अरी बेटी! जो तुम्हें सपना आया है वह तो एक जंजाल है। उनके सिर पर मोरचंद्रिकायुक्त मुकुट, शरीर पर पीतांबर और हृदय पर वैजयंती माला सुशोभित थी। श्रीकृष्ण ने उल्लासपूर्वक मुझे कंठ से लगाया। हाथो में लाल मेंहदी रची हुई थी।

छप्पन करोड़ यादव बरात मे मिलकर आये। नदजी का लाड़ला पुत्र दूल्हा बना था। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों पड़ता हूँ— रुक्मिणी ने नंदलाल श्रीकृष्ण को वर के रूप में प्राप्त किया।

ब्राह्मण को सदेश ले जाने के लिए करोड़ों का स्वर्ण दिया था, ब्राह्मणों का कोई विश्वास न करे, और ब्राह्मण का भी क्या दोष, श्रीकृष्ण ही दानवों से डर रहे हैं।

दानवों से डरकर श्रीकृष्ण रह गये, आ नही सके। अब मैं या तो अग्नि (की चिता) पर चढ़ जाऊँगी, नही तो फिर विष खाकर मर जाऊँगी। अपनी कंचन-सी काया को संकल्प कर दूँगी, चित्त में अंग-भंग का (शरीर को नष्ट कर देने का) निश्चय करूंगी, रुद्र (शिव) के सम्मुख शीश समर्पित कर दूंगी और केशव के साथ जा मिलूंगी। हे सांवरे कृष्ण! तुम्हारे लिए मैंने अनेक शारीरिक कष्ट सहे। पदम भक्त कहता है— (रुक्मिणी कहती है कि) श्रीकृष्ण का दल आ रहा है क्योंकि हमारे नेत्र फड़के हैं।

विहाग—नाथ नही आये री सजनी !
मैं जु रही मग जोय
बो द्विज तो मुतलब को गरजू रह्यो कहांई सोय
जो प्रभुजी कहुं नाहि पधारै करहू कवण उपाय
वांच कै पतिया मेल दयी री ! कै जु गये विसराय
पदम के स्वामी वेग न मिलिहैं, हंस सही उड जाय

खट— कोईजी कहौ म्हारा नाथ नै
थांरी नार निहारै वाट
भाई रुकमइयै बुलायो डाहल सो आयो दळ ठाट
तीन दिहाड़ा दुज कूं वीता कीनी ढील निराट
मोय सिसपाळ स्याळ सो दीखै करज कळेजै काट
नाथ विना मैं विख भख मरस्यूं और नहीं कोइ घाट
छिन-छिन मोकूं कल न परत है पळ नीचै, पळ खाट
पदम के स्वामी ! वेग पधारो तब ही मिटै उचाट

सोरठ—थांनै पूछूं पिंडत जोसी !
म्हारो नाथ मिलण कद होसी ?
जोसीजी म्हांरा भाई ! म्हांनै पतड़ो वांच सुणायी
म्हे पतड़ो पूजां थांरो थे कारज सारो म्हांरो
कह जोसी सुण अब बाई ! मैं साच हि साच सुणायी
हरिजी नै वेग मिलाऊ कछु अणंद-वधाई पाऊं
पदमइया विरहण जरिहै नित वाट पिया री हेरिहै
उड उड रे हरियल सूवा ! प्रभुजी नै बहु दिन हूवा

सोरठ—म्हांरै हरियल वन रा सूवटड़ा !
थांनै कृष्ण मिलै तो कीज्यो
चांच मढाऊं थारी सोवणी म्हांनै कृष्ण-सनेसो दीज्यो
मोतियन चुगो चुगावस्यां थे पाछा आय कहीज्यो
रतन जड़ाऊं थारो पींजरो म्हांरै हिड़दा मांय रहीज्यो
पदम रै स्यामी रो देवो सनेसो फिर लाख वधाई लीज्यो

दोहा— रुकमण करै विसूरणा स्याम पहूंता धाय
कुन्नणपुर अचिरज भयो जान दूसरी आय

हे सजनी ! नाथ नहीं आये, मैं मार्ग देख रही हूँ। उस ब्राह्मण को तो अपने मतलब (स्वार्थ) की गरज थी, वह मार्ग में ही कहीं सो गया होगा। यदि मेरे प्रभु नही आये तो मैं क्या उपाय करूँगी ?

हे सखी! उनने पत्रिका को पढ़कर रख दिया होगा, या फिर भूल गये होंगे। पदम भक्त कहता है— रुक्मिणी कहती है कि यदि स्वामी शीघ्र नही मिलेंगे तो ये प्राण निश्चय ही उड़ जायेंगे।

कोई मेरे स्वामी को कहो कि तुम्हारी प्रिया तुम्हारी बाट निहार रही है। भाई रुकमइये ने शिशुपाल को बुलाया है जो ठाटपूर्वक दल लेकर आ गया है। द्विज को गये तीन दिन बीत चुके हैं, उसने बड़ी ढील (विलंब) कर दी। शिशुपाल मुझे सियार की भाँति प्रतीत हो रहा है, जो मेरे कलेजे को काट रहा है। मैं स्वामी के बिना जहर खाकर मर जाऊँगी, और कोई उपाय नही है। मुझे एक भी क्षण चैन नहीं पड़ रहा है। एक पल नीचे होती हूँ तो दूसरे पल पलंग पर। पदम भक्त कहता है—हे स्वामी! शीघ्र आओ, तभी संकट मिटेगा।

हे जोशी पंडित ! मैं पूछती हूँ कि मेरा स्वामी से मिलना कब होगा ? हे जोशीजी ! तुम मेरे भाई हो, मुझे पंचाँग बाँचकर सुनाओ। मैं तुम्हारे पंचाँग की पूजा करती हूँ। तुम मेरे काम को सिद्ध करो।

जोशी ने कहा—हे बहन ! अब सुनो। मैंने सच-सच कहा है। मैं तुम्हें श्रीकृष्ण से शीघ्र मिला दूँगा। और कुछ आनँद-बधाई (का पुरस्कार) भी पाऊँगा।

पदम भक्त कहता है—रुक्मिणी कहती है कि विरहिणी जल जायगी। वह सदा प्रिय की बाट देखती रहेगी। हे हरे सुग्गे ! तुम उड़ जाओ, प्रभु को आने में बड़े दिन लग रहे है।

हे हमारे हरे वन के सुग्गे ! तुम्हें श्रीकृष्ण मिलें तो वताना। मुझे तुम श्रीकृष्ण का संदेश ला देना, मैं तुम्हारी चोंच को सोने से मंढा दूँगी। मैं तुम्हें मोतियों का चुग्गा चुगाऊँगी, तुम वापिस आकर मुझे कहना। मैं तुम्हारे लिए रत्नजड़ित पिंजरा बनवा दूँगी, तुम मेरे हृदय में रहना। पदम भक्त कहता है—रुक्मिणी कहती है कि मुझे स्वामी का संदेश लाकर दो, फिर भरपूर बधाई लेना।

रुक्मिणी दुःख कर रही थी। तभी श्यामसुंदर दौड़ते हुए (शीघ्रता से) आ पहुँचे। कुंदनपुर में आश्चर्य हुआ कि दूसरी बरात आ रही है।

सोरठ— आयो आयो रे सांवरियो रुकमण कारणै
न्रप भीखम नै वात चलायी
सठ रुकमइयै कुबध कमायी
चीरी भेज बुलायो डाहल बारणै
जान देख नगरी हरखायी
जद रुकमण मन में दुख पायी
लीनी काढ कटारी मरबा कारणै
रुकमण चीरी वेग लिखायी
दुज हरिया रै हाथ पठायी
वांचत वेग पधारचो असुर संघारणै
दास पदम स्वामी इधकारी
मार असुर मेटो दुख भारी
लोक-लाज रा साथी गिरवर-धारणै

दोहा— हरि हरि-जोसी पूछियो कित उतरचो सिसपाळ ?
किताक जोधा जान में किताक गज अस-माळ ?
दुज बोल्यो न्रप भींव रो सुणियो दीनदयाल
बारा जोजन गढपती गाज रह्यो सिसपाळ

मारू— गाज रह्यो सिसपाळ धरण में मिल जादू वतळाया
चौरासी कोस धरण सूं ऊंचा तंबूड़ा ढळकाया
विसकरमा नै हुकम दियो है मंदर अधर छवाया
इक्किस जोजन धरती सेती तंबूड़ा ढळकाया
अैरापति नै हुकम दियो है चेटक अेक दिखावो
श्रीकृष्ण री अग्या लेकर गहरी लीद वगावो
अैरापत सत ही कर मानी गहरी लीद वगायी
जुरासंध रो तंबू टूटचो दळ में पड़ी अवायी
जीतै नहीं सिसपाळ हारसी जादू करै जुहारा
जो-जो वचन कह्या दंत-राणी सो-सो होसी सारा
वरजत बांध सेहरो आयो सठ ना कियो विचारो
पदम भणै डाहल अभमानी जाय सिसपाळ कंवारो

मारू— कर प्रणाम दुज रथ सूं उतरचो गवन भवन कूं कीनो
सीस नवाय चरण गह बोली कहां कृष्ण रंग-भीनो ?

सांवरा श्रीकृष्ण रुक्मिणी के लिए आ गया, आ गया। राजा भीष्मक ने बात आरंभ की तो दुष्ट रुकमइये को दुर्बुद्धि सूझी। उसने पत्र भेजकर शिशुपाल को अपने द्वार पर बुला लिया।

बरात को देखकर नगर के लोग हर्षित हुए। तब रुक्मिणी मन में दुखी हुई। उसने मरने के लिए कटारी निकाल ली।

रुक्मिणी ने शीघ्र ही पत्र लिखवाया और उसे द्विज हरिनंद के हाथ भिजवा दिया। पत्र पढ़ते ही श्रीकृष्ण असुरों का विनाश करने के लिए तुरंत आ गये।

पदम भक्त कहता है—हे स्वामी ! आप अधिकारी है और मैं आपका दास हूँ। आप असुरों को मारकर रुक्मिणी के भारी कष्टों को दूर कीजिये। आप लोक की लाज को बचानेवाले साथी हैं और गोवर्धन-धारी है।

श्रीकृष्ण ने हरि जोशी से पूछा कि शिशुपाल कहाँ उतरा है ? उसकी बरात में कितने योद्धा है और हाथी और घोड़ों के कितने बड़े दल है ?

राजा भीष्मक का ब्राह्मण बोला— हे दीनदयाल ! सुनिये। गढपति शिशुपाल बारह योजन भूमि में गरज रहा है।

शिशुपाल धरती पर गरज रहा है। यादवों ने मिलकर बात की। उनने चौरासी कोस के क्षेत्र में पृथ्वी से बहुत ऊपर (आकाश में) तंबू खड़े कर दिये। उनने विश्वकर्मा को आदेश दिया और धरती तथा आकाश के बीच में महल बनवाया। और इक्कीस योजन क्षेत्र में पृथ्वी से ऊपर तंबू तनवाये। फिर ऐरावत हाथी को आज्ञा दी कि एक चमत्कार दिखाओ। श्रीकृष्ण की आज्ञा लेकर खूब-सारी लीद नीचे फेंको। ऐरावत ने उसे सत्य करके माना और खूब लीद फेकी, जिससे जरासंध का तंबू टूट गया और लीद दल में आकर पड़ी। यादवों ने परस्पर जुहार (अभिनंदन) किया कि शिशुपाल जीतेगा नही, हारेगा। दंताधर की रानी ने जो-जो वचन कहे थे वे सबके सब सही होंगे। मना करने पर भी वह सेहरा बांधकर आया है। उस दुष्ट ने कुछ भी विचार नही किया। पदम भक्त कहता है—यादवों ने विमर्श किया—अभिमानी डाहल शिशुपाल कँवारा ही लौटेगा।

प्रणाम करके द्विज रथ से उतरा और उसने भवन की ओर प्रस्थान किया। रुक्मिणी शीश नवाकर और पैर पकड़कर पूछने लगी— रंगभीने श्रीकृष्ण कहाँ है ?

कह दुजराज, सुणो री बाई ! मन रा कारज सारया
त्रिभुवन-पत कूं संग ले आयो बै ब्रजराज पधारया
आवण सुणी स्त्रवण माधव री सुधा वैण सुख कीनो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं प्राणदान दुज दीनो

दोहा— आंखड़ियां मग जोवती पंथ निहार-निहार
जीभड़ियां छाला पड़्या कृष्ण पुकार-पुकार

देस— हीयो हरखै मन हंसै मिलसी आज मुरारि
सूरज किरण संभाळती दीनो अरघ कंवारि
मोतियन का आखा करूं (वीरा !) म्हांनै कृष्ण मिलाय
विछड़ी हिरणी तड़फड़ै चहुं दिस जोवै माग
हिवड़ो हुळसै, मन हंसै मिलसी दीनानाथ
धीरज कर बाई रूकमण ! हरिजी नेड़ा जाण
घड़ी दोय कै चार में कृष्ण मिलैगा आय
हरियो आवत देखकर लागी रिख रै पाय
हरीदास ना वीसरूं कौ बामण ! कुसळात

मारू— भळकंतो रै विप्र यूं बोल्यो देव तणा दळ आया
भींवसेन सूं यूं जाय कहियो सही ज केसौ आया
दानां रै दळ संक्या मानी देव तणा दळ आया
दास पदम पर किरपा कीज्यो कृष्ण कुनणपुर आया

दोहा— सुण्या वचन दुजराज रा अत हरखी मन मांहि
कहा वधाई दयूं तुमैं तुम लायक कछु नांहि

मारू— संग लायो मेरे प्राणपिया कूं त्रिभुवन रो पति अेका
यह रिण तेरो कबहुं न उतरै धारूं जनम अनेका
अैसें कह बहु रतन पदारथ दीनो दाम घणेरो
पदम कहै रुकमण वर दीनो कोइ न जाचै कुळ तेरो

दोहा— हरख्यो विप्र-चूड़ामणी कृष्ण तणो दळ लाय
भींवराय स्त्रवणां सुणी, आणंद उर न समाय

मारू— ऊठयो राव पहर पीतांबर बोल ज बोल्या चंगा
अड़सठ तीरथ घर ही मांही आळसियां नैं गंगा
नंद जोसी जब कही राय सूं बोलै भींव ज वाणी
जो तुम द्वारावती पधारे कहो कृष्ण-सहनाणी

द्विजराज ने कहा--हे बहन ! सुनो। तुम्हारे मनोरथ सिद्ध कर दिये हैं। मैं त्रिभुवनपति को साथ ले आया हूँ। वे ब्रजराज पधार गये है। माधव के आने की बात कानों से सुनी तो सुधा-सरीखे उन वचनों से रुक्मिणी ने बड़ा सुख प्राप्त किया। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों पड़ता हूँ-- द्विज ने रुक्मिणी को प्राणदान दिया।

आँखें मार्ग को देख-देखकर बाट निहार रही है। जीभ पर कृष्ण को पुकारते-पुकारते छाले पड़ गये। हृदय हर्षित हो रहा है और मन हँस रहा है। आज मुरारि श्रीकृष्ण मिलेगे। सूरज की किरणों को देखकर राजकुमारी रुक्मिणी ने अर्घ्य दिया। हे भाई (द्विज) ! मै मोतियों के आखा करूँगी (अक्षत की जगह मोती काम में लूँगी, मोती न्यौछावर करूँगी), तुम मुझे कृष्ण से मिला दो। बिछुड़ी हुई हिरनी के समान तड़फ रही है, चारों दिशाओ में मार्ग देख रही है। हृदय उल्लसित हो रहा है, मन हर्षित हो रहा है; लगता है, दीनानाथ मिलेगे।

हे बहन रुक्मिणी! धीरज धारण करो। अब श्रीकृष्ण को समीप ही समझो। दो या चार घड़ी मे वे आ मिलेगे। हरि ब्राह्मण को आता देखकर रुक्मिणी ऋषि (ब्राह्मण) के पैरों पड़ी। वह कहने लगी--हे हरिभक्त ! मैं तुम्हें नहीं भूलूँगी। हे ब्राह्मण ! कुशल-मंगल कहो।

कांतिमान् (प्रसन्नवदन) ब्राह्मण यो कहने लगा--देवताओ का दल आया है। राजा भीष्मक से जाकर यों कहो कि केशव निश्चय ही आ गये है। देवों का दल आया देखकर दानवों का दल शंकित हो उठा। पदम भक्त कहता है—दास पर कृपा कीजिये। इस प्रकार श्रीकृष्ण कुंदनपुर आये। द्विजराज के वचन सुनकर रुक्मिणी अत्यत प्रसन्न हुई। (उसने कहा—हे द्विज !) मैं तुम्हें बधाई-स्वरूप क्या दूँ ? तुम्हें देने लायक मेरे पास कुछ भी नहीं है। तुम अपने साथ मेरे प्राणपति को ले आये हो। ये तीनों लोकों के एकमात्र अधिपति है। तुम्हारा यह ऋण मुझसे कभी नहीं उतरेगा, चाहे मै अनेक जन्म ही क्यों न धारण कर लूँ। यह कहकर उसने बहुत से रत्न आदि पदार्थो का भारी दान दिया। पदम भक्त कहता है-- रुक्मिणी ने उसे वरदान दिया कि तुम्हारे कुल में अब कोई भी याचक नही रहेगा-- किसी को माँगने की आवश्यकता नही होगी। विप्र-चूड़ामणि श्रीकृष्ण के दल को लाकर हर्षित हुआ। राजा भीष्मक ने कानों से जब यह सुना तो उनका आनंद हृदय में नही समा सका। राजा भीष्मक पीतांबर पहनकर उठा। उसने बड़े सुदर वचन कहे--श्रीकृष्ण क्या आये घर बैठे ही अड़सठों तीर्थ आ गये, आलसी लोगों के लिए घर बैठे गगा आ पहुँची। हरिनंद जोशी ने जब राजा से कहा तो भीष्मक ने यह वचन कहे-- यदि तुम द्वारका गये थे तो श्रीकृष्ण की पहचान बताओ।

मोर-मुगट पीतांबर सोहै हरि है चित्र विनाणी
च्यार हि भुजा च्यार ही आवध कोस्तुभ मणि सहनाणी
हरख्यो भींवराय स्रवणां सुण साच वचन परवाणी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं साच वात जद जाणी

दोहा— हरख चल्यो दुज दान लै चलण न सक्क्यो भार
पाछो मुड़-मुड़ कहत है (बाई !) अंबिका वेग पधार

ठुमरी— आज अब कुसी रुकमणी बाई
नेम धरम तप सफळ भया सब आज महाजळ न्हायी
संग री सहेली पूछै हेली ! आज कहा इतरायी ?
और दिनां मुख सूं नहि बोलै (आज) वांटै रहस-वधाई
मेरे तो आनंद भयो सजनी ! घर आया जादू-राई
पूरब देस चंदेरी रो राजा देखत ही उठ जायी
मेरो वर नंद नंदन जाकी तीनूं लोक दुहाई
घर-घर तोरण धुजा पताका वन्नरमाळ वंधायी
दास पदम पर किरपा कीज्यो राखोला सरणाई

मलार— कृष्ण कुनणपुर आया
उमग्या दळ-वादळ चहुं दिस तै गोविंद गरुड़ ले धाया
नान्ही-नान्ही बुंदियां परत भवन पर हरचा-हरचा वादळ छाया
माता गज गरजत गोविंद रा सुण दाना सुकचाया
सोच पड़चो सिसपाळ तणै दळ कंवर करै विलखाया
राणी रुकमण अति मन वाढचा फूली उर न समाया
दादर मोर कोकिला बोलै कोयल सवद सुणाया
सुवा सारका भवन में बोलै मोतियन चौक पुराया
राजा भींव घर वंटत वधाई सखियन मंगळ गाया
दास पदम थांरो विड़द वखाणै मन-इंछा फळ पाया

सोरठ— करो सिल थाळोड़ी रो चात्र
वडा-वडा राजा उठ बोल्या व्यांव तणो विवहार
रुकमइयै सिसपाळ बुलायो कोप्या कृष्ण-मुरार
उण तो साज करी सामेळै लीद पड़ी मुख छार
हैवर गाज्या कृष्ण तणै दळ ब्राह्मण लायो गोपाळ

—उनके सिर पर मोरचंद्रिकायुक्त मुकुट है और शरीर में पीतांबर शोभायमान है। श्रीहरि बड़े विलक्षण ज्ञानवाले हैं। उनके चार भुजाएं है और चार ही आयुध हैं। कौस्तुभ मणि उनकी पहचान है। राजा भीष्मक सत्य और प्रामाणिक बात सुनकर हर्षित हुआ। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—राजा ने तब बात को सच्ची माना।

द्विज दान लेकर हर्ष के साथ चला। पर अधिक भार के कारण चल नही सका। वह पीछे मुड़-मुड़कर कहता है—बहन! अंबिका-पूजन को जल्दी जाओ।

आज अब राजकुमारी रुक्मिणी प्रसन्न है। उसके सारे नियम, धर्म, तप आदि सफल हो गये। वह आज महाजल (अत्यंत पवित्र जल, गंगा-जल) में नहा ली। साथ की सहेली ने पूछा—हे सखी! आज कैसे इतरा रही हो? अन्य दिनों तो तुम मुँह से ही नहीं बोलती थीं और आज बधाइयां बाँट रही हो। (उत्तर में रुक्मिणी ने कहा—) हे सखी! आज मुझे आनंद हुआ है। मेरे घर यदुराज श्रीकृष्ण आये है। पूर्व देशवर्ती चंदेरी का राजा उन्हें देखते ही चला जायगा। मेरा वर तो नंदनंदन कृष्ण है जिसकी तीनों लोकों में दुहाई है। घर-घर में तोरण, ध्वजा, और पताकाएँ तथा वंदनवारे बँधी हुई हैं। पदम भक्त कहता है कि हे स्वामी! अपने दास पर कृपा कीजिये, उसे सदा शरण में रखेंगे।

श्रीकृष्ण कुंदनपुर आ गये। चारों दिशाओं मे बादलों के दल उमड़ उठे। गोविंद गरुड़ को लेकर दौड़कर आये है। भवन पर नन्हीं-नन्हीं बूदें पड़ रही है। आकाश में श्याम रग के बादल छाये हुए है। गोविंद के मदमस्त हाथी चिंघाड़ रहे हैं जिसे सुनकर दानवगण सकुचा गये (शंकित हो उठे)। शिशुपाल के दल में चिंता हो गयी। रुक्मकुंवर बिलखने लगा। रानी रुक्मिणी का मन बहुत बढ़ गया (उमंग से भर गया)। उसकी प्रसन्नता हृदय मे समा नही रही थी। दादुर (पक्षी), मोर और कोयल बोल रहे थे, कोयल कूक सुना रही थी। तोता और मैना भवन में बोल रहे थे। मोतियों का चौक पूरा जा रहा था। राजा भीष्मक के घर में बधाई बँट रही थी। सखियाँ मंगल-गीत गा रही थीं। पदम भक्त कहता है—हे स्वामी! आपका यह दास आपके विरुद का गान करता है, (रुक्मिणी ने) मनवांछित फल पा लिया।

सब मिलकर हर्षपूर्वक 'थालोड़ी' की रस्म संपन्न करो। बड़े-बड़े राजा उठकर बोले—यह विवाह-संबंधी व्यवहार है। जब रुकमइये ने शिशुपाल को बुलाया तब मुरारि श्रीकृष्ण कुपित हुए। उसने सामेले (बरात के स्वागत की रीति) की तय्यारी की। उसके मुँह पर लीद पड़ी। श्रीकृष्ण के दल में घोड़े गरजे। ब्राह्मण गोपाल को ले आया।

वाजा वाजै अंबर गाजै जद कंप्या सिसपाळ
कोप्या तीन भवन रा नायक वरसी लीद अपार
राजा भींव-घर वंटत वधाई रुकमण करै सिणगार
मै तो जानी कृष्ण बुलायो रुकमइयै सिसपाळ
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं आयो भगत-उधार

दोहा— कुन्नणपुर विसटाळो हुवो आवो मिल करो विचार
जानां दोनूं भेळी हुयी होसी जुध्ध अपार

मारू—राजा भींव पंचोळी कोक्या वेग हजूर बुलाया
अवल जरी सिरपाव मंगाया पंचोळयां पहराया
कहै रावजी, सुणो पंचोळयां ! सिसपाळा पै जावो
डाहल नै तो ओठो फेरो रुकमण कृष्ण विवाहो
कह पंचोळी, सुणो महाराज ! पूठा किण विध चालै ?
जरासंध सा राजा दळ में आवध इधका झालै
फौजां सिरै फौज रो लाडो पाखर सेल संवारी
जरासंध जोरावर राजा जुध री करै तयारी
कहै भींवजी, सुणो पंचोळयां ! अब कै जान मरासी
कोप्यो कृष्ण दानवां ऊपर तीन जीवता जासी
कह पंचोळी, सुणो भींवजी ! सिसपाळा कनै जास्यां
जरासंध जोरावर राजा भेंट कांई ले जास्यां ?
कहै भींवजी, सुणो पंचोळयां ! भेट घणी ले जावो
सुवरण थाळ भरया गज-मोत्यां जाय निजर गुदरावो
पांच पंचोळी हुवा सांतरा घोड़ां जीण कराया
सोवन थाळ भरया गजमोत्यां सिसपाळा पै आया
डोढयां आय खबर करवायी वेग हजूर बुलाया
पंचोळी जा पांवां लाग्या थाळ निजर गुदराया
आदर मान बहोत ही कीनो आगै ले बैठाया
भींव कृष्ण री वात कहो ना सिसपाळै वतळाया
कर मनवार पंचोळी बोल्या सुण सिसपाळा राजा !
लंका दान सोवणी दीनी सायर बांधी पाजा
वो छै राम और मत जाणो तोनै किसोक सूझै ?
कुंभकरण महारावण मारया और वडा कहा बूझै ?

बाजे बजते हैं और गगन (में बादल-समूह) गरजता है, तब शिशुपाल काँप उठा। तीनों लोकों के नायक श्रीकृष्ण कुपित हुए तो अपार लीद बरस पड़ी। राजा भीष्मक के घर बधाई बँट रही है और रुक्मिणी श्रृंगार कर रही है। रुक्मिणी सोच रही है--मैंने तो वर रूप में श्रीकृष्ण को बुलाया था और रुकमइये ने शिशुपाल को। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ, भक्तों के उद्धार करने के लिए श्रीकृष्ण आ पहुँचे। कुंदनपुर में मंत्रणा हुई। आओ, मिलकर विचार करें। दोनों बरातें एकत्र हुई हैं। (लगता है,) बड़ा युद्ध होगा।

राजा भीष्मक ने पंचोलियों को (राज्य के अधिकारी कायस्थों को) बुलाया। उन्हें तुरंत दरबार में बुलवाया। उत्तम कोटि की जरी के सिर-पाव मँगवाये और पंचोलियों को पहनाये। (सरोपाव = सिर से पैर तक की पोशाक)। राजा ने कहा—हे पंचोलियो! सुनो। शिशुपाल के पास जाओ। उसे तो वापिस भेज दो और रुक्मिणी का कृष्ण के साथ विवाह कर दो। पंचोलियों ने कहा--हे महाराज! सुनिये। वापिस कैसे जायेंगे? उनके दल में जरासंध जैसे राजा है जो श्रेष्ठ शस्त्रों को धारण करते है (या बड़े-बड़े शस्त्रों का सामना करते है)। वह सेनाओं में श्रेष्ठ सेना का नायक है और कवच तथा भाले को सजाता है। जरासंध बलशाली राजा है, वह युद्ध की तय्यारी करेगा। राजा भीष्मक ने कहा--हे पंचोलियो! सुनो। इस बार बरात को मरवावेगा। श्रीकृष्ण दानवों पर कुपित हुए है, जीवित तो तीन जने ही जायेंगे। पंचोलियों ने कहा—हे राजा भीष्मक! सुनिये। हम शिशुपाल के पास जायेंगे। वहाँ जरासंध राजा बड़ा बली है। भेट रूप में क्या ले जायेंगे? राजा भीष्मक ने कहा--हे पंचोलियो! सुनो। खूब-सारी भेट ले जाओ। गज-मुक्ताओं से भरे सोने के थाल है, उन्हें ले जाकर भेट करो।

पाँच श्रेष्ठ पंचोली तय्यार हुए। उनने घोड़ो पर जीन कसवायी। गज-मुक्ताओं से भरे सोने के थाल लेकर वे शिशुपाल के पास पहुँचे। मुख्य द्वार पर आकर भीतर खबर करवायी। उन्हें तुरंत दरबार में बुलाया गया। पंचोली जाकर पैरों लगे और नजराने में थाल हाजिर किये। उनका बड़ा आदर-सत्कार किया गया और लेकर अपने सामने आसन दिया। शिशुपाल ने बात प्रारंभ की---राजा भीष्मक और कृष्ण के हाल-चाल कहिये न! मनुहार करके पंचोली बोले—हे राजा शिशुपाल! सुनो। यह कृष्ण वही राम है जिसने सोने की लंका को विभीषण को दान में दे दिया था और सागर की पाल को बाँध लिया था। उसे दूसरा मत समझो। तुम्हें कैसा लग रहा है? उसने कुंभकरण को और महान् बली रावण को मार दिया था। उनसे अधिक बड़ा और कौन हो सकता है?

मैं सिसपाळो कुण नै बूझूं सतरा वार भजायो
अबकै बैनै पकड़ र ल्याऊ तो दमघोस रो जायो
कह पंचोळी सुण सिसपाळा ! तूं कांई जोर दिखावै ?
वा लिछमी हर री अरधंग्या तू क्यूं जान मरावै ?
कह सिसपाळ, सुणो पंचोळचां ! जान जीभ सूं मारो
राजकंवरि परणेबा आयो थे क्यूं इसी विचारो ?
म्हे वीचारां सोइ तू कर नै अब कै जाव अपूठो
कुंवरि रुकमणी क्यूं परणावां अेक गुनै तूं झूठो ?
तू तो रूप देख लळचायो यो तो रूप परायो
आ लिछमी हर री अरधंग्या क्यां नै कंवर ! चढ आयो ?
कान्ह कंवर माखण रो दानी माखण खोस'र खायो
साठ लाख हसती सिणगारचा साज सोवनी ल्यायो
बै तो अधर हि डेरा कीना तूं तो धरणी लोटै
कंवरि रुकमणी किस विध परणै काग हंस किस जोटै
म्हे तो हंस, काग है कान्हर सतरा वार भगायो
व्रंदावन में गऊ चरावै माखण खोस'र खायो
ऊंचा डेरा तूं भी करै नी तो म्हे तोनै जाणां
अबकै सिसपाळ जाय जीवतो कांई घणो वखाणां
पिचाणव छौहण रो जोर दिखावै बैंकै घोड़ा थोड़ा
मारचां भला न दीखसो थे टळचां न होसो लोड़ा
म्हे क्यूं टळां जोरावर जोधा टळसी काळो ग्वाळचो
माखण चोर परायो खावै रावां मांय सूं टाळचो
कह पंचोळी, सुण सिसपाळा ! अब कै ओठा जावो
जे जीवंता घरां पधारो औरूं राव कहावो
म्हे तो राव कदे रा वाजां सतरा वार भगायो
लाज न मरै सरम नहिं आवै वेर अठारवी आयो
पांव पड़ां छां मानो विनती बुरै सुगन तूं आयो
म्हे तो थारी वात न जाणां सुरसत भाट बुलायो
जद सिसपाळो कुमनो बोल्यो करता करै सो होसी
अतनै पाण सूं जाऊं पूठो दोस देस नै होसी

(शिशुपाल ने उत्तर दिया—) मैं शिशुपाल हूं। किससे पूछूँ? कृष्ण को सत्रह बार भगाया है। अबकी बार उसको पकड़कर लाऊँ तभी मुझे दमघोष का पुत्र समझना। पंचोली कहने लगे—हे शिशुपाल! सुनो। तुम क्या जोर दिखा रहे हो? वह लक्ष्मी (रुक्मिणी) हरि की अर्धांगिनी है। तुम क्यों बरात को मरवा रहे हो? शिशुपाल ने कहा—हे पंचोलियो! सुनो। बरात को जीभ से ही मार रहे हो! मैं राजकुमारी को विवाहने आया हूँ। आप लोग ऐसी बात क्यों विचारते हैं? (पंचोलियों ने कहा—) हम जो विचारते है तुम भी वही करो न! इस बार वापिस लौट जाओ। राजकुमारी रुक्मिणी का विवाह तुम्हारे साथ कैसे करें? एक गुनाह के अनुसार तुम झूठे हो। तुम तो रूप को देखकर लालायित हुए हो, पर यह रूप तो पराया है। यह लक्ष्मी हरि की अर्धांगिनी है। हे कुमार शिशुपाल! तुम क्यो चढ़ आये हो? (शिशुपाल ने कहा—) कान्हकुंवर तो माखन का राज-कर लेनेवाला है, उसने छीन-छीनकर मक्खन खाया है, जबकि मैंने साठ लाख हाथी सजाये हैं और सुनहरे साज सजाकर लाया हूँ। (पंचोली बोले—) उनने तो अधर में (धरती और आकाश के बीच में) डेरे बनाये है और तुम धरती पर ही लोटते हो। राजकुमारी रुक्मिणी के साथ तुम्हारा विवाह कैसे हो? काग और हंस की जोड़ी कैसे हो? (शिशुपाल ने उत्तर दिया—) हम तो हंस है। काग तो कन्हैया है जिसे सत्रह बार भगाया है। वह वृंदावन में गायें चराता है, उसने छीन-छीनकर ही माखन खाया है। (पंचोलियों ने कहा—) तुम भी ऊँचे डेरे बनाओ न! तब हम तुम्हें जानें। हे शिशुपाल! अबकी बार तो जीते-जी चले जाओ। अधिक क्या बखान करें? तुम अपनी पचानवे अक्षौहिणी सेना का बल दिखा रहे हो और उनके घोड़े थोड़े होने की बात कह रहे हो, परतु तुम न मारने से अच्छे लगोगे और न पीछे हट जाने से छोटे हो जाओगे। (शिशुपाल ने कहा—) हम क्यों हटें? हम तो बलशाली योधा है। हटेगा तो काला ग्वाला हटेगा जो पराया मक्खन चुराकर खाता है और जिसे राजाओं में से टाल रखा है। पंचोली बोले—हे शिशुपाल! सुनो। अबकी बार तो वापिस चले जाओ। यदि जीवित घर चले जाओगे तो फिर भी राजा कहलाओगे। (शिशुपाल ने उत्तर दिया—) हम तो कभी के (बहुत समय से) राजा कहलाते है। हमने उसे सत्रह वार भगाया है। वह न लाज के मारे मरता है और न उसे शर्म आती है कि अठारहवीं बार भी आ गया है। (पंचोलियों ने कहा—) हम पैरों पड़ते हैं, विनती मानो। तुम बुरे शकुन से आये हो। हम तो तुम्हारी बात भी नही मानते। तुम्हे तो सारस्वत भाट बुलाकर लाया है। तब शिशुपाल ने अनमने होकर कहा—जो कर्ता करेगा वही होगा। इतने से ही वापिस लौट जाऊँगा तो मेरे देश को

करी वीनती अेक न मानी पंचोळी घर आया
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं ठोकर थाळ गुड़ाया

दोहा— संक्या भयी नगर में आया कृष्ण मुरार
जरासंध सिसपाळ बहु मिल कर करै विचार

मारू— भणै कंवरजी, सुण सिसपाळा ! थे मत ना डिग जावो
बाई रुकमण थांनै परणास्यां सही भींव रो जायो
कह सिसपाळो, सुणो कंवरजी ! नीकां भली विचारो
भारथ जोड़ गवाळ्या आया या को कोण विचारो
म्हे तो उण रो नांव न जाणां ना म्हे कोक बुलायो
भागो फिरै गोकळ री गळियां विन कोक्यो ही आयो
ओ तो आपणी करै बराबरि जुध रो सामो लायो
टेक चढ्यो रुकमण परणाऊं सही भींव रो जायो
भणै कंवरजी, सुण सिसपाळा ! हीणी कहा विचारी
भारथ पड़्यां ग्वाळिया जीतै पीछै राड़ हमारी
सिसपाळा र कंवर रुकमइया गुझ सैं गह वतळाया
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं डोढ्यां तोड़ी आया

दोहा— रुकमइयो महल पधारियो रुकमण नै समझाय
मन में करो कुसाळियां नीका करो उछाव

मारू— नीकां करो उछाव बाईजी ! ज्यूं म्हे भी सुख पावां
साहण-वाहण हसती-घोड़ा भली भांत परणावां
रुकमण भणै, सुणो रुकमइया ! डाहल वर ना मेरो
म्हे तो जास्यां ऊंचै डेरै नीचै मुलक घणेरो
राजा भींव खड़ग ले उठियो रुकमइया ! तोय मारूं
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं तो मेरो रोस विसारूं
दोहा— कंवर आय सिसपाळ सूं छानै कयो समझाय
बाळक-बुध हठ चढ गयी दूती देवो खिनाय

दूती-प्रसंग

मारू— कह सिसपाळ, सुणो हे दूत्यां ! थे कुनणापुर जावो
भींव-कंवरि राजी नहिं म्हांसूं जिणनै जाय मनावो

कलंक लगेगा। पंचोलियों द्वारा की गयी एक भी प्रार्थना शिशुपाल ने नहीं मानी तो पंचोली घर को लौट आये। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— शिशुपाल ने ठोकर मारकर थालों को लुढ़का दिया।

मुरारि कृष्ण आये। उनका आना सुनकर नगर में शंका व्याप्त हो गयी। जरासंध और शिशुपाल मिलकर बहुत विचार कर रहे हैं।

रुक्मकुमार कहता है—हे शिशुपाल! सुनो। आप अब डिग मत जाना। बहन रुक्मिणी का विवाह आपसे करेंगे, तभी मैं वास्तव में भीष्मक का पुत्र हूँ। शिशुपाल ने कहा—हे कुमार! सुनिये। भली प्रकार से अच्छी बात का विचार कीजिये। ग्वाले युद्ध की तय्यारी करके आये हैं। इसका क्या विचार है? (रुक्मकुमार ने कहा—) हम तो उसका नाम भी नहीं जानते है, और न हमने उसको निमंत्रण भेजकर बुलाया है। वह तो गोकुल की गलियो में मारा-मारा फिरता है। वह विना बुलाये ही आया है। वह तो हमारी बराबरी कर रहा है। युद्ध का सामान लाया है। पर मैं टेक धारण करके रुक्मिणी का विवाह तुमसे करूंगा। तभी मैं वास्तव में राजा भीष्मक का पुत्र हूँ। रुक्मकुमार ने कहा—हे शिशुपाल! सुनो, ओछी बात क्यों विचारी है? युद्ध होने पर यदि ग्वाले जीत जायेंगे तो पीछे हमारा युद्ध होगा। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— शिशुपाल और रुक्मकुंवर परस्पर बतियाते हुए ड्योढ़ी तक आये।

रुक्मकुमार महल में आया और रुक्मिणी को समझाने लगा—मन में खुशियाँ मनाओ और भली प्रकार से उत्सव करो।

हे बहन! भली प्रकार से उत्सव करो जिससे हम भी सुख पायें। साधन-वाहनों, हाथी-घोड़ों सहित तुम्हारा भली प्रकार विवाह करेंगे। रुक्मिणी ने कहा—हे रुक्मइया! सुनो। शिशुपाल मेरा वर नहीं है। हम तो ऊँचे घर में जायेंगे, नीचे तो बहुत बड़ा संसार है। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ। राजा भीष्मक तलवार लेकर उठा—हे रुक्मइया! तुम्हें मारूँगा तभी मेरा क्रोध उतरेगा।

रुक्मकुमार ने आकर शिशुपाल से गुप्त रूप में समझाकर कहा—रुक्मिणी बालक-बुद्धिवाली है, वह हट पर चढ़ गयी है अतः उसे समझाने को दूती भेज दो।

दूती-प्रसंग

शिशुपाल ने कहा—हे दूतियो! सुनो। तुम लोग कुंदनपुर जाओ। राजा भीष्मक की कुमारी रुक्मिणी हमसे राजी नही है, उसे जाकर मनाओ। दूतियाँ बोली—हे महाराज! सुनिये। हम अपने

दूत्यां कहै, सुणो महाराजा ! म्हांरा गुण दरसावां
अंबर तारा धरती ल्यावां फेर अंबर धर आवां
जेवड़ि रा म्हे सरप वणावां फिर जेवड़ि कर लावां
सूकी नदियां नीर वहावां पट पर नाव चलावां
हथ्थेळी पर सरसूं वावां नख पर छूंक जिमावां
टाटी ऊपर होळा भूनां कड़वै तेल बुझावां
दूती कहै, सुणो महाराजा ! हुकम राज रो पावां
आप चढण रा रथ दिरवावो बैठ कुनणपुर जावां
कह सिसपाळ, सुणो हे दूत्यां ! जो राजी कर आवो
तो थांनै म्हे देवां वधाई पांच पड़गना पावो
अपणै चढण रा रथ दिरवाया वानक वणी अलवेली
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं लीनी संग सहेली

मारू— पांच लाख रो दूत्यां पहरचो सात लाख रो लीयो
भीव-कंवरि राजी कर आवां देखो म्हांरो कीयो
सब पूरबला राजा बैठा पास जुरासंध राई
भर-भर मूठी दरब लुटावै राव री करै वडाई
जब दूती कुन्नणपुर आयी रुकमण सूं वतळायी
घमघम करती महलां चढगी चरणां सीस निवायी
गहणो मेल'र करी वीनती जाण अपछरा आयी
रंभा रूप देख दूत्यां रो राजकंवरि मुसकायी
धिन-धिन हो पूरबला राजा धिन थें रुकमण बाई !
धिन हो बो बंधू रुकमइयो अैसी जान बुलायी
गहणो मेल'र पांवां लागी सुणिजै अरज हमारी
सिसपाळ सरीखो वीद न दूजो म्हांरै सरीखी चेरी
सवा लाख धरती रो राजा उणरै धरती थोड़ी
गहणो पहरो राज भोगवो वणी विधाता जोड़ी
बाईजी ! थे बोलो क्यूं नी मुखड़ै वैण न भाखो
गहणो पहरो, राज भोगवो पत भाई री राखो
भाई भलो, भलां नै ल्यायो थांनै होसी लावो
गहणो ले'र और कै घालो और कंवरि परणावो
और कंवरि बो परणै नांही अैसी और न काई

गुण बतला रही हैं। हम आकाश के तारे धरती पर ला सकती है, और फिर उन्हें आकाश में रख आ सकती हैं। हम रस्सी को साँप बना सकती हैं, और उसी को फिर रस्सी में परिणत कर सकती है। सूखी नदियों में पानी बहा सकती है और सूखी जमीन पर नाव चला सकती हैं। हम हथेली पर सरसों उगा सकती है, नख पर छोंककर (बनाकर) भोजन करा सकती है। टाटी पर होले (चने) भून सकती है और कड़वे तेल से बुझा सकती हैं।

दूतियों ने कहा—हे महाराज! सुनिये। आपकी आज्ञा मिले। आप अपने चढ़ने का रथ दिलवाइये जिस पर बैठकर हम कुंदनपुर जायें। शिशुपाल ने कहा—हे दूतियो! सुनो। यदि रुक्मिणी को राजी कर आओगी तो तुम्हें हम बधाई देगे जिसमें पाँच परगने पाओगी। राजा शिशुपाल ने अपने चढ़ने का रथ दिलवाया। उस समय बड़ी अनूठी परिस्थिति थी। पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— दूतियों ने अपने साथ सहेलियाँ भी लीं।

दूतियों ने पाँच लाख के गहने पहने और सात लाख के अपने साथ लिये। हम भीष्मक की कुमारी को राजी कर आती है, हमारा 'करतब' देखना। पूर्व दिशा के सब राजा बैठे हुए थे। पास में जरासंध भी बैठा था। सब मुट्ठियाँ भर-भरकर द्रव्य लुटा रहे थे (दान दे रहे थे) और राजा की बड़ाई कर रहे थे। जब दूतियां कुंदनपुर आयीं तो रुक्मिणी से बात की। वे घम-घम करती हुई महलों में चढ़ गयीं। उनने उसके चरणों में शीश नवाया। उनने गहने सामने रखकर विनती की। वे ऐसी जान पड़ती थीं मानो अप्सराएं आयी हों। दूतियों का रंभा-सदृश सौंदर्य देखकर राजकुमारी मुसकरायी। दूतियां बोलीं—हे बाई रुक्मिणी! आप धन्य है और धन्य है पूर्व दिशा के राजा (शिशुपाल)। वह बंधु रुक्मइया भी धन्य है जिसने ऐसी बरात बुलायी। दूतियाँ गहने आगे रखकर रुक्मिणी के पैरों लगी—हमारी विनती सुनिये। आपके लिये शिशुपाल-सरीखा दूसरा वर नहीं है और हम-जैसी दासियाँ भी नहीं हैं।

—वह सवा लाख (आय वाली) पृथ्वी का राजा है, उस कृष्ण के तो पृथ्वी बहुत थोड़ी है। आप गहना पहनें और राज्य को भोगे। विधाता ने यह सुदर जोड़ी बनायी है। —हे बहनजी! आप बोलती क्यों नहीं? मुख से वचन भी नहीं निकालती है। आप गहना पहनें, राज्य को भोगें और अपने भाई की प्रतिष्ठा रखे। (रुक्मिणी ने उत्तर दिया—) भाई भला है और भलो को लाया है। तुम लोगों को लाभ होगा। यह गहना लेकर किसी और को दो; कि[illegible]ीर कुमारी के साथ उसका ब्याह करो। (दूतियाँ बोलीं—) और कृ[illegible]ाथ वह विवाह नही करेगा।

निर सरूप राव़ नहिं रीझै रंभा राज वतायी
रंभा घणी इंद्र राजा रै बै आवै तो ल्यावो
हूं अरधंग्या हर री दासी थे क्यूं लोग हंसाव़ो ?
हंससी लोग, लड़ाई होसी वो वांनै कद पूजै
कांकण बांध ग्वाळ चढ आयो परत लड़ाई सूझै
जलम-जलम रो नाथ सांवरो स्यामसुंदर रंग भीनो
अब जावो, बकवाद करो मत म्हे थांनै ऊतर दीनो
ओ सिसपाळ चंदेरी रो राजा मोत्यां विचलो हीरो
थांनै कांई बुराई सूझै परख'र ल्यायो थांरो वीरो
क्रोधवंत जद भयी है रुकमणी है कोंइ हाजर चेरी ?
दद्यो वांसां री, वेग उठावो दीज्यो सजा घणेरी
चेरयां हुकम कियो बाई रो महलां नाळ गुड़ायी
टूटा दांत भोगना फूटा जद दूत्यां गरळायी
फाटा वस्त्र, गिरचा सब गैणा लुकती-छिपती आयी
आवत दूती सब ही जाणी जावत कोंइ न लखायी
राव़ जरासंध पूछण लागा कांइ-कांइ वेरा ल्यायी
पान-तंबोळ करी मनवारी मुख में घणी ललाई
पांवां पड़-पड़ करी वीनती प्रगट कही कही छानै
कंचन-कोट सुमेर दिखावो को नहिं परणै थांनै
आतुर होय सिसपाळो बोल्यो इतरी करी वडाई
विसटाळो थांरो सौ भर पायो गहणो गमा घर आयी
गहणो भलो जीवती आयी म्हे म्हांरी कीनी पायी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं दूत्यां टाट कुटायी

मारू— रोस भरयो अर बळकर बोल्यो रूप कंवरि कै रीध्यो
सोच करै अर मन में कळपै ज्यूं लकड़ी घुण वींध्यो
टेढो हुय सिसपाळो बोल्यो पकड़ कंवरि नै ल्यावो
जे कोई थांरै आडो होवै जिण नै मार हटाव़ो
पांच लाख असवार कंवर रा बै तो आपां मांही
भींवराय रो आडो होवै वांसां मार विछायी
इतनो वचन सुण्यो रुकमइयै अैसे मंत्र उपायो
जमीदोज कर दद्यूं भिड़वाळचां तो भीसम रो जायो

(आप-सरीखी) और कोई नहीं है। रूपहीन कुमारी से राजा नहीं रीझते, उसके आगे आपको रंभा बताया गया है। (रुक्मिणी ने कहा--) रंभाएँ इंद्र राजा के बहुत हैं, वे आवे तो उन्हें ले आओ। मैं हरि की अर्धांगिनी हूँ, उनकी दासी हूँ। तुम लोग लोक-हँसाई क्यों कराते हो ? (दूतियों ने कहा--) लोग हँसेंगे, और लड़ाई भी होगी। वह कृष्ण शिशुपाल को कब पहुँच सकता है ? ग्वाला कंकन-डोरा बाँधकर चढ़ आया है, लड़ाई तो प्रत्यक्ष ही दिख रही है। (रुक्मिणी बोली--) वह रंगभीना श्यामसुंदर सांवरा श्रीकृष्ण मेरा जन्म-जन्म का स्वामी है। अब तुम लोग जाओ, बकवाद मत करो। हमने तुम्हें उत्तर दे दिया है। (दूतियो ने फिर कहा--) यह शिशुपाल चंदेरी का राजा है—मोतियों के बीच का हीरा। आपको क्या बुराई दिखती है ? आपका भाई परख करके लाया है। तब रुक्मिणी क्रुद्ध हुई। वह बोली--कोई दासी हाजिर है ? इन्हें बाँसों की मार मारकर जल्दी से उठा दो। खूब-सारी सजा दो। दासियों ने बाई रुक्मिणी का आदेश किया और उन्हें महलों की सीढ़ियों से लुढ़का दिया। इससे उनके दाँत टूट गये और माथे फूट गये। तब वे बुरी तरह रोयीं। उनके वस्त्र फट गये, सारे गहने गिर गये। वे छिपती-दुबकती लौटीं। दूतियों को आते हुए तो सबने जाना था पर जाते हुए किसी ने नहीं देखा। राजा जरासंध दूतियों से पूछने लगे—क्या-क्या ब्योरा लायी हो ? तुम्हारे मुख पर खूब लालिमा (ललाई) है, जान पड़ता है कि पान-सुपारी से तुम्हारी मनुहार की गयी थी। दूतियों ने कहा--हमने पैरों पड़-पड़कर विनती की, प्रकट रूप से समझाया और गुप्त रूप से (एकांत में) भी। आप चाहे सोने के गढ़ और सुमेरु पर्वत दिखायें, वह आपसे विवाह नहीं करेगी। शिशुपाल आतुर होकर बोला--तुमने अपनी इतनी बड़ाई की थी। तुम्हारा सब दूत-कार्य भर पाया। तुम गहना गंवाकर घर लौटी हो। दूतियाँ बोलीं—गहना भला या जीवन ! यही गनीमत है कि हम जीती लौट आयी हैं। हमने अपनी करनी का फल पा लिया। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—दूतियों ने अपनी टाट (खोपड़ी, सिर) की पिटायी करायी।

राजकुमारी रुक्मिणी के रूप पर रीझा हुआ शिशुपाल क्रोध से भर गया। वह बल करके बोला। वह चिंता करता है और मन ही मन बहुत दुखी होता है, जैसे लकड़ी को घुन ने बींध दिया हो। शिशुपाल टेढ़ा होकर बोला—कुमारी को पकड़कर ले आओ। जो कोई तुम्हें रोके तो उसे मारकर हटा दो। रुक्मकुमार के जो पाँच लाख सवार है वे तो हमारे साथ ही है। राजा भीष्मक का कोई आदमी आड़े आता हो तो उसे बाँसों [illegible] शायी कर दो। रुक्मकुमार ने इतना वचन सुना तो [illegible] वह बोला—ग्वालों को [illegible]

लिखतां लगन कंवर नहीं बूझी टीको मतै पठायो
पदम भणै डाहल अभमानी अैसें कह वतळायो

९—अंबिका-पूजन और हरण

श्रृंगार

मारू— काजळ घालो महंदी लावो कंकण हाथ वंधाई
तेल फुलेल उवटणो लावो यूं समझावै माई
यूं समझावै मात रुकमणी कह्यो हमारो कीजै
जिण री कन्या कुळ तें ढीटी तिण कूं कौण पतीजै
राणी भणै अंबिका पूजण जा बाई! जात कंवारी
अपणा कुळ री रीत परापर फेरां होय अंवारी
पूगो हुकम नगर रै मांही सखियां सहस बुलायी
खबर भयी चहुं ओर अंबिका जात रुकमणी बाई
भवन-भवन सैं कामण आयी चाली मंगळ गाती
हार-डोर वण्या अति सुंदर देख सभा मन भाती
केसर अगर कपूर छिड़काया चंदण चोक पुराया
वर दे देवी अंबिका! मोहि कृष्ण सो वर पाया

सोरठ— सखी सहेली प्यारी
रुकमण नै हद सिणगारी
सिर सीसफूल दीया छिव भाण कैसी लीयां
मसतक आड है भारी छिव देख कै बळिहारी
मींडी बहोत सिणगारी मानूं नागणी सी कारी
माथै बिंदो लायो मानूं चांद सो उगायो
नैणां में सुरमो सारचो भ्रूह मानो धनुस धारचो
नाक में नथियां सोहै छिव देख कै मन मोहै
जरकसी लहंगो पहरचो ओढचो चीर ज लहरचो
जा में हीरा मोती जड़िया रवि कोट छिव कूं हरिया
करणफूल सोहै भारी जुलफां जू कारी कारी
रवि रात री छिब भारी इत मानूं चंद उजारी
कुच कंचूकी पाटी छिब दामनी री दाटी
गळ हीर-हार भारी जापै पदम भगत बळिहारी

(जमीन में मिला दूँ) तो मैं भीष्मक का पुत्र हूँ। पदम भक्त कहता है— अभिमानी शिशुपाल ने यह कहते हुए बात की कि रुक्मकुमार ने लग्न लिखते समय किसी की राय नहीं पूछी और अपने मन से ही टीका भेज दिया।

६—अंबिका-पूजन और हरण

श्रृंगार

रुक्मिणी को मां यों समझा रही है—काजल डालो, मेंहदी लगाओ और हाथों में कंगन--डोरा बँधाओ। तन पर तेल-फुलेल और उबटन लगाओ। रुक्मिणी को मां यों समझा रही है—हमारा कहना मानो। जिनकी कन्या कुल में धृष्ट (कहना न माननेवाली) हो उसका कौन विश्वास करेगा ?

रानी कहती है--हे बेटी! अंबिका का 'कंवारी जात' का पूजन करने जाओ। हमारे कुल की यह परंपरागत रीति है, भांवरों के लिए देर हो रही है। नगर में आज्ञा पहुँची। एक सहस्र सखियों को बुलाया। चारों ओर खबर फैल गयी कि बाई रुक्मिणी अंबिका-पूजन के लिए जा रही है। घर-घर से कामिनियाँ आयीं जो मंगल-गीत गाती हुई चलीं। उनके गले के आभूषण, हार-डोर आदि बहुत सुंदर बने थे जो देखने से राजसभा के लोगों को सुहावने लगते थे। केसर, अगर और कपूर का छिड़काव किया। चंदन से चौक पूरे गये। (रुक्मिणी ने विनती की—) हे देवी अंबिका ! मुझे वरदान दो, मुझे कृष्ण जैसा वर मिले।

प्यारी सखी-सहेलियों ने रुक्मिणी का खूब श्रृंगार किया। सिर पर शीशफूल बाँधा जो सूरज की-सी कांति लिए हुए था। मस्तक पर शानदार आड नामक गहना है जिसकी शोभा देखकर बलिहारी होते हैं। मींडी (बालों की गुंथी हुई लट) को बहुत सजाया, वह मानो काली नागिन-सी थी। माथे पर बिंदी लगायी जैसे चंद्रमा-सा उगाया हो। नेत्रों में सुरमा लगाया, भौंहें ऐसी थीं मानो धनुष धारण किया हो। नाक में नथ सुशोभित हो रही थी जिसकी शोभा को देखकर मन मुग्ध हो उठता था। जरी का लहंगा पहना था, और लहरिये का ओढ़ना ओढ़ा जिसमें हीरे-मोती जड़े हुए थे जो करोड़ सूर्यों की शोभा को हर रहे थे। बड़े-बड़े कर्णफूल सुशोभित हो रहे थे। जुल्फें मानो काली नागिन हों। रात्रि में भारी सूर्य की सी छवि फैल रही थी, अथवा मानो यहाँ चाँद का प्रकाश छा रहा था। कुचों पर कंचुकी पहनी जिसने बिजली की कांति को भी दबा दिया। गले पर हीरों का भारी हार था जिस पर पदम भक्त बलिहारी जाता है।

चरचरी- कंवरी अंबिका जासी राज !

अंबिका पूजण चली रुकमणी फूल रही वनरासी
सोळै सहस सहेल्यां रै झुमकै मानो इंद्र-घटा सी
छोहण पांच चढो पाखरिया जरासंध यूं भासी
काळो ग्वाळ झपट ले जासी मूंढो कठै दिखासी
जद सिसपाळै सुभट बुलाया वेग चढो वनरासी
ओ अवसर फिर हाथ न आवै फिर पाछै पछतासी
नेम धरम व्रत संजम पूजा ऊजळ वरत उपासी
दोउं कर जोड़ कहत है रुकमणि वर पाऊं व्रजवासी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं कृष्ण द्वारका वासी

दंडक— अंबिका पूजबा कंवरी चाली
उमा री भेट पकवान श्रीफळ लियां
वस्त्र भर मोतियां साज थाळी
भवन री पोळ पर आय ठाढी भयी
च्यार लाख संग लयी सुहड़ आली
चहूं दिस झांकती अग्र नै चालती
चतर नार पिया पंथ हाली
भामण्यां में मिली दामणी दीप देख
देख श्रीकृष्ण मोहिबा चाली
मंगळाचार ऊचार सखियां कियो
भेरियां तुरी नीसाण वाजै
मिली दुज़-नार गुर-नार पुर-नार जुत
हरख ऊछाह मन मांह भारी
आपणा धाम सूं निकस आवत भयी
कंवरि का संग की करत त्यारी
सुवा तणा वदन इम नासिका पेखियै
इंद्र ऐरावती चाल चोरी
ढेलणी नागणी भणिजियै ओपमा
केहरी लंक कटि लाय गोरी
सिरीफळ सारिखा उरज, हिवड़ै लसी
सोवनी कंचुकी, चीर झीणो

राजकुमारी अंबिका-पूजन को जायेगी ! रुक्मिणी अंबिका की पूजा करने को चली। वन-राशि फूल रही है। सोलह हजार सहेलियों के दल के साथ ऐसी चली जैसे इंद्रघटा (मेघों की घटा) हो।

जरासंध ने यों कहा—पांच अक्षौहिणी सेना से सवार चढ़ाई करो। काला ग्वाला झपट कर ले जायगा तो मुँह कहाँ दिखाओगे ? तब शिशुपाल ने सुभटों को बुलाया—अविलंब चढ़ाई करो। यह अवसर फिर हाथ नहीं आयेगा। बाद में पछताना पड़ेगा।

नियम, धर्म, व्रत, संयम, पूजा और उज्ज्वल व्रत की उपासना के साथ रुक्मिणी दोनों हाथ जोड़कर अंबिका से कहती है— (ऐसी कृपा करो कि) मैं व्रजवासी कृष्ण को वर के रूप में प्राप्त करूं।

पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—रुक्मिणी ने द्वारिका के निवासी श्रीकृष्ण को वर रूप में माँगा।

कुमारी रुक्मिणी अंबिका पूजने के लिए चली। अंबिका की भेंट के लिए पकवान, नारियल और वस्त्र लिये। मोतियों से थाल को सजाकर रुक्मिणी चार लाख सुघड़ सहेलियों को साथ लिये हुए मंदिर की पोल पर आकर खड़ी हो गयी।

चारों दिशाओं में झांकती हुई और आगे बढ़ती हुई वह चतुर नारी प्रियतम के मार्ग पर चली।

स्त्रियों में मिली हुई वह दामिनी और दीपक सी दीख रही थी। वह श्रीकृष्ण को लक्ष्य करके उन्हें मोहने को चली।

सखियों ने मंगलाचार का उच्चारण किया। भेरी, शहनाइयाँ और नगाड़े बजने लगे। ब्राह्मणों की, गुरुओं की और नगर की—सभी स्त्रियाँ एक साथ मिली। उनके मन में अपार हर्ष और उत्साह भरा था। वे सब अपने घर से निकलकर आयी और राजकुमारी के साथ चलने की तय्यारी करने लगी।

रुक्मिणी की नासिका ऐसी थी मानो सुग्गे की चोंच हो। उसकी चाल ने मानो इंद्र के ऐरावत की चाल को चुरा लिया है।

मयूरी और नागिन से उसकी उपमा दी जा सकती है। उसकी कमर सिंह की कमर जैसी [illegible] रही थी। उसके उरोज श्रीफल सदृश थे, हृदय पर सुनहरी [illegible] शोभित थी। वह झीना ओढ़ना ओढ़े हुए थी।

केस मोती पुया मांग कूंकूं भरी
भाल पर सोहवै दीप वैणो
पहर पट्टोलणी हीर री चोलणी
नार रै लोयणां मिरग हारी
रतन मयि राखड़ी वेणि वासग वणी
वाहरा भुज वरा लंक लोड़ै
सुरग नो चंद्रमा वदन पर पेखियै
चली वर अंगना सगत-मोड़ै
आय जव रुकमणी द्वार ठाढी भयी
असुर सिसपाळ पठियै अपूठै
कृष्ण पण धारि कै जुगल जोड़ी वणी
पदम कै स्वामी कूं नाथ तूठै

धनासरी—अरे रथवान ! रथ हांक दे रे भाई !
किय सिणगार जाय रथ बैठी सूरज किरण सवाई
ज्यूं ज्यूं चितवै ... रुकमणी भूप गिड़द होय जायी
नैंण-बाण तीखा सा लागै घाव काहू कै नांही
पदम कहै रुकमण वडभागण दुरगा पूजण जाही

चरचरी-भोर भयो जद चली है अंबिका पूजण राजदुलारी
सामगरी रा थाळ भराया गंगोदक री झारी
धूप-दीप पुसपन री माळा डोडा लूंग सुपारी
रथ्थां री सागत मंगवायी लीना गयंद हजारी
घुड़लां घूघरमाळ घलायी हसतिन अंबावाड़ी
छोहण पाच सात नव दीनी जुरासंध यूं भासी
काळो ग्वाळ फिरै अभमानी मार झपट ले जासी
रथ पर बैठ रुकमणी चाली मन में सुगन विचारी
बांवो अंग फरूकै म्हांरो मिलसी कृष्णमुरारी
जुरासंध सिसपाळ चढावै संग सुभट अत भारी
चहूं ओर जोधा जोरावर चतुरंगी असवारी
रुकमण भणै, सुणो री देवी ! काटो जम री पासी
दीनानाथ मिलावो मो कूं जलम-जलम थांरी दासी
अेक समै मै जनक-घर होती जनक-सुता कहवाणी

रुक्मिणी के केशों में मोती पिरोये हुए थे और उसकी माँग में कुंकुम भरा हुआ था। ... ... वह हीरक-जटित चोली पहने हुए थी। उस सुंदरी के नेत्रों के आगे मृगों के नेत्र भी हार गये।

माथे पर रत्नों से जड़ी राखड़ी थी। उसकी चोटी वासुकी नाग-सी शोभायमान थी। ... ... स्वर्ग के चँद्रमा को उसके मुख पर देखा जा सकता था। इस प्रकार वह रुक्मिणी शक्ति (अंबिका) के द्वार की ओर चली। रुक्मिणी आकर जब द्वार पर खड़ी हुई तो ... । कृष्ण को पाने की प्रतिज्ञा करनेवाली रुक्मिणी और कृष्ण दोनों की जोड़ी बन गयी। पदम भक्त कहता है कि उसके स्वामी उस पर प्रसन्न हुए।

हे भाई रथवाले! रथ को हाँक दे। शृंगार करके रुक्मिणी रथ में जाकर बैठ गयी। वह सूरज की किरणों से भी विशिष्ट थी। ज्यों-ज्यों रुक्मिणी को देखते है त्यों-त्यों राजा लोग अपना भान भूल जाते हैं। उसके नेत्रों के बाण बड़े तीखे लगते है यद्यपि घाव किसी के नहीं लगते है।

पदम भक्त कहता है कि बड़े भाग्यवाली रुक्मिणी दुर्गा का पूजन करने को जा रही हैं।

जब प्रातःकाल हुआ तो राजदुलारी रुक्मिणी अंबिका का पूजन करने को चली।

उसने पूजन-सामग्री का थाल भरवाया। गंगाजल की झारी ली। धूप, दीप और पुष्पों की माला के साथ-साथ डोडे, लौंग और सुपारी भी उसने साथ मे ली। उसने रथों के साज मँगवाये। हजारी (हजार मूल्य के) हाथी लिये। घोड़ों के गले में घुंघरुओं की मालाएं डलवायीं। हाथियो पर अंबावाड़ी रखवायी। जरासध ने पांच, सात, और नौ अक्षौहिणी सेनाएं देकर यो कहा—काला ग्वाला अभिमानी बना फिर रहा है। वह रुक्मिणी को झपट्टा मारकर ले जायगा।

मन में शकुनों का विचार करके रुक्मिणी रथ पर बैठकर चली—मेरा बाया अंग फड़क रहा है, श्रीकृष्ण अवश्य ही मिलेंगे। राजा जरासंध शिशुपाल को चढ़ाता है। उसके साथ बहुत बड़े-बड़े सुभट हैं। चारों ओर बलशाली योद्धा है और चतुरगिणी सेना सुसज्जित है।

रुक्मिणी कहती है—हे देवी! सुनो। यम के पाश को काट दो। दीनानाथ को मुझसे मिला दो, मै आपकी जन्म-जन्म तक दासी रहूँगी। एक समय मै राजा जनक के घर में उत्पन्न हुई थी और जनक सुता (जानकी) कहलायी थी। उस समय सकटकाल मे आपने भवानी रूप धारण करके मेरे भव-संकट को काटा था।

संकट में भव संकट काटचो धारचो रूप भवानी
काहे कूं मेरै पांय परत हौ हम तुम कहा दुरानी?
दीनानाथ दयाल कृपानिधि चढसी वोर तिहारी
सोळह सहस सहेली सोहै मानूं इन्द्र-घटा सी
घूंघट रा पट खोल दिया जद कोट भाण परगासी
आतर होय रुकमणी बोली काटो जम री फांसी
पदम स्याम सुखदायक नायक वर पाऊं अविनासी

दोहा— रुकमण पूजै अंबका भर मौतियन रो थाळ
मथुरा पाऊं सासरो वर पाऊं गोपाळ

रुक्मिणी की करुणा

सोरठ—भवानी ! म्हांनै नंदनंदन परणाय
कर जोड़ै कर करूं वीनती सुण हो अंबिका माय !
तू कहिजे त्रिभुवन री माता वर दीजै जदुराय
पदम के स्वामी रुकमण सुमन सी पड़ी गोद में जाय

दोहा— हूं अबला थे सबळ हो कहां गया म्हारी वार?
वडा विड़द आगै किया प्रगट वेद विस्तार
ग्राह गह्यो गजराज नै डूब गयी सब देह
सूंड रही वाकी कछू कियो आप सूं नेह

होरी— राखो लाज गुसइयां ! मेरी
जोड़ दळ सिसपाळ आयो असुर अंबिका घेरी
त्रेता जुग में तापस हूवा संग सखा बहुतेरी
तुम तो कहिजो वड विसवासी प्रगट साख जहां तेरी
अंबा ऊपर मारग जोवां जोवां वाट तिहारी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं जलम जलम री तेरी

रेखता—डरी मैं देख कै दाना
कहा तुम देर है काना !
नारद के वचन नहि पायी मिलो वर अंबिका सोई
कहा अै देव है झूठा कै लख अवगुण फिरे पूठा?
कै डाहल संक मन आयी किधौ परवस पड़े जायी?
भरोसो अेक है भारी आवो नै वेग वनमारी !

(देवी ने रुक्मिणी से कहा—) तुम क्यों मेरे पैरों पड़ती हो, तुम्हारे और हमारे बीच कैसा अंतर है? दीनानाथ दयालु और कृपा के सागर हैं। वे तुम्हारी ओर चढ़कर आयेंगे।

रुक्मिणी के साथ सोलह सहस्र सहेलियाँ सुशोभित हो रही थीं मानो इंद्र की घटाएं उमड़ आयी हों। जब रुक्मिणी ने घूंघट के पट को खोल दिया तो ऐसा लगा मानो करोड़ों सूर्य एक साथ प्रकाशित हो गये हों।

रुक्मिणी आतुर होकर बोली—(हे देवी!) यम की पाश को काट दो। पदम भक्त कहता है—रुक्मिणी ने देवी से कहा—श्यामसुंदर कृष्ण सुख देनेवाले नायक है, मैं अविनाशी कृष्ण को ही वर रूप में पाऊँ।

रुक्मिणी मोतियों का थाल भरकर अंबिका का पूजन कर रही है (और उनसे विनती करती है—हे देवी! इतना करो कि) मुझे मथुरा में ससुराल मिले और मैं श्रीकृष्ण को वर रूप में प्राप्त करूँ।

रुक्मिणी की करुणा

(रुक्मिणी कहती है—) हे भवानी! मुझे नंदनंदन श्रीकृष्ण से ब्याहो। मैं हाथ जोड़कर विनती करती हूँ, हे अंबिका माता! सुनो। तुम तीनों लोगों की माता कही जाती हो, मुझे यदुराज श्रीकृष्ण को वर रूप में दो। पदम भक्त कहता है—हे स्वामी! रुक्मिणी देवी की गोद में जाकर पुष्प की भाँति जा गिरी।

(रुक्मिणी अब श्रीकृष्ण से कहती है—) मै अबला हूँ और तुम सबल हो। मेरी बारी में कहाँ चले गये? आपने तो पहले बड़े-बड़े यश के कार्य किये है जो वेदों में विस्तृत रूप से वर्णित है। गजराज को जब ग्राह ने ग्रस लिया और सारी देह जल में डूब गयी और थोड़ी-सी सूंड़ बाहर रही तब उसने तुमसे नेह लगाया (तुम्हारा ध्यान किया)।

हे स्वामी! मेरी लाज रखो। शिशुपाल दल को इकट्ठा करके आया है। उस असुर ने अंबिका के मंदिर को घेर लिया है। तुम त्रेता-युग में (राम के रूप में) तपस्वी बने थे (तापस का वेश बनाया था), तब साथ में बहुत से सखा थे। तुम तो बड़े विश्वसनीय कहे जाते हो, सब-कही तुम्हारी साख प्रकट है। हम अंबिका के मंदिर पर मार्ग जोह रही है, तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ, रुक्मिणी कहती है कि हे कृष्ण! मैं जन्म-जन्मांतर में तुम्हारी ही हूँ।

मैं दानवो को देखकर डर गयी। हे कन्हैया! तुम्हें देर कैसे हो रही है? ... ... क्या ये देव झूठे है या मेरे अवगुणों को देखकर लौट गये है? या फिर उनके मन में शिशुपाल का भय उत्पन्न हो गया है, अथवा वे कही जाकर परवश हो गये हैं? हे वनमाली! वस,

अंबका पूजणै आयी दिखै नहिं नैण जदुराई
अवस्सर फेर ना पावो पदम रा नाथ ! अब आवो

रेखता—दरस विन बहोत उकळाती विरह रा बाण ज्यूं खाती
क जरदी रंग तन हूवा जपू तुझ नाम ज्यूं सूवा
हमारी लाज अब तोकू बहोत दुख हो रयो मोकूं
सिला गज गीध तैं तारचा केसी अर कंस कूं मारचा
आयी क्यूं लाज अब प्यारे ! देख दळ दैत के भारे
अबै हर ! वेग तुम आवो मोकूं अब दर्स दिखलावो
कहा अब जायगो मेरो लजैगो विड़द ही तेरो
भींव तुम कूं वतायो है तुम्हीं सूं ध्यान लायो है
सुणो अब वीनती मोरी रहूं तुम चरण री चेरी
पदम है दास जन तेरो रखो मोय चरण रै नेरो
विथा क्यूं देत हो मन कूं मिलो प्रभु वेग रुकमण कूं

देस— माधोजी आयां ही राज ! सरै
बहु सखियन विच राजकुमारी, विलखी वदन फिरै
सठ रुकमइयो कयो न मानै कूड़ी साख भरै
जळ में राख अगन में राख्यो नरसंघ रूप धरै
बळि राजा रै भवन पधारचा बावन रूप धरै
भारथ में भंवरी रा ईडा घंटा टूट परै
जहां जहां भीड़ पड़ी भगतन में रिछ्या आय करै
वानै री पत राख सांवरा ! रुकमण अरज करै
पदम रा स्वामी! आण बुझावो हिरदै अगन जरै

विहाग—सांवरा ! क्यूं न लयी सुध मेरी ?
गज अर ग्राह लड़चा जळ भीतर काटी गज री बेड़ी
भारथ में भंवरी रा ईडा गज़ री घंटा गेरी
अैसी चूक कहा पड़ी मो में असुर अंबिका घेरी
दास पदम पर किरपा कीज्यो जलम-जलम री तेरी

छंद— रुकमणी पट दूर कीनो सेन सब मुरछित भयी
आव दीनानाथ जादू ! इण अवसर पाऊं सही

दोहा— दिस्ट बांध हरि दूर सूं लखै नहीं नर नार
पैज वधावण भगत री लियो कृष्ण अवतार

तुम्हारा ही एक बड़ा भरोसा है, तुम जल्दी आओ न ! मैं अंबिका पूजने के लिये आयी हूँ। यदुराज श्रीकृष्ण आँखों से दिखाई ही नहीं पड़ते। हे पदम भक्त के स्वामी ! ऐसा अवसर फिर नहीं पाओगे। अब आओ।

तुम्हारे दर्शनों के विना बहुत व्याकुल हो रही हूँ, विरह के वाण-से खा रही हूँ। मेरा तन जर्द रंग का हो रहा है। तुम्हारे नाम को सुग्गे की तरह जप रही हूँ। हमारी लाज अब तुम्हीं को है, मुझे बहुत दुःख हो रहा है। तुमने शिला (अहिल्या), गज (गजेंद्र) और गीधराज जटायु को तारा और केशी तथा कंस को मारा। हे प्रिय ! अब दैत्य के बड़े भारी दल को देखकर लाज कैसे आ गयी ? हे हरि (श्रीकृष्ण) ! तुम शीघ्र आ जाओ। मुझे अब दर्शन दो। मेरा तो अब क्या जायेगा, तुम्हारा ही विरुद लजायेगा। पिता भीष्मक ने तुम्हीं को बतलाया है। तुम्हीं से ध्यान लगाया है। अब मेरी विनती सुनिये। तुम्हारे चरणों की दासी बनकर रहूँगी। पदम भक्त कहता है कि मैं आपका दास हूँ, मुझे अपने चरणों के समीप रखिये। हे प्रभो ! रुक्मिणी के मन को व्यथित क्यों कर रहे हैं, उससे शीघ्र मिलिये।

हे माधव ! तुम्हारे आने से ही कार्य सिद्ध होगा। बहुत सारी सखियों के बीच राजकुमारी रुक्मिणी उदास चेहरा लिये फिरती है। दुष्ट रुक्मइया कहना नही मानता है, झूठी गवाही दे रहा है। तुमने नृसिंह का रूप धारण किया और भक्त प्रह्लाद की जल से रक्षा करके फिर अग्नि से रक्षा की। वामन का रूप धारण करके तुम राजा बलि के घर (भवन) में पधारे थे। महाभारत के युद्ध में भ्रमरी के अंडे थे जिनकी रक्षा के लिए (तुम्हारी कृपा से हाथी के गले का) घंटा टूटकर गिर पड़ा। जहाँ भी भक्तों पर आपत्ति आयी, वहीं तुमने आकर रक्षा की। हे सांवरे ! रुक्मिणी विनय करती है कि अपने स्वरूप की प्रतिष्ठा को रखो। पदम भक्त कहता है—रुक्मिणी कहती है कि हे स्वामी ! हृदय में आग जल रही है, तुम आकर उसे बुझाओ।

हे सांवरे! तुमने मेरी सुधि क्यों नही ली ? गज और ग्राह जल के भीतर लड़े तो तुमने गज की बेड़ी को काटा। महाभारत के युद्ध में भ्रमरी के अंडे थे जिनपर तुमने हाथी का घंटा गिरा दिया। मुझसे ऐसी क्या भूल हो गयी जो असुर ने मुझे अंबिका के मंदिर में घेर लिया। पदम भक्त कहता है—हे स्वामी ! अपने दास पर कृपा कीजिये—रुक्मिणी ने श्रीकृष्ण से निवेदन किया कि मैं जनम-जनम से तुम्हारी हूँ।

तब रुक्मिणी ने घूंघट के पट को हटाया। जब उसने ऐसा किया तो सारी सेना मूर्छित हो गयी। (तब उसने कृष्ण को पुकारा)—हे दीनों के नाथ यदुनाथ ! आओ। इस अवसर पर आपको निश्चित रूप से प्राप्त

रुकमणी-हरण

वरवो--मुकट री झांई पड़ी

अंबका रै मिदर रै मांय मुकट री झांई पड़ी
आया हरिजी साय करण कूं इंछ्या - फळ - दातार
पूज अंबका बाहर निकसी सीतळ निजर निहार
अंचरा रा पट दूर किया जद दुस्ट गया सब हार
रथ चढिया जादूपत आया हूवा जै - जैकार
दोऊं दळ कुनणापुर भेळा भूप रह्या मुरझाय
हळधर सिरसा जानी आया भीसम सीस नवाय
जादूपत रथ सूं ऊतरिया लांबी भुजा वधाय
भुजा पकड़ कै लयी रुकमणी लयी विमाण बिठाय
रुकमण हर रा दरसण कीना मुगती - फळ - दातार
दास पदम यूं वीनवै दानां करो संघार

धनासरी-दौड़ो, दौड़ो रे! गवाळचो लीयां जाय

राय जुरासंध और दंताधर साम्हा झेलो आय
कंवर रुकमइयो यूं उठ बोल्यो कुळ रो धरम घटाय
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं भीसम सीस निवाय

धनासरी- रुकमण लेय गयो नंदलाला
झख मारो सिसपाळा
महंदी लागी रही सिसपाळा
सेंहरो बांध्यो रह्यो सिसपाळा
काजळ घाल्यो रह्यो सिसपाळा
कांकण बांध्यो रह्यो सिसपाळा

त्रिभुवनपत री करी बराबर चाल्यो चाल कुचाला
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं तीन लोक प्रतिपाळा

जंगलो—ले गयो रुकमणी हर कै
वंसीवारो जादू कर कै

लाख न्रपत री चौकी ठाढी ले गयो बहियां पकर कै
सुण सिसपाळै करी चढाई भूप उठ्या सब भर कै
जुरासंध सा जोधा चढिया धनस-बाण कर धर कै
कृष्ण गवाळ भाग नहिं जावै वेगो लावो पकर कै

करूँ। श्रीकृष्ण ने दूर से ही लोगों की दृष्टि को बांध दिया। नर-नारी कोई भी देख नहीं पा रहा था। भक्त की प्रतिज्ञा को बधाने के लिए श्रीकृष्ण ने अवतार लिया था।

रुक्मिणी-हरण

मुकुट की झलक दिखायी पड़ी। अंबिका के मंदिर के भीतर मुकुट की झलक दिखायी पड़ी। मनोवांछित फल के देनेवाले हरि सहायता करने को आये। अंबिका का पूजन करके जब रुक्मिणी मंदिर से बाहर निकली तो उसने श्रीकृष्ण को शीतल आँखो से देखा। आंचल के पट को जब दूर किया तो सारे दुष्ट हार गये। रथ पर चढ़कर यादवपति आये, जयजयकार होने लगा।

दोनों दल कुंदनपुर में एकत्र हुए। राजा लोग मुरझा गये। हलधर-सरीखे बराती आये जिन्हें राजा भीष्मक ने शीश नवाया। यादव-पति कृष्ण ने रथ से उतरकर अपनी लंबी भुजाओं को बढ़ाया। उनने भुजाओं से पकड़कर रुक्मिणी को खीच लिया और विमान (विशेष प्रकार के रथ) में बिठा लिया। रुक्मिणी ने मुक्ति-रूपी फल के देनेवाले श्रीहरि के दर्शन किये।

पदम भक्त यों विनती करता है— हे स्वामी! दानवों का संहार कीजिये।

अरे! दौड़ो, दौड़ो—ग्वाला रुक्मिणी को लिये जा रहा है। जरासंध और दंताधर दोनों राजा सामने आकर भार झेले। कुमार रुक्मकुवर उठकर यों बोला—कुल का धर्म (गौरव) घटा रहा है। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— राजा भीष्मक ने शीश नवाया।

नंद का पुत्र रुक्मिणी को ले गया। अब शिशुपाल झख मारे। शिशुपाल के मेंहदी लगी ही रही। वह सेहरा बांधे ही रहा। काजल डाले ही रहा। उसने त्रिभुवनपति की बराबरी की और कुचाल चाल चला। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—श्रीकृष्ण तीनों लोकों के प्रतिपालक है।

वंशीवाला श्रीकृष्ण जादू करके रुक्मिणी को हर ले गया। लाखों नृपतियों का पहरा लगा था, फिर भी वह बांह पकड़कर ले गया। शिशुपाल ने यह सुनकर चढ़ाई की। सारे राजा भड़ककर उठे। जरासंध-जैसे योधा धनुष-बाण हाथ मे लेकर चढे। ग्वाला कृष्ण कहीं भाग न जाये, उसे जल्दी से पकड़कर लाओ! बड़े-बड़े राजाओं के सिर पर पाँव

वडा-वडा राजन सिर पग धर ले गयो लपट-झपट कै
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वार-वार जादू-वर कै

१०—युद्ध

दोहा— लछमीपत लछमी लयी देवी तणै दिवाण
खवर भयी सिसपाळ नै हुयी पिलाण पिलाण
ढोल दमामा वाजिया कसिजण लागा वाण
सूरां रळी-वधावणा कायर तजै पिराण
झालर वाज्यां हरि-भगत रण वाज्यां रजपूत
इतनी सुणकर उड चलै आठूं गांठ कपूत
गळियारै वंका फिरै गैंद फूल ढळकाय
जद रण वाजै लोह रा सूर-वीर थरराय
सूरां रा घर सिखर है वाजै अनहद तूर
सार वहंतां परखियै बै कायर बै सूर
और राग सब रागणी सिंधूड़ो सुलतान
सिंधू जदी अलापियै घुड़लां पड़ै पिलाण
धीरो रह रे ग्वाळिया ! आव पहूंती आय
मही नहीं गोकळ तणो चोर चोर नै खाय

दंताधर का युद्ध

मारू— बाळपणा री बाण न भूलो चोर-चोर दधि खातो
आ तो किसी कुंज री गोपी बांह पकड़ ले जातो
धूजी धरा, सेस-धर कंप्या चहुं दिस माच्यो चाळो
माथैं हीस पड़ी घुड़लां रै चढचो राव सिसपाळो
सेना चढी देख दूल्है री राव परेरा पोलै
सेवग छतां स्याम क्यूं झालै यूं दंताधर बोलै
दळभंजण राजा यूं बोलै ऐसी वात कांइ भारी ?
माखण-चोर गवाळ रै ऊपर आप करो असवारी
देखो हाथ ठाट मरदां रा म्हे भारथ में जावां
रुकमण-सहित पकड़ भिड़वाळचो आण निजर गुदरावां

रखकर लपक-झपककर रुक्मिणी को ले गया। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके यदुपति श्रीकृष्ण के बार-बार पैरों लगता हूँ।

१०—युद्ध

लक्ष्मी के पति श्रीकृष्ण ने अंबिका के मंदिर में लक्ष्मी (रुक्मिणी) का हरण किया। शिशुपाल को यह खबर मिली त्योंही सर्वत्र यह पुकार होने लगी कि पलाण कसो, पलाण कसो (चढ़ाई की तय्यारी करो)।

ढोल और दमामे बज उठे और वाहन (घोड़े आदि) कसे जाने लगे। शूर-वीरों के आनंद-बधाइयाँ होने लगीं; और कायर प्राणों को त्यागने लगे।

झालर बजने पर हरि-भक्त, और रण के बाजे बजने पर राजपूत (क्षत्रिय) यदि उठकर चल दे (दूर चले जायँ) तो वे आठों गाँठ (पूर्ण रूप से) कपूत (निकम्मे) हैं।

हाथियों पर ढालें ढलकती हैं, बाँके लोग गलियों में घूमते हैं। जब युद्ध के नगाड़े बजते है, (या; जब युद्ध में लोहा बजता है) तो शूर-वीर भी काँप उठते है।

शूरों के घर शिखर पर होते हैं जहाँ अनाहत नाद बजता है। तलवार चलने पर ही परीक्षा होती है कि कौन कायर है और कौन शूरवीर।

दूसरे सब राग रागिनियाँ है, सिंधू राग (युद्ध का राग) सब का राजा (सब में श्रेष्ठ) है। सिंधू राग तभी अलापा जाता है जब घोड़ों पर पलाण पड़ते है (जीन कसे जाते है)। अरे ग्वाले! धीमा रह। तुम्हारी मृत्यु आ पहुँची है। यह गोकुल का मक्खन नही है जो चुरा-चुराकर खाता था।

दंताधर का युद्ध

बचपन की आदत को भूला नही है जब दही चुरा-चुराकर खाता था। यह किसी कुंज की गोपी नही है जिसे बाँह से पकड़कर उठा ले जाता था। जब राजा शिशुपाल चढ़ा तो पृथ्वी काँपने लगी, शेषनाग डगमगा उठे और चारों दिशाओं में हलचल मच गई। घोड़ों के सिर पर हींस पड़ी। राजा शिशुपाल चढ़ा। दूल्हे की सेना को चढ़ते देखकर दूसरे राजा लोग पोल पर पहुँचे। राजा दंताधर ने यों कहा—सेवक के होते हुए स्वामी क्यों युद्ध का भार झेलते हैं (उठाते है)? दल का भंजन करनेवाले राजा दंताधर ने इस प्रकार कहा—ऐसी क्या भारी बात है जो मक्खन चुरानेवाले ग्वाले के ऊपर आप सवारी (चढ़ाई) कर रहे है? आप मर्दो के हाथ और ठाट देखिये, हम युद्ध में जा रहे है। ग्वाले को

लोचन रकत-धुमर कर चढिया हूवा बाण-टंकारा
नेजा फरकै, भू भय कंपै दरस्या काळ-दुवारा
ओझड़ झड़ सिंधू थिर साळिया भै नव खंडां जाणी
उकळी झाळ अगन जद ऊठी रवि तांई रामाणी
फौजां सिरै फौज रो लाडो पाखर सेल संभावै
बीड़ा दचो दळनायक राजा! जादू जाण न पावै
दाना लिख भेजै हळधर सूं वहीर मती हुय जाज्यो
ओ अवसर भाजण रो नाही सनमुख जुध में आज्यो
लख-संधाणी अरजन बोलै म्हे तो सिलह संवारी
थे दळनायक आघा आवो म्हारै सब ही त्यारी
सेनापत केसौ पै आया बीड़ा झेल अगवाणी
सनमुख हुय कर मसतक मेलां डाहल दळ म्हे जाणी
केसौराय कहै देवां सूं अब कै वेर तिहारी
सार संभावो, जुध में जावो होसी फतै तुमारी
वजत म्रदंग, मनो घन गरजै सावकरण यूं छूटा
सहस अठ्यासी रिख्यां तणा दळ नेमनाथ रै पूठा
वामै नेमनाथ दळ सोहै दाणै लख-संधाणी
छपन कोट जादू ले लारै हळधरजी अगवाणी
भिन-भिन तणा अरावा छूटचा हुयी भाड़ री धाणी
रोस भरचा दाना ओलरिया मची रावणां घाणी
रावा चंद सूर नहिं सूझै निस वासर गम नांही
देवां दळ दाना ओलरिया महापरळै री नांई
ओळां ज्यूं गोळा ओसरिया मार पड़ी दर हल्लां
नायक मंड्या राव डाहल रा होदां कर दिया चल्लां
फरचट घणी तीर ओसरिया सेल गदा गुपतानी
चक्र बांध कै रण-भूमी में परतक लड़ै भवानी
ओझड़ झूप झड़ापड़ माची अगन वाण संपाडै
धूजी धरा, धमाधम माची मंड गया मल्ल अखाड़ै
सरस लड़ै संग्राम सूरवां डाहलिया रै जानी
छळ रा जुध्ध करै महमंता चक्र वहै असमानी
बेटो दम्मघोस राजा रो कुंभकरण ज्यूं ऊठचो
कहै पदम देवां रै बाणां जैसें वरखा वूठचो

रुक्मिणी के समेत पकड़कर आपके आगे ला उपस्थित करेंगे। आँखें लाल-चोल करके वे चढ़े। वाणों के टंकार होने लगे। झंडे फहराने लगे। पृथ्वी भय से काँप उठी। यमराज के द्वार दिखाई पड़ने लगे। शस्त्रों की गहरी झड़ी लग गई। स्थिर समुद्र सलसला उठे। नौ खंडों ने भय माना। अग्नि उठी, ज्वालाएँ जलने लगीं। सूर्य (के मंडल) तक ... ।

सेनाओं के ऊपर सेनाओं का पति था जो कवच और भालों को सँभाले हुए था। (उसने कहा—) हे दल के नायक राजन्! बीड़ा दो। यादव जाने नहीं पावे। दानवों ने हलधर के पास लिखकर भेजा कि विदा मत हो जाना। यह अवसर भागने का नहीं है, युद्ध में सामने आना। लक्ष्यवेधी अर्जुन ने कहा—हमने तो शस्त्र सजा लिये हैं। दल के नायक, आप लोग आगे आइये। हमारे सब प्रकार की तय्यारी है। सेनापति बीड़े ग्रहण करके, आगे होकर केशव के पास आये। (और बोले—) हमने शिशुपाल के दल को जान लिया है, हम उसके सामने आकर अपने मस्तक रख देंगे।

केशव ने देवों से कहा—अबकी तुम लोगों की बारी है। शस्त्रों को सँभालो और युद्ध में जाओ। तुम्हारी विजय होगी। मृदंग वज रहे थे मानो बादल गरज रहे हों। श्यामकर्ण घोड़े छूटे। अठासी सहस्र ऋषियों का दल नेमिनाथ के पीछे चला। बायीं ओर नेमिनाथ का दल शोभित था और दाहिनी ओर लक्ष्य-संधायक अर्जुन थे। छप्पन कोटि यादवों को अपने पीछे (साथ) लेकर हलधर आगे चले।

भाँति-भाँति के अराबे (गाड़ियों पर रखी हुई तोपें) छूटे। रोष से भरे हुए दानव उमड़ पड़े। गगन-मंडल में अंधकार छा गया। घमासान युद्ध मच गया। आकाश में चंद्रमा और सूर्य दिखायी नहीं पड़ रहे थे, रात और दिन का पता नहीं लगता था। देवताओं के दल पर दानव महाप्रलय की भाँति उमड़ पड़े। ओलों की तरह गोले वरस पड़े, मारकाट मची। सेना में हल्ला हुआ। राजा शिशुपाल के सेनानायक सजकर सामने आये। उनने हौदों को आगे बढ़ा दिया। ... ... वाण वरसने लगे। भाले, गदा और गुप्ती चलने लगे। चक्र बांधकर भवानी रणक्षेत्र में प्रत्यक्ष होकर लड़ रही थी।

शस्त्रों की झड़ी लग गयी। झड़ाफड़ मच गई। अग्नि-बाण छूटे। पृथ्वी कांप गई। धम-धम होने लगी थी। मल्ल अखाड़े में उतर गये। शिशुपाल के बराती शूरवीर बहादुरी के साथ संग्राम कर रहे थे। वे मतवाले छलमय युद्ध करते थे। आसमानी चक्र चल रहे थे।

दमघोप राजा का बेटा दन्ताधर कुंभकरण की तरह उठा। पदम भक्त कहता है कि देवों के वाण ऐसे गिर रहे थे जैसे वर्षा वरस रही हो।

दोहा— चौक दिसा दळ वंधिया वाजै संख सु नाद
देवां दळ सिंधू हुवा मानो इंद्र अग्राज

वंताधर का जूझना

मारू— इंद्र अग्राज, गिगन रज लागी छिप गया चंद अर भाणा
लंका-कोट राम-दळ लागा वै दळ वै सहनाणा
रामचंद्र-अवतार कृष्ण है लछमण है वळ-राजा
किसकंधा केसव पंडव रै वाजै नौवत वाजा
धीरी नांहि धरै महमंता जादू मल्ल अखाड़ै
सतरा वार रो वदळो मांगां अवकै धरां पंवाड़ै
चढ संग्राम सतावी आया स्याम तणा दळ केवा
दंतराय दावानळ दाना लिया सांकड़ै देवा
जद किलकार उठ्यो वनवारी स्याम सुधारण काजा
अरजन आण चौहटै घेर्‌यो दंतधरा रो राजा
गदा चक्र तिरसूळ भळक्कै खड़गां तीर कवाणी
रौदर हुवा राकसां वींध्या सिंघ रूप यूं जाणी
काळ कंठ हुय काळ चमंक्या सर सायर भय मानी
देव चढ्या, धौळागिर कंप्या संक डाहलियै मानी
सुर-दळ चढ्या, असुर-दळ कंप्या सावंत सूर सुभेळा
अरजन कहै, दिलीपत राजा! करो डाहलां मेळा
नव नाथां चौरासी सिध्धां काळ वाण संभाळै
हळधरजी हथियार संभावै हळ-मूसळ कर झालै
छोहण अेक अेक हळ मांही हळधरजी संघारै
दाना आय पड़्या धरणी में भाभी-वचन विचारै
धोंकळ धस्या भीम भारथ में मंड गया हाथ्यां मांही
मोड़ै सूंड, वगावै हाथी खोज मंड्या रिव तांई
लख-संधाणी अरजन जोड़ै वाणां तणा चपेटा
विझड़ गया डाहल महमंता सूरज-किरण सिकोटा
सहस अठ्यासी रिख्यां तणा दळ मच्या वाण घमसाणा
हौदा आय पड़्या डाहल रा नेमनाथ रै वाणां
फौजां सिरै फौज रो लाडो पाखर सिलह संवारी
राजा जूझ पड़्यो धरणी में दंतधरा रण भारी

चारों दिशाओं में सैन्यदल छा गये। नाद के साथ शख बज रहे थे। देवताओं के दल में सिंधू राग हुआ मानों इंद्र की गर्जना हो रही हो।

दंताधर का जूझना (युद्ध में मारा जाना)

मानो इंद्र गरज रहा था, धूलि आकाश से जा लगी और चंद्र और सूर्य छिप गये। ऐसा जान पड़ता था मानो लंका के दुर्ग पर रामचंद्र के दल लग गये हों। वे ही सैन्य दल थे, वे ही निशानियाँ। कृष्ण रामचंद्र के अवतार है और उनके छोटे भाई बलराम लक्ष्मण हैं। किष्किधा में केशव और पांडवों के नौबत के बाजे बज रहे है। मतवाले यादव रूपी मल्ल युद्धभूमि रूपी अखाड़े में धीरज नहीं धर रहे थे (अधीर हो रहे थे)। वे कह रहे थे—*हम पहले के सत्रह बार का बदला माँगते हैं, अबकी बार* उन्हें ... पर रख देंगे।

श्याम के दल सवार होकर युद्ध में शीघ्रता से आये। दावानल के समान दानव राजा दंताधर ने देवताओं को संकट में घेर लिया। तब बनवारी श्याम कार्य को सुधारने के लिए किलकार करके उठे। अर्जुन ने आकर दंतधरा राजा को (दंताधर को) चौराहे पर घेर लिया। गदा, चक्र, त्रिशूल, खड्ग और तीर-कमान चमक रहे थे। रौद्ररूप धारण करके उनने राक्षसों को बींधा। वे सिंह के समान लग रहे थे।

... ... । सरों ने और सागरों ने भय माना। देवता चढ़े। धवलगिरि काँप उठा। डाहलराज शिशुपाल ने शंका खायी। देवताओं के दल चढ़े। असुरों के दल काँप उठे। सामंत और शूरवीर एकत्र हो गये। अर्जुन ने युधिष्ठिर से कहा—हे दिल्ली (इंद्रप्रस्थ) के राजा! शिशुपाल के सैन्य से भिड़ंत कीजिये।

नौ नाथों और चौरासी सिद्धों ने काल जैसे भयंकर बाणों को सँभाला। हलधर ने शस्त्रास्त्र सँभाले और मूसल हाथ में लिये। हलधर हल के एक-एक प्रहार में एक-एक अक्षौहिणी सेना का संहार करने लगे। दानव आ-आकर धरती पर गिरने लगे। वे भाभी के वचनों को याद करने लगे। महाबली भीम युद्ध में उतरे और हाथियों में जा भिड़े। वे हाथियों की सूंड़ मरोड़ते और उन्हें फेंक देते। उनके निशान सूर्य तक बन गये। लक्ष्य का संधान कर अर्जुन ने बाणों के आघात किये जिससे अभिमानी डाहल के लोग बिखर गये जैसे सूरज की किरणों से शीत के कोट (कुहरे) बिखर जाते है। अठासी सहस्र ऋषियों के दल ने बाणों का घमासान मचाया। नेमिनाथ के बाणों से डाहल शिशुपाल के हौदे पृथ्वी पर आ गिरे।

सेनाओं के शिरोमणि सेनानायक ने कवच और भाले सजाये। प्रचंड

राजा पड़िया, रण खंभ वाज्या फतै जादवां पायी
हाथ खपर तिरसूळ लियां रण-खेत जोगणी आयी
जोधा मिल्या राव डाहल रा आवध फेर ज झालो
ओ अवसर जीतण रो नांही चंदेरी नै चालो
हारया फिरै राव डाहलिया जीत्या है व्रजवासी
कहै पदम इण राव डाहल री हुयी जगत में हांसी

दोहा—
खबर हुयी सिसपाळ नै दंताधर पड़ साथ
छोहण पांचूं खप गयी खेत जादवां हाथ
बंधू मरतां विगड़ गी सभी जान री ब्हार
मेल चल्यो कुनणापुरी भाभी तणो सिंगार
रोस भरयो सिसपाळजी लोचन लाल गुलाल
वैर वहोड़ूं दंत रो तो राजा सिसपाळ
दारू देवा कर रह्यो भुजा पटक्कै दूत
चुग-चुग मारूं जद्दवां (तो) दमघोस रो पूत
कै मरबो कै मारबो मरबो अेक हि वार
मेल चल्या कुनणापुरी भाभी तणो सिंगार
बंधू पड़तां जान री उतर गयी सब ब्हार
भाभी हंदा बोलणा नीकळ गया दुसार
हांसी हुइ तिहुं लोक में स्रवण सुणी डाहाल
सैनन तें विनती करै ध्रिक ध्रिक कह सिसपाळ

शिशुपाल का युद्ध

ध्रिक ध्रिक है सिसपाळ हलाहल झूठा बाण संभावै
भुजा पटक्क उठ्यो भिड़दानो फूल्यो अंग न मावै
देखो आज केहड़ी करहूं वैर दंत रो सारूं
कण-कण दळ कर द्यूं भिड़वाळचां सायर लग सिंघारूं
चक दळ लपट-झपट चहुं ओरां रोक्या पंथ चफेरा
देवी मांसूं लेकर भागो अब पड़ जासी वेरा
भारथ भाव भेद सूं कीजो दानां बुध्ध सिखायी
छळ कै जाय भाज भिड़वाळचा या रै लाज न काई
सतरा वार भाग गयो आगै या की कौण वडाई
अब कै करूं काळ सूं मेळा निकस जाय गुमराई

राजा दंताधर रण में जूझकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। राजा के गिरने पर रण-खंभ बजे। यादवों ने विजय प्राप्त की। हाथों में खप्पर और त्रिशूल लेकर योगिनियाँ रणक्षेत्र में उतरी।

राजा शिशुपाल के योधा मिले (परस्पर विचार किया—) आयुध फिर सँभालेंगे। यह अवसर जीतने का नहीं। अव चंदेरी की ओर चलो।

डाहल के राजा हारे हुए फिर रहे है। ब्रजवासी कृष्ण जीत गये हैं। पदम भक्त कहता है—इस डाहल-राजा (शिशुपाल) की जग में हँसी हुई। शिशुपाल को समाचार मिला कि दंताधर भी अन्य राजाओं के साथ युद्ध-भूमि में गिर गया है, पाँच अक्षौहिणी सेना समाप्त हो गयी है और यादवों की विजय हुई है। भाई के मरते ही बरात की सारी बहार विगड़ गयी। भाभी के शृंगार को कुंदनपुर में छोड़कर जा रहा है।

शिशुपाल रोष से भर गया। उसकी आँखे गुलाल-सी लाल हो गयी। (उसने कहा—) यदि मै दंताधर का वैर लूँ तभी मैं राजा शिशुपाल हूँ। उसने भुजाएं पटकी, दारू (मद्य) देने के लिए कहा। (और कहा—) यादवों को चुन-चुनकर मारूं तो मैं दमघोष का पुत्र हूँ।

या तो मरना या फिर मारना, मरना तो एक ही बार है। भाभी का शृंगार कुंदनपुर में छोड़कर चल रहे है! भाई के गिरते ही बरात की सारी वहार मिट गयी। भाभी के वोल भाले की भाँति कलेजे के पार निकल गये। तीनों लोकों में हँसी हुई। उसे शिशुपाल ने कानों से सुना। लोग इशारों में बातें करते है। सब शिशुपाल को धिक्-धिक् कहते हैं।

शिशुपाल का युद्ध

लोग कहते है— विषभरे शिशुपाल को पूर्ण रूप से धिक्कार है। वह झूठे ही बाण सँभाल रहा है। इस पर वह दानव भुजा पटक कर उठा। वह शरीर में फूला नहीं समा रहा था। देखना, आज कैसी करता हूँ। दंताधर का वैर लेता हूँ। ग्वालों के दल के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा, समुद्र तक उनका संहार कर दूंगा। चक्रदल के साथ चारों ओर लपट-झपटकर चारों ओर के मार्ग रोक दिये। देवी के मंदिर से (रुक्मिणी को) लेकर भागा है। अब मालूम पड़ जायेगा। दानवों ने बुद्धि सिखायी कि युद्ध भेद को समझकर करना। ग्वाला कही छल करके भाग न जाय। इसके किसी प्रकार की लाज नही है। यह सत्रह बार पहले भी भाग चुका है, इसकी क्या वड़ाई है? अवकी वार इसे काल से मिला

हलहल कर सिसपाळो हलक्यो ठेल दियो भिड़दानो
कूद पड़्यो देवां दळ ऊपर बाग छोड मरदानो
हाथी ठेल दिया भारथ में मेली अंबा वाड़ी
तिण रै मांहि छत्रपति राजा सूरज किरण संभारी
वाजै नाद भुजा फुरकंती जालम धनस चढायो
कान्ह-कान्ह करतो सिसपाळो देव तणा दळ आयो
धूजी धरा अर अंबर दोऊं बखतर वाण कुमेरा
वकतर पहर मंड्यो सिसपाळो लागी लाय सुमेरा
कुंजर रह्या देवां दळ मांही घाव घणेरा घालै
सबळ तेज सिसपाळ बळी रो नाथ विना कुण झालै ?
संक्या भयी दिवाणां मांही पारब्रह्म परचायो
सुर-गुर भीड़ पड़ी जब सिख में परम धाम सूं आयो
व्रसपत कहै देव कूं ध्यावो और उपाव न कोई
लंका बंध किया तेतीसूं यो दानो है सोई
सबै देव असतूत करत है स्याम हि स्याम पुकारो
धनस धार करुणा कर ऊठ्यो पदम तणो आधारो

दोहा— बुध्ध भणै, व्रसपत गुरू मो सिर मोटो दाव
अै तीनूं जंग झालसी रिख, पंडव, बळराव
भीम भणै कुंती सुतह ओ दळ देस्यां मोड़
पीठ दिखावां स्याम नै लागै मोटी खोड़
सार संभावो सूरवां ! घण साथां बहु ठट्ट
दावानळ सिसपाळ पर बै पांडू गहगट्ट
पांडू दळ सिंधू हुवा साको विद्रम देस
छरा लगत है पंडवां दिल्ली दीप नरेस
दुख-भंजण भय-भंजणा व्रसपत कहत वणाय
दानां देव भिड़ाय कै सूतो लंक लगाय

मारू— सारंग धनस साज वनमाळी सुर-नर सबै बुलाया
पाट-पती परतंग्या पूरण हंस-हंस कंठ लगाया
चिंता तजो देव दळनायक ! धवळ छत्र सिर धारूं
केवळ कंद करूं असुरां को भगतां भार उतारूं
तड़भड़ हुयी, तंतका वाज्या नेमनाथ-दळ मांही

दूँगा। सारी शेखी निकल जायगी। हलहल करता हुआ शिशुपाल चला। दानव ने ठेल दिया। वह मरदाना बाग-डोर छोड़कर देवों के दल पर कूद पड़ा। युद्ध में हाथियों को ठेल दिया जिनके ऊपर अंबाबाड़ी रखी हुई थी, जिनके भीतर छत्रपति राजा बैठे थे जिनके तेज को देखकर सूरज की किरणों का स्मरण हो आया।

बाजों का नाद हो रहा था, भुजाएं फड़क रही थीं। जालिम शिशुपाल ने धनुष चढ़ाया। वह कान्ह-कान्ह करता हुआ देवों के दल में आया। पृथ्वी और आकाश दोनों काँप गये। ... ... कवच पहनकर शिशुपाल युद्ध के लिए सजा मानो सुमेरु पर्वत पर आग लग गयी।

देवताओं के दल में जो हाथी थे उनके अनेक घाव लगा रहा है। प्रबल प्रतापी शिशुपाल के सवल तेज को स्वामी (कृष्ण) के बिना कौन सहन करे? देवों में जब भय व्याप्त हुआ तो परब्रह्म ने चमत्कार दिखाया। जब शिष्य में विपदा पड़ी तो देवगुरु बृहस्पति परमधाम (स्वर्ग) से आया। बृहस्पति ने कहा—देव (कृष्ण भगवान्) का ध्यान करो। दूसरा कोई उपाय नहीं है। यह वही दानव है जिसने तेतीस कोटि देवों को लंका में कैद कर रखा था। सब देवता स्तुति करने लगे। वे निरंतर श्याम-श्याम पुकार रहे थे। तब पदम भक्त का आधार (आश्रय) करुणापूर्वक धनुष धारण करके उठा।

बुध कहता है—हे गुरु बृहस्पति! मेरे सिर पर बड़ा दाँव है। ऋषि (नेमिनाथ), पाडव और बलराम—ये तीनों युद्ध का भार उठावेंगे।

कुंती का पुत्र भीम कहता है—हम इस दल को मोड़ देंगे। यदि हम पीठ दिखावे तो कृष्ण को बड़ा कलंक लगेगा। हे शूरवीरों! बहुत बड़े साथ और साज के साथ शस्त्रास्त्र संभालो। वे पांडव दावाग्नि के समान शिशुपाल पर गहगट्ट हुए।

पांडवों के दल में सिंधू राग होने लगा। विदर्भ देश में साका हुआ। दिल्ली द्वीप (देश) के राजा पांडव ... ... ।

बृहस्पति बचन बनाकर कहता है—दु:खों और भय का भंजन करनेवाला वह देव और दानवों को भिड़ाकर और लंका में आग लगाकर सो गया है।

वनमाली कृष्ण ने शार्ङ्ग धनुष को सजाकर सब देवताओं और मनुष्यों को बुलाया। प्रतिज्ञा पूर्ण करनेवाले उस सिंहासनाधीश्वर ने सबको हँस-हँसकर गले से लगाया। और कहा—हे दल के नायक देवताओं! चिंता छोड़ो। मै अपने सिर पर धवल छत्र को धारण करूँगा और असुरों का संहार करूँगा, और भक्तों का भार दूर करूँगा। तब नेमिनाथ के दल में

हळधर जाय भिड़ै असुरां सूं पीछै करोला कांई
बाजै संख नूर रण सींगा रिख्यां तणा दळ मंड्या
नौबत वाज रही नव नाथां स्याम तणा दळ संठ्या
रिख पर रीझ रह्या वनमाळी आदर कर कै लीना
अपणा कर रा बाण कृष्णजी नेमनाथ नै दीना
मांझी गाज रह्या भारथ में अरजन-भीम भलाई
बै पांडू हथनापुरवाळा पहुंच्या हाथ्यां मांही
होदा हाक लिया हाथ्यां रा सैन चढी मतवारी
जिण वेळां पांडू राजा नै बीड़ा दै वनवारी
मिसलत अैसी करो सिरदारां ! सब ही सार संभाया
दळ सूंधा तै मूंधा कर द्यां तो कुंता रा जाया
पांडू दळ चढिया महमंता अरजन-भीम उमाळा
कूद पड़्या लंका में जैसें कपि किसकंधा वाळा
कारज आज स्याम मुख आगै कहै भीम महमंता
बीड़ा झाल दिलीपत चाल्या ज्यूं लंका हणमंता
विकराळी कोपी बळवंती च्यार भुजा मुकळाती
बावन भैरूं चौसठ जोगण फिरै असुर-दळ खाती
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं मची रावणा घाणी

दोहा— गिर-सेखर जळ ऊझळ्या छिप गया चंद रु सूर
मनो गोबरधन ऊपरै इंद्र चढ्या अति क्रूर

मारू— इंद्र चढ्या अकरूर स्याम दळ नव ग्रह नौबति खाना
कह बळदेव उधार किसी है किलकारै हणमाना
कोस असी मांही जादू दळ गज गर मो गर ठाटो
मुरड़ चल्या भेळा हुय जानी ऊझड़ गिणै न बाटो
सुर-दळ चढ्या, असुर-दल कंप्या झुक गया देव विवांणा
बारा छोहण ले बळभद्दर पहुंच्यो जाय दिवाना
वरसै लोह, सार घण टूटै मुगदर-मूसळ पेलै
आप हि खाय पड़ै मुरछागत हळ री भास न झेलै
झपटी करै, गणेसो घूमै मंगळ मार मुकेरै
दाना छत्र सीस सूं तोड़ै गहि कर फरसी फेरै
अरजन हाथ साथ रा सुथरा डाहल रूप मसाणा

खलबली मची और वाजे बज उठे। हलधर जाकर असुरों से भिड़ रहे हैं, तुम पीछे रहकर क्या करोगे? ऋषियों के दल सामने हुए। उनमें, शंख, नगाड़े और रणसीगे बजे। नौ नाथों के दल में नौबत बजी। इस प्रकार श्याम के दल संगठित हुए।

वनमाली कृष्ण ऋषियों के दल पर रीझ रहे थे। उनने आदर-पूर्वक उनका स्वागत किया। कृष्ण ने अपने हाथ के बाण नेमिनाथ को दिये। उस महायुद्ध में अर्जुन और भीम सरीखे वीर गरज रहे थे। हस्तिनापुर वाले वे पांडव हाथियों के दल में पहुँचे। हाथियों के हौदों को ललकार कर गिरा लिया। मतवाली सेना चढ़ी। उस समय वनमाली कृष्ण पांडव राजा को बीड़े देते है। सब पांडवों ने शस्त्र सँभाले और कहा—हे सरदारों! ऐसी युक्ति करो कि शिशुपाल के सीधे दल को उलटा कर दे (उलटकर रख दें), ऐसा करे तभी हम कुंती के पुत्र है।

उमंग से भरे अर्जुन और भीम के साथ मतवाले पांडव दल युद्ध के लिए चढ़कर चले मानो किष्किंधा वाले बंदर लंका में कूद पड़े हों। मदोन्मत्त भीम ने कहा—आज कृष्ण के मुख के आगे कार्य है (आज कृष्ण का काम आ पड़ा है)। वे दिल्लीपति पांडव बीड़े लेकर चल पड़े जैसे हनुमान् लंका को चले थे। चार भुजाओं से प्रहार करनेवाली, अपार बलवाली, विकराल देवी चंडिका कुपित हो उठी। बावन भैरव और चौसठ योगिनियाँ असुर दल का भक्षण करती हुई फिर रही थीं। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—असुर दल में भयंकर संहार मच गया। पहाड़ो के शिखरों से जल के प्रवाह उमड़ चले। सूरज और चंद्रमा छिप गये। ऐसा लगा मानो गोवर्धन पर्वत के ऊपर अत्यंत क्रूर इंद्र (के दल) चढ़ गये हों। अति क्रूर इंद्र (के दल) श्याम के दल पर चढ़े। नौ ग्रह नौबतखाने ··· ··· । बलदेव ने कहा—उधार कौन-सी है (अभी संहार किये देते है), हनुमान् किलकारियाँ भर रहे हैं। अस्सी कोस की धरती पर यादवों का दल फैला हुआ था। हाथियों का गहरा ठाट था। बराती इकट्ठे होकर मुड़ चले। वे न उजाड देखते है और न बाट।

देवताओं के दल चढ़े तो असुरों के दल काँप उठे। देवताओं के विमान झुक गये। बारह अक्षौहिणी सेना लेकर बलभद्र दीवान में जा पहुँचे। लोहा बरस रहा है, खूब शस्त्रास्त्र टूट रहे है। मुगदर और मूसल पेल रहे हैं। शत्रु स्वयं ही (बिना मारे) मूर्च्छित होकर गिर पड़ते है। हल के भास को नहीं सह पाते है। गणेशजी युद्धभूमि में घूमते हुए झपट-झपटकर प्रहार करते हैं; मंगल मुक्कों से मारता है। वे दानवों के छत्रों को सिरों के साथ तोड़ते है और हाथ मे फरसा लेकर उसे घुमाते हैं।

अर्जुन का हाथ सधा हुआ था। डाहल शिशुपाल का चेहरा श्मशान

अेकै बाण लाख दळ साथै पड़ता दीसै दाना
दानां मांही चढ गया जादू रकतां कीचड़ मातो
वरसै बाण भरणि री नांई दिन सैं हौय गयी रातो
लपट-झपट हूवा सब जूझै भय हुवा वासग तांई
तिरता फिरै छत्र रूधिर में ज्यूं नव्वका जळ मांही
गज सिर भरखै, मोती वरखै नव्व नेजा तहां पाणी
फूटी पाळ भेळ मरजादा मान सरोव्वर जाणी
भेळ दियो असुरां दळमातो नटवर भेख गवाळचां
लसकर लूंट लियो डाहल रो गोकळ रा भिड़वाळचां
कुंजर पड़्या लाख नव दूणा गम नांही कैकाणां
देस-देस रा राजा देखत खड़ा रह्या नीसाणां
कहता घणी, सरी नहिं अेकौ सिर धूणै सिसपाळो
लाडी गयी, लाज बी ले गयी मूंढो कर गयी काळो
मोसा भाभी रा चित आवै खौय दयी लाज-वडाई
होम चल्या कुनणापुर आगै दंतराय सा भाई
हीणो हुय सिसपाळो भाग्यो किसी-क परण्यो प्यारी
मेल चल्यो सिसपाळ पाघड़ी दम्मघोस राजा री
हळधर कहै सरब देवां सूं वेग करो असवारी
उळटा बहौड़ अखाड़ै ल्यावो फेर करैगा धारी
अरजन नेमनाथ हळधर सूं कहै सिरीपत राजा
भागां रै गळ घाव न घालां या छत्र्यां नै लाजा
नेजा छांड गया फरकंता नौबत सेता वाजा
कहै पदम भारथ में भाग्यो चंदेरी रो राजा

जरासंध का युद्ध

दोहा— सुण भाग्यो सिसपाळ नै तन में लागी लाय
जरासंध अजरायलो माल रह्यो वळ खाय
धर-अंबर धूज्या नहीं तड़भड़ हुव्वा न देव
जरासंध ऊभां थकां कहा जीत्यो बळदेव !

मारू— कहा जीत्यो बळदेव ! खड़ो रह सिंघ पहूंतो आयी
दंतराय मोकूं मत जाणो कहै जरासंध राई

जैसा हो गया था। एक ही बाण से एक लाख दानवों के लाखों दल एक साथ गिरते हुए दिखायी पड़ते थे। यादव चढ़कर दानवों मे पहुँच गये। वहाँ रक्त का गहरा कीच मच गया। भरनी की तरह बाणों की वर्षा हो रही थी। दिन से रात हो गयी।

सब लपट-झपट हुए युद्ध कर रहे थे। वासुकि तक भय छा गया। रुधिर के प्रवाह में छत्र तैरते चल रहे थे जैसे जल में नौकाएं तैर रही हों।

हाथियों के सिर फटते है, मोती बरसते हैं। वहाँ नौ नेज (भाले) गहरा पानी भर गया मानो मानसरोवर की पार फूट गयी और पानी की मर्यादा एकाकार हो गयी।

नट के वेशवाले ग्वालों ने असुरों के घने दल को विध्वस्त कर दिया। गोकुल के गडरियों ने डाहल शिशुपाल के लश्कर को लूट लिया।

नौ के दूने अर्थात् अठारह लाख हाथी गिर गये और घोड़ो की गिनती ही नही थी। देश-देशो के राजा लोग निशाने देखते खड़े रहे।

कहते तो बहुत थे पर पार एक भी नही पड़ी। शिशुपाल सिर धुनता है। दुलहिन तो गयी ही पर लाज भी ले गयी। काला मुँह कर गयी।

भाभी के ताने चित्त में खटकने लगे। उसने लाज और बड़ाई खो दी। दंताधर-सरीखे भाई को कुंदनपुर के आगे होम करके चले।

शिशुपाल हीन होकर भागा। प्यारी से कैसा विवाह रचाया! वह दमघोष राजा की पगड़ी (प्रतिष्ठा) को भी वही छोड़ चला।

हलधर ने सब देवों से कहा—शीघ्र सवारी करो। उन्हे फिर से लौटाकर रणभूमि में लाओ, नही तो फिर मनमानी करेगे।

लक्ष्मीपति राजा (कृष्ण) ने अर्जुन और नेमिनाथ तथा हलधर से कहा—भागते हुओ के गले में घाव नहीं करेंगे। यह क्षत्रियो के लिए लज्जा की वात है। शिशुपाल लहराते झंडों को और नौबत के समेत बजते बाजों को छोड गया। पदम भक्त कहता है कि चदेरी का राजा शिशुपाल युद्ध मे भाग गया।

जरासंध का युद्ध

शिशुपाल को भागा हुआ सुनकर जरासंध के तन में आग-सी लग गई। वह मल्ल बल खाने लगा। पृथ्वी और आकाश काँपे नही और न देवों में ही खलवली मची। जरासंध के खड़े रहते हे बलदेव! तुम कैसे जीते? —अरे वलदेव! तू कैसे जीता? खड़ा रह, सिंह आ पहुँचा है। राजा जरासंध कहता है—मुझे दंताधर मत जान लेना।

फिर गयी फेर समंदरां तांई वाजै अनहद वाजा
तेरै वैर कंस को मांगूं अेक पंथ दोय काजा
होय तडभ्भड़ सेना उमड़ी काळजमन दरसायां
दानां तेग झड़ाफड़ छूटै धर-अंबर थररायां
जम रो रूप जरासंध आयो नेजा धजा चढायी
खळकंती तिरसूळ भळक्कै ज्यूं दामण घन मांही
नारद नाच रह्यो मंडळ में ख्याल रच्यो घरजाणी
दळभजण राजा जद आयो साको भयो दिवाणी
काया बजर बजर रो हाथी बजर-बाण दळ जोई
जरासंध राजा रै सनमुख बळी न मंडै कोई
कळह-दान कुन्नणपुर हूवा वाज रह्या रणतूरा
थंभ गया रथ राजा सूरज रा देख तमासा सूरा
चहुं दिस चक्र वहै दानां रा वाजै अनहद वाजा
मानू जाळंधर संकर सूं मड्यो महा समाजा
धूजी धरा, अंबर भी धूज्यो सेसनाग थररायो
मानू कुंभकरण लंका सूं इण अवसर चढ आयो
जद देवां रा हिड़दा कंप्या धनस बाण लै नांही
देवां दळ दानवां जूझै जरा रळी तिण मांही
लांबी भूजा सहस रघुवर री वांरी सरण विचारो
पदम भणै प्रणवै पाय लागू ध्यान चत्रभुज धारो

जरा का युद्ध

दोहा— डुम डुम वाजा वाजिया जरा पहूंती आय
किताक जोधा गिर पड़्या किताक मुख रै मांय

मारू— वीस जोजन में पांव जरा रा दस जोजन में हातो
पांच जोजन में सीस जरा रो दुय दुय जोजन दांतो
नेमनाथ रा हळका-भळका ज्यांरै सनमुख धायी
भाज पड्या सब मूंढा आगै रांड डाकणी आयी !
गवरी- सहित सदासिव भागा भागा जादूराई
सुर तेतीसूं रण सूं भागा जुरा पहूंती आयी
रण संग्राम कदे नहिं हार्‌या कदे न हार्‌या खांडै
दानां सूं हम जुध कर जीत्या मार्‌या मोडी रांडै

समुद्रों तक आन फिर गयी। अपार बाजे बजने लगे। (जरासंध ने कहा—) पहले ही तुझ में कंस का वैर मांगता हूँ। (कंस जरासंध का जामाता था)। अब एक पंथ दो काज हो जायेंगे। तड़भड़ होकर सेना उमड़ चली। मानो कालयवन दिखायी पड़े। दानवों की तलवारें झड़ाझड़ चली। पृथ्वी और आकाश थर्रा उठे।

यम के स्वरूपवाला जरासंध झंडे और ध्वजाएँ चढ़ाकर आ पहुँचा। प्रहार करती हुई त्रिशूल चमक रही थी मानो बादलों में बिजली चमक रही हो। नारद मडली मे नाच रहे थे। ... ... जब दल का भंजन करनेवाला राजा आया तो युद्ध क्षेत्र में साका हुआ। उसका शरीर बज्र के समान था, उसके हाथ बज्र के समान थे और बज्र के समान ही उसके बाण थे। उनको देखकर जरासंध राजा के सामने (मुकाबले मे) कोई वीर नही आता था। कुंदनपुर में युद्ध-दान हुआ (वीरों ने युद्ध-दान किया)। युद्ध के बाजे बज रहे थे। शूरवीरों का खेल देखकर राजा सूर्य का रथ ठहर गया। चारों दिशाओं मे दानवों के चक्र चल रहे थे। अपार बाजे बज रहे थे मानो जालधर दैत्य ने शंकर के साथ भयंकर युद्ध छेड़ दिया।

पृथ्वी हिल गई, गगन थर्रा उठा और शेषनाग भी कांप गया मानो इस समय कुभकरण लंका से चढ़कर आ पहुँचा हो। उस समय देवताओं के हृदय कांप गये। वे हाथ मे धनुप-बाण नही लेते (लड़ने को तत्पर नही होते)। जब देवताओ के दल दानवों से जूझ रहे थे तभी जरा राक्षसी आकर उनमें मिल गयी। देवता लोग कहने लगे—श्रीकृष्ण के हजार लंबे हाथ है, उनकी शरण का विचार करो। पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—चतुर्भुज (कृष्ण) का ध्यान करो।

जरा का युद्ध

डम-डम करके बाजे वजे। जरा राक्षसी आ पहुँची। कितने ही योद्धा गिर पड़े और कितने ही उसके मुँह मे समा गये। जरा के पांव बीस योजन मे फैले हुए थे, उसके हाथ दस योजन में थे। उसका सिर पांच योजन में था। उसके दांत दो-दो योजन के थे। नेमिनाथ के ... ... दल थे। वह उनके सामने दौड़ी। उसे देखकर सब उसके मुँह के आगे से भाग गये—अरे, डाकिनी राड आ गयी।

गौरी (पार्वती) के समेत शिव भाग चले। यादव राजा भी भाग गये। तेतीसो देवता रण [illegible] गये। सब कहने लगे—अरे! जरा आ पहुँची! हम रण- [illegible] भी हारे नहीं और न कभी तलवार चलाते हुए हारे। [illegible] साथ युद्ध करके सदा जीते, पर मुड़िया रांड़ ने हमें [illegible]।

हरि हळधर नै हुकम कियो है जुरा व्याधि नै मारो
या सूं थांरो दाव न आवै दूणी देह वधारो
हळधर ले हळ मूसळ चाल्यो जुरा सामही आयी
हळ सू बांध अपूठी गेरी मूसळ सिर ठहकायी
जुरा मार ऋतु-मंडळ गेरी सुरां पुसप वरखायी
कृष्णकंवर दूल्हा रै ऊपर पदम भगत बळि जायी

दोहा— देवां रा दळ जमपुर सूता हरि जब मानी रीस
भीर चढयो बळदेव री गरुड़ चढयो जगदीस

जरासंध का भागना

मारू— गरुड़ चढयो जगदीस धनस धर चंद्र-बाण कर-धारी
दस मस्तक वीसूं भुज भंजण राम रूप बळिहारी
छपन कोट जादू चढ आया वडा छत्र री छाया
'सरण सरण' तेतीसूं भाखै चरणां सीस निवाया
ब्रह्मा-सुत नारद यूं बोलै अरज हमारी लीजै
जां वर थे दानां नै जीत्या सो वर म्हांनै दीजै
सनमुख हुवा जगत पत नायक वर देवां नै दीना
संकट में सहाय हरि कीनी जुरा-जोर हर लीना
सुर तेतीसूं हुवा दळनायक सेना सबै चढ आयी
इत देवां रा दळ चढ आया इतै जुरासंध राई
उलकापात अगन जद ऊठी भार अठारा धूजै
अस्टकुळी रा नायक खिस चल्या चंद सूर नहिं सूजै
राजा पाटपती दळ भिड़िया रोक लिया नीसाणा
लंका-कोट राम-दळ लागा बै दळ, बै ही बाणा
हथनापुर रा राजा बोलै सुण वसदेव कुमारा !
अबकै भाग्यां दूर द्वारका कीजै कौण विचारा ?
मसलत हुई देव-दळ मांही सुरनर सबहि बुलाया
सिंघ रूप दानां रै सनमुख अरजन-भींव खिनाया
बांकी अणी बंक फौजां री नेमनाथ ! थे झेलो
हळधर कहै, हुकम केसव रा रिख्यां तणा दळ पेलो
धरमपुत्र राजा यूं बोलै धरमी मंड गया साका
पहली चोट अरजन सूं भिड़िया किया पांडवां हाका

तब श्रीकृष्ण ने हलधर को आदेश दिया कि जरा व्याधि को मारो। यदि इस पर तुम्हारा दांव नही लगता हो तो अपनी देह को दुगुनी बढ़ा दो। तब हलधर हल और मूसल लेकर चला। जरा सामने आयी। उसे हल से बाँधकर औंधी गिरा दी और सिर पर मूसल जमायी।

जरा को मारकर मृत्युलोक में डाल दिया (पहुँचा दिया)। देवताओं ने पुष्प-वृष्टि की। दूल्हे कृष्णकुंवर पर पदम भक्त बलिहारी जाता है। जब देवताओ के दल मृत्युलोक में सोये तो श्रीकृष्ण ने क्रोध किया। वे जगदीश्वर गरुड़ पर चढ़कर बलदेव की सहायता के लिए चढ़े।

जरासंध का भागना

जगदीश्वर कृष्ण धनुष धारण करके गरुड़ पर चढ़े। उनने चंद्र-बाण को हाथ में लिया। दस मस्तक और बीस भुजाओ का भंजन करनेवाले राम-रूप का मै बलिहारी हूँ। छप्पन कोटि यादव चढ़कर बड़े छत्र की छाया में आ गये। तेतीसों देवताओं ने 'शरण मे लो, शरण मे लो' कहते हुए चरणों मे शीश नवाया। ब्रह्मा के पुत्र नारद यों बोले—हमारी विनती सुनिये। जिस वर से आपने दानवों को जीता था, वह वर हमे दीजिये। जगत के स्वामी और नायक श्रीकृष्ण सामने आये और देवताओं को वर दिये। उनने संकट-काल में सहायता की, जरा राक्षसी के बल को हर लिया।

तेतीसो देवता सेनापति हुए। सारी सेना चढ़ आयी। इधर देवताओं के दल चढ़कर आये और उधर राजा जरासंध चढ़ा। तब उल्कापात की अग्नि भभकी। (वनस्पति के) अठारहों भार काँप उठे। अष्टकुली नागो के नायक खिसक चले। चद्रमा और सूरज दीख नही रहे थे। पाटपति राजाओ के दल भिड़े। …झडो को रोक लिया। लंका के गढ पर राम का दल लगा था। इस समय भी वे ही दल है और वे ही बाण। हस्तिनापुर के राजा युधिष्ठिर बोले—हे वसुदेवकुमार श्रीकृष्ण! सुनो। अबकी बार भागेगे तो द्वारिका दूर पड़ेगी, फिर क्या विचार किया जाय?

देवताओं के दल मे विचार-विमर्श हुआ। देवता और मनुष्य सभी को बुलाया। सिह रूप दानवो के सामने अर्जुन और भीम को भेजा गया। हलधर ने कहा—हे नेमिनाथ! बाँकी सेनाओं का, बॉकी अनी का आप मुकाबला करो। केशव का आदेश है कि ऋषियो के दल को आगे बढ़ाओ। धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने यों कहा कि … … … पहली बार अर्जुन से भिड़े कि पांडवो ने हल्ला किया। अर्जुन के बाणो

अरजन-बाण, गदा भीसम री चूर किया दळ मोधा
गेर लिया हस्त्यां ऊपर सू जुरासिंध रा जोधा
आवध घणा हालै ना चालै नेमनाथ दळ जोड़ा
घोड़ां ऊंठ र रथ हाथ्यां रा टूक किया इकठोड़ा
हाथी ठेल दिया भारथ में फौजां चढी हंकारी
हळ मूसळ दानां सिर तूटै महा प्रळै कर डारी
सुरपत राव वज्र सूं मारै मानू वीज चमंकै
वारा अेक पताळ सेस रै माथै जाय ठमकै
ओळा ज्यूं गोळा ओसरिया मार पड़ी दर हल्लां
नायक मड्या राव डाहल रा होदा कर दिया चल्लां
गवरीपुत्र विनायक राजा सिव रा वज्र संभावै
रापट-रोळ करै सूडाळो सूझ्यां विना वगावै
गुपती चक्र चलै नाथां रा कोइ परगट कोइ छानै
कैलासी संकर रै गण रो कह्यो न कोई मानै
नारद मुनी गरुड़ ब्रह्मा रा काळबांण इम धारै
मानूं हणूमान लंका कूं चहूं फेर सूं जारै
चहुं दिस चक्र वहै चंडी रा लूंकड़िया अगवाणी
बांध्या चक्र यू सेना ऊपर नगरकोट री राणी
किलकारी कोपी बळवंती बावन चौसठ न्यारा
विकराळी दानां दळ वेगी आण पड़ी जम-द्वारा
छूटै छत्र, वगतरा फूटै धजा सबै ढळ आयी
ससतर सबै वहै चौधारा पड़ी नौवतां घाई
झटका हौय बटका तन तूटै स्यौं पाखरिया घोड़ा
लटपट सीस पड़ै दानां रा गरा हुवा इकठोड़ा
खेतर रगत वहै दानां रो नदी भादवा मांही
जोजन सात पांच झड़ पडिया गळ जोटा गळबांही
हांसी हंसता रह्या धवळधर और सोवनी साजा
चोटी आण दयी कुनणापुर दसूं दिसा रा राजा
अगनी बाण घणा चक्र चालै छूटै जंत्र हवाई
हाथ खपर तिरसूळ लियां रण -खेत जोगणी आयी
खेचरी भूचरी और संखणी गइज सबै चढ आयी
चुग चुग सीस सदासिव संकर मुंडमाळ ढळकाया

और भीष्म की गदा ने शत्रुदल को चूर-चूर कर दिया। उनने जरासंध के योद्धाओं को हाथियों पर से गिरा दिया। ... ... घोड़ों, ऊँटों, रथों और हाथियों के एक ही स्थान पर टुकड़े-टुकड़े कर ढेर लगा दिये।

हाथियो को युद्ध में धकेल दिया। अहंकार-भरी सेनाएं चढ़ीं। हल और मूसल से दानवों के सिर टूट रहे थे। महा-प्रलय मचा दिया। सुरपति राजा इंद्र बज्र से प्रहार करते थे, मानो बिजली चमक रही थी। वे प्रहार पाताल में शेषनाग के माथे पर जाकर बजते थे। गोले ओलों की तरह बरस रहे थे। बुरी तरह की मार पड़ी। राजा शिशुपाल के सेनानायक सामने आये। गौरी-पुत्र गणेश शिवजी के बज्र को संभाल रहे थे। वह सूडवाला तूफान मचा रहा था, बिना देखे ही फेंके जा रहा था। नाथो के गुप्ती-चक्र चल रहे थे, कोई प्रकट तो कोई छिपे हुए। कैलासपति शकर के गण का कोई व्यक्ति कहा नहीं मान रहा था।

नारद मुनि और गरुड़ ब्रह्मा के काल-बाणों को इस प्रकार धारण कर रहे थे मानो हनुमान लका को चारों ओर से जला रहा हो। चारों दिशाओं में चंडी के चक्र चल रहे थे, भैरव आगे-आगे चल रहे थे। इस प्रकार नगरकोट की रानी भवानी ने सेना के ऊपर चक्रों की झड़ी बाँध दी। वह बलशालिनी दुर्गा किलकार करती हुई क्रुद्ध हुई। बावन भैरव और चौसठ योगिनियाँ अलग (अतिरिक्त) थी। वह विकराल दानवों के दल के ऊपर यमद्वार की भाँति आ पड़ी।

छत्र छूट रहे थे, बख्तर टूट रहे थे और सारी ध्वजाएं गिर गयी। सारे शस्त्र निरंतर चारों ओर चल रहे थे। नगाड़ों पर चोटें लग रही थीं। पाखरयुक्त घोड़ों सहित सवारों के शरीर झटके लगने से टूक-टूक होकर टूट रहे थे। दानवो के सिर लटपटाकर गिरते है। सबका एक जगह ढेर लग गया। युद्ध क्षेत्र में दानवों का रक्त बह रहा था जैसे भादों की नदी बहती हो। ... ... । हँसी हँसते हुए (हँसी से गुंजायमान) ऊँचे महल और सुनहरे साज पीछे रह गये। दसों दिशाओं के राजाओं ने कुंदनपुर आकर अपने सिर दे दिये।

अग्नि-बाण और अनेक चक्र चल रहे थे, हवाई यंत्र (एक प्रकार की तोपे) छूट रहे थे। हाथ में खप्पर और त्रिशूल लिये हुए योगिनियाँ युद्धभूमि में आयीं। शिवशंकर ने मुंडों को चुन-चुनकर मुंडमाला ढलकायी।

युद्धभूमि में योधा लोटते हैं, गिरते हैं, तड़फड़ाते हैं और उठ खड़े

लोटै पड़ै तड़फड़ै ऊठै रोक लिया उर थाणा
सतरा लाख पाखरी सागत खाली हुवा पलाणा
बावन भूप धजाबंध राजा सेनां री गम नांही
लाख पती डोर रा हाथी जाय पड़्या जुध मांही
घरां हाण हांसी जग मांही वात च्यार जुग चाली
ग्यारा लाख पालखी डाहल हुयी खेत में खाली
चालाचल हूयी चंदेरी माल रथां रा वीता
सात लाख तो रथ घोड़ां रा हुवा खेत में रीता
कोट उपाव करै वळवंता पेच अेक नंहि लागा
चंद्र बाण केसव रा देख्या जुरासिंध तब भागा
भली भांत री जान खपायी भूप खपाया सारा
जुरासिंध जद भाग चल्या है मूंधा पड़्या नगारा
जहां-तहां जादू राजा रा नौवत वाजा वाज्या
पदम भणै तिहुं लोकां मांही संख पंचायण गाज्या

दोहा— संख पंचायण वाजतां राजा घणो उछार
पत राखी महाराज नै असुरां कियो संघार

रुक्मकुमार का युद्ध और पकड़ा जाना

मारू— असुरां कियो संघार स्याम दळ जीत्या त्रिभुवन राई
भाग गया सिसपाळ जुरासिंध खबर कंवर पै आयी
कोप्यो कंवर भीम राजा रो सब ही भूप बुलाया
चांपर करो वेग चढवा री जुध सामान भराया
मसलत हुयी कंवर दरबारां मंत्री करै विचारा
पारब्रह्म सूं जीतां नांही धीरज भली कुमारा !
कद रो भूप भयो भिड़वाळ्यो नंदमहर रो पाळ्यो
बाण-विधा कबहूं नंहि सीख्यो गायां तणो गवाळ्यो
भागो काळजमन रै आगै जळ में जाय वसायो
लाज न मरै सरम ना याकै फेरूं बाहर आयो
सेर भयो सिसपाळ भागतां हम सूं मांड्यो पाळो
रुकमकंवर रो नाम सुणंतां मिट जाय काळ अकाळो
राज-भेद सूं रुकमण ले गयो सूतो सिंघ जगायो
जमीदोज कर द्यूं भिड़वाळ्यो तो भीसम रो जायो

होते हैं। पाखरवाले घोड़ों के सत्रह लाख साकतयुक्त पलाण (जीन) खाली हो गये (सत्रह लाख घुड़सवार खेत रहे)।

बावन ध्वजाधारी राजा खेत रहे। सेनाओं की तो कोई गिनती ही नहीं थी। ... ... के हाथी युद्ध में जा गिरे। घर में हानि हुई और जगत में हँसाई हुई। चार युग तक बात चली। डाहल शिशुपाल की ग्यारह लाख पालकियाँ युद्धक्षेत्र में खाली हो गयीं (ग्यारह लाख बड़े वीर मारे गये)। चंदेरी की ओर चलने की तय्यारी हुई। रथों के माल समाप्त हो गये। सात लाख घोड़ोंवाले रथ रणांगण में खाली हो गये। वे बलवान योधा करोड़ों उपाय करते है पर एक भी युक्ति नहीं लगी। जब केशव के चंद्र-बाण देखे तो जरासंध भी भाग चला।

अच्छी-भली बरात खपा दी (नष्ट करवा दी, समाप्त करवा दी)। सारे राजाओं को खपा दिया। तब जरासंध भाग निकला। उसके नगाड़े उलटे पड़े हैं। यत्र-तत्र यादवराय के नौबत के बाजे बजने लगे। पदम भक्त कहता है कि तीनों लोकों में पाँचजन्य शंख गरज उठा। (विष्णु के शंख का नाम पाँचजन्य था)।

शंख के बजने से राजा भीष्मक बहुत प्रसन्न हुआ। श्रीकृष्ण ने उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा की और असुरों का संहार किया।

रुक्मकुमार का युद्ध और पकड़ा जाना

श्याम के दल ने असुरों का संहार किया। त्रिभुवन के स्वामी जीत गये। कुंवर रुक्मकुमार को समाचार मिला कि शिशुपाल और जरासंध भाग गये हैं। सुनकर भीष्मक राजा का कुंवर रुक्मकुमार कुपित हुआ। उसने सब राजाओं को बुलाया—जल्दी से चलने की तय्यारी करो। युद्ध का सामान भराया गया। कुंवर के दरबार में मंत्रियों ने विचार किया—हे राजकुमार! हम परब्रह्म श्रीकृष्ण से जीत नहीं सकेंगे, इस समय तो धीरज धारण करना ही अच्छा है।

—ग्वाला कब से राजा हो गया। वह तो नद गोप का पाला हुआ है। उसने बाण-विद्या कभी नहीं सीखी है। वह तो गायों का ग्वाला है। कालयमुन के सामने वह भाग खड़ा हुआ था सो जाकर जल में (समुद्र में) नगर बसाया। यह न तो लाज मरता है और न इसके शर्म ही है। समुद्र को छोड़कर फिर बाहर आ गया है।

शिशुपाल के भागने पर शेर हो गया है। हमसे पाला मांड़ा है। रुक्मकुमार का नाम सुनते तो काल और अकाल भी मिट जाते हैं। वह राजा के भेद से रुक्मिणी को ले गया है। उसने सोये सिंह को जगाया है। यदि मैं इस ग्वाले को भूमिसात् कर दूँ तो भीष्मक का पुत्र हूँ।

फौजां घणी हालिया हाथी रवि-रथ छायो बाणां
जोजन रात मांहि सांचरिया कंवर तणा दळ पाणां
तीस लाख पवना धर पाखर अैसी ताकत जाणी
कंवर चढ्या सायर रा टूट्या जोजन जोजन पाणी
चापर करो वेग चलवा री गांतर सवै संभारी
भाज जाय जादू भिडवाळ्यो वेग करो असवारी
अळगो जाय र पूगो दुमागण इंद्र जाण घररायो
खबर करो भिड़वाळया सेती रुकमकंवर चढ आयो
वहै चहूं दिस चक्र कंवर रा नभ रो टूटो तारो
सनमुख लड़ै कंवर भीसम रो सार वहै चौधारो
चालै बाण जंजीरा गोळा उळट पुळट अंधियारो
माच्यो रीठ कृष्ण दळ माही निकस गयो दळ पारो
इंद्रजीत राजा भीसम रो काळ पहूंतो आयी
सनमुख गदा उठाय कंवरजी जायर रथ पर बायी
दूजी गदा मांघ कै बाही धजा साथ दळ आयी
तीन लोक रो करता हरता उण भी संवया खायी
झेलै को रुकमाल कंवर री पारब्रह्म बिन धारा
भीमराय अहड़ा ही गाजै गमंद तणा अवतारा
सांध रह्या सब हीं कर नधा छपन कोट दळ बाणा
अग्या विन भारथ ना झेलै गुरुज सायब विमाणा
जद हळधरजी अैसे बोलै सीदा दयो जदुराई !
हळ सू पकड धरूं मूसळ री खोय दयूं मान-वडाई
केसव कहै, हुकम ना थांनै रचै भींव घर चालो
रुकमइयो तो म्हे ना मारां म्हारो लागै सालो
कर जोड्यां कमळा केसव गूं अरज करै है राणी
रुकम कंवर रै हाथ न लावो परतंग्या म्हे जाणी
रंगन माही किया विछंगन अवळा मान वधायो
मूंछ मूंड वाकों मस्तक मूड्यो रथ री पीठ वंधायो
मारचो मान, कंवर ना मारचो दोनूं वात उवारी
कहै पदम राजा भीसम रो पकड़ लियो बळकारी

अपार सेना और हाथी चल पड़े। सूरज का रथ बाणों से ढँक गया। कुंवर के दल शक्ति के साथ सात योजन में चले (फैल गये)।

तीस लाख पवन-वेग वाले पाखर-युक्त घोड़े चले। उनकी तय्यारी ऐसी थी कि जब कुंवर चढ़ा तो योजन-योजन तक सरोवरों का पानी टूट गया (सूख गया)। चलने की जल्दी से तय्यारी करो। जल्दी से सभी सामग्री को संभालो। जल्दी से सवारी करो, कहीं यादव ग्वाला भाग न जाय। दुःशासन (कठिनता से शासित होनेवाला) कुवर दूर से जाकर पहुँच गया। मानो इन्द्र घहराया हो। ग्वाले को खबर करो कि रुक्मकुमार चढ़ आया है। चारो दिशाओ में कुंवर के चक्र चल रहे है जैसे आकाश के तारे टूट रहे हों। भीष्मक का पुत्र सामने आकर लड़ रहा है। चारों ओर लगातार शस्त्रास्त्र चल रहे है। बाण, जंजीरे और गोले चल रहे है। घनघोर अंधेरा हो गया है। श्रीकृष्ण के दल में घमासान मच गया। वह दल के पार निकल गया। इंद्र को जीतनेवाला (या मेघनाद के समान) राजा भीष्मक का पुत्र काल सदृश कृष्ण के पास आ पहुँचा। कुंवर सामने गदा उठाकर आया और आकर रथ पर चलायी।

दूसरी गदा साधकर चलायी तो ध्वजा साथ ही उतर आयी। जो तीन लोक के कर्ता-हर्ता श्रीकृष्ण थे वे भी शकित हो गये। रुक्मकुमार के वार को परब्रह्म (श्रीकृष्ण) के बिना कौन सह सकता था। राजा भीष्मक ऐसे सुशोभित हो रहे थे मानो समुद्र के अवतार हों। छप्पन करोड़ यादव सभी बाण साध रहे थे (चढ़ा रहे थे) पर उनके हाथ बंधे थे। वे श्रीकृष्ण की आज्ञा के बिना युद्ध को नहीं झेलते (करते)। विमान (=रथ) पर आरूढ़ सूर्य साक्षी था (देख रहा था)। तब हलधर ने ऐसे कहा—हे यदुराज! बीड़ा दीजिये। मैं हल से पकड़कर मूसल की ऐसी मार मारूँगा कि मान और बड़ाई सब नष्ट कर दूँगा।

श्रीकृष्ण ने कहा—आपको मेरी आज्ञा नहीं है, इससे भीष्मक के घर हलचल मच जायगी। हम रुक्मकुमार को नही मारेगे। वह हमारा साला लगता है। रानी कमला (रुक्मिणी) केशव से हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही है कि आप रुक्मकुमार के हाथ नही लगा रहे है। आपकी प्रतिज्ञा मैंने जान ली। रुक्मकुमार ने रंग में भंग डाल दिया था, पर श्रीकृष्ण ने अबला (रुक्मिणी) के मान को बढ़ाया। उनने रुक्मकुमार की मूँछ मूँडकर उसका सिर मूँड दिया और उसे रथ की पीठ से बंधवा दिया। श्रीकृष्ण ने कुंवर को तो नहीं मारा पर उसका मान मार दिया। दोनो ही बातें रख ली गयी। पदम भक्त कहता है कि राजा भीष्मक के बली वीर कुंवर को श्रीकृष्ण ने पकड़ लिया।

शिशुपाल की पराजय और उसका पश्चात्ताप

दोहा— खेत संभाळो गढपती नैण भरचा सिसपाळ
छौंहण पिचाणव दळ हत्यो पड़चो धरण बेहाल

मारू— पड़चो धरण बेहाल सबै दळ धीरज कहा बंधावो ?
नांही म्हा रो चलण चंदेरी जुरासिध चढ जावो
उनम्या घणा राव तणा दळ सोध करै सिसपाळो
कुण-कुण पड़िया, कुण-कुण भागा मंत्र्यां ! खेत संभाळो
सावधान मंत्री सांचरिया आय राव गुदरायी
छोहण पांच अंबका ऊपर पड़चो दंतधर भाई
छोहण सात जड़ी वगतर री देस बंगालै बांको
झड़ पड़िया चूड़ी ज्यूं दाना रह्यो अेक ना फाको
नेजा झळकंता ही रह गया हौदां नौबत वाजा
अरजन केरै हाथ ऊतरचो भाणकच्छ रो राजा
असी लाख कुंजर झड़ पड़ियो निबै लाख केकाणो
भीमसेन रै रह्यो मोरचै सिंघल दीप रो राणो
मूढै पड़चो राव मेवाड़ो पाघ देस नै चाली
सूनी पड़ी कचेड़ी जिणरी जाजम हो गयी खाली
देखो, कोण हुई दळ मांही हुय गयी खेल विनाणी
विन भरतारां सती होय गयी मंडोवर री राणी
जान गया सिसपाळ राव री सची- रावणां घाणी
तारा तखत तमोल पती री घरां विलखै राणी
सिंधराव सिसपाळ सरीखो खबर कनोज खिनावो
नयी थरपना करो तखत री बाळकिया बैठावो
गाहट हुयी गरक सब फौजां या छत्र्यां नै छाजै
वखत भाण मुलताण पती रै नुंवा घड़ाया वाजै
दाना फिरै भागता आगै वुरी वलाय नै छेड़चो
लांबी सूंड सदासिव वाळै सारो कटक निवेड़चो
चांप बांध हळधर जग मांही महाभारथ पर भारी
रूम-सूम रो तासम दानो पूरी कर दयी सारी
हळ री त्रास देख नै भागो राव उड़ीसै वाळो
नौबत खोस लयी भिड़वाळचां घर जाय कियो उजाळो

शिशुपाल की पराजय और उसका पश्चात्ताप

शिशुपाल ने आँखे भरीं और कहा—युद्धभूमि में राजाओं को सम्हालो (अच्छी तरह देखो)। पचानवे अक्षौहिणी दल मारा गया था। वह पृथ्वी पर बेहाल पड़ा है।

सारा दल बेहाल हुआ धरती पर पड़ा है, धीरज क्या बँधाते है? चंदेरी को मेरा चलना नहीं होगा इसलिए हे जरासंध! आप चढ़ जावें। वहुत सारे राजाओं के दल उमड़कर आये थे। शिशुपाल रणक्षेत्र की खोज कर रहा है। हे मंत्रियो! युद्धक्षेत्र को देखो कि कौन-कौन गिरे (मारे गये) और कौन-कौन भागे। सावधान होकर मंत्री फिरे और आकर राजा को निवेदन किया—पाँच अक्षौहिणी सेना के साथ आपका भाई दंताधर अविका के मंदिर पर गिरा। बंगाल देश के रणबंके राजा की बख्तरों से जड़ी हुई सात अक्षौहिणी सेना थी। वे दानव चूड़ियों की तरह झड़ गये (गिर-गिरकर समाप्त हो गये)। उनकी एक फंकी भी नही बची। भानुकच्छ का राजा अर्जुन के हाथ से मौत के घाट उतर गया। उसके झंडे चमकते ही, और हौदों पर नौबत वाजे बजते ही रह गये। सिंहलद्वीप का राजा भीमसेन के मोरचे पर मारा गया। उसके अस्सी लाख हाथी और नव्बे लाख घोड़े युद्ध में गिर गये।

मेवाड़ का राजा मुँह के बल गिरा। उसकी पगड़ी देश को चल पड़ी है (रानी के सती होने के लिए उसके सेवक उसकी पगड़ी को लेकर देश को रवाना हो गये है)। उसकी कचहरी सूनी पड़ी है और जाजम खाली हो गई है। देखो, सेना में क्या बीती? एक विचित्र (अकल्पित) खेल हो गया। पति के मारे जाने से मंडोवर (मारवाड़) की रानी को पति के शव के विना ही सती होना पड़ा। शिशुपाल की वारात में गये थे उनके दल मे घानी का सा घमासान मच गया (सब के सब पिस गये)। तारातंबोल के सिंहासनाधीश्वर के घर मे रानी विलख-विलख कर रो रही है। राजा सिंधराव शिशुपाल के जैसा था। कन्नोज समाचार भेजिये कि तख्त की नई स्थापना करो, बालकों को तख्त पर विठाओ। सारी फौजें पिस कर नष्ट हो गयी। क्षत्रियों को यही शोभा देता है। मुलतान के स्वामी बख्तभानु के यहाँ नये वनवाये हुए बाजे वजते हैं (न पुरानी सेना बची न पुराने वाजे)। दानव आगे भागते हुए फिर रहे हैं। वे कहते है कि वुरी वला को छेड़ लिया। लवी सूँडवाले, शिव के पुत्र गणेश ने सारी सेना का खातमा कर डाला। जगत मे हलधर ने इस महाभारत मे भारी आक्रमण किया और रूम-सूम का (रोम और शाम का) जो दानव अधिपति था उसकी सारी सेना को खतम कर दिया। उड़ीसावाला राजा हलधर के हल के त्रास से डरकर देखते ही भाग गया। ग्वालों ने उसकी नौवत छीन ली। वेचारे ने भागकर और घर पहुँचकर

नाडोळाई रा नरपतिया छोहण आठ खपाया
वडा राव री मेल पालखी छड़ा साथ घर आया
भर खप्पर काळी किलकारी निरदळती चक राणी
बारा छोहण फौज मतवाळी अचक गयी ज्यू पाणी
वलख-बुखारै रा बळवंता उजबक लाख अठारा
त्रियादीप रा राजा पड़िया नव छोहण सूं पारा
मंत्री आय कह्यो राजा सूं खबर और भी आयी
पकड़ लियो रुकमाल-कंवर नै हुयी घणी हलकाई
मूंडचो सीस, मूंछ भी मूंडी खोय दयी मान वडाई
कृष्ण छांड सिसपाळ कियो भळ थां मांकर आ पायी
भली भयी तीनूं ऊबरिया भोत हुयी कुसळाई
रात समै चंदेरी चालो दौ चौकी बैठायी
दसू देस रा राजा पड़िया करता भोत उबारो
पदम भणै सिसपाळ कहै मेरो जीतब भंड गयो सारो

काळिंगड़ो- ओ दळ दानवां रे लाल !
जोधा सबै पड़चा मुख मोड़
माखण. खातो छीन कै देतो मटकी फोड़
नंद महर रो कान्हड़ो अब तो देवा लाग्यो दोड़
आया था कछु और नै, रे अब तो होय गयी कछु और
कपड़ा फाड़चा गांठ रा अब देख चल्या या ठौड़
निन्नाणव राजा मरचा रे हसती लाख पचास
सिसपाळो दै सनेसड़ो म्हांरै घर कहियो कुसळात
तूं राजा भुव लोक रो रे डाहल ! मत कोइ करो उपाव
रुकमण सी थारै घणी रे उण नै पड़चो ग्वाळ ले जाव
बुरी हुयी , सिसपाळ में रे देखो कुनणापुर री कूंट
व्रछ वन आवै खाण नै रे बांरै लागै झाड़र बूंट
हरि-निंदा फळ पाइयो रे मुख सूं कह्यो वचन कठोर
पदम कहै सिसपाळ डाहल ! तेरो कुजस छयो चहुं ओर

रुक्मिणी की प्रार्थना पर रुक्मकुमार का छुटकारा

—होजी हरि जी ! वीर म्हांरो अत दुख पावै

उजाला किया। नाडोलाई के राजाओं ने आठ अक्षौहिणी सेना खपा दी। बड़े राजा की पालकी को वहीं छोड़कर साथी अकेले (उसके बिना) घर लौटे (उनका प्रधान राजा युद्ध में मारा गया)।

खप्पर को रुधिर से भरकर काली ने किलकारी की। चक्राकार सेना का निर्दलन करती हुई वह मतवाली बारह अक्षौहिणी सेना को पानी की तरह आचमन कर गयी। बलख-बुखारे के अठारह लाख वली उजबेक योधा मारे गये। त्रियाद्वीप के राजा नौ अक्षौहिणी सेना के अलावा खेत रहे।

मंत्रियो ने आकर राजा से कहा—एक खबर और भी आयी है कि रुक्मकुमार को पकड़ लिया है और उसका बड़ा अपमान हुआ है। उसका सिर मूंड दिया है, मूछ भी मूंड दी है, और उसकी सारी मान-बड़ाई खो दी है। उसने कृष्ण को छोड़कर शिशुपाल को अच्छा समझा। तुम्हारे और हमारे कारण उसकी यह दशा हुई। यह अच्छा हुआ जो तीनों (शिशुपाल, जरासंध और नाई) बच गये। बड़ी कुशल हुई। अब रात के समय चंदेरी चलो। तब तक चौकी बैठा दो। दसों देशों के राजा मारे गये जो बहुत रक्षा करते थे। पदम भक्त कहता है—शिशुपाल ने कहा—मेरा सारा जीवन लांछित हो गया।

हे लाल! यह दानवों का दल है, सारे योधा मुख मोड़े (मरे हुए) पड़े है।

जो मक्खन छीनकर खाया करता था और मटकी फोड़ देता था, वही नंदमहर का कन्हैया अब दौड़ लगाने लगा है। आये तो कुछ और करने को थे पर हो गया कुछ और ही। अपनी गाँठ के कपड़े फाड़े। अब इस जगह को देखकर लौट रहे है। निन्नानवे राजा और पचास लाख हाथी मारे गये। शिशुपाल ने संदेश दिया कि हमारे घर कुशल कहना। हे शिशुपाल! तुम भूलोक के राजा हो। कोई भी उपाय मत करो। तुम्हारे तो रुक्मिणी-जैसी अनेक है, उसे ग्वाल कृष्ण भले ही ले जाये।

शिशुपाल में बुरी हुई। कुंदनपुर की ओर देखिये। वन के वृक्ष, जिनमें झाड़ और बूंटे लगते है, उसे खाने को आते हैं। उसने कृष्ण की निंदा का फल पा लिया। उसने मुख से कठोर वचन कहे थे। पदम भक्त कहता है कि हे डाहल शिशुपाल! तुम्हारा अपयश चारों ओर फैल गया है।

रुक्मिणी की प्रार्थना पर रुक्मकुमार का छुटकारा

अजी हरि! मेरा बड़ा भाई अत्यंत दुःख पा रहा है। यह भीष्मक राजा का कुंवर रुक्मकुमार है। अब इसे कौन छुड़ावे? मेरे भाई को

भीसम न्रप रो कंवर रुकमइयो (अब) या कूं कोण छुडावै
बधू म्हांरो बांध्यो है हर कौण खबर पहुचावै
जद ही खबर सुणै पित मेरो सठ कूं आण छुडावै
करणा-भरी रुकमणी ठाढी नैणां नीर वहावै
हाथ जोड़ रथ नीचै आयी हरजी ओर लखावै
हो व्रजराज ! लाज मोरी राखो यो जग मोहि वुरावै
पदम स्याम प्रभु मन में हरख्या वचन सुणत सुख पावै

दोहा— रोस भरी राणी रुकमणी रथ सूं उतरी आय
बंधू हमारो बांधियो कोइ न सकै छुडाय

भैरवी—म्हांनै लागो वीर रो तीर
मत मारो हळधर रा वीर !
बांहड़ली फाटै रुकमइया री आखर म्हारो वीर
साख न थांरै, आंख लाज नहिं नहिं जाणो पर पीर
अत ही आतुर भयी रुकमणी नैणां वरसै नीर
वरज रही वरज्यो नहि मानै आखर जात अहीर
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं नैणां खळक्यो नीर

दोहा— हळधर देखी रुकमणी विलखी राजकंवार
अरजन-ऊधो भगत सूं अैसी कही विचार

मारू— अरजन-ऊधो भगत सूं विसटाळा दिया पठाय
विसटाळां री वीनती प्रभु सुणियो जादूराय !
इण रा हाथ किसी विध छूटै हाथां वाह्यो सार
न्रप भीसम रो कह्यो न मान्यो ओ रुकम वडो जूझार
इण रा हाथ किसी विध छूटै घणा वजाया कपोळ
कह्यो न मानूं भगतां ! थांरो म्हांनै घणा ज बोल्या बोल
सठ री ना संठताई देखो रुकमण ओर निहारो
भगत करै छै वीनती रावरो विड़द विचारो
भगतां री हरि मानी वीनती रुकमइयो मुकळायो
भुजा पकड़ कै आगे लीनो चरणां आण लगायो
मैं अपराधी मन में जाण्यो थे सही ज गोकळ कान्यो
भींवसेन तो वरज रह्यो मैं कह्यो अेक नहिं मान्यो
मैं जाण्यो जगदीस सनातन पारब्रह्म नहिं छान्यो

कृष्ण ने बाँध लिया है, यह खबर कौन पहुँचाये ? ज्यो ही मेरे, पिता यह समाचार सुनेंगे त्यो ही वे इस दुष्ट को आकर छुड़ा लेगे।

करुणा से भरी हुई रुक्मिणी खडी-खडी आँखों से आँसू बहा रही है। वह हाथ जोड़कर रथ के नीचे आयी और श्रीकृष्ण की ओर देखा (देखकर कहा)— हे व्रजराज! मेरी लाज रखिये, यह संसार मुझे बुरी बता रहा है। पदम भक्त के स्वामी श्रीकृष्ण मन में हर्षित हुए। रुक्मिणी के वचन सुनकर वे सुखी हो रहे है।

रानी रुक्मिणी रोष से भरी हुई रथ से उतर आयी—हमारे भाई को बाँध लिया है, उसे कोई छुड़ा नही सकता।

हमें भाई का (भाई की वेदना का) तीर लगा है। हे हलधर के भैया! आप उसे न मारें। रुक्मकुमार की भुजाएँ फटी जा रही है, आखिर वह मेरा भाई है। न तो आपकी साख है, न आपकी आँखों मे शर्म है और न ही आप परायी पीडा को समझते हैं। रुक्मिणी अत्यत आतुर हो गयी। उसकी आँखों से आँसू बरस रहे थे। वह कहने लगी—मैं बरजती हूँ पर तुम बरजे हुए नही मानते; आखिर तो अहीर जाति के ठहरे। पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—रुक्मिणी के नेत्रों से आँसू उमड़ चले।

हलधर ने राजकुमारी रुक्मिणी को उदास देखा तो उनने विचार करके अर्जुन तथा उद्धव भक्त से इस प्रकार कहा—

अर्जुन और उद्धव भक्त के द्वारा सदेश-वाहक भेज दिये। हे प्रभो! हे यादवराज! सदेशवाहको की विनती सुनिये। इसके हाथ किसी प्रकार से छूटे यद्यपि इसने हाथो से शस्त्र चलाये है। यह रुक्मकुमार वडा जूझार है, इसने राजा भीष्मक का कहा नही माना। तब श्रीकृष्ण ने कहा—इसके हाथ किस प्रकार से छूटे ? इसने खूब गाल बजाये है। हे भक्तो! मै तुम्हारा कहना नही मानूँगा, इसने हमें बहुत बोल बोले है।

भक्त विनती करते है— हे प्रभो! दुष्ट की दुष्टता मत देखिये, रुक्मिणी की ओर देखिये, और अपने विरुद पर ध्यान दीजिये। हरि ने भक्तो की विनती सुन ली। रुक्मकुमार को छोड़ दिया। भुजा पकडकर उसे सामने लिया और लाकर पैरो लगाया।

रुक्मकुमार ने कहा— मैंने मन में जान लिया है कि मैं अपराधी हूँ, और आप वास्तव में गोकुल के कृष्ण है। राजा भीष्मक तो मना करते थे पर मैने उनकी कही बात एक भी नही मानी। मैंने जगत के ईश्वर, सनातन परब्रह्म को जान लिया है। वह छिपा हुआ नही है।

पदम भणै प्रणवै पाय लागूं अब ठाकुर कर मान्यो

११—शिशुपाल और भाभी

भाभी की प्रतीक्षा

दोहा— सखियां संग भाभी भणै मो मन घणो उदास
बिलखा छै रंग-माळिया बिलखो छै रणवास
तखत चंदेरी सूनो पड़्यो खाली हुवा रणवास
कासूं भोजन चांपिया नांही है कुसळात
महल चढी सिसपाळ कै चहुं जोवै उकळात
तखत चंदेरी राजवी घरे पधारया रात
सिसपाळो बिलखो भयो सगळी जान खपाय
जुरासिंध सूं यूं कहै मरूं कटारी खाय

मारू— छुरी कटारी वेग मंगावो खाय छुरी मर जाऊं
घर मे म्हांरै सुगणी भावज मूंढो कठै दिखाऊं
कहै नेवगी, सुणो सिरदारा! मसलत इसी विचारो
थारै कुमी नहीं काहे की सागत और मंगावो
ले'र वधाई चल्यो नेवगी डोढयां भीतर आयो
सैन-भगत नै देख आंवतो पटराणी वतळायो
कांइ-कांइ थांनै कोरबरो दियो कांई साहेळे दचायो?
कांई तो हथळेवै दीनो कांइ समठूणी आयो?
कोरबरो राणी मुमकुस दीनो साहेळो वीलायो
समठूणी पर पड़ी वीजळी हथलेवै हर आयो
हळ सूं तो म्हांरी हुयी आरती मूसळ रोळ मचायी
कहै नेवगी, सुण पटराणी सगळी जान खपायी
पहले गोळै उडी सींधड़ी दूजै चिराक उडाई
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं हुयी घणी हळकाई

शिशुपाल को धीरज बंधाना

दोहा— अंत आतर सिसपाळ कूं जुरासिंध दै धीर
जीत हार अेक ठोड़ नै फिरत रहै भट वीर

पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— रुक्मकुमार ने कहा कि अब मैने आपको ठाकुर (भगवान) समझ लिया ।

११—शिशुपाल और भाभी

भाभी की प्रतीक्षा

भाभी अपनी सहेलियों से कहती है कि मेरा मन बहुत उदास है। रंगमहल उदास है और रनिवास भी उदास है। चंदेरी का सिंहासन सूना पड़ा है, रनिवास खाली हो गये है। थाल का भोजन ··· । कुशल नही दिखायी देता है। वह शिशुपाल के महलो पर चढी और आकुल हुई-हुई चारों ओर देख रही है। (उसने सपना देखा कि) चदेरी राज्य के राजा रात को घर पधारे (आये) है। उधर शिशुपाल सारी बरात युद्ध में खपाकर दुखी है। उसने जरासंध से यों कहा कि मै कटारी मारकर मर जाऊँगा। छुरी और कटारी शीघ्र मगावो, मै छुरी खाकर मर जाऊँ। हमारे घर में गुणवती भाभी है। मैं मुँह कहाँ दिखाऊँगा ? नेवगी (नेग लेने वाले अर्थात् नाई) ने कहा—हे सरदारो ! सुनो। ऐसी सलाह करो। आपके किसी बात की कमी नही है।

नेवगी बधाई लेकर चला और ड्योढी के भीतर आया। सेन भक्त को (नाई को) आता हुआ देखकर पटरानी ने बात की—

आप लोगो को कोरवरे में क्या-क्या दिया ? साहेले की रस्म मे क्या दिया ? हथलेवे में क्या दिया गया और समठूणी (पहरावनी) में क्या आया ? नाई ने कहा—हे रानी ! कोरबरे मे मुसकुस दिया। साम्हेला विला गया। पहरावनी पर विजली पड़ गई, और हथलेवे में हरि (कृष्ण) आया। हल से हमारी आरती की गई और मूसल ने घमासान मचाया। नेवगी ने कहा—हे पटरानी ! सुनिये। सारी बरात को ही खपा दिया (समाप्त कर दिया)।

पहले गोले में सीधड़ी उड़ गयी। दूसरे ने चिराक ··· उड़ा दी। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—नेवगी ने वतलाया—वहुत ही हल्की वात (अपमान की बात) हुई।

शिशुपाल को धीरज बंधाना

अत्यंत आतुर हुए शिशुपाल को जरासंध धीरज देता है—हे वीर योधा ! जीत और हार सदा एक स्थान पर नहीं रहती, वे फिरती रहती हैं (कभी यहाँ, कभी वहाँ)।

कहै जुरासिंध राव यूं घर चालो सिसपाळ !
इण अवसर जीतां नहीं सानकूळ नहिं काळ

शिशुपाल का रात के समय चंदेरी लौटना

सोरठ—कांइ करूं मइया मोरी !
मैं कैसे जाऊं चंदेरी ?
मै तो नोज कुनणपुर आयो
म्हारो सगळो कटक खपायो
भाभी वहोत समझायो
म्हारै दाय अेक नहि आयो
आगै भाभी सुलखणी नारी
म्हानै देखत देसी गारी
ओ तो रात पड़्या घर आयो
बारी मे मुख्ख दिखायो
भाभी अैसे कह वतळायो
ज्यांरो पदम भगत जस गायो

दोहा— रात पड्या घर आवियो पड़दा दिया खंचाय
मुखां कंवर बोलै नहीं नीर अन्न नहिं खाय
जे सपनो साचो भयो, भाभी करै उपाय
संग ले सखी सहेलियां महल वना रै जाय

भाभी का उपालंभ

दोहा— मुख देखावो वनी को देखत मौय सुख होय
करां वधाई रंगरळी ज्यूं जाणै सव कोय
कितरो दीनो दायजो कांइ मिजमानी कीन ?
गज घोड़ा वरतण किता कपड़ा किताक दीन ?

मारू— कितरा दिन मिजमानी जीम्या कितोक दायजो लाया ?
दासी-दास चरण-सेवा कूं कितणा संग खिनाया ?
राजा भींव मिल्यो किण विध सूं किण विध फेरा लीना ?
कितरो थांरो खरच करायो पैरावणी कांइ दीना ?
सुण्या वचन भाभी रा मुख सूं मन में अत पिसतावै
नीचो सीस दियो गोडां में ज्वाव अेक नहिं आवै

जरासंध राजा से कहता है—हे शिशुपाल ! घर को चलो। इस समय जीतेगे नहीं, क्योकि समय अनुकूल नहीं है।

शिशुपाल का रात के समय चंदेरी लौटना

अरी मेरी माँ ! मै क्या करूँ ? मैं चंदेरी कैसे जाऊँ ? मैं क्यों कुंदनपुर आया ? मैंने अपनी सारी सेना खपा दी (खतम कर दी)। भाभी ने वहुत समझाया था पर एक भी वात मुझे पसंद नहीं आयी। (घर जाऊँगा तो वहाँ) आगे सुलक्षिणी नारी भाभी है, वह मुझे देखते ही गाली देगी (बुरा भला कहेगी)।

वह (शिशुपाल) रात पड़ने पर घर आया और खिड़की में से अपना मुँह दिखाया। भाभी ने इस प्रकार कह कर वात की। जिसका पदम भक्त ने यश गाया।

शिशुपाल रात पड़ने पर घर आया और परदे खिचवा दिये। कुंवर मुँह से बोलता नही है और न अन्न-जल ग्रहण करता है।

भाभी चिंता करती है कि कही सपना सच्चा नहीं हो गया हो। वह शान्ति के उपाय करती है। वह सखी-सहेलियों को साथ लेकर शिशुपाल दूल्हे के महल में जाती है।

भाभी का उपालंभ

बनी (दुल्हन) का मुख दिखलाओ। उसे देखकर मुझे सुख होगा। वधाई और रंग-रली (आनदोत्सव) करे। जिससे सब कोई जानें।

दहेज कितना दिया ? कैसी मेहमानी (स्वागत-सत्कार) की ? हाथी, घोड़े और बर्तन कितने है ? वस्त्र कितने दिये ?

कितने दिनों तक मेहमानी में जेवनारें जीमे, कितना दहेज लाये ? चरणो की सेवा करने के लिए कितनो दास-दासियाँ साथ भेजी हैं ?

राजा भीष्मक किस प्रकार मिला ? किस प्रकार भाँवरें हुईं ? आपका कितना खर्च कराया ? पहरावनी में क्या दिये ?

भाभी के मुख से वचन सुने तो मन में बहुत पछताया। सिर नीचे, घुटनों के बीच मे, कर लिया, एक भी बात का उत्तर नहीं आया।

आपके मन में कुंदनपुर भाया था, फिर निमंत्रण पाकर जाना। इस वार तो आपने उतावली की, अगली बार ढील से काम लेना।

थारै मन भायो कुनणापुर फेर खिनावां जाज्यो
अबकै तो थे करी उतावळ अवकै ढील लगाज्यो
म्हे तो थांरी सब सुण पायी आछो कुजस करायो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं तीन लोक जस छायो

ठूमरी—वनड़ी देखण आयी वनाजी !
पड़दा परा करावो
रंगरगीली रो व्यांव कंवरजी! म्हांनै मुखां सुणावो
काइ-कांइ दान दियो रुकमइयै किसोक दायजो लायो
हाथ कस्या हथलेवो कीनो किस गयो सिर रो ताजै
ध्रिक ध्रिक सारो जगत कहत है आ ही कंवर ! थानै छाजै
होम्या ठाटबाट घर आया ओ ही दायजो जाणो
भली भयी घर आया जीवता या ही लाडी कर मानो
पैसारो जुगती सू कीजो घरै जीवता आया
सेनापती दल सा राजा उण कूं कित छोडयाया ?
भली करी जादू राजा नै बुध हर लीनी थारी
लटपट पाघ सेवरो बांध्यो ले गयो ग्वाळ उतारी
भोळै कह्यो, बुरो मत मानो वेगम जात हमारी
भीव-सुता परणीज पधारया वोलै महलां प्यारी
म्हानै लोग ओळभा देवै हसै लोग लुगाई
पदम भणै ध्रिक जीवण लाडा! किसीक वनड़ी पायी

रेखता—सुणो सिसपाळ हो देवर !
कहां तै खो दियो जेवर ?
सुणी सिसपाळ री आवो जिभ्या सूं वोलती भाभी
चदेरी आय क्या कीयो ? जहर-त्रिख खाय ना मूयो?
कबै तुम कीयो पैसारो नगर में चाव थो थारो
कहां तेरी गहण री त्रोली ? कहां तेरी अग री चोळी ?
कहां तेरी पांव री जोडी ? कहां तेरी चढण री घोडी?
कहां सिर पाव रंग-भीनो ? किही नै दान कर दीनो ?
कहां तेरा ऊंट अर घोडा ? कहा बै पालखी जोड़ा ?
कहां तेरा जान रा साथी ? कहां दिगपाळ-सा हाथी ?
किसोयक दायजो आणी ? किसीयक हूई पहराणी ?

हमने आपकी सारी बातें सुन ली है। आपने भला अपयश कमाया ! पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ— आपका यश तीनों लोकों में छा गया है।

हे वनाजी (दूलह राजा) ! मैं बनी (दुल्हन) को देखने आयी हूँ। पर्दे दूर कराओ। हे कुंवर ! रगविरंगी दुल्हन के विवाह की बातें हमें अपने मुख से सुनाओ। रुक्मकुमार ने क्या-क्या दान दिया ? और दहेज कैसा लाये है ?

कैसा हथलेवा किया; सिर का ताज कहाँ गया ? सारा जगत धिक्-धिक् कर रहा है। हे कुंवर ! आपको यही शोभा देता है। ठाठ-बाट होमकर घर आ गये, यही दहेज समझ लो। अच्छा हुआ जो जीते हुए घर आ गये। इसे ही दुलहिन करके मान लो।

प्रवेश युक्ति के साथ (भलीभाँति) करना, जीते-जी घर आ गये हो। पर राजा दंताधर-सरीखे सेनापति थे, उनको कहाँ छोड़ आये ? यादवों के राजा ने खूब की ! उसने तुम्हारी बुद्धि को हर लिया। लटपट पगड़ी और सेहरा बाँधा था, उसे ग्वाला कृष्ण उतार ले गया।

हमने भोलेपन में कह दिया, इसका बुरा मत मानो, हमारी नारी-जाति है। आप भीष्मक-पुत्री को ब्याह कर आये हैं। (इस प्रकार भाभी महलो में शिशुपाल से कह रही है)। हमे लोग उपालंभ देते है। स्त्री-पुरुष सब हँसते है। पदम भक्त कहता है कि दूल्हे ! तुम्हारे जीवन को धिक्कार है। वाह ! कैसी दुलहिन पायी ?

हे देवर शिशुपाल ! सुनो, तुमने वह सारा जेवर कहाँ खो दिया ?

शिशुपाल का आगमन सुनकर भाभी मुख से इस प्रकार कहती है— चदेरी आकर क्या किया ? जहर-विष क्यों नहीं खा लिया ?

तुमने नगर में कब प्रवेश किया ? नगर में तुम्हारा चाव था। तुम्हारी गंभीर आवाज कहाँ गयी ? तुम्हारे अंग का वस्त्र कहाँ है ? तुम्हारे पैरों की जूतियाँ कहाँ हैं ? तुम्हारे चढने की घोड़ी कहाँ है ? तुम्हारा रग-भीना सरोपाव कहाँ है ? क्या किसी को दान में दे दिया ? तुम्हारे ऊँट और घोड़े कहाँ है, और पालकियों के जोड़े कहाँ हैं ? तुम्हारी बरात के साथी कहाँ है ? दिग्पाल-सरीखे हाथी कहाँ है ? तुम

लच्छमी भीव घर जायी किसीयक मांग तैं व्यायी ?
कहो क्या कीयो इत आयी ? मरचो नैं जहर विख खायी?
सीख मानी नही मेरी लगायो दाग चंदेरी
कहा गयी फौज सव तेरी ? कै हळधर मार सव गेरी?
कहा तेरा साज अर वाजा ? कहां निन्नानवै राजा ?
कहां तेरा रथ्थ अर गाडी ? कहां वा रुकमणी लाडी ?
महल में वहोत समझायो मुखां सैं जाव नहिं आयो
धरण्णी चोघ सिसपाळो मूंहड़ो होय गयो काळो
तुच्छ तैं ग्वाळियो जाण्यो करत्ता नांहि पैचाण्यो
हुई क्या, होयगी ओरैं मती ना भूलियो भोरैं
राजसी जग्य जावोगे वहां तैं नांहि आवोगे
चक्र अेक वणैगो थारी मानो नहिं वात थे म्हारी
मानी नहिं वात तुम मेरी भयी अव या दसा तेरी
पदम कर जोड़ कैं गावै कियो सो आपणो पावै

दोहा— लजखाणो वोलै नहीं नीचा कर लिया नैण
धरती तिणका सू खिणै मुखां म वोलै वैण

काफी—तै तो मेरी मानी नही सिसपाळा !
रुकमणि लेय गयो नंदलाला
कहां गया तेरा हसती घुड़ला कहां गया ऊंट रसाला ?
कहां गया तेरा ससतर-वसतर कहां गयी ढळकति ढाला ?
कहां गया तेरा तुररा-किलंगी कहां गयी कंठी माळा ?
कहां गया तेरा हिंगळू ढोल्या कहां गया सोड़ दुसाला ?
कहां गया तेरा मुख रा वीड़ा कहां गया काजळ काळा ?
पदम भणै प्रणवैं पाय लागूं तीन लोक प्रतिपाळा

ठूमरी—वनडी जोवण आयी महाराज !
किसड़ै महल वैठायी
आसामुखी उदासी सव ही अै तो घर रा नाईं
थे तो परण पधारचा लाडा ! अै मांगै रहस-वधाई
जुरासिंध रै पड़ी दड़ादड हळधर जंग मचायी
रुकमइया री मूंछ मुंडायी आवरू कठै गमायी ?
कहां तिहारा हिंगळू ढोल्या कहां रुकमण वैठायी ?

कैसा दहेज लाये हो ? पहरावनी कैसी हुई ? लक्ष्मी भीष्मक के घर जनमी। तुमने कैसी माँग (प्रार्थित दुलहिन) प्राप्त की ? बताओ, यहाँ आकर क्या किया ? जहर खाकर मर क्यों नही गये ? तुमने मेरी सीख नहीं मानी, चंदेरी के दाग (कलंक) लगा दिया।

तुम्हारी सारी सेना कहाँ गयी ? या हलधर ने सबको मार गिराया ? तुम्हारे साज-बाज कहाँ है ? वे निन्नानबे राजा कहाँ हैं ? तुम्हारे रथ और गाड़ियाँ कहाँ है ? वह वधू रुक्मिणी कहाँ है ?

मैंने महलों में बहुत समझाया था पर तुमने मुँह से जवाब नहीं दिया। शिशुपाल धरती की ओर देखने लगा। भाभी ने फिर कहा—तुम्हारा मुँह काला हो गया। तुमने ग्वाले को तुच्छ समझा था। तुमने उस कर्ता को नही पहचाना। अभी क्या हुई है, और भी होगी। इस बात को भोलेपन में भूल मत जाना। तुम राजसूय यज्ञ में जाओगे, वहाँ से लौटकर नही आओगे। एक चक्र तुम्हारी मृत्यु बनेगा। तुम मेरी बात को नहीं मानते हो।

तुमने मेरी बात को नहीं माना, इसलिए अब तुम्हारी यह दशा हुई है। पदम भक्त हाथ जोड़कर गान करता है—जो जैसा करता है वह वैसा पाता है।

लाज का मारा वह बोलता नहीं, उसने नेत्र नीचे कर लिये। तिनकों से धरती को खोदता है। मुँह से बात नही निकालता।

हे शिशुपाल! तुमने तो मेरी बात को नहीं माना। नंद का पुत्र (कृष्ण) रुक्मिणी को ले गया। तुम्हारे हाथी और घोड़े कहाँ गये ? तुम्हारे ऊँटों के रिसाले (सैनिक दस्ते) कहाँ गये ? तुम्हारे शस्त्र और वस्त्र कहाँ गये, और ढलकती हुई ढाले कहाँ गयीं ? तुम्हारे तुर्रा-किलंगी कहाँ गये, कंठी और माला कहाँ गयी ? तुम्हारे हीगलू के पलंग कहाँ गये, और रजाई तथा दुशाले कहाँ गये ? तुम्हारे मुख के पान कहाँ गये ? आँखों का काला काजल कहाँ गया ?

पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—श्रीकृष्ण तीनों लोकों की रक्षा करनेवाले है।

हे महाराजा! मैं बनी (दुलहिन) को देखने के लिये आयी हूँ, उसे कौन से महल में बिठाया है ? ये आशा रखनेवाले घर के सब नाई उदास हो रहे है। हे दूल्हे! तुम विवाह करके आये हो, ये आनंद की बधाइयाँ माँग रहे है। हलधारी बलराम ने युद्ध में ऐसी मार मचायी कि जरासंध के तड़ातड़ मार पड़ी। रुक्मकुमार की मूँछें मुंड़वा डालीं। आबरू कहाँ खो दी ? तुम्हारे हीगलू के पलंग कहाँ हैं ? रुक्मिणी को कहाँ

सवा किरोड़ रो रतन-मूंदड़ो देऊं मुख-दिखळाई
भाभी देत उलाहणो ठट्ठा करत लुगाई
पदमइयो स्यामी भणै तै सगळी जान खपायी

सोरठ—तंग तग वचन सुणावो बोलो बोलणा !
वचन थांरा घट मांहि न भूलां भाभी जी रा झोलणा
लाज गयी कुनणापुर मांही वातां जाणै कोण ना
पिच्याणव खोहण दळ खपियो जाय पड़्या जोधा घणा
पदम भणै भाभी सूं देवर वचन नहीं छाती छोलणा

सोरठ—जळियां नै कांई जळावो ?
हो भावज ! जळियां नै कांई जळावो ?
थे वरजी म्हे मानी नांहीं होणी कोण मिटावै ?
छोहण पिच्याणव सब दळ खपियो म्हारो मन पिसतावै
पदम भणै, भाभी रै चरणां सिसपाळ सीस निवावै

१२—कृष्ण-रुक्मिणी-विवाह

रानी का पछतावा

छंद— कोट भांण प्रकास सुंदर ग्वाळ के संग क्यूं वणै
देव जा का लेख लिखिया यह वचन राणी भणै
अंबिका द्वारै पुजाती जाण देती मै नहीं
यो अंदेसो रह्यो मन में चलत रुकमण ना कही
प्रीत की अेक वात सजनी रुकमणी पहली कही
द्वारका सूं कृष्ण आयो वाहि संग रुकमण गयी
मांढो म्हारो रह्यो कंवारो अब कहो कैसे वणै
दास पदम यूं वीनवै यह रुदन राणी भणै

दोहा— राणी बोलै भींव री सुण कुंदणपुर-राव
बाई वेग मिलाय द्यो म्हां कै सालै घाव

मारू— राणी भणै सुणो राजाजी अब कुछ जतन विचारो
सिरी कृष्ण रुकमण नै ले गया मांढो रह्यो कंवारो
राजा भणै सुणो राणीजी म्हारो कांई सारो
सिरी कृष्ण थांनै कारा लागा डाहल लागो प्यारो

बैठाया है ? मैं सवा करोड़ की रत्नजटित अँगूठी मुँह-दिखलाई में दूँगी। भाभी उलाहना देती है और अन्य स्त्रियाँ मसखरी कर रही है। पदम भक्त कहता है कि भाभी ने कहा—तुमने सारी बरात को खपा (खतम करवा) दिया।

शिशुपाल कहता है—आप कठोर वचन सुना रही है, और बोल (ताने) बोल रही हैं। आपके वचन हृदय में है उनको नहीं भूलेंगे, ये भाभी की लोरियाँ है। कुदनपुर में हमारी लाज चली गई, इन बातों को कौन नहीं जानता ? पचानबे अक्षौहिणी का दल नष्ट हो गया, बहुत सारे योद्धा रणभूमि में जा पड़े (मारे गये)। पदम भक्त कहता है कि देवर ने भाभी से कहा—आपके ये वचन, वचन नही हैं, हृदय को छीलने-वाले (शल्य) है।

हे भाभी ! जले हुओं को क्या जला रही है ? आपने मना किया पर हमने नही माना। होनी को कौन मिटा सकता है ? पचानबे अक्षौहिणी का सारा दल समाप्त हो गया। मेरा मन पछता रहा है। पदम भक्त कहता है कि शिशुपाल भाभी के चरणों में सिर झुकाता है।

१२—कृष्ण-रुक्मिणी-विवाह

रानी का पछतावा

रानी यह वचन कहती है—करोड़ों सूर्यो के प्रकाश-सी सुंदर रुक्मिणी का संबंध ग्वाले श्रीकृष्ण के साथ कैसे बने, पर विधाता ने उसी का लेख लिखा था। मैं अंबिका को अपने द्वार पर ही पुजवाती, पूजा के लिए उसे अंबिका के मंदिर ही नहीं जाने देती। मन में यह अंदेशा रह ही गया कि जाते समय रुक्मिणी ने मन की बात नही कही। हे सजनी ! रुक्मिणी ने प्रेम की एक बात पहले अवश्य कही थी। श्रीकृष्ण द्वारिका से आये, उन्हीं के साथ रुक्मिणी चली गयी। हमारा मांढ़ा (विवाह-मंडप) कुंवारा रह गया। अब बात कैसे बने ? पदम भक्त इस प्रकार विनती करता है—रानी ने अपना यह रोना रोया।

राजा भीष्मक की रानी कहती है—हे कुदनपुर के नरेश ! सुनिये। बेटी रुक्मिणी से जल्दी मिलवा दो, मेरे घाव साल रहे है।

रानी कहती है—हे राजन् ! सुनो। अब कोई युक्ति सोचो। श्रीकृष्ण रुक्मिणी को ले गये और मांढा (मंडप) कुंवारा ही रह गया है। राजा कहते हैं—हे रानी ! सुनो। हमारा क्या वश है ? तुम्ही को

राणी भणै सुणो महाराजा होणहार कुण मेटै
म्हे तो हां पड़दा रा माणस करम किया थांरै वेटै
थांरै कह्यो सुणो राणीजी म्हे तो हरि गुण गाया
केसव कृष्ण द्वारका वासी भगत जाण हरि आया
आगे ई भीड़ चढचा भगतां री पण प्रहळाद रो राख्यो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वेद-पुराणां भाख्यो

छोटे कुमार का कृष्ण के पास जाना और उन्हें लौटा लाना

दोहा— अब ही कहो कंवर नै मन को कपट निवार
दीनानाथ दयाल है विगड़ी लेत सुधार
कंवर सिताब बुलावियो भींवराय अरु राणि
जाय पहुंचौ हरि हलधर कूं नवन करी मधु वाणि
छोटा कंवर री वीनती सुणियो जादू राय
व्यांव रचावां कंवरि रो परण घरां ले जाय

मारू— बाई कंवरि री व्यांव रचास्यां तोरण थांभ घड़ास्यां
साहण वाहण हसती घुड़ला भली भांत मुकळास्यां
कामण कहै कंवारी लाया होय म्हांरी हळकाई
भींवसेन री पत राखो ना म्हे रुकमण रा भाई
कंवर कही सो मानी विनती त्यारी सबै करायी
कोठारी नै अग्या दीनी मनसा वस्त भरायी
छपन भांत रा सीधा आया और घणी इधकाई
भांत भांत री लयी मिठाई डेरां दी पहुंचायी
कुन्नणपुर श्रीकृष्ण पधारचा भींव करै मनुहारी
खान पान पकवान मिठाई सब विध करी तयारी
सीधा क्रोड़ पचास भणीजै गूंझा फीणी लाडू
अगवाणी सारी विध दीनी भर भर ल्याया गाडू
अगवाणी सारी विध दीनी कंचण थाळी झारी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं मंगळ करो तयारी

विवाह की तय्यारी

मारू— विसकरमा नै वेग बुलावो बोल्या त्रिभुवन-राई
जैसो कुनणापुर भींव रो वासैं इधक रचायी

श्रीकृष्ण बुरे लगे और शिशुपाल अच्छा लगा। रानी कहती है—हे महाराज! सुनिये। होनहार को कौन मिटा सकता है? हम तो पर्दे की मानुस है, काम तो आपके बेटे ने किये है। (राजा कहते हैं)—रानीजी! सुनो। तुम्हारे कहने से हमने तो हरि के गुण गाये हैं। केशव कृष्ण द्वारिका के वासी है। वे हरि भक्त को जानकर यहाँ आये।

इससे पूर्व भी वे भक्तों की रक्षा करने चढ़े थे, उनने भक्त प्रह्लाद का प्रण पूरा किया था। पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूं—वेद-पुराणों ने भी ऐसा कहा है।

छोटे कुमार का कृष्ण के पास जाना और उन्हें लौटा लाना

अब भी मन के कपट का निवारण करके कुंवर से कहो कि दीनों के नाथ श्रीकृष्ण दयालु है और बिगड़ी बात को बना लेते है।

तब राजा भीष्मक और रानी ने कुंवर को तुरंत बुलाया। वह श्रीकृष्ण और बलराम के पास जा पहुँचा और प्रणाम करके मधुर वचन से बोला—हे यादवराय! आप छोटे कुमार की विनती सुनिये। राजकुमारी का विधिपूर्वक विवाह करेगे, आप उसे विवाह कर घर ले जाइये।

राजकुमारी बाई रुक्मिणी का विवाह रचायेगे। तोरण और थंभ गढ़ायेगे। सेना और वाहन तथा हाथी-घोड़ों के साथ भली प्रकार से विदा करेगे। कामिनियाँ कहेंगी कि आप कुंवारी को ले आये। इससे हमारी हलकी बात लगेगी। आप भीष्मक की प्रतिष्ठा रखिये न, हम रुक्मिणी के छोटे भाई हैं। कुवर ने जो कही उस विनती को श्रीकृष्ण ने मान लिया। सब प्रकार की तैयारी करवायी। कोठारी (भंडार के अध्यक्ष) को आज्ञा दी और इच्छित वस्तुएँ भंडार में भरवा दीं। छप्पन प्रकार की भोजन-सामग्री आयी, और दूसरी चीजें भी प्रभूत मात्रा में थी। अनेक प्रकार की मिठाइयाँ लेकर डेरो में पहुँचा दी। श्रीकृष्ण कुंदनपुर में आये तब राजा भीष्मक ने उनकी मनुहार की। खान-पान, पकवान और मिठाइयों की सब प्रकार से तैयारी की। पचास करोड़ प्रकार की भोजन की सामग्री कही गयी है वह तथा गूंझे, फीणी और लड्डू आदि से भली प्रकार से अगवानी की। सब वस्तुएँ गाड़े भर-भर कर लाये।

सोने के थाल और झारी से स्वागत-सत्कार किया। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूं—सब लोग कहने लगे—अब मंगल (विवाह) की तैयारी करो।

विवाह की तैयारी

त्रिभुवननाथ श्रीकृष्ण बोले—विश्वकर्मा को शीघ्र बुलाओ। राजा भीष्मक का जैसा कुंदनपुर शहर है उससे श्रेष्ठ नगरी का निर्माण कराओ।

सिरी कृष्ण री अग्या लेकर कंचन-पुरी वणायी
सुंदर सुंदर महल वणाया नीका चित्तर लायी
रवि तळ दूजा और न कोई श्रीपत री स्त्रभराई
ऊची ऊंची वणी अटारी खभा रतन जड़ायी
हीरा पन्ना लाल लगाया मोतिन चौक पुराया
राजा भींव रो सब परवारो माधोपुर में आया
रुकमण माता संग सहेली हिलमिल मगळ गाया
चौरासी दरवाजा दीरघ मणि माणक जड़वाया
सात जोजन अर कुनणापुर री अैसी सोभा लायी
कंचण पोळ वणी अत नीकी रतना चित्र लगायी
सरस वाटिका भयी चंदण री गंध रही महकाई
घर-घर तोरण धजा पताका वदरमाळ वंधाई
बैठक मध्य वणी अत सुंदर आनंद उर न समायी
अठारै भार वनासपती ले चहुं दिस ओर लगायी
सुंदर कूप तड़ाग वावड़ी पंछी वचन सुहायी
माधोपुर री अदभुत सोभा जन पदमइयै गायी

दोहा-- कंगन बांधै सुंदरी भीसम राजकंवारि
माग निहारै नित्य ही दरसण होय मुरारि
पूजावै घर माढवो जादूपत री जान
दुलहन राणी रुकमणी दूल्हो स्याम सुजाण
दुलहो उतरयो वाग में सब ही सींज लगाय
कुन्नणपुर री कामणी हरजी नै देखण जाय
पगां उचाळू मोचड़यां निरखत चालै छांह
रुणझुण पग नेवर वजै अणवट वाजै सांह
मूंगफळी सी आंगळी वेलण वेली वांहि
दरसण पायो स्याम रो मंद मंद मुसकाहि

बरवो--चालो सखी देखण जइयै स्याम साहजादे वनां
मालण ल्यायी सेवरो दुलहा रै सीस वणाय
वागो सोहै केसरयो साहजादे वनां
माथै पंचरंग पाघडी सेवरो अत सोहना
थांरो वाई रुकमणी लीनो छै मन मोहि
या जोड़ी रै ऊपरै दारा पदम बळि जाय

विश्वकर्मा ने श्रीकृष्ण की आज्ञा लेकर कंचन की पुरी बनायी। उसमें बड़े शानदार सुदर महल बनाये और अच्छे-अच्छे चित्र लगाये गये।

श्रीपति कृष्ण के ऐश्वर्य की तुलना में सूर्यमंडल के नीचे (पृथ्वी पर) ऐसा दूसरा कोई नगर नहीं था। ऊँची-ऊँची अटारियाँ बनी हुई थीं जिनके खंभे रत्नों से जड़े हुए थे।

हीरे, पन्ने और लाल लगाये गये मोतियों से चौक पूरे गये। राजा भीष्मक का सारा परिवार (नये बसे) माधोपुर में आ गया। रुक्मिणी की माता ने सहेलियों के साथ मिलकर मंगल गीत गाये। चौरासी बड़े-बड़े दरवाजों को मणियो और माणिकों से जड़वाया। सात योजन में फैले उस शहर की कुंदनपुर की-सी शोभा बनायी। सोने की अत्यंत सुन्दर पौरियाँ बनायी गयी जिनमें रंग-बिरगे रत्न जड़े हुए थे। चंदन की सुन्दर वाटिकाएँ थी जिनमें सुगन्ध महक रही थी। नगर के घर-घर में तोरण, ध्वजा, पताकाएँ तथा वंदरमाल बाँधी गयी। बीच मे अत्यन्त सुन्दर बैठक बनी हुई थी जिसे देखकर आनन्द हृदय में नहीं समाता था। अठारह भार (परिमाण-विशेष) वनस्पतियाँ लेकर चारों दिशाओं में लगायी गयी। सुन्दर बाग, कुएं, तालाब और वापिकाएँ निर्मित हुई जहाँ पक्षियों की सुहावनी बोलियाॅ सुनायी पड़ रही थीं। माधोपुर की ऐसी अद्भुत शोभा का पदम भक्त ने गान किया है।

भीष्मक की राजकुमारी रुक्मिणी कंगन बाँधने लगी। वह प्रतिदिन बाट जोहती है कि मुरारि श्रीकृष्ण के दर्शन हो जायँ। घर पर मंडप की पूजा करवाती है।

यादवपति कृष्ण की बरात आयी। सुजान श्याम दूल्हा बने हैं और रानी रुक्मिणी दुल्हन। सब तैयारियाँ करके दूल्हा बाग में उतरा है। कुंदनपुर की कामिनियाँ श्रीकृष्ण को देखने के लिए जा रही हैं। उनके पैरों में ... जूतियाँ है। वे चलती हुई छांह को देखती है। उनके पावों के नूपुर रुन-झुन करके बज रहे है, बीच मे बिछिये बज रहे हैं। उनकी उँगलियाँ मूँग की फली जैसी लम्बी और पतली हैं। और बाँहें ऐसी है मानो बेलन से बेलकर बनायी गयी हों। उनने श्याम का दर्शन पाया। वे मंद-मंद मुसकरा रही है।

हे सखी! चलो, दूल्हे राजकुमार श्याम को देखने चलें। मालिन दूल्हे के सिर के लिए सेहरा बनाकर लायी। राजकुमार कृष्ण के केसरिया रग का बागा (वर के पहनने का जामा) शोभित हो रहा है। उनके सिर पर पंचरंगी पगड़ी और सेहरा अत्यन्त लुभावना लग रहा है। हे वाई रुक्मिणी! दूल्हे ने तुम्हारा मन मोह लिया है।

पदम भक्त इस जोड़ी पर बलिहारी जाता है।

देस-- मोही थे कुनणापुर री नार
टूणा सा कछु कीया म्हां पर नैणां सुरमो सार
हिलमिल कै बहौं सखियां आयी दरसण कियो निहार
रूप विलोकत भयी बावरी कुनणापुर री नार
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं वस रह्या हीय मंझार

बरात का स्वागत

दोहा-- राजा सुत भेळा हुवा कोक्या मंत्री सार
सामेला साकत करो विलम न लावो वार
मारू--इंद्रायण वाजा भीसम रै राज लोक झुणकारा
सात जोजन अर कुनणापुर सूं घर घर मंगळचारा
धूप दीप आरती उतारै सखियन मंगळ गाया
राग छतीस अलापै गंधरब झाझा पार न पाया
नोछावर नाना विध करिहै सुभ वायक बहु वाना
चोरासी दरवाजा दीरघ कळस वंध्या रै साना
हाट पटण चौहट सिणगारै ओछाडै बाजारा
कनक महल राजा भीसम रै जड़िया नग ज्यूं हारा
चोवा चंदण और अरगजा म्रगमद केसर घोळी
रुकम कंवर खेलण नै लागो छपन कोट सूं होळी
वाजै नौबत घुरै दमामा भींव करी असवारी
तीस लाख मैगळां रै मस्तक मेली अंबावाड़ी
छड़ीदार दरवान खिजमती सहनाई रणतूरा
प्रथमी रंज गगन सूं लागी देखण रह गयो सूरा
भींवराय मिलबा नै चाल्या पांचूं पुत्र बुलाया
छांड पालखी हुवा पयादा जब जादू वतळाया
भींवराय नै आदर दीज्यो केसौ यूं समझाया
छपन कोट राजा भीसम रै जादू सामा आया
ताजी लाखा तुरी ऐराकी करड़ा काछी लीना
रुकमकेस राजा भीसम रै जाय सामेळै दीना
गोड करै घूमंता गाजै अर महमंता हाथी
सात हजार दिया चौदंता ऐरापत रा साथी
भींवराय जाय पांवां लागो देव पुसप वरसाया

हे श्रीकृष्ण! आपने कुंदनपुर की रमणियों को मोह लिया है। आपने अपने नेत्रों में सुरमा डालकर हम पर कुछ जादू-सा कर दिया है।

बहुत-सारी सखियाँ हिल-मिलकर आयी और उनने भली प्रकार निहारकर श्रीकृष्ण के दर्शन किये। उनके रूप को देखते ही कुंदनपुर की रमणियाँ बावली हो गयी। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—श्रीकृष्ण सबके हृदयों के बीच में बस रहे है।

बारात का स्वागत

राजा भीष्मक और उसके पुत्र इकट्ठे हुए और श्रेष्ठ मंत्रियों को बुलाया—'साम्हेले' (अगवानी) की तैयारी करो, अब देर मत करो।

राजा भीष्मक के राजमहलों में इंद्रलोक जैसे बाजे बज रहे थे। कुंदनपुर और उसके आसपास सात योजन तक के घर-घर में मंगलाचार हो रहे थे। सखियाँ मंगल-गीतों के साथ धूप और दीप से आरती कर रही थी। प्रचुर मात्रा में गंधर्व छत्तीस रागों का आलाप ले रहे थे जिनका पार ही नही मिलता था। अनेक वर्णों के लोग शुभ वचनों से अनेक प्रकार के न्यौछावर कर रहे थे। चौरासी दीर्घ दरवाजों के ऊपर सोने के कलश बँधे हुए हैं। हाट, शहर और चौराहों को सिंगारते हैं, बाजारों को सजाते है। राजा भीष्मक के सोने के महल ऐसे जान पड़ते थे मानो हार में रत्न जड़े हों।

चोवा, चंदन, अरगजा, कस्तूरी और केसर का घोल बनाकर रुक्मकुंवर छप्पन करोड़ यादवों के साथ होली खेलने लगा। नौबत के बाजे बजने लगे। दमामों (नगाड़ों) की आवाज होने लगी। राजा भीष्मक ने सवारी की। तीस लाख हाथियों के सिर पर अंबावाड़ी रखी गयी। छड़ीदार, दरबान और सेवक हाजिर थे। शहनाई और रणभेरियाँ बज रही थी। पृथ्वी की धूल गगन-मंडल से जा लगी थी। सूरज भी दिखाई नहीं दे रहा था।

उसने पाँचों पुत्रों को बुलाया। राजा भीष्मक मिलने के लिए चला। वे पालकियाँ छोड़कर पैदल हुए और तब यादवों ने बात की।

श्रीकृष्ण ने यादवों को यों समझाया—राजा भीष्मक को आदर देना। राजा भीष्मक की अगवानी के लिए छप्पन करोड़ यादव आये।

राजा भीष्मक के पुत्र रुक्मकेश ने ताजी, तुरी, ऐराकी, करड़ा और काठी जातियों के लाखों घोड़े लिये और जाकर साम्हेले में दिये। जो मदमस्त हुए गोड करते थे और गरज रहे थे ऐसे ऐरावत के साथी जैसे सात हजार मतवाले हाथी भी साथ ही दिये।

पुर नारी चहुं ओर तें आयी मिल मिल दौर
निरखत मानूं चित्र सी जैसें चंद चकोर
जरकस वागो पाघ में मोतीयन को मोड़
पदम भणै पुर कामणी लीनो छै चित चोर

सोरठ— म्हांरा रंगीला वना नै आघा आबा दीजो हे
पुर-नारी चढ महल अटारी निरखत नैण सिराबा दीजो हे
माधुरी मूरत वसी उर मांही टुकियक याकूं विलमाबा दीजो हे
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं आवागमण मिटाबा दीजो हे

देस— समदण, आघी आ अे काजळ सार
त्रिभुवनपत ऊभा बार
दांतां मिस्सी सोवणी मोती तपै लिलाड़
चूपा सोवै चिलकणी नथड़ी भळकादार
चुड़लो हसती दांत रो पहर्‌यो बांह पसार
कांकण रतन जड़ाव रो हीरां जड़ियो हार
छपन कोट जादू चढ आया आया कृष्ण मुरार
पदम भगत नैणां रस लूंटै कुनणापुर री नार

कामण—कामण करबा आयी राज जोवां वाट तुमारी
जिण कामण हिरणाकुस मार्‌यो नख सैं उदर विडार्‌यो
जळ सैं राख अगन सैं राख्यो जन प्रहळाद उबार्‌यो राज
जिण कामण सैं लंका तोड़ी सायर सिला तिरायी
कुंभकरण महारावण मार्‌यो फेरी रामदुहाई राज
जिण कामण सैं समंद विलोयो वासग नेती कीना
चवदा रतन काढ कर ल्याया अैसो भेद जणायो राज
जिण कामण सैं बळि छळ लीनो तीन पैड भरवायी
चंद र सूर फिरै जितणी में दोय ही पैड करायी राज
जिण कामण सैं कंस पछाड़्यो जीत्यो मल्ल अखाड़ै
कवळियापीड़ कुंजरहि मार्‌यो जमला अरजन पाड़ै राज
सात नाळ रो तागो ल्यायी सात सहेली आयी
श्रीकृष्ण कूं नापण लागी नापत देह वधायी
अेक सहेली अैसें बोली सुण म्हारी रुकमण बाई
अैसा कामण करां कृष्ण पर हाजर रहै सदाई

नगर की रमणियाँ चारों ओर से हिल-मिलकर दौड़ती हुई आयीं। वे श्रीकृष्ण को देखते ही चित्रलिखित-सी रह गयीं, मानो चकोर चंद्रमा को देख रहे हों। श्रीकृष्ण जरी का बागा (जामा) धारण किये हुए थे। उनकी पाग (पगड़ी) में मोतियों का मौड लगा हुआ था। पदम भक्त कहता है कि श्रीकृष्ण ने नगर की कामिनियों के चित्त को चुरा लिया है।

हमारे रंगीले दूल्हे को आगे आने दो। नगर की रमणियाँ महलों की अटारियों पर चढ़कर देखती है। उनके नयनों को शीतल (तृप्त) होने दो। कृष्ण की मनोहर मूर्ति हृदय में बसी है, उसे थोड़ी देर स्थायी होकर रहने दो। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—आवागमन को मिटाने दो।

हे समधिन! आगे आ। त्रिभुवनपति के नयनों में काजल डाल। वे द्वार पर खड़े है। तुम्हारे दांतों में सुन्दर मिस्सी है, ललाट पर मोती चमक रहे हैं, दांतों में चमकीली चूचे शोभा देती है, तुम्हारी नथ भभकेदार (ज्योतिर्मय) है। तुमने बांहें फैलाकर हाथीदांत का चूड़ा पहन रखा है। तुम्हारा कगन रत्नों से जटित है, हार हीरों से जड़ा हुआ है। छप्पन करोड़ यादव चढ़कर आये है और उनके साथ मुरारी कृष्ण आये हैं। पदम भक्त कहता है कि कुंदनपुर की नारियाँ नेत्रों का आनन्द लूट रही हैं।

हे राज (श्रीकृष्ण)! हम कामण (कामिनी अर्थात् नारी का जादू) करने आयी है। हम तुम्हारी बाट जोह रही है। वही कामण जिसके द्वारा तुमने हिरण्यकशिपु को मारा, नख से उसका उदर विदीर्ण किया और भक्त प्रह्लाद की जल और अग्नि से रक्षा करके उसका उद्धार किया था; जिस कामण से तुमने लंका को तोड़ा, समुद्र मे शिलाएं तैरायी थी, कुभकर्ण और महारावण को मारा तथा सर्वत्र राम-दुहाई फिरा दी; जिस कामण से तुमने वासुकि नाग को नेती बनाकर समुद्र को मथ डाला और ऐसे भेद का पता लगा कि चौदह रत्न निकाल कर ले आये; जिस कामण से तुमने राजा बलि को छल लिया। उससे तुमने तीन डग की भिक्षा ली और जितनी धरती में सूरज और चन्द्रमा फिरते है उसे दो ही डगो में माप ली; जिस कामण से तुमने कस को पछाड़ा, मल्ल को अखाड़े में जीता, कुवलयापीड हाथी को मारा और यमल तथा अर्जुन नामक वृक्षों को उखाड़ डाला। सात सहेलियाँ आयी। वे सात नाल (धागों) का डोरा लायी। वे श्रीकृष्ण को मापने लगी। तब श्रीकृष्ण ने अपनी देह को बढा लिया।

एक सहेली ने इस प्रकार कहा—हे बहन रुक्मिणी! सुनो, श्रीकृष्ण पर ऐसा कामण (जादू) करेगी कि वे सदैव (तुम्हारी हाजिरी मे) खड़े रहा करेगे।

दूजी सहेली अैसें वोली सुण म्हारी रुकमण वाई
अैसो कामण करां कृष्ण पर दिन दिन सूकत जायी
तीजी सहेली अैसें वोली सुण म्हांरी रुकमण वाई
मातपिता कवहूं नहिं चाहै चाहै म्हांरी वाई
चौथी सहेली कुनणापुर री नीची नीची आयी
कृष्ण खड़ा चहुं दिस नै जोवै वंध तोड़ ले जायी
वध तोड़ मैं कामण वांधूं तो वावल री जायी
इतणी वात कृष्णजी सुणकै चिटकी मार उडायी
ऊपर ऊपर लै चकफेरा तुंही-तुंही करती आयी
थांनै कामण कौण करै थांरी तीनूं लोक दुहाई
चरखी मोर हवाई छूटै त्रिभुवन तोरण आया
सब सखियन मिल मंगळ गाया कुमकुम कळस वधाया
ब्रह्मादिक नै वेग वुलावो मोतियन चौक पुरावै
ब्रह्मा इंद्र आदि लै सिव मुनि ऊधो चंवर ढुलावै
गणपत सरिखा चढचा वराती जैसे सुरज दिपावै
सुर तेतीसूं हरख हुवा जद पुसप बहुत वरसावै
सव ही जादू वराती आये दूल्हो कंवर कन्हाई
कंचन थाळ धरचो कर ऊपर सुवरन सीक वगायी
राणी साज आरतो लायी दिवलै जोत सवायी
पांच पदारथ दिया आरतै पदम भगत वळि जायी

ठुमरी– जादूवर नै कामण करस्यां
करस्यां म्हे नहिं डरस्यां जादूवर नै कामण करस्यां
जंतर लिख पचरंग पगड़ी में सहियां ! म्हे धरस्यां
सात सुई ले सात सवागण लीलो डोरो ल्यायी
इण डोरा में वस कर राखां रीझै रुकमण वाई
इण डोरै जादू वस करस्यां इण रो इचरज भारी
इण डोरा में या सकळाई वस करस्यां गिरधारी
सटपट महंदी मोळी गटपट गुली सिंदूर मंगावै
चटपट कामण करां वना पर झटपट वस होय जावै
रतनजटित मादळियो लायी डोरो मांहि भरावां
मदछकियै व्रजराज वनै नै कान पकड़ कर ल्यावां

दूसरी सहेली यों वोली—हे मेरी बहन रुक्मिणी ! सुनो। श्रीकृष्ण पर ऐसा कामण करेंगी कि वे दिन-दिन सूखते जायेंगे। तीसरी सहेली यों बोली—हे मेरी रुक्मिणी बहन ! सुनो। (श्रीकृष्ण पर ऐसा कामण करेंगी कि वे) अपने माता-पिता को कभी नही चाहेंगे और केवल हमारी वहन को ही चाहेंगे। कुदनपुर की चौथी सहेली जरा नीचे झुकती-सी चुपचाप आयी। श्रीकृष्ण खड़े-खड़े चारों दिशाओं को देख रहे थे कि बंधन (सूत) को तोड़कर ले गयी। उसने कहा—मै बंधन तोड़कर कामण से बांध दूँ तभी अपने पिता की बेटी हूँ। इतनी बात सुनकर श्रीकृष्ण ने चुटकी बजाकर उसे उड़ा दिया। वह ऊपर ही ऊपर चक्कर लगाने लगी और तूं-ही—तूं-ही करती हुई आयी (और कहने लगी)—आपको कामण कौन कर सकता है ? आपकी तो तीनों लोकों में दुहाई हो रही है।

चरखी, मोर और हवाई नाम के पटाखे छूट रहे थे। तीनो लोकों के पति तोरण पर आये। सारी सखियों ने मिलकर मंगल गाये और कुंकुमयुक्त कलसों से उनको आगे आकर लिया। ब्रह्मा आदि को जल्दी बुलाओ ताकि वे मोतियों का चौक पुराये। ब्रह्मा इंद्र आदि सहित शिव, मुनि लोग और उद्धव चँवर डुला रहे है। बरात चढे हुए गणपति गणेश ऐसे लग रहे है मानो सूरज जगमगा रहा हो। उस समय तेतीसों देवता हर्षित हुए और उनने बहुत-सारे पुष्पो की वर्षा की। (इस प्रकार) सभी यादव बराती आये और कुंवर कन्हैया दूल्हा बने थे। हाथों में स्वर्ण-थाल लिया हुआ था, ऊपर सोने की………। भीष्मक की रानी आरती का थाल सजाकर लायी जिसके दीपक की ज्योति जगमगा रही थी। 'आरती' के दस्तूर में पाँचो पदार्थ दिये गये। पदम भक्त श्रीकृष्ण पर बलिहारी जाता है।

हम यादवश्रेष्ठ श्रीकृष्ण को कामण करेंगी। हम कामण करेंगी और डरेंगी नहीं। हम यादवश्रेष्ठ को कामण करेंगी। हे सखियों ! हम मंत्र लिखकर श्रीकृष्ण की पचरंगी पगड़ी में रख देंगी। सात सुहागिनें सात सुइयाँ और नीले रंग का डोरा लायी—इस डोरे में श्रीकृष्ण को वशीभूत करके रखेगी जिससे वाई रुक्मिणी खुशी हो जायेगी। इस डोरे से यादवों को वश में करेंगी। यह बड़ा आश्चर्यजनक डोरा है। इस डोरे मे यह कला है कि इसके बल से गिरिधारी कृष्ण को वश में कर लेंगी। सटपट मेंहदी और मौली तथा गटपट गुली और सिंदूर मंगाओ ताकि बनड़े पर चटपट कामण करे और वे झटपट वश में हो जायँ।

वे रत्नजटित मादलिया (तावीज) लायीं कि उसे डोरे के भीतर भरे (गूंथे) और मद से छके व्रजराज दूल्हे को कान पकड़कर ले आयें।

भींवपुरी अत आणंद उपज्यो कविजन कहत न आवै
तीन लोक रै नाथ वना पर पदम भगत बळि जावै

काळिंगड़ो– कामणिया म्हे नहि जाणां वनाजी !
कामणगारी वनी री भूवा जिण सै करज्यो अरजी
नंदकंवर व्रजराज वना पर कामण री कांई मरजी
कामणिया सिर पेच किलंगी झुकतै तुररै सोहै
कामणिया नासा के मोती भाल तिलक मन मोहै
झुक अंजन खंजन नैनन में
मुख बीड़ी मधुरे बैनन में
कान कुंडळ सोभा अत भारी
छूट रही अत घूघर वारी
कामणिया चोवा में भीना जे कोई अंतर लगावै
कामणिया फूलन में राजै जे कोई गूंथ पैरावै
धनस बाण कर कमर कटारी
नख महंदी लालन छिब भारी
तन झीणै केसरियै बागै
दुपटै फेटै उड उड लागै
और सुणो सब डेरै डांडै
सस्तर वस्तर खेड़ै खांडै
और सहेल्यां री गत न्यारी
सब ही है अै कामणगारी
कामणिया अतळस सूथण में रेसम नाडै साजै
कामणिया दळ जोधा जोड़ै पांय नुपुर छिब छाजै
महलां बैठी मंत्र चलाऊं
तो कामण रो परचो पाऊं
नवल वनी री चाची भूवा करड़ा कामण जाणै
रतन जड़ित कंचन रै पिंजरै सूवो कर बैठाणै
कुंदणपुर सब कामणगारो
पदम-नाथ अब तुमहि उबारो
जो यह कामण सुणै अर गावै
वसै वैकुंठ बहुर नहिं आवै

भीष्मक की पुरी में अत्यंत आनंद हुआ जिसका वर्णन कवि लोगों से भी नहीं किया जा सकता। तीनो लोकों के स्वामी दूल्हे पर पदम भक्त वलिहारी जाता है।

हे दूल्हाराज ! हम कामण करना नहीं जानतीं। कामणगरनी तो बनड़ी (दुल्हिन) रुक्मिणी की बुआ है, उससे प्रार्थना करो। नंदकुमार व्रजराज दूल्हे पर उनकी क्या मर्जी है ?

कामण (जादू) सिरपेच में, कलंगी में और झुकते हुए तुर्रे में शोभित होता है। कामण नासिका के मोती में और ललाट के तिलक में मन को मुग्ध करता है। वह झुके हुए खंजन जैसे नेत्रों के अंजन में, मुख के बीड़े में और मधुर वचनों में शोभा देता है। कानों के कुंडलों में उसकी बड़ी शोभा है।

यह कामण चोवा में बसता है यदि कोई इत्र लगाता है। यह कामण फूलों में शोभा देता है यदि कोई गूंथकर पहनाता है। हाथ के धनुष-बाण और कमर की कटारी में और नखों की महंदी में इसकी भारी शोभा है। झीने शरीर में और केशरी रंग के बागे (जामे) में, दुपट्टे में और फेंटे में यह उड़-उड़ कर लग जाता है। और भी सुनो—यह समस्त डेरे-डंडे में तथा शस्त्र-वस्त्र में तथा देश और बस्तियों में शोभित होता है।

दूसरी सहेलियों की गति निराली है। ये सभी कामण करनेवाली (जादूगरनी) है। कामण अतलस की बनी सूथन और रेशम के बने नाड़े में सजता है।

कामण सेना के योधाओं के साथ रहता है, वह पैरों के नूपुरों में शोभित होता है।

महलों में बैठी हुई मंत्र चलाऊँ तो 'कामण' का चमत्कार देखूं।

नवल वधू की चाची और बुवा कठोर 'कामण' जानती हैं। वे सुग्गा बनाकर रत्नों से जटित सोने के पिंजरे में बैठा देती है।

कुंदनपुर सब का सब कामण करनेवाला है। हे पदम के स्वामी !

दोहा— कांकण बांधै सुंदरी भीसम राजकंवार
माग निरंतर जोइयै हरि पति प्राण अधार
कुन्नणपुर रो माढवो जादूपत री जान
दुलहन राणी रुकमणी दूल्हो स्याम सुजाण

छंद— उबटन मलियै अंग क मैल छुड़ाइयै
हंसि हंसि दुरजण लोग ... ...
सखियन कर सिणगार क पणघट जाइयै
कुंभ - कळस भरवाय भवन में लाइयै
वनिता लायी दौड़ चहूं तें लीजियै
तेल फुलेल रळाय मिलौणा कीजियै
मळयागिर रो पाट आंगण विछाइयै
गंग - जमन रो नीर रुकमण न्हवाइयै
सज सोळै सिणगार खुली चंपा - कुळी
उर की शोभा नैण निरख हरखी अली
मंगळ गावै नार हरख रंग की रळी

दोहा— उछब भरचा माधौपुरी घर - घर मंगळचार
माधौपुर री कामणी - सज सोळै सिणगार

मारू— सब सखियन में नार सयानी न्रप भीसम री नारी
बहु दीपक रो साज आरतो राणी करी तयारी
न्रप भीसम म्हांरो करै आरतो पूरब प्रीत पिछाणी
नंद ग्वाळ रो करत आरतो लाज मरोला राणी
पड़दै रुकमण नारी विनवै सुणियो जादू राई
राजा भीसम री पत राखो अंत है म्हारी माई
तुम तो ओगण गुण कर लीना साख वेद में गायी
पूरण ब्रह्म पदम रा स्वामी चरण कंवळ बळि जायी

दोहा— डेरै आप पधारिया त्रिभुवन तोरण बान
घूमतड़ा गैवर घणा घुड़ला सोहै जान
भींव नकीब खिनाइया जादू वेग पधार
करो सिताबी जान में फेरां होय अंवार

अब तुम्हीं रक्षा करो। जो यह कामण सुनता और गाता है वह वैकुंठ में जा बसता है और फिर लौटकर संसार में नहीं आता।

राजा भीष्मक की राजकुमारी सुंदरी रुक्मिणी कंकनडोरा बाँध रही है। वह अपने प्राणाधार पति श्रीकृष्ण की निरंतर बाट जोह रही है। कुंदनपुर का माँढा (कन्यापक्ष) है, यादवपति श्रीकृष्ण की बरात आयी। रानी रुक्मिणी दुलहन है और सुजान श्यामसुंदर श्रीकृष्ण दूल्हा हैं।

शरीर में उबटन मलकर मैल छुड़ाओ। हंस-हंसकर दुर्जन लोगों को ... ...। सब सखियाँ श्रृंगार करके पनघट पर जायें और वहाँ से कलश और घड़े भरकर महलों में लावे। स्त्रियाँ चारो ओर से दौड़कर लायी हैं। तेल और फुलेल मिलाकर मिश्रण तय्यार करो। चंदन की चौकी आंगन में बिछाओ। फिर गंगा और यमुना के पावन जल से रुक्मिणी को स्नान कराओ। सोलह श्रृंगार से सज्जित रुक्मिणी ऐसी लग रही थी मानो चंपा की विकसित कली हो। उसके हृदय पर धारण की हुई माला की शोभा को अपने नयनों से देखकर सखियाँ हर्षित हो उठीं। हर्षविभोर हुई नारियाँ मंगल गीत गा रही थी।

माधोपुरी में उत्सवों की धूम मच रही थी। घर-घर में मंगलाचार हो रहे थे। वहाँ की कामिनियाँ सोलह श्रृंगार सज रही थीं।

सब सखियों में चतुर राजा भीष्मक की रानी थी। उसने बहुत-सारे दीपकों से आरती को सजाकर तय्यार की। (श्रीकृष्ण-वचन—) राजा भीष्मक हमारी आरती करें जिनने पिछली (पूर्व जन्म की) प्रीति को पहचान लिया है। हे रानी! नंद के कुमार ग्वाले की आरती करते हुए लाज से मर जायँगी।

पर्दे के भीतर से रानी रुक्मिणी प्रार्थना करती है—हे यादवराज! सुनिये। आप राजा भीष्मक की प्रतिष्ठा रखिये। रानी अतत: मेरी माँ है। आपने तो अवगुणों को गुण करके माना है—वेद इसकी साक्षी भरते हैं।

पदम भक्त कहता है कि पूर्ण ब्रह्म श्रीकृष्ण मेरे स्वामी है। मैं उनके चरण-कमलों पर बलिहारी जाता हूँ।

तोरण को बानकर (वंदना करके) श्रीकृष्ण डेरे पर पधारे। बहुत-सारे हाथी और घोड़े घूम रहे थे जिनसे बरात शोभायमान हो रही थी।

भीष्मक ने नकीब को भेजा कि यादव लोग शीघ्र आये। बरात के आने की जल्दी करें, फेरों (भाँवरों) के लिए देर हो रही है।

विवाह

मारू— ब्रह्मा इंद्र देव संग सोहै ऊधव चंवर ढुळावै
डेरां सूं हरि आविया राजदवारै जावै
चंदण री चौकी रची ऊपर स्याम विठायां
भीवकंवर नै बाहर लाया ... ...
ब्रह्माजी नै वेग वुलाया मौतियन चौक पुराया
कळस गणेस पुजाया नीकै विधि सैं व्यांव रचाया

दोहा— छपन कोट जादू जुड़्या उग्रसेण वसदेव
गारी गावै कामणी कह-कह न्यारा भेव

मारू— चतुर वेद धुन उचरै ब्रह्मा कळस गणेस पुजावै
ब्रह्मा सोवन सूत फिरावै ब्रह्मा वेद पढावै
पहलो फेरो लियो जादूपत दीना अस्व अपारा
दूजो फेरो लीन्हो जादू दीना गज सिणगारया
तीजो फेरो लीयो जादू दीना रतन अपारा

दोहा— परणाया जादूपती ब्रह्मा मांगै भूर
लागत लाग दिरावज्यो विपरां दाळद दूर

सोरठ— ब्रह्मा नै भूर दिरावो
सब जानी कोक वुलावो
वळभद्दर भूर दिवायी सब जान्यां री करै वडाई
जान्यां भर मूठी दीनी ब्रह्मा कनक थाळ में लीनी
सिवसंकर भूर दिवायी नेमनाथजी करै वडाई
इंदर भी भूर दिवायी अैसी क्रीत पदमइयै गायी

मारू— ब्रह्मा बांवै अंग लेवा लागो रुकमण नाहीं आवै
रुकमण बांवै अंग जद आवै वचन स्याम रो पावै
जलम जलम रा साहव म्हारा थे साहव मैं नारी
सोळा सहस में जाय मिलावो नित उठ दूंगी गारी
थे जिन जाणो और बरावर अैसी वात थे छांडो
सोळा सहस नै पगां लगावो सूंस भगत री काढो
कयो तुमारो करां पटराणी कयो तुमारो कीनो
चंद सूरज दोय तपै बरावर राज तुमहि कूं दीनो

विवाह

ब्रह्मा और इंद्र आदि देवता साथ में सुशोभित हो रहे हैं। उद्धव चँवर ढुला रहे है। श्रीकृष्ण डेरे से आये और राजद्वार की ओर चले।

चंदन की चौकी सजायी। उस पर श्यामसुंदर को बिठाया। फिर भीष्मक की कुमारी को बाहर लाये। ब्रह्माजी को अविलंब बुलाया और मोतियों का चौक पुरवाया। कलश और गणेश की पूजा करवायी। इस प्रकार भली प्रकार से विधिपूर्वक विवाह रचाया।

उग्रसेन और वसुदेव आदि छप्पन करोड़ यादव एकत्र हुए। कामिनियाँ भिन्न-भिन्न भेद कह कर उन्हें गालियाँ गाने लगीं।

ब्रह्मा चारो वेदों का पाठ करते है। वे गणेश और कलश की पूजा कराते हैं। वे स्वर्ण सूत्र फिराते है, और वेद पढ़वाते है। यादवपति ने पहला फेरा लिया उस समय अपार घोड़े दिये। यादवपति ने दूसरा फेरा लिया तब सजाये हुए हाथी दिये। यादवपति ने तीसरा फेरा लिया तो अपार रत्न दिये।

ब्रह्मा ने यादवपति श्रीकृष्ण का विवाह कराया और भूरसी (दक्षिणा) माँगी—जो भी लाग लगती हो वह दिलवाओ और विप्रों का दारिद्रय दूर करो।

ब्रह्मा को भूरसी दिलावो, सब बरातियों को न्यौतकर बुलाओ। तब बलभद्र ने भूरसी (दान) दिलवायी। सब लोग बरातियों की बड़ाई करने लगे। बरातियों ने भूरसी मुट्ठी भरकर दी। ब्रह्मा ने उसे सोने के थाल में ली। शिवशंकर ने भूरसी दिलवायी। नेमिनाथजी ने उसकी बड़ाई की। इंद्र ने भी भूरसी दिलवायी। पदम भक्त ने ऐसी कीर्ति का गान किया।

ब्रह्मा रुक्मिणी को श्रीकृष्ण के वाम-अंग में बिठाने लगे। पर रुक्मिणी नही आती है। रुक्मिणी बाये अंग में तभी आयेगी जब वह श्याम का वचन पायेगी। (रुक्मिणी श्रीकृष्ण से कहती है—) आप मेरे जन्म-जन्मांतरों के स्वामी हैं और मैं आपकी पत्नी हूँ। यदि आप मुझे ले जाकर सोलह हजार रानियों में मिला देगे तो मैं प्रतिदिन सोते से उठकर आपको गाली दूँगी। आप मुझे और रानियों के बराबर मत समझना। ऐसी बात (यदि कोई आपके मन में है तो उसका विचार) छोड़ दीजिए। यदि आप सोलह हजार रानियों को मेरे पैरों लगायें तो भक्तों की शपथ निकालो। (श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया—) हे पटरानी रुक्मिणी! तुम्हारा कहा करेंगे, तुम्हारा कहा किया। चन्द्रमा और सूर्य दोनों बराबर तप रहे हैं (उनकी साक्षी है), हमने राज्य तुम्हीं को दिया।

भींवराय कूं कोक बुलावो हथळेवो रे छुडावो
सवा लाख धेन जद दीनी हथळेवो रे छुडायो

दोहा— परण पधारया जदुपती घुड़लां घुरै निसाण
जाचक मांगै जोड़ला दो ओळगियां दान
पहले सतजुग वरणियै हूवा जैजैकार
ईसर परणी गोरज्या आणंद भयो अपार
या भांवर श्रीकृष्ण री सतजुग वरण मंझार
दूजै त्रेता वरणियै राम लियो अवतार
सीता परणी पैज सूं बांधी सायर पार
या भांवर श्रीकृष्ण री त्रेता वरण मंझार
तीजै द्वापर वरणियै कृष्ण लियो अवतार
परणी अेक सौ आठ ही परणी सोळ हजार
या भांवर श्रीकृष्ण री द्वापर वरण मंझार
चौथो कळजुग वरणियै संभळ हौय अवतार
काळंदर नै छय करै हरै धरण रो भार
या भांवर श्रीकृष्ण री कळजुग वरण मंझार

कंवर-कलेवा

दोहा— भींव भंडारी कोकिया चले जान में आय
जादूपत सूं वीनया दयी अरज गुदराय
जो कुमार है जान में दीजै संग खिनाय
भोजन कारण भींवजी वेगावेग बुलाय
हरि हंस कै अैसें कही गणपत नै ले जाय
यो कुमार है जान में याकूं भूख संताय

मारू—सुक्र सनीचर लारै लीना मुळकत मांढै आवै
भींवराय री राज-पोळ में फूल्यो अंग न मावै
कर मनवार घणी गणपत री आदर दे बैठाया
जाजम जरी गलीचां ऊपर सोवनथाळ मिलाया
सोवन थाळ भरयो पकवानां गणपत जीमण लागा
देख सतावी पुरसण वाळा ल्यावै भागा भागा
सग्यां करी मनवार नीर री गणपत कियो नकारो

राजा भीष्मक को बुलाओ और हथलेवा छुड़वाओ। तब सवा लाख गाये देकर हथलेवा छुड़वाया गया।

यादवपति विवाह करके लौटे। घोड़ों पर नगाड़े बजे। याचक लोग जोड़ियाँ माँगते है। बन्दीजनों को दान दो। पहले सत्ययुग का वर्णन करते है। तब जयजयकार हुआ। शिवजी ने गिरिजा को ब्याहा और अपार आनन्द हुआ; इस प्रकार श्रीकृष्ण की इस भाँवर का सत्ययुग में वर्णन किया।

दूसरे त्रेतायुग का वर्णन करते है। तब राम का अवतार लिया। राम ने (जनक की) प्रतिज्ञा को पूरी करके सीता को ब्याहा, और समुद्र की वेला बाँधी। इस प्रकार श्रीकृष्ण की इस भाँवर का त्रेतायुग में वर्णन किया। तीसरे द्वापर युग का वर्णन करते है। तब कृष्ण का अवतार लिया। तब कृष्ण ने एक सौ आठ और सोलह हजार को ब्याहा। इस प्रकार श्रीकृष्ण की इस भाँवर का द्वापर युग में वर्णन किया।

चौथे कलियुग का वर्णन करते हैं। तब सम्भल देश में कल्कि का अवतार होगा। वे 'कालिदर' का नाश करेंगे और पृथ्वी का भार दूर करेंगे। इस प्रकार श्रीकृष्ण की इस भाँवर का कलियुग में वर्णन किया।

कुँवर-कलेवा

राजा भीष्मक ने अपने भण्डारियों को बुलाया कि वे बरात में चले आये। उनने यादवपति से विनय की और अर्ज गुजार दी कि बरात में जो भी कुमार (बालक) है उन्हें हमारे साथ भेज दीजिये, उनको राजा भीष्मक ने भोजन के लिए अविलम्ब बुलाया है। श्रीकृष्ण ने हँसकर यों कहा—गणपति को ले जाओ, बरात में यही कुमार है। इसे भूख बहुत सताती है।

गणपति ने शुक्र और शनिश्चर को अपने साथ लिया और मुसकराते हुए माँढ़े में (कन्यापक्ष की ओर) चले। भीष्मक के राजद्वार में पहुँचकर वे फूले अंग नही समा रहे थे। गणपति को खूब-सारी मनुहार करके गद्दों और जरी के गलीचों पर आदरपूर्वक बिठाया और सोने के थाल रखे गये।

म्हांनै तो भोजन ही भावै थांरो नीर निवारो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं भोजन और मंगावो

ठुमरी— सुण गणपत वेईमान कदै नहीं तूं धायो
थारो पिता ज संकर देव गोरज्या तद जायो
छोड दियो कैळास द्वारका क्यों आयो
गयो जान में रूस मनायर कुण लायो
कियो मोकळो माल सबै ही तैं खायो
पदम भगत बळि जाय सग्यां यूं जस गायो

मारू— मांढै जीम गणपतजी चाल्या जादू जान में आया
मुळकंता जादूपत बोल्या भूखा रह्या यक धाया
हंस कै कही कृष्ण सूं गणपत ना भूखा ना धाया
थांरै भात दूसरो होसी भींव - भंडार निठाया
हळधर भणै गोरज्या - नंदन आ कांई कुवध कमायी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं सगां में लाज न आयी

वरात का जीमना

दोहा— रुकमण कृष्ण विवाह कै हरख्यो भीसम राय
भात जिमावण जादवां लीना वेग बुलाय

सोरठ— जादू जीमवा नै आया राजा भीसम कै मन भाया
लावो जाजम जरी बिछावो जादू आदर दै बैठावो
चंदण री चौकी मंगावो दूल्हा रै पास मेलावो
कंचन रा थाळ मंगावो जदवां री पांत मिलावो
भींवजी नै वेग बुलावो वसदेवजी रै पास बैठावो
अब रुकमकंवर नै लावो दूल्हा रै पास बैठावो
मेवा पकवान मंगावो बहु भांत जळेबी ल्यावो
जादू रुच रुच भोजन कीजै यो भात दही सूं लीजै
लावो केर करेली ताजी वनो लाल कढी सूं राजी
छप्पन भोग छत्तीसूं व्यंजन सब ही रो मन भयो रंजन
थांरो जस पदमइयै गायो सखियां जद भात बंधायो

मारू— बांधां कुळ वसुदेव देवकी नंद जसोदा माई
बहन भुवा अर काकी मामी बांधां धायर दाई

सोने का थाल पकवानों से भरा था और गणपति जीमने लगे। परोसनेवाले उनकी भोजन करने की जल्दी को देखकर भाग-भागकर लाने लगे। समधिनों ने गणेशजी को जल की मनुहार की। पर उनने ना कर दी और कहा—हमें तो भोजन ही भला लगता है, अपने जल को अलग रखिए। पदम भक्त कहता है कि मै प्रणाम करके पैरों लगता हूँ, (गणेशजी ने कहा—) भोजन और मँगावो।

[समधिनें गीत गातीं है—] अरे बेईमान गणपति ! सुनो, तुम कभी तृप्त नहीं हुए। तुम्हारे पिता शंकरदेव हैं और गिरिजा ने तुम्हें जन्म दिया है। तुम कैलाश को छोड़कर द्वारिका क्यों आये ? बरात में तुम रूठ गये थे, तुम्हें कौन मनाकर लाया ? बहुत-सारा माल (भोजन-सामग्री) बनाया था, सारा ही तुमने खा डाला। पदम भक्त कहता है कि मैं बलिहारी जाता हूँ। समधिनों ने इस प्रकार गणपति का यश गाया। माँढ़े में भोजन करके गणपति चले और यादवों की बरात में पहुँचे। यादवपति श्रीकृष्ण ने मुसकराकर पूछा—पेट भरा कि भूखे ही रह गये ? गणपति ने हँसकर श्रीकृष्ण से कहा—न तो मैं भूखा रहा हूँ और न पेट ही भरा है। आपके लिए रसोई दूसरी बनेगी। मैने भीष्मक के भण्डार को खाली कर दिया है। हलधर ने कहा—हे गिरिजानन्दन, यह क्या कुबुद्धि का काम किया ! पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके श्रीकृष्ण के पैरों लगता हूँ। बलराम ने कहा कि भला समधी-लोगों के बीच तुम्हें लाज भी नहीं आयी ?

बरात का जीमना

रुक्मिणी और कृष्ण का विवाह करके भीष्मक राजा हर्षित हुआ। उसने यादवों को भोजन जिमाने के लिए शीघ्रतापूर्वक बुला लिया।

यादव लोग जीमने (भोजन करने) के लिए आये। वे राजा भीष्मक के मन को भाये। लाओ, जरी की जाजम बिछाओ और यादवों को आदर देकर बिठाओ। चन्दन की चौकी मँगवाओ और उसे दूल्हे के पास रखवाओ। सोने के थाल मँगवाओ और उन्हे यादवों की पंक्ति में रखो। राजा भीष्मक को शीघ्र बुलाओ और वसुदेवजी के पास बिठाओ। मेवे और पकवान मँगवाओ और नाना प्रकार की जलेबी लाओ। यादव लोग रुचि के साथ भोजन करें। यह भात दही के साथ ले। ताजे केर और करेले लाओ। प्यारा दूल्हा कढ़ी से प्रसन्न होता है। छप्पन भोग और छत्तीसों प्रकार के व्यंजन जीमकर सभी का मन आनन्दित हुआ। तब सखियों ने भात को बाँध दिया (भोजन करने की रोक लगा दी)। पदम भक्त कहता है कि (हे कृष्ण !) मैंने आपका यश गाया है।

हम वसुदेव, देवकी, नन्द और माता यशोदा के कुलों को बाँधती हैं। दूल्हे की बहन, बुआ, चाची और मामी को भी बाँधती है। उन दायी और

कान फूंक अर नाळो मोड़्यो जिण थांनै दिया न्हवायी
छप्पन कोट जादू सब बांधां बांधां हळधर भाई
पंच पयाणा वाहृण बांधां जिण थे बैठा आया
बांधां ताळ सरोवर कूवा जठै जठै थे न्हाया
रथ सिबका सब साकत बांधां बांधां घोड़ा हाथी
जान बांध जनवासो बांधां बांधां सबै वराती
बांधां दंत बतीसी कीलां मंत्र फुरावां नीका
सस्त्र सिंगार वस्त्र सब बांधां रंग - रंगीला टीका
बांधां थाळ प्रीत कर पुरस्यो भोजन सरस मिठाई
चटणी और अथाणा बांधां बांधां मिरची राई
बांधां पाक पकोड़ी पूड़ी अर सब पोयी रांधी
छप्पन भोग छतीसूं व्यंजन जो पुरसी सब बांधी
जळ बांधां जळ झारी बांधां चौकी थाळ बंधाया
'पदम भणै प्रणव पाय लागूं सखियन मंगळ गाया

दोहा— कृष्ण चरण रो ध्यान धर गवरी गणपत ध्याय
पत्तळ छूटण हम कहैं सब ही सोध वणाय

सोरठ— विदरभ देस सरस मन भाया तुमरे भवन व्याहृण कूं आया
जब तुम आय सहेळो लीयो अर पग धोयकर डेरो दीयो
तोरण बांध डेरा करवाया बहौत भांत हमकूं सुख दयाया
पुन जीमण कूं लिया बुलाय नीके भवन में दिया बिठाय
केळ पान री पतळ वणायी ज्यां में प्रेम री सींक बहु ल्यायी
सो पत्तळ ले आगे धरी सब पकवानां सूं जो भरी
जद मिल कै सब नारी आयी सुंदर महा अपछरा जायी
गजगवनी गत रूप अगाधी ततछिन आयर पातळ बांधी
पातल बांध छुडावण काज ठाढो कहूं सभा में आज
छूटी जळेबी रस सूं मोटी बांधूं नगन जड़ी सिर चोटी
छूटो सीरो धायो घीको बांधूं भाल जड़ाऊ टीको
छूटी पकोड़ी पापड़ वड़ी बांधूं मांग मोतिन सूं जड़ी
छूटा वड़ा सलूणा सज्जळ बांधूं चिबुक नैण रो कज्जळ
छूटा दाणा रुकमण केसर बांधूं नाथ और नकवेसर
छूटा खाजा खस्त सुहाल बांधूं हिवडै मौतियन माळ

धाय को भी बाँधती है जिनने आपके जन्म के समय आपके कान में फूँक मारी थी, नाल मोड़ी थी और जिनने आपको नहलाया था। समस्त छप्पन कोटि यादवों को बाँधती हैं और हलधर भाई को भी बाँधती हैं। पाँचों प्रकार के वाहनों को बाँधती है जिन पर बैठकर आप यहाँ पधारे। हम उन तालाबों, सरोवरों और कूवों को बाँधती है जहाँ-जहाँ आप नहाये। सभी रथो, पालकियों और साजों को तथा घोड़ों और हाथियों को बाँधती है तथा बरातियों को बाँधती है। हम बत्तीसो दाँतों को बाँधती है, श्रेष्ठ मन्त्रों को चलाती हैं। सब शस्त्र, श्रृंगार, वस्त्र और रंग-रँगीले तिलक सभी-कुछ बाँधती हैं।

हम उस थाल को बाँधती है जो प्रेमपूर्वक परोसा गया है। हम भोजन की सरस मिठाइयों को बाँधती है। चटनी और अचारों को बाँधती है तथा मिर्च और राई को बाँधती हैं। हम पाक, पकौड़ी, पूरी और दूसरी सारी बनायी हुई रसोई को बाँधती है। छप्पन भोग और छत्तीसों प्रकार के व्यंजन जो कुछ परोसे गये हैं, सब हमने बाँध दिये है। हम जल को बाँधती है, जल की झारी बाँधती है और चौकी तथा थाल आदि सभी कुछ बाँध दिये गये हैं। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—सखियों ने इस प्रकार मंगल गीत गाये।

श्रीकृष्ण के चरण-कमलों का ध्यान धरकर तथा गिरिजा एवं गणपति का ध्यान करके हम शुद्धि पूर्वक पत्तल छुड़ाने का वर्णन करते है—

विदर्भ देस सरल और मन भावना है। तुम्हारे घर व्याह करने को आये। जब तुमने आकर अगवानी की और पैर धोकर डेरा दिया। तोरण बाँधकर डेरा दिया गया। हमको अनेक प्रकार से सुख दिया। फिर भोजन के लिए बुलाया और भवन मे भलीभाँति बिठा दिया। केले के पत्तों की पत्तलें बनायी जिनमे प्रेम की बहुत-सारी सींके लगाईं। वह पत्तल लेकर आगे रखी जो सारे पकवानों से भरी हुई है। तब सब नारियाँ मिलकर आयी जो अति सुन्दर अप्सराओं की जनी हुई लगती है, जिनकी चाल हाथी की सी है और जो अपार रूपवती हैं। उनने आकर तुरन्त पत्तल को बाँध दिया। बँधी पत्तल को छुड़ाने के लिए मैं आज सभा में खड़ा होकर बोल रहा हूँ। रस से मोटी बनी जलेबी छूट गई, मैं (समधिनो की) नगों से जड़ी सिर की चोटी को बाँधता हूँ। घी का बढ़िया हलुआ छूट गया, मैं भाल पर शोभित जड़ाऊ टीके (तिलक) को बाँधता हूँ। पकौड़ी, पापड़ और बड़ियाँ छूट गई, मैं मोतियों से जड़ी माँग को बाँधता हूँ।

सलोने और रस-भरे बड़े छूट गये, मैं ठोड़ी को और नयनों के काजल को बाँधता हूँ। दाने और ··· ··· छूट गये, मैं नथ और नकवेसर को बाँधता हूँ। भुरभुरे खाजे और सुहारी छूट गये, मै हृदय पर सुशोभित

छूटी फीणी घी में रेळी वांधूं कांकण और पछेळी
छूटा मोदक सब तैं सरजित वांधूं कटी किंकणी साहित
छूटो रायतो भोजन अछिया बांधूं अणवट चोटी विछिया
अब छूटचा सारा पकवान मुदित होय जीमो सब जान
जीम असीस देवो सब कोई भीसम रै बहु कन्या होई
जेते और वराती आये अेक अेक सब कूं परणाये
इसा सबहिन को राख्यो मान अैसो दयो नित कन्यादान
ये आसीस फुरो य हमारी चिरंजी रौ वर कन्या थांरी
अब भात दही सूं लीजै हरिजी ! रुच रुच भोजन कीजै
छप्पन भांत रा भोजन पाया सब ही जादू जीमकर धाया
गगोदक झारी भर ल्यावो सब जादवां नै चळू करावो
ल्यावो पान सुपारी वीड़ा दयो सरस सुधारी
लूंग इळाची ल्याया जादू वीड़ा चाव र धाया
करै कंवर मनवारी पदम भगत वळिहारी

ठुमरी— मुगटधर महर का रे कान्हा! दौय वापन को जाम
अेक बाप मथरा वसै जी लालजी! दूजो गोकळ गाम
नंद रो कहूं क वसदेव रो रे कान्हा! कांइ कांइ कह वतळाम
वंसी वट जमना तट रे कान्हा! ऊजळ धोळो गाम
म्हारी गारी री बुरो मत मानज्यो थांरो अैबी गैबी नाम
भूवा तो थारी कुंता रे जिण तो जायो करण कंवार
बहन तो थारी सोदरा जी अरजन ले गयो रथ बैठार
गोरा ही वसदेवजी रे लालजी! गोरा ही वलराम
स्याम वरण कैसें भयो रे लालजी! जाको ठीक न ठाम
हिल मिल गारी दे चली रे लालजी! वरसाणां री नार
दास पदम री वीनती जी म्हांरो साहब सिरजणहार

ठुमरी— काल गारी दे गयी तूं आज फेर आयी 'री
सुंदर सलूणी नारी
ओढण कसूमल सारी
जोबनिया री फौज लेयकर मारबा कूं आयी री
जोबनिया री राती माती महीड़ो वेचबा आयी री
सरवर सब लूट लियो इत तो नंद दुहाई री

मोतियों की माला को बाँधता हूँ। घी में बनी फीनी छूट गई, मैं कंगन और पछेली (गहना) को बाँधता हूँ। सबसे श्रेष्ठ बने हुए लड्डू छूट गये, मैं कमर में सुशोभित किंकनी को बाँधता हूँ। रायते का अच्छा भोजन छूट गया, मैं अनवट, चोटी और बिछुओं को बाँधता हूँ।

अब सारे पकवान छूट गये। सब बरात (के लोग) प्रसन्न-चित्त होकर भोजन करे। भोजन करके सब कोई आशीष दें कि राजा भीष्मक के खूब कन्याएँ हो ताकि बरात मे जितने भी अन्य लोग आये हैं उन सबके साथ एक-एक कन्या ब्याह दें। जिस प्रकार से अभी सबका मान-सम्मान रखा उसी प्रकार सदैव कन्यादान करते रहें। यह हमारी आशीष फलीभूत हो, आपके वर और कन्या चिरंजीवी हों। अब भात को दही के साथ लीजिये। हे श्रीकृष्ण ! आप अपनी रुचि के अनुसार भोजन कीजिये। छप्पन प्रकार के भोजन जीमे। सारे यादव जीमकर छक गये। गंगाजल की झारी भरकर लाओ और सब यादवों को चुल्लू करवाओ। पान और सुपारी लाओ और स्वादिष्ट और सुन्दर बीड़े बनाकर दो। लौंग और इलायची मँगवाये गये। यादव लोग बीड़े चबाकर तृप्त हो गये। कुँवर मनुहार कर रहे है। पदम भक्त बलिहारी है।

हे मुकुट को धारण करनेवाले नन्दमहर के कन्हैया ! तुम दो बापों के बेटे हो। हे लाल ! तुम्हारा एक बाप तो मथुरा में बसता है और दूसरा गोकुल गाँव में। हे कान्हा ! तुम्हें नन्द का बेटा कहें या वसुदेव का ? तुम्हें क्या-क्या कह कर पुकारे ? यमुना के किनारे पर वन्शीवट है जहाँ उज्ज्वल धवल गाँव है।

हमारी गाली का बुरा मत मानना। तुम्हारा ऐबी-गैबी नाम है। तुम्हारी बुआ कुन्ती है जिसने कुमारी-अवस्था में ही कर्ण को जन्म दिया। तुम्हारी बहन सुभद्रा है जिसे अर्जुन रथ पर बिठाकर ले गया।

हे लाल ! वसुदेवजी गोरे है और बलराम भी गोरे है। तुम्हारा वर्ण श्याम कैसे हो गया, इसका कुछ अता-पता नहीं है।

हे लाल ! बरसाने की नारियाँ हिलमिलकर गालियाँ दे चलीं।

पदम भक्त की विनती है कि मेरा स्वामी सृष्टिकर्ता है।

तुम कल गाली दे गयी थी, आज फिर आ गयी ! हे सलोनी सुन्दरी !

तुमने कसूंबी रंग की साड़ी ओढ़ रखी है। तू यौवन की सेना लेकर मारने के लिए आयी है।

यौवन में मदमस्त तू दही बेचने के लिए आयी। ··· ··· लूट लिया गया तो नन्द राजा को दुहाई दी।

जमना री नीरां तीरां गऊ चरावै री
पदम भगत सरणै आयो कान्ह लीला गावै री

बरवो-ठुमरी—सांवरियो मोह्यो हे रंगीली नथवारी !

घूमघुमाळो लहंगो अतलसी जरकस रेसम सारी
कुच कठोर पर अंगिया सोहै ऊपर हार हजारी
मौतियन माल गळा विच सोहै दुलड़ी अजब संवारी
रतनजड़त भुज बाजू सोहै कांकण सबदाकारी
भंवर कबाण तणी भौहन री नैण अनोखा अणियां (री)
निरखत लगै बाण उर बेधै सुंदर कामणगारी
स्यामसुंदर कूं हित कर जोवो भर लोचन अेकवारी
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं उबरचो सरण तिहारी

सोरठ— जाण्या जाण्या कृष्णजी ! जाण्या
मथरा सूं गोकळ आण्या
थांरी माय जसोदा राणी थांनै ऊखळ बांध र ताणी
थांनै कंस तणा डर लागा थे तो रात अंधारी भागा
थांरी भूवा भरम गमायो बै तो करण कंवारी जायो
थांरी बहन सोदरा जाणी वा तो अरजन रूप लुभाणी
थे तो विन्यायक भल ल्याया म्हांरा टाबरिया डरपाया
तूं तो नंद महर रो ढोटो तैं ठिणक र मांग्यो रोटो
थे तो काळा किसनजी ! काळा थे तो दोय वापां रा प्यारा
थे तो वन में छाक मंगायी थे तो कुळ री लाज गमायी
थे तो जीमो किसनजी ! लपसी थांरी जान में महादेव तपसी
थे तो जीमो किसनजी ! खाजा थांरी जान में उग्रसेन राजा
थे तो जीमो किसनजी सीरो थांरी जान में हळधर वीरो
थे तो जीमो किसनजी ! चावळ थांरी जान में नारद रावळ
थे नारद नै क्यूं ल्याया म्हांरा टाबरिया भरमाया
गारी गावै किसनजी री साळी बा तो भर जोबन मतवाळी
गारी गावै कुनणपुर नारी बांनै दीजो पान सुपारी
यो जन पदमइयो गावै कछू रहस वधाई पावै

आसावरी—मोरी व्यायण तूं समदण मतवारी

पहली तो दूल्हा नै मोह्यो पीछै जान ज सारी

श्रीकृष्ण यमुना के तट के आसपास गायें चराते हैं। पदम भक्त उनकी शरण में आया है और कृष्ण-लीला का गान करता है।

हे नथवाली रंगीली! तुमने साँवरे कृष्ण को मोह लिया है। घेर-घुमेरवाला अतलस का लहँगा पहन रखा है और रेशम तथा जरी की साड़ी पहनी है। कठोर कुचों पर अँगिया सुशोभित हो रही है जिसके ऊपर बहुमूल्य हार शोभा देता है। गले के बीच में मोतियों की माला शोभित है। दुलड़ी अजब बनी हुई है। भुजाओं पर रत्नजटित बाजूबन्द शोभा पा रहे हैं। हाथों में कंगन रुनझुन कर रहे है। भौंहें मानों भौंरों की कमान तनी हैं। नयन अनोखे और तिरछे हैं। वह जादू करनेवाली सुन्दरी जब देखती है तो हृदय को बाण की भाँति बेध देती है।

श्यामसुन्दर कृष्ण को प्रेम के साथ एकबार नयन भरकर देख लो। पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ—हे कृष्ण! आपकी शरण में मेरा उद्धार हो गया है।

हे कृष्णजी! हमने तुमको जान लिया। आप मथुरा से गोकुल में लाये गये। रानी यशोदा आपकी माँ है जिनने तुमको ओखली से बाँधकर ताना था। राज कंस का भय लगा तो तुम वहाँ से अँधेरी रात में भाग खड़े हुए। तुम्हारी बुआ कुन्ती ने भरम नष्ट कर दिया—उसने कुमारी— अवस्था में ही कर्ण को जन्म दिया।

तुम्हारी बहन सुभद्रा को भी जान लिया। वह अर्जुन के रूप पर मुग्ध हो गयी। तुम गणेशजी को भी खूब लाये जिसने हमारे बालकों को डरा दिया। तुम नन्दमहर के पुत्र हो। तुमने मचल-मचलकर रोटी माँगी थी। हे कृष्णजी! आप काले है, काले है दो पिताओं के दुलारे हैं।

वन में छाक मँगवायी, तुमने सारे कुल की लाज गँवा दी। हे कृष्ण! तुम लपसी का भोजन करो। तुम्हारी बरात में महादेव जैसे तपस्वी आये है। कृष्णजी! तुम खाजे खाओ। तुम्हारी बरात में उग्रसेन-से राजा है। तुम हलुआ खाओ। तुम्हारी बरात में हलधर भाई आये हैं।

हे कृष्ण! आप चावल खाइये। आपकी बरात में महर्षि नारद आये है। आप नारद को क्यों लाये? उनने हमारे बच्चों को भ्रम में डाल दिया है। श्रीकृष्ण की साली गाली गा रही है। वह अपने भरपूर यौवन में मतवाली है। कुन्दनपुर की स्त्रियाँ गाली गा रही हैं, उन्हें पान और सुपारी दो। यह पदम भक्त इस प्रकार आपके गुण-गान कर रहा है। उसे कुछ आनन्द-बधाई स्वरूप मिल जाय।

हे मेरी समधिन! तुम मतवाली समधिन हो। तुमने पहले तो दूल्हे को मुग्ध कर दिया था और तत्पश्चात् सारी बरात को मोह लिया। तुमने कवचधारी बड़े मल्लों को भी मोह लिया, बेचारी प्रजा की तो बिसात

पूरणमल पाखरिया मोह्या रइयत कौण विचारी
वेद उचारत ब्रह्मा मोह्या संकर नेजा-धारी
सृंगी रिख सा वन में मोह्या मोह्या पंचहजारी
अरजन सा रथधारी मोह्या नारद सा ब्रह्मचारी
सब ही देव द्वार पै मोह्या रुकमकंवर री नारी
आया जितणा सब ही मोह्या करड़ी निजर पसारी
धन थारी कमर वजर री छाती काहू सूं नहिं हारी
छैल छबीली अजब रंगीली काजळ रेख संवारी
पदमइयो स्यामी जुगत वखाणै अै अंखियां चकचारी

बरवो ठूमरी--कहा बाजत करत गुमान मुरलिया रंग भरी
टूणो सो कर गोपियन मोही कित गयी बा वंसरी
मोह्या देव नार-नर सारा अैसा कृष्ण हरी
विरज मंडल नचवायो उणनै तनक सी क्या लकरी
पदम भगत बळि जाय वनै पर श्रीमुख आप धरी

दोहा-- रैण वितायी रंग में जादू जीम्या भात
हरखत डेरां आविया पो पीळी परभात

कंवर-कलेवा

दोहा-- सखियां सब आयी चहूं निरखत जादूराय
कंवर कलेवो करण कूं ले गयी स्याम बुलाय

खट-- बैठा स्याम सिंघासण ऊपर कंवर कलेवै आया
कनक थाळ बहु भोजन लेकर कामण मंगळ गाया
लाडू जळेबी घेवर खाजा भोजन वेग करावो
जबै किसनजी हाथ न घालै रुकम कंवर नै लावो
रुकमकंवर नै आण बिठाया जीमै त्रिभुवनराई
पूरण ब्रह्म पदम के स्वामी विध सूं जान जिमायी

ठूमरी--आयो आयो विरज रो कान्ह माखण चोर लियो
आयो आयो विरज रो कान्ह
मोर मुगटिया हाथ लकुटिया गावै अनोखी तान
वृंद्रावन में गऊ चरावै मांगै मही को दाण
संग गवाळा कुबड़ा काळा मांग वणायी जान

ही क्या ? तुमने वेद का उच्चारण करते हुए ब्रह्मा को और त्रिशूलधारी शंकर को भी मोह लिया। तुमने वन मे शृंगी जैसे ऋषीश्वर को मोह लिया और पाँचहजारी सामन्तों को भी मोह लिया। तुमने अर्जुन-सरीखे रथियों और नारद जैसे ब्रह्मचारियों को भी मोहित कर लिया। रुक्मकुमार की पत्नी ने द्वार पर ही सब देवों को मोह लिया। तुमने कड़ी नजर पसारकर जितने भी यहाँ आये थे उन सबको मोह लिया। तुम्हारी कमर को धन्य है और धन्य है तुम्हारी बज्र-सी कठोर छाती को जो किसी से नही हारी। तुम छैल-छबीली हो, अनुपम रँगीली हो, और तुमने आँखों मे काजल की रेखाएँ डाल रखी हैं। पदम भक्त युक्ति की (उचित) बात कहता है कि ये आँखे ... ... अरी रंगभरी मुरली ! इतनी इठलाती हुई क्यों बज रही हो ? जिसने जादू-सा करके गोपियों को मोह लिया वह बंशी कहाँ गयी ? हरि श्रीकृष्ण ऐसे है जिनने देवताओं और समस्त नर-नारियों को मोह लिया है। वह तनिक-सी लकड़ी कैसी है कि जिसने समस्त व्रज-मण्डल को नचा लिया।

पदम भक्त दूल्हे पर बलिहारी जाता है जिसने स्वय अपने मुख पर मुरली को धारण किया। यादवों ने रात आनन्द में बितायी। उनने भात का भोजन किया। फिर वे हर्षित होते हुए अपने डेरों पर आये। उस समय पौ फट रही थी और प्रभात की पीली ज्योति फैल रही थी।

कँवर-कलेवा

सारी सखियाँ चारों ओर आकर इकट्ठी हो गयी। वे यदुराज को देख रही हैं। फिर वे कृष्ण को कँवर-कलेवा करने के लिए बुलाकर ले गयी। श्रीकृष्ण सिंहासन पर बैठे। वे कँवर-कलेवा आये है। (कँवर-कलेवा : प्रातःकाल कराया जानेवाला कलेवा जिसमें दूल्हा और बरात में आये छोटे बच्चे कलेवा करते है।) कामिनियाँ सोने के थालों में नानाविध भोजन लेकर आयी और उनने मंगल गीत गाये। श्रीकृष्ण को लड्डू, जलेबी, घेवर और खाजों का भोज जल्दी से कराओ। पर श्रीकृष्ण ने थाल मे हाथ नहीं डाला और उनने कहा कि रुक्मकुँवर को लाओ।

फिर रुक्मकुँवर को लाकर बिठाया गया। तब त्रिभुवनपति श्रीकृष्ण भोजन करने लगे। पदम भक्त कहता है कि मेरे स्वामी पूर्ण ब्रह्म है। बरात को विधिपूर्वक भोजन कराया गया।

टिप्पणी—प्रथानुसार दूल्हा तब तक भोजन आरम्भ नही करता जब तक उसके साले साथ भोजन करने नही बैठते।

स्त्रियों का गान—अहो ! व्रज का कन्हैया आ गया। व्रज का कन्हैया आ गया जिसने माखन चुराया था। उसके माथे पर मोरमुकुट (मोर की पाँखोंवाला मुकुट) है, उसके हाथ में लकुटी है, वह बड़ी ही मीठी तान में गाता है। वह वृन्दावन में गाये चराता है, और गोपियों से

रुकमण चोर भग्यो अेक छिन में पड़ी जलम री बाण
पदम भणै प्रणवै पाय लागू पळ पळ वारू प्राण

जूवो

काफी—जुवै मिल खेलत है पिया प्यारी
इत वसदेव भूप का नंद्रा उत नृप भींव-कंवारी
कंचण थाळ भरचो दधि-घृत सू रतन मूदड़ी डारी
सुघड सखी मूंदड़िया लेकर रुकमण रै ढिग डारी
झपट लयी जद रुकमण मुंदड़ी सख्या हंसी दे तारी
वसदेव नंदण हार गया है जीती भींव-कवारी
पदम भणै नैणां रस लूटै कुनणापुर री नारी

सोरठ— कंगना खोलै जादूराय खुलावै कामणी
ब्रह्मा दीनी गाँठ घूळाय खुलै ना डोरड़ो
चाहे भूवा कुंती बुलाय खुलै ना डोरड़ो
चाहे वहन सहोदरां बुलाय खुलै ना डोरड़ो
चाहे नंद जसोदा बुलाय खुलै ना डोरड़ो
चाहे बाबा वसदेव बुलाय खुलै ना डोरड़ो
चाहे देवकी माय बुलाय खुलै ना डोरड़ो
चाहे हळधर बंधु बुलाय खुलै ना डोरड़ो
चाहे पाचू पांडू बुलाय खुलै ना डोरड़ो
चाहे ब्रज रा सखा बुलाय खुलै ना डोरड़ो
अैसे पदम भगत बळि जाय खुलै ना डोरड़ो

दोहा— जा कर पर गिरवर धरचो राख लयो ब्रजसाथ
बो बळ भुज रो कहां गयो कहा कंपावो हाथ
कछु माखण रो बळ भयो कछु गोपी करी सहाय
राधा जू री कृपा तें गोवरधन लियो उठाय
ब्रजवासिन रो नाम सुण छाती नैण भर आय
अणत कोटि ब्रह्मांड में तिर विध ताप वराय

मारू— सोवन कळस पटक मणि कंगुरा मरकत मोर बुलायो
व्यांव परम सुख बिसर गयो लाडा नैण नीर भर आयो
कापै हाथ डोर नहिं खूलै ऊधवजी वतळायो

दही का दाण (राज्य-कर) माँगता है। उसके साथ कुबड़े और काले ग्वाले है। उसने माँगकर बरात बनायी है। वह क्षण भर में रुक्मिणी को चुराकर ले भागा, जन्म से ही चोरी की आदत जो पड़ी हुई है।

पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूँ और श्रीकृष्ण पर पल-पल में अपने प्राणों को न्यौछावर करता हूँ।

जूआ

वर और बधू मिलकर जूआ खेलते है। इधर वसुदेव राजा के पुत्र श्रीकृष्ण है और उस ओर राजा भीष्मक की राजकुमारी रुक्मिणी है। सोने का थाल दही और घी से भरा हुआ है जिसमे रत्नों की अँगूठी डाली हुयी है। चतुर सहेलियो ने अँगूठी को लेकर रुक्मिणी की ओर डाल दिया। जब रुक्मिणी ने झपटकर वह अँगूठी ले ली तो सहेलियाँ तालियाँ पीटकर हँस पड़ी। अहो! वसुदेव के नन्दन हार ग्ये हैं और भीष्मक की राजकुमारी रुक्मिणी जीत गयी है। पदम भक्त कहता है कि कुन्दनपुर की स्त्रियाँ नेत्रों का आनन्द लूट रही है।

कामिनियाँ दूल्हे से कंकण-डोरा खलवा रही है और यादवो के राजा श्रीकृष्ण खोल रहे है। ब्रह्मा ने ऐसी मजबूत गाँठ लगायी कि डोरा खुलता ही नही। स्त्रियाँ कहती है—अपनी बुआ कुन्ती को बुला लो पर डोरा नहीं खुलने का! चाहे अपनी बहन सुभद्रा को बुला लो पर डोरा नही ही खुलेगा। चाहे नन्द और यशोदा को बुला लो पर डोरा नही खुलेगा। चाहे वाबा वसुदेव को बुला लो पर डोरा नही खुलेगा। चाहे देवकी माता को बुला लो पर डोरा नही खुलेगा। चाहे भाई हलधर को बुला लो पर डोरा नही खुलेगा। चाहे पाँचों पाण्डवों को बुला लो किन्तु डोरा नही खुलेगा। चाहे अपने व्रज के सखाओं को बुला लो पर डोरा नही खुलेगा। पदम भक्त इस प्रकार बलिहारी जाता है, डोरा नही खुलेगा। जिस हाथ पर आपने गोवर्धन पर्वत को धारण किया और व्रज के लोगो की रक्षा की थी, भुजा का वह बल कहाँ गया? हाथों को क्यों कँपा रहे हैं? कुछ तो मक्खन से बल मिल गया था और कुछ गोपियों ने आपकी सहायता कर दी थी। राधाजी की कृपा से ही आपने गोवर्धन को उठा लिया था।

व्रजवासियों का नाम सुनते ही हृदय और नेत्र भर आते हैं, वे श्रीकृष्ण अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में त्रिविध ताप को दूर करते हैं।

सोने के कलश को पटककर मणिजटित कंगूरों पर पन्नों के बने मोर को बुलवाया। विवाह का परम सुख भूल गया और दूल्हे की आँखों में आँसू भर आये। उनके हाथ काँप रहे थे पर डोरा नहीं खुल रहा था। तब उद्धव ने उनसे बात की—आपने शिव के धनुष को तो

पळ में धनस तिणां ज्यूं तोड़्यो अब क्यूं लोग हंसायो
पदम भणै प्रणवै पाय लागूं व्यांव भलो रस आयो

पहरावणी (पहरावन)

धनासरी—आवो नै चंद्रसेणजी रा पूत भींव करो पहरावणी
पहरावणी सजन मिलावणी
आवो नै भीवसेणजी रा पूत रुकम करो पहरावणी
पहरावणी कृष्ण रिझावणी

मारू— राजा भीव भंडारी कोवया भींव भंडार खुलाया
अचिरज किसा समद अवतारी जादू लोक बुलाया
कर असतूत आदि री पूजा चौकी वेग मंगावो
गणपत जी नै वेग बुलावो कनकमाळ पहरावो
वसदेवजी नै सुखपाळ मंगावो नोखी चादर उढावो
उग्रसेनजी नै देवो पालखी नंद नै हथणी दयावो
हळधर नै हळ मूसळ दीजे वडी डोरां रा हाथी
नेमनाथ नै'अस गज दीजो ऐरापत रा साथी
चचळ जात तीन हणगारा तीवर जळ ना होडा
राजा भीव दिया पंडवां नै आप चढण रा घोड़ा
दस-दस सहस साज सिरपावां साज सोवनी कीना
रुकमकेस राजा भीसम कै छपन कोट नै दीना
वहीतक वाहण चेरा-चेरी संग सखा उर धारी
पूरण ब्रह्म पदम रा स्वामी या विध जान सिंगारी

दोहा— हरि हळधरजी तेड़िया भाई त्याग चुकाय
देस देस रा मंगत जण भेळा हूवा आय

मारू— वागा जरी जरी है फैंटा चीरा चीर मंगाया
सरस दुसाळा सरस पाघड़ी जाचक जन पहराया
हळधरजी मिल त्याग चुकाया नेमनाथ मन भाया
केसव तणी वधाई ऊपर डेरा इंद्र लुटाया
जो मांग्यो सो सब ही दीया दाळद दूर वहाया
पदम स्याम सुखदायक नायक इण विध त्याग चुकाया

पल भर में तिनके की तरह तोड़ दिया था, अब लोगों को क्यों हँसवा रहे हो ?

पदम भक्त कहता है कि मैं प्रणाम करके पैरों लगता हूं। श्रीकृष्ण के विवाह में अपूर्व आनन्द-लाभ हुआ।

पहरावनी

हे चन्द्रसेनजी के पुत्र भीष्मकजी ! आइये न, पहरावनी कीजिये, पहरावनी जो सज्जनों को मिलानेवाली है। हे भीष्मकजी के पुत्र रुक्मकुमार ! आओ न, पहरावनी करो, पहरावनी जो श्रीकृष्ण को रिझानेवाली है।

राजा भीष्मक ने भण्डारियों (भाण्डारगृह के अधिकारियों) को बुलाया और भण्डार खुलवा दिये। इसमे आश्चर्य कैसा क्योंकि वे समुद्र के अवतार है, उनने यादवों को न्यौतकर बुलाया।

आदिदेव की स्तुति और पूजा करो। अविलम्ब चौकी मँगवाओ और गणपति गणेशजी को शीघ्र बुलाओ और उन्हें सोने की माला पहनाओ।

राजा वसुदेवजी के लिए सुखपाल मँगाओ। उन्हे अच्छी चादर ओढ़ाओ। उग्रसेनजी को पालकी दो, और नन्दजी के लिए हथिनी लाओ। बलराम को हल और मूसल तथा बड़ी डोरीवाले हाथी दो। नेमिनाथजी को ऐसे हाथी दो जो ऐरावत के साथी हों।

राजा भीष्मक ने पाण्डवों को चचल जाति के अपने चढ़ने के श्रृंगार किये हुअे तीन घोड़े दिये। राजा भीष्मक के पुत्र कुमार रुक्मकेश ने छप्पन कोटि यादवों को दसियों सहस्र स्वर्ण-निर्मित और सुसज्जित सिरपाव दिये। बहुत से वाहन और दास-दासियाँ दी। पदम के स्वामी पूर्ण ब्रह्म कृष्ण ने इस प्रकार बरात का श्रृंगार किया गया।

पदम के स्वामी पूर्णब्रह्म ने इस प्रकार बरात को सजाया।

श्रीकृष्ण ने बलराम को बुलाकर कहा—हे भाई ! अब त्याग चुकाओ (याचकजनों को दान की रकम दो)। यहाँ पर अनेक देशों के याचक आकर इकट्ठे हुए है।

जरी के 'बागे' और जरी के ही फैटे तथा और अनेक प्रकार के वस्त्र मँगवाये। सुन्दर दुसाले और शानदार पगड़ियाँ याचक लोगों को पहनायी गयीं। श्री बलराम ने त्याग चुकाये (बन्दीजनों को दान दिये) जो नेमिनाथ के मन को भाये। श्रीकृष्ण की बधाई के उपलक्ष्य में इन्द्र ने अपना डेरा ही लुटा दिया। जो भी कुछ माँगा गया वह सब दिया गया। सबका दारिद्रय दूर बहा दिया।

पदम भक्त के सुखों के दाता स्वामी श्याम ने इस प्रकार त्याग चुकाये।

१३—रुक्मिणी की विदाई

वरात की विदाई

दोहा— हरी पधारत हे सखी गहरा घुरै निसाण
सेन्या चढ जादू चल्या आवो करो वखाण
अेक वेर हे माहरी मेळो दे री माय
नदी विहूणा वाहळा कद फिर मिलसां आय
रुकम कंवरि मुकळाय कै राणी महल सिधाय
सो मिजन्यो वरणन करां सुणो सकल चितलाय

काळिगड़ो—म्हांरो अे मिजन्यो रुणझुण्यो सोहै राजदवार
रुकमण चाली वाई सासरै
हाथ लियां हळको रहै धरियां भार ज लाख
आ ल्यो हे म्हारी ढूलड़ी ज्यां नै नीकी राख
आवो सखी सहेलियां मिलल्यो भुजा पसार
अब रा विछड़्या कद मिलां जासां समंद मंझार
मन जाणै मायड़ मिलूं वांहड़ल्यां गळ लाय
तन जाणै हरि रथ चढां दे पीनण पर पांय
मन जाणै वावल मिलूं लांवी भुजा वधाय
अब रा विछड़्या ना मिलां दूर ज पड़सां जाय
फंद वण्यो माया मोह रो मायड़ घरां सिधाय
तुम विन वाई रुकमणी कांई करां घर जाय
जिण आंगण में खेलती सो अंगणा न सुहाय
रुकमण चाली सासरै नव निध लारै लाय
गाडा भरिया खोपरां सोळा कोड़ सुहाळ
खाजा फीणी कोड़ सौ लाडू कोड़ हजार
मुड़ मुड़ देवै आसिका चिरंजी री परवार
काका वावा सुवस वसो भाई कोड़ हजार
आडा डूंगर किण किया किण रोपी वणराय
आडा डूंगर हरि किया विध रोपी वणराय
आज रहैगी बाई रुकमणी काहूं मग में जाय
प्रात द्वारका जावसी पदमइयो जस गाय

१३—रुक्मिणी की विदाई

बरात की विदाई

हे सखी ! श्रीकृष्ण प्रस्थान कर रहे है। नगाड़े गहरे स्वर में घहरा रहे है। यादवों की सेना चढ़कर रवाना हो गयी। आओ, उसका बखान करो। हे मेरी माँ ! एक बार मुझसे मिल लो। हम तो नदी से बिछुड़े नाले है; पता नहीं, फिर कब मिलेगे।

रुक्मिणी को बिदा करके रानी महल को चली। उस मिजन्ये का वर्णन करते हैं, सब लोग चित्त लगाकर सुनो।

हमारा ··· ··· राजद्वार पर शोभित हो रहा है। रुक्मिणी बाई अब ससुराल जा रही है।

जो हाथ में लेने से बड़ा हल्का लगता है और जगह पर रख देने से भारी हो जाता है। हे सखी ! यह मेरी गुड़िया लो, इसको भली प्रकार से रखना। हे सखी-सहेलियों ! आओ। बाँहें फैलाकर मिल लो आज के बिछुड़े हुए न जाने कब मिलेगे। हम तो समुद्रों के पार जायेगे।

(रुक्मिणी का) मन तो कह रहा है कि गलबहियाँ डालकर माँ से मिलूँ, पर तन कह रहा है—पाँयदान पर पैर रखकर कृष्ण के रथ पर चढ़ो। मन कह रहा है कि मैं लम्बी भुजाएँ फैलाकर पिता से मिलूँ। आज के बिछुड़े हुए मिल नहीं पायेंगे। बहुत दूर जा पड़ेंगे।

(रुक्मिणी ने माता से कहा—) यह माया-मोह का बन्धन फैला हुआ है, हे माता ! अब घर को लौट जाओ। (माता ने प्रत्युत्तर में कहा—) हे बेटी रुक्मिणी ! तेरे बिना घर जाकर क्या करे ?

जिस आँगन में तू खेला करती थी, वह आँगन अब नही सुहाता। अपने पीछे नौ निधियाँ लेकर रुक्मिणी ससुराल को चली।

खोपरों से गाड़े भरे हुए थे, सोलह करोड़ गाड़े सुहाल के थे, एक सौ करोड़ खाजे और फीनियों के तथा एक हजार करोड़ लड्डुओं के थे।

रुक्मिणी मुड़-मुड़कर आशीष दे रही थी—मंगल-कामना कर रही थी कि मेरा सारा परिवार चिरंजीवी हो। चाचा, ताऊ सब सुखपूर्वक निवास करें और भाई करोड़ों और हजारों हों।

किसने बीच में पहाड़ बनाये तथा किसने वनराजि का रोपण किया ? श्री हरि (कृष्ण) ने बीच में पहाड़ बनाये और विधाता ने वनराजि का रोपण किया।

आज रुक्मिणी बेटी किसी मार्ग के बीच जाकर ठहरेगी। फिर प्रातःकाल द्वारिका जायेगी। पदम भक्त उनका यश गाता है।

दोहा— राजा भीव री वीनती सांभळज्यो भगवान
गुण मानो औगण तजो रुकमइयो भयो अजाण
सेन्या चढ जादू चल्या साथ चल्या सब भूप
दासी दीनदयाल री रुकमण रूप अनूप
मांढै म्हांरै जस रह्यो सुजस रह्यो महकाय
फूल्यो मरवो केवड़ो और सुगंध सुहाय
गैवर सजिया कृष्ण रा पड़ी नौबतां घाय
जान चढी जादू तणी को कवि कहै वणाय

धमाल—उड़त गुलाल लाल भयो अंबर जानी आया कृष्ण मुरार
रथ झणकार पड़ी सब वन में जांगड़िया ललकार
वडा वडेरा जादू सोहै हाथिन री लगतार
झालरदार पालखी सोहै गोळी चलत अपार
सुर नर मुनि जन क्रोड़ देवता रंग री पड़त फुहार
हरख्यो लेर वधाई आयो खबर करी दरबार
पदम रा स्वामी परण पधारचा रुकमण रा भरतार

द्वारका पहुँचना

मारू— सायर तीरां जाय पहूंच्या तीरथ गोमती सार
कीनों सिनान सभी ऊतर कै कुसी हुवा सरदार
विड़दावळ बहु चारण उचरै आया जगत अधार
माता देवकी करै वधावणा घर घर मंगळचार
कंचन कळस भराय कै मोतियन चौक पुराय
पैसारो पर ब्रह्म रो पदम भगत बळि जाय

दोहा— भीतर हरी पधारिया कामण मंगळ गाय
हरख भयो जदुवंस में विप्रां दात दिराय

मारू—दैत विडारचा देव उबारचा आया हरि असथान
बहनड़ रोक्यो बारणो घर आयी सब जान
बाई बोली कृष्ण सूं भाई बार छुडाय
मोहन दीनी बाछड़ी और रतन मंगवाय
पैसारो सुभ साज महूरत भीतर भवन पधारिया
आवो हे माता देवकी रुकमण मुख दिखळाविया

हे भगवान ! राजा भीष्मक की प्रार्थना सुनिये। आप हमारे गुणों की ओर देखिये और दुर्गुणों को छोड़ दीजिये। रुकमइया तो अज्ञानी हो गया था। यादव लोग सवारियों पर चढ़कर चल दिये। सारे राजा भी साथ में चले। दीनदयाल श्रीकृष्ण की दासी रुक्मिणी रूप-लावण्य में अनुपम थी। (भीष्मक कहता है—) हमारे विवाह-मण्डप को यश मिला है वह सुन्दर यश महक रहा है। हमारे यहाँ मरवे और केवड़े फूले हैं जिनकी अधिकाधिक सुगन्ध फैल रही है। श्रीकृष्ण के हाथी सजे। नगाड़ों पर चोट पड़ी। यादवों की बरात चढ़ी। उसका कौन कवि वर्णन करके कह सकता है ?

गुलाल उड़ रही थी। सारा गगन-मण्डल लाल हो गया। श्रीकृष्ण आदि बराती आ गये। सारे वन में रथ की झनकार हो रही थी, बन्दीजन ललकार रहे थे। बड़े और वयोवृद्ध यादव लोग सुशोभित हो रहे थे। हाथियों की कतारें लगी थीं। उनकी झालरदार पालकियाँ सुशोभित हो रही थीं, और अपार गोलियाँ छूट रही थी (बन्दूकें छूट रही थीं)।

करोड़ों सुर-नर-मुनिजन और देवता एकत्र हो गये थे। रंग की फुहारें बरस रही थीं। बधाईदार बधाई लेकर आया। उसने दरबार में खबर की कि पदम भक्त के स्वामी, रुक्मिणी के पति, श्रीकृष्ण विवाह करके लौट आये है।

द्वारिका पहुँचना

सब लोग समुद्र के किनारे जा पहुँचे जहाँ श्रेष्ठ गोमती तीर्थ था। वहाँ उतरकर सब सरदारों ने स्नान किया और बड़े प्रसन्न हुए। चारण लोग खूब विरुदावली का उच्चारण कर रहे थे। जगदाधार श्रीकृष्ण आ गये। माता देवकी 'बधावने' कर रही है। घर-घर में मंगलाचार हो रहे है। स्वर्ण-कलश भरवाये गये। मोतियों के चौक पुरवाये गये। और तब परब्रह्म श्रीकृष्ण का गृह में प्रवेश हुआ। श्रीकृष्ण भीतर पधारे। कामिनियों ने मंगल गीत गाये। यदुवंश में हर्षोल्लास छा गया। विप्रों को दान दिया जाने लगा।

श्रीकृष्ण दैत्यों का संहार करके और देवताओं को उबारकर अपने स्थान को लौट आये। सारी बरात घर लौट आयी। प्रवेश के समय बहन ने द्वार रोक दिया। बहन ने श्रीकृष्ण से कहा—हे भाई ! द्वार छुड़ाओ। तब श्रीकृष्ण ने (द्वार छुड़वाने के उपलक्ष्य में) एक बछड़ी (युवा गाय) दी और रत्न भी मंगवाकर दिये। शुभ प्रवेश का मुहूर्त साधकर श्रीकृष्ण भवन के भीतर पधारे। हे माता देवकी ! आओ, वधू का मुख देखो। तब रुक्मिणी ने सास को मुख दिखाया। जब रानी रुक्मिणी सास

राणी रुकमण जद पांय लागी देव़ पुसप वरसाया
द्वारापुरी में आनंद हूव़ा दास पदम जस गाया

दोहा— पुरी द्वारका सम नहीं नदी गोमती सार
कृष्ण समान देव नहि अगूलता उर धार

मारू— सोळा सहस अेक सौ अबळा भोमासुर गहि ल्यायो
सगळी अेक महूरत परणी पारब्रह्म वर पायो
रुकमण जामव़ती सतभामा सूभद्रा भद्राणी
कालिंदी श्रीलछमी व्रंदा अे आठूं पटराणी
दस दस पुत्र अेक अेक कन्या तरुणी यह वर दीना
निराकार निरलेप निरंजण यों रंगमाया भीना
अपणी अपणी पोळ निरंतर भजन करत है नारी
पदम स्याम सुखदायक नायक दरसण री बळिहारी

उपसंहार

दोहा— चरणन रज बंदूं सदा रहूं चरण ल्यौ लाय
केसौ तणै वधावणै भगति मुगति वर पाय
रुकमण मंगळ उचारतां भगतिदान दत होय
जिण भगतां श्रवणां सुण्यो विघन न व्यापै कोय

मारू— जो मंगळ कूं मुख ते गावै सकल काम होय जावै ।
जो मंगळ कूं सुणिहै कानां कोटि पाप दुर जावै ।।
द्वाराव़ती आणंद भयो है सुर नर देत असीस ।
वैस भणै पदमइयो वैष्णव़ सिंघासण जगदीस ।।

के पैरों लगी तो देवताओं ने पुष्प बरसाये। द्वारिकापुरी में आनन्द हुए। पदम भक्त ने यशोगान किया।

द्वारिका के समान कोई नगरी नहीं, गोमती के समान कोई श्रेष्ठ नदी नहीं और श्रीकृष्ण के समान कोई देवता नहीं जिनने भृगु ऋषि की लात (के चिह्न) को हृदय पर धारण कर रखा है। भोमासुर सोलह सहस्र और एक सौ अबलाओं को पकड़ लाया था। उन सबको कृष्ण ने एक ही मुहूर्त में व्याह लिया। उनने परब्रह्म श्रीकृष्ण को वररूप में प्राप्त किया।

रुक्मिणी, जामवती, सत्यभामा, सुभद्रा, भद्राणी, कालिंदी, श्रीलक्ष्मी और वृन्दा—ये आठ पटरानियाँ हुईं। उन पटरानियों में प्रत्येक के दस-दस पुत्र और एक-एक कन्या होने का वरदान दिया। और वे निराकार, निर्लेप, निरंजन श्रीकृष्ण इस प्रकार अपनी माया के रंग में भीगे रहे। वे नारियाँ अपनी-अपनी पौरी के भीतर बैठी निरन्तर भजन करती हैं। पदम भक्त कहता है कि श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण सुख देनेवाले नायक (स्वामी) है। मैं उनके दर्शनों पर बलिहारी जाता हूँ।

उपसंहार

मैं नित्य श्रीकृष्ण के चरण-कमलों की रज की वन्दना करता हूँ और उनके चरणों में लौ लगाये रहता हूँ। केशव (श्रीकृष्ण) के 'बधावने' से भक्ति और मुक्ति का वर प्राप्त होता है। रुक्मिणी-मंगल का उच्चारण करने से भक्ति का दान प्राप्त होता है। जिन भक्तों ने उसे अपने कानों से सुना उन्हें कोई भी विघ्न नहीं होता।

जो कोई रुक्मिणी-मंगल को मुख से गाता है उसके सारे काम सिद्ध हो जाते हैं। जो इस 'मंगल' को कानों से सुनते हैं उनके करोड़ों पाप लुप्त हो जाते हैं।

द्वारिका में आनन्द हुआ। देवता और मनुष्य सभी आशीष देते हैं। वैष्णव पदम वैश्य कहता है कि जगदीश्वर श्रीकृष्ण सिंहासन पर विराजमान हैं।

' प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी ।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ।। '
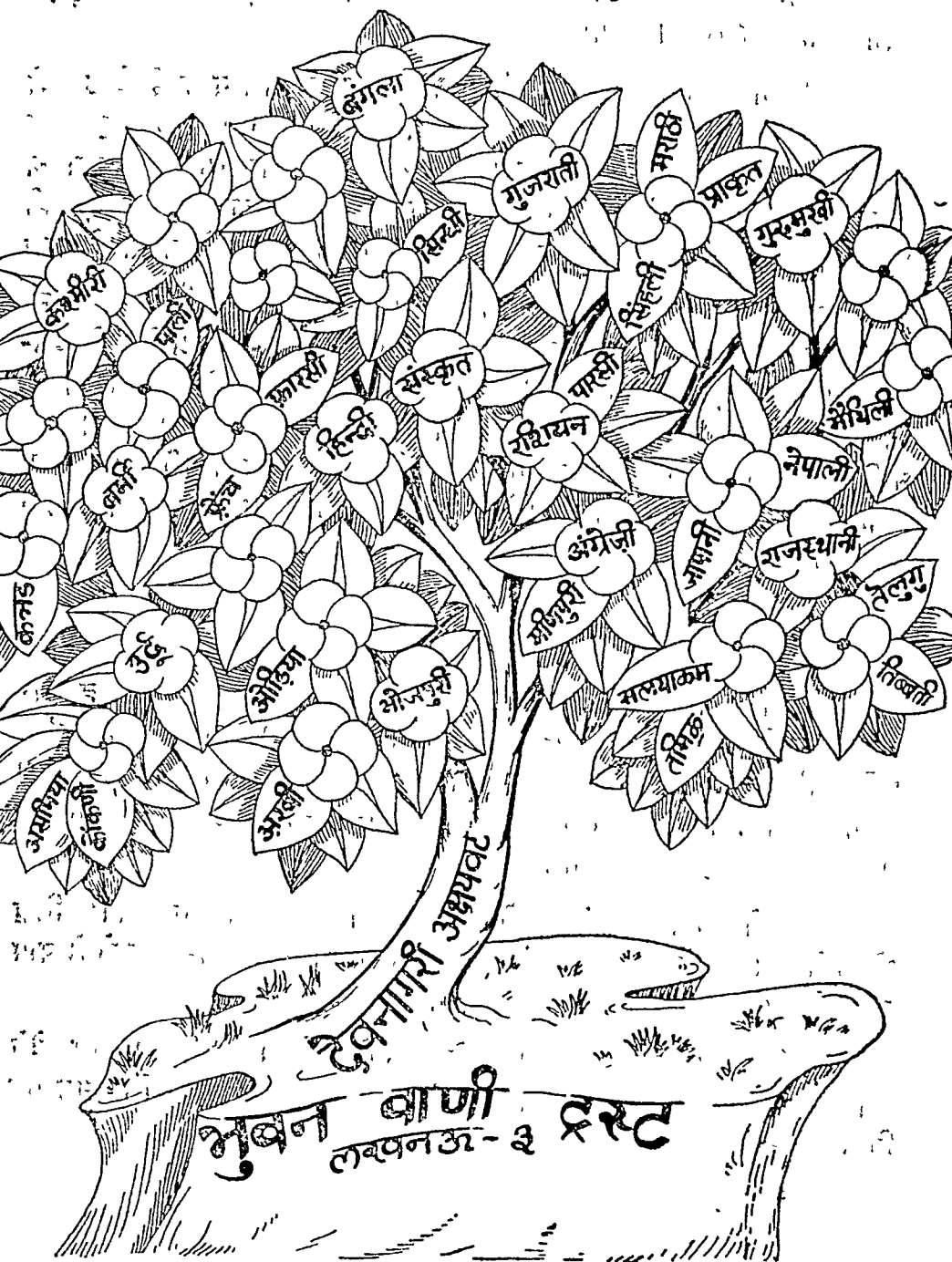
प्रतिष्ठाता— पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी